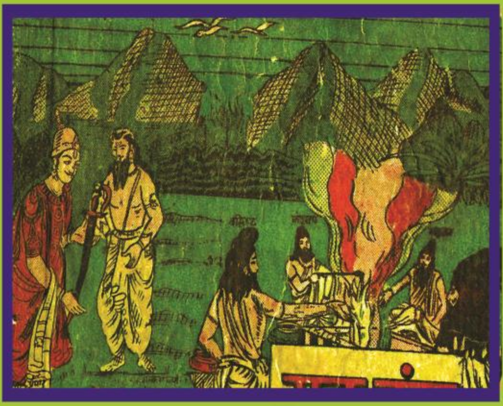

# सूद वंश
# का
# गौरवशाली इतिहास

प्रौ0 मदनेश "आज़ाद"

# सूद वंश का
# गौरवशाली इतिहास

मदनेश आजाद

विगतमान शोध संस्थान

**LOST GLORY RESEARCH INSTITUTE**

सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित है।

लेखकः—
प्रोः मदनेश आजाद

पुनः मुद्रण, अनुवाद एवं उदाहरण के लिए लेखक की
लिखितआज्ञा आवश्यक है।

प्रकाशक :—
Lost Glory Research Institute

History of Soods
By
Madnesh Azad.

समर्पित,

उन तमाम सबल हाथों को
जिन्होंने हमारी संस्था को नींव का
पत्थर बन कर
राष्ट्र के इतिहास के
भव्य भवन के निर्माण
का संकल्प किया।

उन्हें !
जो आज मेरे साथ नहीं है
परन्तु मेरा रोम–रोम उनकी प्रेरणा पूर्ण
भोगी स्मृतियों सेअनुप्राणित हो कर
गाए जाता है कि
''लेखनी तृप्यतु नः''
हे लेखनी–मुझे तृप्ति दे

**मदनेश**

# सहायक ग्रंथों की सूची

''सूदवंश का निर्माण'' महायज्ञकी पूर्णाहुति के लिये सामग्री एकत्र करने हेतू भारत के एक भाग से दूसरे भाग तक परम पावन मातृ भूमि के अनेकों तीर्थों, प्राचीन इतिहासिक नगरों, भग्नाशेष(Ruins)संग्राहालय के ताम्र पत्र, शिलालेखों एवं दन्त कथाओं का सुक्ष्म अध्ययन करने के अतिरिक्त अनेकोंबड़े–बड़े संग्राहालयों में निरन्तर कई–कई दिन अवलोकन करके जो बहूमुल्य सामग्री भारी मात्रा में एकत्र की वह सतत् साधना पूर्ण रूप से साधनों की कमी के कारण इस ग्रन्थ में शामिल नहीं हो सकी। कागज, मुद्रण एवं यात्राओं पर व्यय के भारी दबाव के कारण मेरे सहयोगियों ने इस ग्रन्थ को इतना छोटा अर्थात एक भूमिका मात्र रहने देने के लिये विवशकर दिया और वह तमाम पूर्ण सामग्री अब अंग्रेजी संस्करण में दी जा रहीं हैं। संक्षिप्त रूप से निम्न कुछ ग्रन्थ (अन्य सैंकड़ों पुस्तकों के अतिरिक्त)विशेष रूप से सामग्री जुटाने का साधन बने हैं।


प्रमार वंशावलि
पवार वंश दर्पण
महणात नैनसीरी ख्यात
दयाल दासरी ख्यात
जस्सलेमर का भुगोल
बकाये राजस्थान
बकाये राजपूताना
राजस्थान का प्राचीन इतिहास
राजस्थान के इतिहास का साधन
तिथिक्रम
अन्धकार युगीन भारत
चितौड़ इतिहास

पृथ्वी राज रासो
हमीर रासो
रवुमाण रासो
विभिन्न वेदभाष्य एवं टीकाये
महाराजा भोज
सत्यार्थ प्रकाश
जाट इतिहास
जस्सलमेरइतिहासिक संग्रह
प्राचीन ताम्र पत्र व शिला लेख

टाड़ राजस्थान
विष्णु पुराण
हरिवंश पुराण
जस्सलमेर का भुगोल
भविष्य पुराण
महाभारत
अमरकोष
अष्टाध्यायी
पिंगल सूत्रवृति
कुमार पाल चरित
एकलिंग महात्मय
विक्रम चरित
कालीदास कालीन भारत
मथुरा मेमायरस
Buddhist India
Chachh Name (Translation)
Oxford history of India
Middle age of Rajputs
Cultural Heritage of India
History of India by Eliphinston
तारीखें सिन्ध
फरिशता
तुजके बावरी
बनेड़ा संग्रहालय के शिला लेख
रायल गजट
Tribes and Castes of Punjab, (3 Parts)
The Parmars
Archeological Survey Reports (Cunningham)
Royal Asistic Society Journals.
Indian Antiquary.
तुजके जहांगीरी
आइने अकबरी
हुमायूँनामा
तैमूर के संस्मरण
तारीखे अहमदिया
सिकंदर नामा
तब्काते सिकंदरी (अनुवाद)
तारीखें नासीरी
तारीख लोध राजपूत
तारीखेसूदा
सूदयोग

अनेकों सज्जनों ने बहुमुल्य सूचनाएंमुझ तक पहुंचाई यथा श्री शाम लाल सूद, लाः बूटी राम जी सूद, श्री जगत राम शास्त्री, हकीम देवी दास जी, श्री मल्ला सिंह, श्री फकीर चन्द सूद एवं श्री हरबंस लाल सूद, आय विभाग दिल्लीश्री डॉ0 शादीराम सूद एवं श्री राम रखामल

सूद दिल्ली। मैं इन तमाम महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इसके अतिरिक्त मोती लाल नेहरू पुस्तकालय, अमृतसर।
भाषा विभाग पटियाला, पुरातत्व विभाग पटियाला।
सूचना विभाग पुस्तकालय, जालंधर।
जैन पुस्तकालय लुधियाना, दिल्ली, आगरा।
सैंट्रल, लाइब्रेरी, पुरातत्व विभाग पुस्तकालय दिल्ली।
पंजाब विश्वविदयालय चन्डीगढ.।
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।
गुरू नानक विश्वविद्यालय, अमृसर।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के पुस्तक भवन। जयपुर के राजा का पुस्तकालय, जम्मु, देहरादूनएवं हरिद्वार के पुस्तकालय से पर्याप्त सहायता मिलने के अतिरिक्त दिल्ली, जयपुर, अमृतसर।

राजस्थान हाऊस कनाट प्लेस दिल्ली, अजमेर एवं बनारस तथा मथुरा के पुस्तकालय तथा निजी लोगों के पुस्तक भी अत्यंत सूचना प्रद रहे।

लखनऊ कानपुर आदि के अजायब घर अत्यंत लाभकारी रहे।

अनुवाद आदि एवं पुस्तकालय में सहयोग के लिये मैं तमाम बन्धुओं का आभारी हुं। पी.एच.डी.(इतिहास एव साहित्य के किसी भी विषय को लेकर करने वाले)एवं अन्य अन्वेषकों एवं लेखकों कों मेरा निशुल्क निस्वार्थ सहयोग सदैव प्राप्त रहेगा। मैं ऐसे बन्धुओं को शुद्ध इतिहास लिखने का अनुरोध करता हूँ। भव्य अंग्रेजी संस्करण की प्रतीक्षा करें।

परम् पावन विश्व गुरू श्रद्धेय श्री शंकराचार्य जी के यहाँ संगृहित सद साहित्य से विदेशीयों के झूठे प्रचार के विरूद्धठोस तर्क पूर्णप्रमाणों की सहायता मिली—मेरे कोटिश प्रणाम स्वीकार करें।

**मदनेश**

**Late Shri Sham Lal Sood & Late Smt. Ram Piari Sood**

# RAJINDER PAL SOOD

Few lines from the son of the Publisher of 'Sood Vansh ka Gauravshali Ithihas'.

My father, Late Sh. Sham Lal Sood, was a man of prolific characters. He was an Arya Samaji, Social Worker, freedom fighter and an Editor of 'Sood Hitashi' (Monthly Sood Biradri Newspaper in Urdu Language), used to be published from Amritsar during early 1960's, later on, 'Sood Sandesh' and 'Sood Magazine' was also published by him. He took an active part in freedom struggle. He was a brilliant swimmer, Horse Rider, Lathies and Swords Wielder with both of his hands. He used to walk at least 10 miles a day. He never hired any

type of vehicle while travelling in Amritsar, the place where he lived throughout his life. We never saw him fell sick in his life except the last two months of his life.

My father was born on 16th Nov 1912 at Nakodar, distt. Jullundur. He did his education at Nakodar. He joined National and Grindlays Bank in 1933, Amristar (Now Standard and Chartered Bank). He got married with Ms. Ram Piari of village, Palasour, Tarn Taran, Distt. Amritsar. They had five sons Kapil, Vijay, Rajinder, Subash and Satish and four daughter's Raj Rani, Kamla, Sudesh and Kiran. Kapil, Vijay and Satish are no more in this world. Kapil has two sons, Rakesh and Mukesh, residents of Jalandhar city. Vijay, Rajinder and Satish have one son each, Vikas, Vikram and Shivesh respectively. Further Rakesh has two sons Raman and Nitesh. Mukesh,Vikas and Vikram have one son each. Raghav, Dhruv and Pratyush respectively. Vijay has one daughter Anu married with Mr. Rajeev Sood of Delhi and Rajinder has two daughters Parul & Taruna. Parul is yet to marry and Taruna is married with Mr. Sachin Malhotra of Delhi. Satish has two daughters Shreya and Shudanta. Shreya is married with Mr. Nikhil Sharma of Delhi & Shudanta is yet to marry. 'Sood Vansh ka Gauravshali Ithihas' was published by my father in the year 1975.

My Daughter, Parul Sood (MBA) has made all the efforts to reprint this book with the help of Dr. Bhushan Sood of Panchkula and Canada. Parul got the idea of reprinting this book from her Grandmother Late Smt. Ram Piari Sood.

May God bless all happy long life and prosperity?

Rajinder Pal Sood<br>
16-T, Sector-8, Jasola Vihar,<br>
New Delhi-110025.

**Rajinder Pal Sood & Family Picture**

**Parul Sood, Rajinder Pal Sood, Madhu Sood, Tanu Sood, Pratyush Sood, Vikram Sood, Taruna Sood Malhotra & Sachin Malhotra**

# Parul Sood

I introduce myself Parul Sood, MBA, daughter of Mr. R. P. Sood and grand-daughter of Late Sh. Sham Lal Sood, publisher of 'Sood Vansh Ka Gauravshali Ithihas'. I was very much attached with my grandmother (Dadiji) Late Smt. Ram Piari Sood since she lived with us after the demise of my grandfather (Dadaji) on 28th March, 1982. My Dadiji was a God loving person. She was a pure soul.

She devoted her life in upbringing her five sons and four daughters in a very kind, calm and peaceful way. She lived her full life of 93 years and left us on 28th September, 2006. Her teachings like always speak the truth, help the needy, don't hurt anybody and daily prayers have always stood us at the top of the world. I learnt a lot from my Grandmother that how she supported Dadaji when 'Sood Vansh ka Gauravshali Ithihas' was being written. Dadaji visited various historical places and libraries with the writer Mr. Madnesh Azad to collect facts which are mentioed in this book. I got inspired from my Dadiji and consulted my father and decided for the re-printing of 'Sood Vansh ka Gauravshali Ithihas' for Sood brothers to know more about their ancestors. I am thankful to Dr. Bhushan Sood of Panchkula and Canada for all the support he rendered to me in re-printing of 'Sood Vansh Ka Gauravshali Ithihas'.

God Bless!

Parul Sood

# प्रस्तुत इतिहास की मार्मिक भूमिका

भारत के इतिहास के पुनर्निमाण एवं उसे मिथ्या आरोपकोंसे साफ करके उसे वास्तविकता पर आधारित करने के हमारे महायज्ञ में हमारे संस्थान की यह दूसरी आहूति है। इससे पूर्व भाटिया जाति का गौरवशाली इतिहास यह संस्था समाज को भेंट कर चुकी है।

भारत के 3500 के लगभग वंश एवं गोत्र जिन्हे हम विदेशों षडयंत्रकारियों के प्रभावाधीन जातियाँ मान कर परस्पर धृणा प्रतिस्पर्धा तथा बंदर–बांट का बीज बोते रहें है– वह वास्तव में हमारे महान पूर्वजों के स्मृति चिन्ह हैं। तमाम वंश एक ही महान भारत वृक्ष की भिन्न–भिन्न शाखाएं हैं।

हमारे राष्ट्रीय नेता सदैव ही भावात्मक एकता(Emotional Integrional) का आहवान करके भारत की एकता का नारा देते रहते हैं परन्तु वह भूल जाते हैं कि कोरे नारों मात्र से ही स्थायीभावात्मक एकता स्थापित कभी नहीं हो सकती। उसके लिये जनता–जनार्दन के मन मस्तिष्क में कोई ठोस तत्व प्रमाण सहित बिठाना पडता है। वह ठोस तक्र सप्रमाण हम अपने संस्थान के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रयत्नशील हैं।

देश की भावात्मक एकता का आधार क्या हो धरती के इस मन्वन्तर में अर्थात् जब से धरती पर मनुष्य ने समाज रूप में रहना आरम्भ किया है–तब से आज तक इस आर्य–धरती पर मनुष्य ही प्रथम राजा हुए हैं। यहीं सुर्यं एवं चन्द्र वंशों के आदिप्रर्वतक हुए। इनकी बेटी इला का विवाह अत्रि के बेदे चन्द्र के पुत्र बुध से हुआ जिस से आगे अनेकों संतानें होती गई। कई लोग इन्हें चन्द्र देवता, बुध देवता आदि अलौकिक शक्तियों के आवरण में लपेट कर भोली जनता को उलझन में डाल देते हैं। यह सभी एतिहासिक महापुरूष थे। इला और बुध के बेटे

सम्राटपुरखा हुये। इनके चार बेटे आयू–अमावसु आदि हुये। आयू ने चीन और मंगोलिया के देश आबाद किये। यह देश आज भी 'अय' नामक महापुरूष को अपना पूर्वज मानते हैं। आयू के नहुष आदि पांच बेटे हुये। नहुष के ययाति तथा ययाति के पांच बेटे यादव, पुरू, तुर्वसु आदि हुये।

इन में यादव से यदु वंश चला। आज के यादव, भटटो, भाटिया, देसाई, सिन्धु बरार जाट यादव के वंशज हैं। पुरू से पोरी वंश चला जो आज पंजाब में पुरी कहलाते है। तुर्वसु ने तुर्वसु स्थान नामक प्रदेश बसा कर राज्य स्थापित किया जो बाद में तुर्कीस्तान तथा अब तुर्की कहलाता है। यदु वंश में आगे कृष्ण तथा पुरू वंश में द्रोपद तथा पोरस आदि राजा हुये। इसी प्रकार मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से इक्ष्वाकु वंश चला जिसमें आगे चल कर श्री रामचन्द्र हुये। इक्ष्वाकु के पोते कांकुस्थ से कंक्कर तथा काकुस्थ काक (कश्मीर एवं दक्षिण भारत) काकराण वंश चले। ऊपर वर्णित बुध से बुधवार वंश चला। यादव के वंशज श्री कृष्ण के पौत्र अनुरूद्ध के पोते खिर से खरे वंश चला। चन्द्र का संतान से आगे मतिजार राजा की कन्या गौरो से गौर वंश चला। मुहम्मद गौरीइसी वंश से था। उसके पुर्वज मुसलमान हो गये थे। आगे चल कर महाराज मद्र से मदरे वंश चला। बरिक वर्द्धन से बरिक जाट हुये। महाराजा बलि से बल वंश चला। वर्तमान भल्ला, बल (सिख) तथा राजस्थान से प्रताप तथा सांगा राणा इसी वंश में हुये। इसी वंश के गुहादत से यह वंश गुहुल, कहलाया।

भारत के प्रत्येक वंश का वर्णन न यहाँ का विषय हैं– न ही स्थान है– कहने का तार्त्पय यह कि हम तमाम भारतीय एक ही आर्य परिवार की संतान है। समय और स्थान की दुरी ने नाम भाषा, वेशभूषा आदि भले ही बदल दी है परन्तु रक्त हमारी नसों में एक ही पुवर्जो का है–अतः हम एक है–यह है हमारी भावात्मक एकता का ठोस आधार।

# इस इतिहास का ताना बाना

9 मार्च 1974 को हरिद्वार के श्री के.के. मल्ला सिंह, अमृतसर के श्री श्याम लाल सूद तथा श्री फकीर चन्द्र सूद, सम्पादक सूद मैगजीन पर आधारित एक प्रतिनिधि मण्डल मुझसे मिला तथा मुझे सूद इतिहास लिखने के लिये प्रेरित किया।उन दिनों भाटिया का इतिहास प्रैस में था अतः कुछ मास बाद मैनें उनकी प्रेरणा को ग्रन्थ रूप में लिखना आरम्भ कर दिया। सूद इतिहास समिति बनाई गई जो मुझे सहयोग दे सके।

श्री श्याम लाल सूद ने शेष लोगों के हृदय हार जानने पर अकेले ही इस कार्य में सहयोग देना जारी रखा। जून–जुलाई की दोपहर तथा दिसम्बर–जनवरी की रात उस बुढ़ तरूण के साहस को न गिरा सकी। इस आयु मे उन के अदम्भ साहस से प्रेरणापाकर कर मैं आगे बढता चला गया। राजस्थान के रेतीले भागों में छिपे एतिहासिक दुर्ग, मंदिर, शिलालेख तथा पुस्तकालय खंगाले गए। अजायबघर तथा युनिवर्सिटीयों के निरन्तर चक्कर तथा धन अभाव के कारण इस के लिये भी दर–दर भटक कर एक बुर्जुग की रोमांचपूर्ण दिशा–निर्देश से यह ग्रन्थ आप तक पहुँच सका है।

आज स्कूलों एवं कॉलेजो में इतिहास को दो भागो में बांटा जा चुका है। एक भाग जो सत्य है परन्तु उसे हम पढाते नहीं क्योंकि वह पुस्तकों में नहीं है। दूसरा वह जो पुस्तकों में हैं परन्तु अध्यापकगण जानते हैं कि वह गलत है। उसे पढाने पर हम विवश है क्योंकि विद्यार्थी उसी से पास हो सकते है। एक विचित्र झमेला है। विदेशी आक्रमणकारी तथा उनके कोत दरबारी इतिहासकार दो हजार वर्षो में जाने कितना गलत कचड़ा इतिहास के नाम पर हमें दे गये है ताकि नैतिक साहस खो कर हम हीन एवं गुलाम बने रहे।

आज विचित्र लगता है जब हम कहते हैं कि सिंकदर हारा था और पोरस जीता था– परन्तु सत्य यह

हैं सत्यलाल किला शाहजहाँ के जन्म से डेढ़ हजार वर्ष पूर्व महाराजा विक्रमादित्य ने बनवाया था– ताजमहल राजा जय सिंह सवाई का महल था तथा मुमताज होशिंगाबाद के एक बगीचे में दफनाई गई थी– द्रौपदी के पाँच पति नहीं थे अथवा हनुमान की पूंछ नहीं थी– ऐसी बातें चौंका देती हैं। परन्तु है सत्य। अफगानिस्तान का शब्द उप–गण–स्थान है– बलोचिस्तान बल़उच्च्स़्थान है– यह हिन्दु राज्य थे– परन्तु आज विश्वास नहीं होता।

## नैतिक साहस का अभाव

कारण यहीं किवह समय हमारी महानता की पराकाष्ठा का था जब हम अधोगति के निम्नतम स्थल पर खड़े हैं। उस समय के इतिहास को समझने के लिये हमें उसी संस्कृत पूर्ण नैतिक भारत के वातावरण में जाना पड़ता है जब कि बच्चों के नाम बबली, बोबी, पिंकी, बिल्लू आदि न हो कर भरत, सूद, विराट आदि होते थे।

## एक प्रार्थना

इस ग्रन्थ के साथ हमारा ध्येय समाप्त नहीं हो गया अपितु आरम्भ हुआ है। सारे भारत के इतिहास को नये सिरे से लिखने के अभियान में हमें आर्शीवाद एवं एवं सहयोग दे, संस्था के आजीवन सदस्य बने ताकि हमारे अपने पूर्वजों की विरासत के बहुमुल्य मोती हम से छिन न जाये।

शेषअंग्रेजी संस्करण भव्य और विशाल ढंग से प्रकाशित हो रहा हैं। इस में जो सामग्री विवशता रह गई है वह भी उसमे शामिल होगी। समाज में उन्नत एवं सेवा त्याग वाले परिवार अपने वर्णन हेतु संस्था से सम्पर्क करें।

**भवदीय**
**मदनेश**
**संचालक प्रधान**
**विगतमान शोध संस्थान**

# प्रकाशकीय

भारत के सम्पूर्ण इतिहास को उथल देने तथा अपने गौरवशाली अतीत के प्रति हमारी श्रद्धा को कुछ अनाड़ी प्रगतिवादी दकियानूसी की संज्ञा देते हैं। कुछ सज्जनों ने, जातिवाद का विरोध के नाम पर हमारे प्रयास का महत्व घटाना चाहा परन्तु हम आभारी हैं अपनी इस पुरानी वृति के जो हमारा सम्बन्ध हमारे पूर्वजों से जोड़ती हैं।

सूद वंश है जाति नहीं। सूद शब्द कदाचित आज सब से अधिक विरोधाभासपूर्ण शब्द है। कुछ अनाड़ी संस्कृत के इस शब्द को उर्दू फारसी में ढूंढ कर इस का अर्थ ब्याज खाने वाला निकालते है। अन्य 'बुद्धिमान' इस शब्द का सूत शब्द से बेतुका मिलान करके इसका अर्थ रसोईया निकालते है। वास्तव में पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से दबे मस्तिक में संस्कृत का शब्द आए भी तो कैसे।

आज की युवा पीढी को सिनेमा, स्पोंटस और सैक्स– इन तीन सकारों का ज्ञान विशेषज्ञों से भी अधिक हैं। परन्तु उनका गौत्र क्या है कुल गुरू कौन है कुल देवी और पुरोहित तो क्याअपने दादा से आगे का कोई नाम भी ज्ञात नहीं होगा। हिप्पी वेश में बाल बढ़ाए सिगरेट का धुआं उड़ाते इन मार्डन मजनुओं से देश क्या आशा लगा सकता हैं।

ऐसी स्थिती में हमारे प्रकाशनों को अपने घर पर रखिये यदि इनके तनिक प्रभाव से आप का कोई बन्धु अपने महान पुर्वजों का नाम श्रद्धा और सम्मान से लेने लगे तो हमारा परिश्रम सफल हो जायेगा।

हम ने अकावन (51) ग्रन्थों की सूची की घोषणा कर दी है। इस के लिये दो लाख रूपये का व्यय हमारे

सामने है। क्षत्रिय के लिये दान लेना वर्जित है अतः आप से निवेदन है कि हमारे आजीवन सदस्य बन कर इस महायज्ञ के पुण्य एवं यश के भागी बने।

धन के अभाव से रह गयी सामग्री अगले अंग्रेजी संस्करण में शामिल कर दी जायेगी।

**मदनेश**
**विगत मान शोध संस्थान**

# सूद इतिहास समिति
# के
# मंत्री का वक्तव्य

सूद इतिहास उस समिति का निर्माण इतिहास के लब्ध प्रतिष्ठित विद्धान एवं तरूण विचारक प्रोः मदनेश जी की इच्छा से उन्हें सहयोग एवं सहायता के लिये किया गया था। श्री बूटी राम सूद प्रधान थे परन्तु वह इतने वृद्ध थे कि धन एकत्र करने तथा अन्य मिशन पर वह नगर–नगर नहीं जा सकते थे अतः उनका सहयोग हमें परामर्श रूप में ही प्राप्त हो सका। शेष श्री हरबंस लाल वित्त मंत्री रूगणता एवं व्यस्तता के कारण समय न निकाल पाये अतः मदनेश जी ने तमाम उतरी भारत में घूम कर सामग्री एकत्र करने एवं रिसर्च कार्य के अतिरिक्त धन एकत्र करने में भी सक्रिय सहयोग देना आरम्भ किया और छाँट–छाँट कर एक में ही शेष था जिसे मंत्री पद का भार सम्भाल कर तमाम बोझ अपने कन्धों पर उठाना पड़ा।

कुछ स्वार्थी तत्व यह भी प्रचार करते रहे कि कोई पुस्तक आदि नहीं छप रही। किसी ने इस मेरी व्यक्तिगत योजना समझ कर मेरे व्यक्तिगत विरोध को यहाँ भी ला खड़ा किया हालांकि मैं जो भी कर रहा था– वह स्वयं बलि का बकरा बन कर सूद समाज के लिये ही कर रहा था। मुझे इतिहास प्रकाशन का कार्य सर्वदेशिक सूद सभा ने ही सौंपा हुआ था और श्री मदनमोहन के साथ मुझे मिलाकर एक सब–कमेटी बनाई गई थी।

मैं इस सत्य से परिचित था कि इतिहास लिखना मेरे अथवा श्री मदन मोहन के वश की बात नहीं– यह किसी मनीषी इतिहासकार को कार्यभार सौंपा जाना चाहिये अतः जब मुझे श्री मदनेश जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो उनकी योग्यताएवं अध्ययन देख कर मैं चकित रह

गया। इतनी कम आयु में ऐसा अध्ययन एवं रिसर्च कोतुहल पूर्ण थी। मैंने इनको योग्यता का लाभ उठाने के लिये तुरंत श्री टेक चन्द्र जी प्रधान सः सूद सभा पंजाब को पत्र लिखा जिसका उत्तर बम्बई से प्राप्त हुआ संक्षेप यह कि समय को व्यर्थ बीतते देख कर मैंने अमृतसर के प्रमुख सूद महानुभावों पर आधारित एक कमेटी बना दी परन्तु लगा कि इस भीड़ में भी अकेला हूँ और मुझे अपने ही बेटे के समान प्रिय वह बच्चा मेरी उंगली थाम मुझे बढ़ाये लिये जा रहा हैंभौतिक लोभ से भरे लोग हमारा साहस गिराते गये और हम एक दूसरे का सहास बढ़ाते गये– परिणाम को आज पुस्तक रूप देख कर आज मैं पथ की तमाम थकान भूल गया हूं।

मैं बेटे मदनेश के प्रति श्रद्धा और आदर से कृतज्ञता प्रकट करता हूं और बिरादरी के महानुभावों, नेताओं तथा धनी वर्ग से प्रार्थना करता हूं कि आइये छोटे–छोटे मतभेद भूल कर एवं लालच से ऊपर उठ कर इस तरूण तपस्वी की पीठ पर आर्शीवाद का हाथ रखें ताकि अंग्रेज़ी संस्करण जिसे वह भव्य एवं विशाल सम्पूर्ण इतिहास बनाने की प्रतिज्ञा लिये हुये हैं– पूर्ण एवं सफल हो। सुझाव एवं सहायता का स्वागत होगा।

**आप का सेवक**
**शाम लाल सूद**
**मंत्री सूद इतिहास कमेटी अमृतसर**

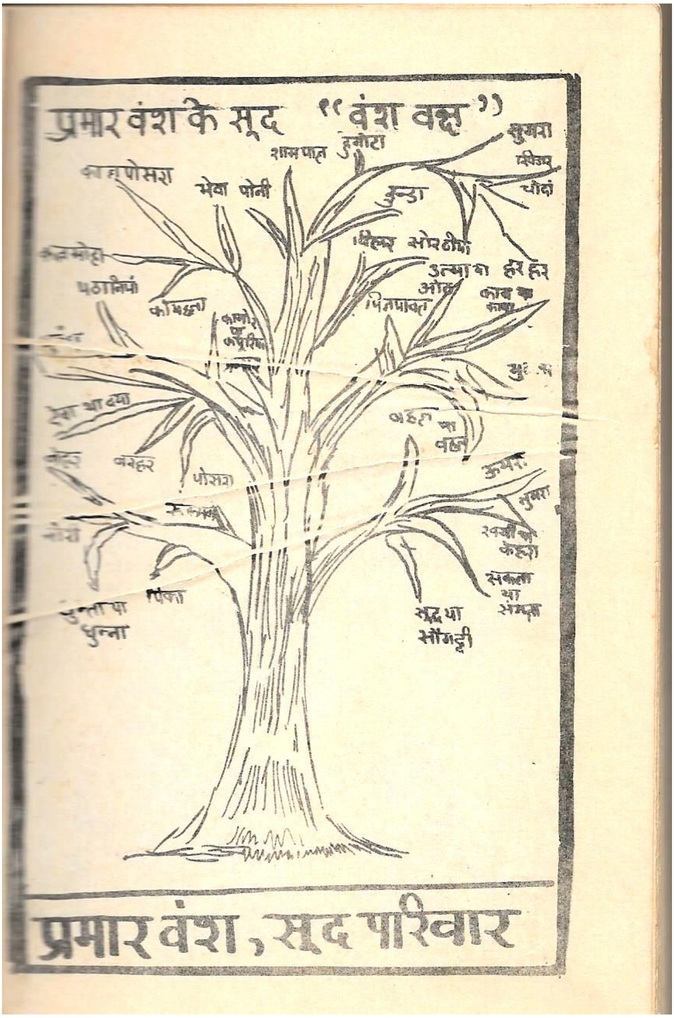


प्रमार वंश, सूद परिवार

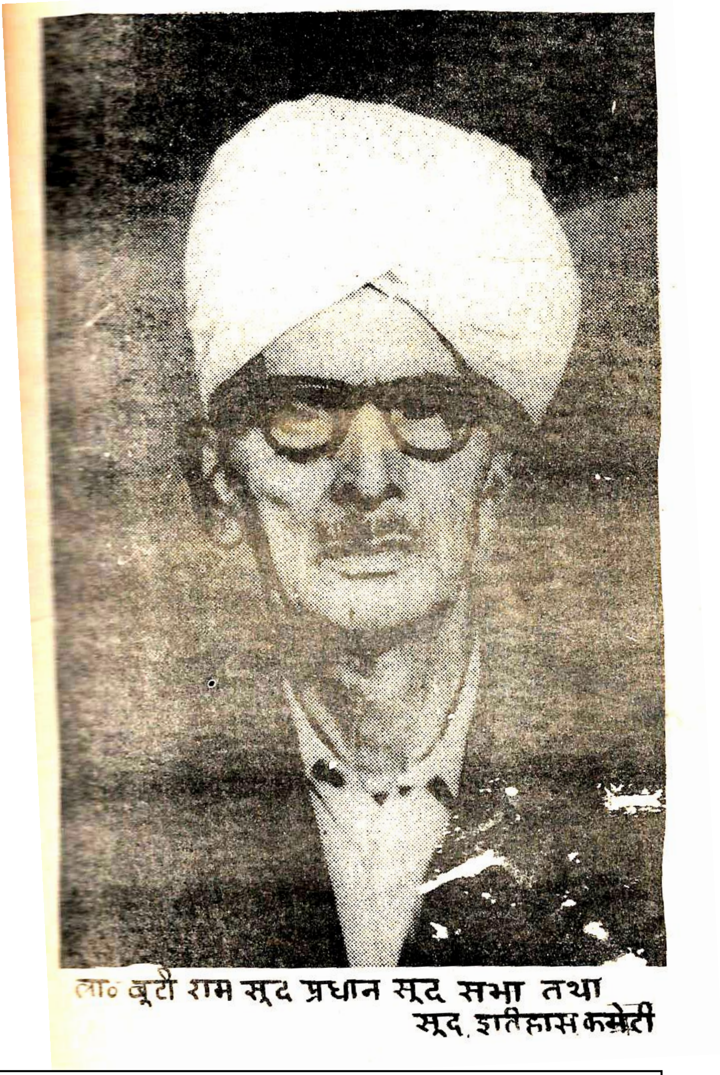


**ला0 बूटी राम सूद प्रधान सूद सभा**

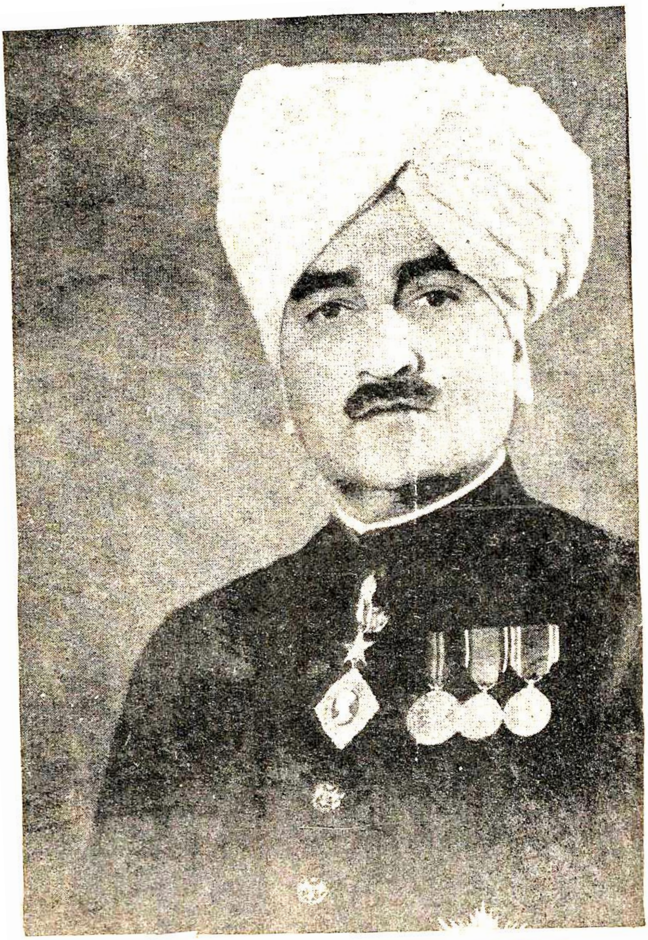

जुब्बल स्टेट के महाराजा राणा सर भक्त चन्द्र

**महाराज राणा सर भक्त चन्द्र**

इस रचना के प्रेरक - श्री शाम लाल सूद मंत्री -
इतिहास कमेटी

श्री शाम लाल सूद मंत्री

राजा राम सूद सपरिवार

लाला अमोचक राम ऐडवोकेट भूतपूर्व
प्रधान सार्वदेशक सूद सभा

लाला अमोचक राम एडवोकेट

भूतपूर्व प्रधान सविंदेशक सूद सभा

श्री रत्न चन्द सूद नई देहली

**श्री रत्न चन्द सूद, नई दिल्ली**

सेठ सुलखन सिंह जी सूद भू.पू. प्रधान
सार्वदेशिक सूद सभा

## सेठ सुलखन सिंह जी

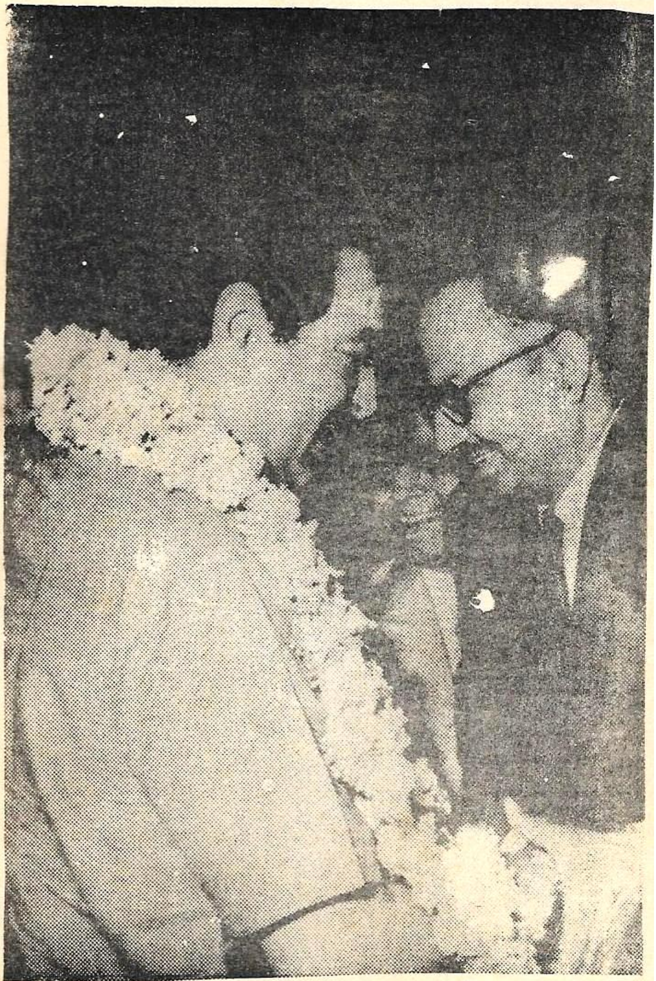

बैंक आफ इंडिया के मैनेजर सूद साहिब
वित मन्त्री का स्वागत करते हुये

**बैंक ऑफ इण्डिया के मैनेजर सूद साहिब**

# सूद इतिहास की रूप रेखा

सूद जाति का इतिहास अत्यंत गौरवशाली, परम्पराएं गरिमा पूर्ण तथा वंशजो की विरासत अत्यंत उज्जवल हैं। स्वयं सूद शब्द ही इस पावन रक्त के प्रखर चरित्र का ज्वंलत–प्रमाण हैं। सूद शब्द योगिक अर्थो में तेइस बार वेदों में आया है। पन्द्रह बार ऋवेद में, छः बार यर्जुवेद में तथा दो बार अथर्ववेद के विभिन्न सूत्रों में यह शब्द एक विशेषअर्थ के साथ प्रयुक्त हुआ है। यह अर्थ हैं '' सुगमता से ऊपर चढ़ने वाला'' अथवा उन्नति करने वाला। सूद बना देने की प्रार्थना से युक्त इस मन्त्रों में एक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

**आपो अस्मान मात्रः सूदयन्तु**
**देवस्तवा सविता सूदयतु**
**मामूषसी सूदयतु**

भविष्य पुराण के उपसर्ग अर्धांग अध्याय छः में भी सूद शब्द प्रयुक्त हुआ मिलता है।

जो भी हो–एक स्वयं सिद्ध सत्य है कि सूद अग्नि कुल के प्रमार वंशीय क्षत्रिय है। जिन के कुलगुरू वशिष्ट ऋषि गोत्र कश्यप कुल देवी चालिश्वरादेवी जी एवं इष्ट वेद ऋग्वेद है। चन्द्र वंश–आभूषण चक्रवर्ती सम्राट सुदास के नाम से इस वंश का नाम सूद पड़ा। इस वंश का पूर्ण परिचय तथा वंश–वृक्ष का पूर्ण विवरण तर्को एवं प्रमाणों सहित आगे दिया जायेगा।

आर्य सभ्यता के विकास के साथ आर्य जाति केवल दो भागों में बटीं हुई थी।

1) सूर्य वंश 2)चन्द्र वंश

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित है कि ब्रह्मा पुत्र अत्रिय के यहाँ चन्द्र ने जन्म लिया। चन्द्र के बेटे का नाम बुद्ध था। यह चन्द्र वंश के प्रर्वतक हुए6।

दूसरी ओर मारीच प्रजापति के कश्यप एवं कश्यप के यहाँ सुर्य ने जन्म लिया जिन्होंने सुर्य वंश की नीव रखी। सुर्य के यहाँ चक्रवर्ती सम्राट देवसुत मनु ने जन्म लिया जिनकी संतान में सुर्य कुल भूषण महाराजा इक्ष्वाकु का उदय हुआ। इनकी बहन का नाम इला था जिस के नाम पर वर्तमान इलाहाबाद का प्रदेश बसाया गया था।

सुर्यवंशीय इसी इला का विवाह चन्द्र के बेटे बुध से हुआ। इसी विवाह के प्रणामस्वरूप भारत की लगभग सभी चन्द्र वंशी क्षत्रिय जातियों के आदि पुरूष पुरूरखा का जन्म हुआ। इसी वंश में आगे चल कर महाराजा सुदास का जन्म हुआ जिन्हें ग्रन्थों में सुधन्य तथा सुदोव भी कहा गया है। महाराजा पुरूरखा से महाराजा सुदास तक इस चन्द्र वंश का परिचय इस चित्र से स्पष्ट है।

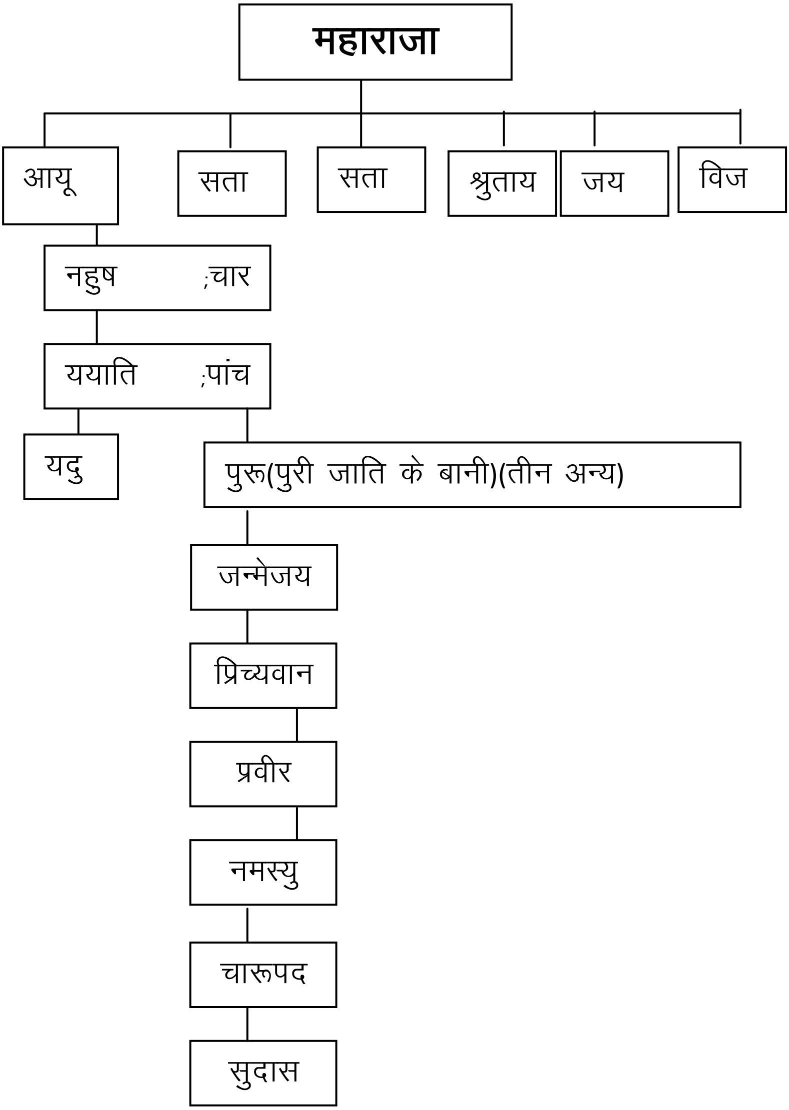
महाराजा
आयू
सता
सता
श्रुताय
जय
विज
नहुष ;चार
ययाति ;पांच
यदु
पुरू(पुरी जाति के बानी)(तीन अन्य)
जन्मेजय
प्रिच्यवान
प्रवीर
नमस्यु
चारूपद
सुदास

**इसी राजा सुदास जी संतान सूदा कहलाई।**

इसी समय के लगभग आर्य जाति ने जीवन काल का भयानकतम संकट देखा। ऊपर वर्णित राजा ययाति की दूसरी संतान यदु के वंश में कुछ पीढी आगे चलकर महाप्रतापीस्हस्त्र अर्जुन ने जन्म लिया। इस महा वीर्यवान राजा की संतान ने शिकार करते समय श्री परशुराम जी के पिता महर्षि जमदग्निकी गाएं छीन लीं। परशुराम जी ने उन्हें मार्ग में ही आ दबोचा तथा गाय छुड़ा कर ले गये। महान सम्राट की संतान इस अपमान को न सह सकी तथा परशुराम जी की अनुपस्थिती मैं महर्षि जमदग्नि की हत्या कर दी। यहीं से अनर्थ का श्री गणेश हुआ।

परशुराम ने कुल्हाडा उठा कर क्षत्रिय वंश के विरूद्ध 'जहाद' आरम्भ कर दिया तथा इक्कीस बार भयानक रूप  से क्षत्रियों का संहार किया। मुख्यतः यह संहार चन्द्रवंशियों तक सीमित रहा।

ब्रह्मतेज पुज्ज के इस महा विकराल रूप से चारों ओर त्राहि मच गई। क्षत्रिय नाम, जाति, गौत्र एवं भेष बदल कर छुपते रहे। गर्भवती स्त्रीयां क्षत्रिय वंश की रक्षा हेतु अपने कुलगुरू सारस्बत ब्राहमणों की शरण में चली गई जिन्होंने उन्हें अपनी बेटीयाँ कह कर उनका पालन किया। इस महा संहार से धरती वीर क्षत्रियों से खाली हो गयी एवं ब्राह्मणों की रक्षा करने वाला कोई न बचा। अत्याचार सीमातीत हो गये।तब धर्म एवं न्याय की रक्षा के लिये कश्यप ऋषि ने परशुराम के हत्या कांड से बचे राज–पुत्रों को ढूंढना आरम्भ किया जो कि द्राविद्र, आमीर, शिबरे, आदि जंगली जातियों में छिप कर समय व्यतीत कर रहे थे। उन में से स्हस्त्रार्जुन के जय ध्वज नामी पुत्र, पुरू के वंशज बृद्रथ के एक बेटे, राजा सुदास की सूदसंतान, राजा शिवि के वंशज, राजा बृहदन्रव तथा राजा विदुर्थ के पुत्र एवं महा तेजस्वी बहृदर्थ और मारूत वंश के कुछ क्षत्रिय बालक ढूढंकर उन्हें विभिन्न प्रदेशों

का राजा बनाया। इस प्रकार से क्षत्रिय जाति का पुनःविस्तार आरम्भ हुआ और साथ ही राजा सुदास की संतान राज्य–सुख प्राप्त करके सत्य एवं न्याय की रक्षा करते हुये पुनः अपने नाम के अनुसार '' सुगमता से उन्नति करने लगे''।

अभी तक इतिहास दो शब्दों ने अनभिज्ञ था। एक हिन्दु तथा दूसरा राजपूत। सूद चन्द्र वंशी क्षत्रिय कहलाते थे तथा उन के पुरोहित वही हुये जो अन्य चन्द्र वंशीय क्षत्रियों के थे। इस से बड़ा प्रमाण सूदों के क्षत्रिय होने का और क्या हो सकता है परन्तु जो दूसरी जातियों एवं देशों के विरूद्ध ईर्ष्या वश विष वमन कर के ही स्वयं को बड़ा इतिहासकार सिद्ध कर सकते हो उन के लिये सूद शब्द का सूत (रसोईया) शब्द से बेतुका मिलान, ब्याज खाने वाले, शुद्र आदि घृणाजनक निन्दीय एवं एक अच्छे इतिहासकार के लिये अशोभनीय शब्द ढूंढ लेना कोई कठिन कार्य नहीं। ऐसे उत्तरदायित्व हीन इतिहास कारों में मुसलमान अंग्रेजों के अतिरिक्त विलायत से डिगरीयों की पंक्ति लगा कर लौटे '' भारतीय–विदेशीयों'' की भी कमी नहीं।

इसके कुछ समय पश्चात महाभारत का अनर्थकारी कांड हुआ और विश्व गुरू एवं वन्दनीय आर्य–वर्त भारत को ऐसा धक्का लगा कि आज हजारों वर्ष के पश्चात भी हम सम्भल नहीं पाये।

महर्षि परशुराम संघर्ष शांत होने पर सुदास के वंशजो ने सिन्धु तथा मरू देश प्रान्त तक अपना राज्य स्थापित कर लिया था यह राज्य अत्यंत सुसम्य, उन्नत, एवं समृद्ध थे। सिन्धु में दूसराराष्ट्रों का एक समूह था।

महाभारत के कर्ण पर्व, सभा पर्व एवं बन पर्व में ''सिन्धु राष्ट्र मुखानी हद्रय राष्ट्रणियानीह'' – इस प्रकार से इस जनपद की महत्ता एवं स्वतंत्र सत्ता का वर्णन मिलता है।

अलौर की राजधानी को केन्द्रीय सत्ता बना कर इन सूदों ने अत्यंत विशाल तथा सुदृढ दुर्ग बना लिये थे। सिन्ध से वह उत्तरी भारत के प्रमुख प्रदेशों पर प्रभावशाली ढंग से राज्य कर रहे थे।

सारा राजस्थान विशेषकर अमरकोट, बुंदी, कोटा, चित्तौड़, गुजरात आदि शनः–शनः सूदो के प्रसिद्ध गढ़ बन गये। जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया तो पंजाब प्रांत में व्यास के तट का प्रदेश वर्तमान पठानकोट से होशियारपुर आदि का प्रदेश भी सूदों के अधीन था। इलाहबाद से अरब सागर तक का तमाम प्रदेश सूद महाराज मेहर सेन के अधीन था जिसे मुसलमान लेखकों ने गलत रूप से नेहरस अथवा कई स्थानों पर महन रस लिखा है। इस की विशाल सैन्य शक्ति से सिकन्दर के सैनिक काँपते थे। जब पोरस से युद्ध समाप्त कर के सिंकन्दर ने सन्धि की तो वर्तमान छम्ब जौडियां मार्ग से वह पठानकोट के निकट पहुँचा। यहाँ इतिहासकारों ने भारत के इतिहास में अनेकों गलत प्रसंग भर रखे है। प्रथम तो सिकन्दर को पोरस की शक्ति के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा और उसे विजय जैसी कोई चीज़ प्राप्त नहीं हुई और सिकन्दर का पूछना कि '' तुम से कैसा व्यवहार किया जाय'' तथा पोरस का उत्तर '' जैसा एक राजा दूसरे राजा से करता है'' यह सभी सिकन्दर के दरबारी सेवक तथा साथी टोलमी द्वारा अपने स्वामी सिकन्दर की हार को छिपाने तथा सिकन्दर का महत्व बनाये रखने हेतु बनायी गई कपोल कल्पनाएं (Dramatic enteries)है। सिकन्दर पोरस से हार कर एवं उसे अपने जीते हुए प्रदेश देकर पोरस की सीमा के पास से तनिक मुड कर जम्मु प्रदेश के पास से पठानकोट की और बढ़ा था। परन्तु पोरस एवं मार्ग के अन्य वीर भारतीय क्षत्रियों के हाथों पिटते–पिटते सिकन्दर के सैनिको का हद्रय टूट चुका था। फिर व्यास के दूसरे तट पर सिन्ध के सूद राजा का गवर्नर जो इस प्रदेश का राज्यपाल था– भारी सूद क्षत्रिय सेना लेकर दूसरा पोरस सिद्ध होने के लिये

तैयार खडा था। अलोर के इस राज्य के अधीन लगभग सौ दुर्ग थे और सूद राज्य भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्थापित हो चुके थे। प्रमार के 35 पुत्रों द्वारा विभिन्न राज्य स्थापित किये जाने का वर्णन आगे किया जायेगा। पाटन, अलोर, अमरकोट, चितौड, कोटा, बुंदी धात का प्रदेश इसी महावंश के अधीन रहे।

इस राय शाह सूद की सैन्य शक्तिदेख कर सिकन्दर के सैनिकों के टूटे हुये हृदय बिल्कुल हताश हो गये। वह चारों और से घिर कर पंजाब के मध्य में डेरा डाले हुये थे। प्रत्येक नगर इस भारी संख्यिक सैनिक अभियान की संख्या कम करता जाता था।

सिकन्दर के विश्व विजय के स्वप्न भारत में पग धरते ही काँच की भांति चूर–चूर हो गए और उस टूटे काँच की छोटी–छोटी असंख्य किरचियां सिकन्दर की रगों में चुभने लगीं। जब उत्साहवर्धक भाषणों से भी सिकन्दर के सैनिकों से भारतीय क्षत्रिय जाति की वीरता का आतंक समाप्त हो सका तो सिकन्दर ने अपने चुने हुए 22 विशेष सेनापतियों की सभा बुलाई परन्तु इन में से कोई भी युद्ध के लिए तैयार न था।

अब विश्व–विजयी सिकन्दर का क्रोध जाग उठा, परन्तु तभी सैनिक चारों ओर से सिमट कर सिकन्दर के डेरे के बाहर जमा होने लगे। उनकी भावनायें उग्र थीं। माता–पिता भाई, बहन, पत्नि और बच्चों सभी से बिछोड कर जों उन्हें यहाँ पुनीत आर्य–धरती भारत में काल का ग्रास बनाने ले आया था–आज उसके विरूद्ध हिंसात्मक क्रोध और विद्रोह की भावना जाग उठी थी–सिकन्दर ने बुद्धिमता सें स्थिती अपने पक्ष में बदलने का यत्न करते हुए वापस चलने की आज्ञा दे दी।

परन्तु वापसी–वह भी तो अब भारतीय सैनिकों की इच्छा पर ही सम्भव थी जिन्होंने उसे अपने चक्रव्युह में

घेरने हेतु आगे बढने दिया था। पठानकोट से चम्बा मार्ग पर अभी तक एक गांव की सड़क का नाम है–सिकन्दर की चढ़ाई। जो आज भी सिकन्दर के आक्रमण के मार्ग की याद दिलाती है।

अब सिकन्दर ने सूद सेनापति केदार राय सूद से वापस लौटने के लिये मार्ग की तथा लौटती सेना पर पीछे से आक्रमण न करने की प्रार्थना की। परन्तु केदार राय सूद स्वयं सूदमहाराजा राय शाह सूद के अधीन भयाह दुर्ग का गवर्नर था और उसे सिकन्दर का मार्ग रोकने की आज्ञा मिली हुई थी। अतः उसने राजा की आज्ञा के बिना कोई विश्वास दिलाने से इन्कार कर दिया। इस पर लाचार सिकन्दर ने सूद राजा राय शाह के पास ऐसी ही प्रार्थना भेजी और क्षत्रिय के धर्म के अनुसार उसने सिकन्दर को सुरक्षित वापस चले जाने देने की आज्ञा दे दी। इस पर सिकन्दर ने अग्नि वंशी सूद क्षत्रिय की अत्यंत प्रंशसा की।

## सूद वंश का विकास

पीछे हम राजा सुदास तक का वंश परिचय दे आए हैं। राजा सुदास के दस बेटे थे जिन्होंने अपने अलग–अलग राज्य स्थापित किये।

सुदास के बहुगुण उसके संयाती तथा संयात का बेटा अहन एवं उसका रूद्राषु हुआ। रूद्राषु से रोध वंश की स्थापना हुई। इसकी पंद्रहवीं पीढ़ी में महाप्रतापी राजा हस्ति हुये जिन्होंने हस्तिनापुर आबाद किया–इसी महाराजा हस्ति से कौरव तथा पांडव और पांचाल वंश चला।

यहाँ भी इतिहासकारों ने बना कर एक घटना हमारे महान पुवर्जो से जोड़ दी है। द्रोपदी के पांच पति

नहीं थे अपितु वह अकेले अर्जुन से विवाहित हुई थी। बाकी चारों भाई राजा द्रोपदी के यहाँझगडा होने पर उठ कर चले गये थे। महर्षि व्यास ने कहीं भी द्रोपदी के पाँचों भाईयों की पत्नी होने का वर्णन नहीं किया और ''पाँचों भाई मिल कर बांट लो'' यह उक्ति उतनी ही स्वांगभरी (Dramatic)है जितनी कि राजा पोरस और सिकन्दर के बीच '' कैसा व्यवहार किया जाये'' वाली उक्ति है। इस दिशा में हमारी संस्था की ओर से ''द्रोपदी के पाँच पति नहीं थे'' – नामी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है उसे पढ़ें।

## महाभारत से सिकन्दर तक

महाभारत के पश्चात विजयी तथा विजित दोनों की ही जो दशा हुई, वह युद्धों के इतिहास में एक विशेष महत्व रखती है। अनेकों राज्य सुख शांति के स्थान पर निरन्तर नाश की ज्वाला में झुलसने लगे। इस महानाश के पश्चात भारत की राजनैतिक अवस्था अत्यंत शोचनीय हो गयी। राज–परिवार दूर–दूर बिखर गये। कोई भयवंश, कुछ हार कर तथा अनेक अपने राज्य कमजोर हो जाने के कारण दूर प्रदेशों में जा बसे। सूद वंश ने इस से पूर्व ही भारत के प्रमुख प्रदेशों पर राज्य स्थापित कर लिये थे। कन्घिम के शब्दों में This distribution of territory was disturb by the expulsion of Shri Krishn & hisfollowers and by immigaration in the Punjab.'

हर स्थान पर विद्रोह, रोग, भूख जो युद्ध के भीषण परिणामहुआ करते हैं–अशांति और आन्तरिक विद्रोह का कारण बनने लगे। महाभारत से लेकर सिकन्दर के आक्रमण तक का इतिहास प्रायः अन्धकार के गर्भ में है। केवल पुराण ही ऐसा साधन है, जो इस विषय में कुछ प्रकाश डालते है। महाभारत से सिकन्दर तक के युग को अंग्रेज इतिहासकार केवल ग्यारह सौ वर्ष का ही समय

मानते है जबकि भारतीय गणना के अनुसार महाभारत से सिकन्दर तक का युग 2778 वर्ष का बनता है। वास्तव से अंग्रेज हमारी गणित तथा ज्योतिष विद्या से अनभिज्ञ होने के कारण प्रत्येक राजा का समय 20 वर्ष औसत कर गुणा करके समय निश्चित कर देते हैं। इस प्रकार से ही तो हमारा इतिहास गलत एवं भ्रान्त प्रविष्टियों से भरा पड़ा है।

महाभारत के 26 वर्ष पश्चात् यादवों के गृह युद्ध से दुखित श्री कृष्ण जी स्वर्गवासी हुए और उन के बेटे प्रद्युमन को अपने हजारों अनुयायीयों सहित द्वारिका छोड़ कर पंजाब आ जाना पड़ा। श्री कृष्ण का यह वंश इस प्रकार से आगे बढा।

**प्रद्युमन (कृष्ण का बेटा)**

अनुरूद्ध

बृज

नाभ

खिर ;इनसे खेर वंश चलाद्ध

पृथ्वीबा

बाहुबल

सुबाहू

ऋजब

गज (इन्होंने गजनी नगर बसाया)

शल्यवाह

भलंद

भट्टी ;यह भाटिया वंश के निर्माता

मंगल

शुर राव (मुसलमानो से हार कर सूदों के यहां शरण ली)

मजूम राव (इसका विवाह अमर कोट के सूदों के यहां हुआ)

केहर | मूल चन्द | गोगली

केहर

तनू सिंह

दोसांझ(यह शाखा वर्तमान महाराजा जस्सनमेढ पर समाप्त होती है)

ऊपर सिकन्दर के आक्रमण में हम उसके समकालीन सूद महाराजा मेहरसेन का वर्णन कर आये है। यूँ तो अनेको सूदराज्य थे परन्तु सूद शिरोमणि महाराजा मेहर सेन का राज्य प्रयाग से अरब महासागर तथा मुक्करद्वीप तक फैला हुआ था। इसी को मुसलमान इतिहास मेहरस और सेहरस आदि लिखते आये है। इसी का राज्याभिषेक महाभारत से 2778 वर्ष बाद हुआ था। इस राज्य–परिवार ने 374 वर्ष 11 माह तथा 26 दिन शासन किया और इसी वंश में आगे चल कर राजा दाहिर हुये जिसका वर्णन यथा स्थान आगे आयेगा।

महाराजा मेहरसेन का वंश इस प्रकार आगे बढा।

धुन्धर (राजा आदित्य केतू को मार कर राज्य प्राप्त किया)

मेहरसेन =इसकी संतान माहर कहलाई। इसने चार वर्ष दो माहकिया

सरूचि =50 वर्ष दस मास राज्य किया।

| |
|---|
| महायुद्ध =30 वर्ष 3 मास 8 दिन राज्य किया। |
| दुर्नाथ =28 वर्ष 5 मास 25 दिन राज्य किया। |
| जीवनराय =45 वर्ष 1 मास 5 दिन राज्य किया। |
| अरिल्लक =52 वर्ष 10 मास 8 दिन राज्य किया। |
| राज्यपाल=30 वर्ष तथा राजा सुखवन्त के हाथों मारा गया। |

पीछे सूद वंश की ऊपरी रूप रेखा दी है ताकि साधारण पाठकगण भी पाये आगे आने वाले गहन इतिहासिक उलझनों कोभली–भांति समझ सकें। इतिहास से पूर्व यहाँ सूद शब्द की बनावट तथा पुरातन वेद–साहित्य में सूद शब्द के वर्णन का वृतांत–प्रस्तुत है।

## सूद शब्द की व्याख्या

सूद शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। इसलिये उर्दू फारसी अथवा किसी स्थानीय भाषा में उसका उद्‌गम ढूँढना अपनी अज्ञानता का परिचय देने से अधिक कुछ महत्व नहीं रखता। वास्तव में भारत के किसी भी पुरातन वंश के इतिहास को समझने के लिये हमें प्राचीन काल के सांस्कृतिक वातावरण में स्वयं को लाना पड़ता है जबकि काश्मीर का नाम काशीमर्ग, अजमेर का अजयमारू, जेहलम नदी का नाम वितस्ता तथा राज्यों का नाम जनपद एवं महाजनपद होता था। जब इंगलैड को अगंदलैड तथा जर्मन को श्रमण (मन्त्र) कहते थे। जब लाहौर को लवपुरी तथा कसूर कुशपुर कहे जाते थे। जब

बच्चों के नाम पिंकी, बाबी, बिल्लु नहीं अपितु ययाति, पुरू, भरत और हस्ति हुआ करते थे। उस महान भारत के सात्विक एवं समर्थ वातावरण का भ्रमण करने के लिये हमें अपनी वर्तमान शोचनीय एवं असहाय अघोगधि प्राप्त अवस्था से ऊपर उठना पड़ता है।

# सूद शब्द का निर्माण

महान आर्य भाषा संस्कृत की एक विशेषता है कि इसका प्रत्येक शब्द सार्थक है और व्याकरण के नियमों के अनुसार इसकी सन्धिच्छेद करने पर प्रत्येक अक्षर एवं उपसर्स अपना स्पष्ट अर्थ छोड़ता है। सूद शब्द भी जिन अक्षरों एवं उपसर्ग आदि से बना है वह निम्नलिखित है।

**सु+उत्+अः**

अर्थात् सुख अथवा सुगमता से ऊपर उठना अथवा उन्नति करना।

वैदिक भाषा के योगिक अर्थों में इस प्रकार से 'उत्तम ढंग से उन्नत अवस्था को प्राप्त करना' एक उन्नत एवं जागरूक आत्मा का प्रतीक है। उस सर्वव्यापक सत्ता से 'सूद' बना देने की प्रार्थना वेदों में बार–बार की गई हैजैसा कि आगे दिये गये मन्त्रों से स्पष्ट होगा।

# नीचे से ऊपर की ओर
## एक प्राचीन भारतीय परिपाटी

नीचे से ऊपर की ओर उन्नति करने की परिपाटी भारतीय सभ्यता एवं पुरातन संस्कृति का एक अंग है। वैदिक काल से ही हम केवल मौखिक प्रार्थना से ही नहीं अपितु क्रायात्मक रूप से भी इसे जीवन में ढालते चले आये हैं। चर्तुवर्ण व्यवस्था के इस महादेश में हर कोई नीचे से ऊपर उन्नति करने के लिये प्रयत्नशीलरहता था।

ऊपर से नीचे आने को हमारे यहाँ कभी उन्नति नहीं माना गया।

उदाहरण के लिये क्षत्रिय आत्मिक उन्नति एवं साधना द्वारा ब्राह्वाण पद को प्राप्त हुए–अर्थात् दूसरी श्रेणी(क्षत्रिय) से प्रथम श्रेणी (ब्राह्मण) को पहुंच गये। ऋर्षि विश्वामित्र तपस्या से ब्राह्वाण बने एवं उनके वंशज कौशिक ब्राह्मण हुये। क्षत्रिय राजा दिवोदास के उत्तराधिकारी मित्रायु से सोम मैत्रायण का जन्म हुआ जो मैत्रेय ब्राह्मण हुये। नर गर्ग (क्षत्रिय) से गर्ग ब्राह्मण तथा शिनि से शैन्य ब्राह्मण हुये परन्तु इसके विपरीत परशुराम, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि अनेकों ब्राह्मणों ने क्षत्रिय धर्म के अनुसार शस्त्र ग्रहण करके वीरतापूर्ण युद्ध किये परन्तु वह क्षत्रिय नहीं कहलाये। मूल कारण यहीं था कि ''उच्च वर्णों वाले अपने कर्मो पर स्थिर रहते हुये ऊपर की ओर उन्नति करते चले जायें'' वेदों में उसी को सूद कहा गया है। सूद शब्द के मूल अर्थ तथा उसकी व्याख्या के लिये इतना ही कह देना पर्याप्त है।

## वैदिक साहित्य सूद–महिमा

मन्त्र राशि का नाम वेद है एवं उसकी व्याख्या को ब्राह्मण ग्रन्थ कहा गया है। उनके दार्शनिक भागों को आरण्यक एवं उपर्निषद कहते हैं।

इस के पूर्व कि हम राजा मेहर सेन सूद एवं तत्पश्चात केबौद्धकालीन भारत तथा मुस्लिम एवं मुगल कालीन सूद वंश की परिस्थितियों का वर्णन करें हम उचित समझते है कि वैदिक साहित्य में सूद शब्द के प्रयोग उन वेद मंत्रों तथा सूद वंश से सम्बन्धित अन्य वेद कालीन वर्णन को विस्तार पूर्वक पाठकों के सम्मुख रखें।

सूर्य वंश तथा चन्द्र वंश में आगे चल कर विभिन्न सम्राटों के नाम पर नये वंश अस्तित्व मे आये। पुरू के

नाम पर पोरी, यदु से यादव, कुरू से कौरव एवं अधंक तथा वृष्णि से भी इसी नाम के वंश स्थापित हुये। महाभारत(1,8,5,34) में इसी आश्य का वर्णन मिलता हैं।

**यदोस्तु यादवा जातार्स्तुव सोर्यवना स्मृताः**
**द्रुह्मो सुतासु वै भोजा अनौस्तु**

इसी प्रकार से राजा सुदास से सूद वंश की स्थापना हुई। सूर्य–चन्द्र वंशियों एवं परस्पर चन्द्र वंशियों के विभिन्न राज–परिवारों में प्रायः युद्ध होते रहते थे। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन वेदों में भी आता है। इसे दासाज्ञ युद्ध का नाम दिया गया। तथा ऋृग्वेद (7,18,19,9,6,1,2) में इस युद्ध एवं तत्कालीन समाज का विस्तृत व्यौरा मिलता हैं।

इस वृतान्त के अनुसार राजा सुदास अत्यंत वीर एवं प्रतापी सम्राट थे। उन्होंनें अपने समकालीन यादव राजा भीम सात्वत के बेटे अधंक को हरा दिया। साथ ही हस्तिनापुर केपौरव राजा सवरंण को भी मार भगाया। पौरव राजा सवंरण ने यादवों, मतस्य, विषाणी, शिवि आदि अनेकों गणराज्यों को साथ मिला कर भारी सैन्य दल एकत्र किया परन्तु महाराजा सुदास ने अकेले ही अपनी सेना के साथ, भयानक युद्ध करके परूषणी (रावी)नदी के तट पर इन सम्मिलित सेनाओं को हरा दिया और राजा सवंरण को सिन्धु के उस पार के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी। राजा सुदास के दस बेटे हुये जिन्होंने देश के विभिन्न प्रदेशों में अपनी राजधानियां स्थापित की तथा परशुराम–कांड के पश्चात पुनः सूद वंश प्रकाश में आ गया।

# ऋगवेद में सूद वर्णन

वनस्पतिरवसृजन्नुपस्थात् अग्निर्हविः सूदयदि प्रधीभिः।
त्रिधा समत्क नयतु प्रजानन् देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम्।। ऋग्02/3/10

वनस्पतेडव सृजोप देवान् अग्निहंविः शमिता सूदयाति।
सेदू होता सत्यतरो यजाति यथा देबाना जनिमानि वेद।।
ऋग्03/4/10

त्वया वयं सधन्यसन्त्वोताः तव प्रणीत्यश्याम वाजान्।
उभा शंसा सूदय सत्यताते अनुष्ठुया कृणह्वाहृयाण।।
ऋग्04/4/14

आशुं दधिकां तमु नुष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चक्रिराम।
उच्छन्तीममिुषसः सूदयन्तु आति विश्वानि दुरितानि
पषंन् ।।
ऋग्04/39/1

बौद्धकालीन भारत तथा मुस्लिम एवं मुगल कालीन सूद वंश की परिस्थितियों का वर्णन करें हम उचित समझते हैं कि वैदिक साहित्य में सूद ाब्द के प्रयोग, उन वेद मंत्रों तथा सूद वंश से सम्बन्धित अन्य वेद कालीन वर्णन को विस्तार पूर्वक पाठकों के सम्मुख रखें।

सूर्य वंश तथा चन्द्र वंश में आगे चल कर विभिनन सम्राटों के नाम पर नये वंश अस्तित्व में आये। पुरू के नाम पर पोरी, यदु से यादव, कुरू से कौरव एवं अधंक तथा वृष्णि से भी इसी नाम के वंश स्थापित हुये। महाभारत (1, 8, 5, 34) में इसी आश्य का वर्णन मिलता है।

यदोस्तु यादवा जातार्स्तुव सीर्यवना स्मृताः
दुह्यो सुतासु वे भोजा अनोस्तु

इसी प्रकार से राजा सुदास से सूद वंश की स्थापना हुई। सूर्य–चन्द्र वंशियों एवं परस्पर चन्द्र वंशियों के विभिन्न राज–परिवारों में प्रायः युद्ध होते रहते थे। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन वेदों में भी आता है। इसे दासाज्ञ युद्ध का नाम दिया गया। तथा ऋग्वेद (7, 18, 19, 9, 6, 1, 2) में इस युद्ध एवं तत्कालीन समाज का विस्तृत ब्यौरा मिलता है।

इस वृतान्त के अनुसार राजा सुदास अत्यन्त वीर एवं प्रतापी सम्राट थे। उन्होंने अपने समकालीन यादव राजा भीम सात्वत के बेटे अधंक को हरा दिया। साथ ही हस्तिनापुर के पौरव राजा सवंरण को भी मार भगाया। पौरव राजा सवंरण ने यादवों, मतस्य, विषाणी, शिवि आदि अनेकों गणराज्यों को साथ मिला कर भारी सैन्य दल एकत्र किया परन्तु महाराजा सुदास ने अकेले ही अपनी सेना के साथ, भयानक युद्ध करके परूषणी (रावी) नदी के तट पर इन सम्मिलित सेनाओं को हरा दिया और राजा सवंरण को सिन्धु के उस पार के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी। राजा सुदास के दस बेटे हुये जिन्होंने देश के विभिन्न प्रदेशों में अपनी राजधानियां स्थापित कीं तथा परशुराम –कांड के पश्चात पुनः सूद वंश प्रकाश में आ गया।

## ऋगवेद में सूद वर्णन

वनस्पतिरवसृजन्नुपस्थात् अग्निर्हविः सूदयदि प्रधीभिः।
त्रिधा समत्क नयतु प्रजानन् देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम्।।

ऋग02/3/10

वनस्पतेडव सृजोप देवान् अग्निहंविः शमिता सूदयाति।
सेदू होता सत्यतरो यजाति यथा देबाना जनिमानि वेद।।

ऋग03/4/10

त्वया वयं सधन्यसन्त्वोताः तव प्रणीत्यश्याम वाजान्।

उभा शंसा सूदय सत्यताते अनुष्ठुया कृणह्वाहृयाण।।
ऋग04/4/14

आशुं दधिकां तमु नुष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चक्रिराम।
उच्छन्तीममिुषसः सूदयन्तु आति विश्वानि दुरितानि पर्षन् ।।
ऋग04/39/1

इन्द्रमिवेदुभये विहयन्त उदीराणा यज्ञमुप्रयन्तः।
दधिकामु सूदनं मर्त्यय ददथुर्मित्रावरूणा नो अश्रव्म्।।
ऋग04/39/5

दधिकाव्ण इदु नु चकिंराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु।
अपामग्रेरूषसः सूर्यस्य बृहस्पतेराङ्गिरसस्य जिष्णोंः।।
ऋग04/40/1

स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्ठरः।
अग्ने रयिं मधवभ्द्यो न वह हव्थदातिं च सूदय।।
ऋग07/16/9

आ वातस्य ध्रजतो रम्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः।
महो दिवः सदने जायमानो अचिकदद्वृषभः सस्मिन्नूधन्।।
ऋग07/36/3

यज्ञेभिरद्भुतकयं कृपा सूदयन्त इत्।
मित्र न जने सुधितमृतावनि।।
ऋग08/23/8

मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भंग च।
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रत्।।
ऋग09/97/44

स इदृानाय दभ्याय वन्वन् च्यवानः सूदैरमिमीत वेदिम्।

तुर्वयाणों गूर्तवचस्तमः क्षोदो न रेत इत ऊति सिच्चत्।।
ऋग010/61/2

सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिः महो महीरवसा वक्षणीः।
देवीरापो मातरः सूदयित्नवो घृतवत्पयो मधुमत्रो अर्चत।।
ऋग010/64/9

औंम आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः।
ऋतरय पथा मनसा मियेधो देवेभ्यो देवतमः सुषूदत्।।
ऋग010/70/2

ओंम नराशंसः सूषूदति इमं यज्ञमदाभ्यः।
कविहिं मधुहस्त्यः।।
ऋग05/5/2/2

## यजुर्वेद में सूद महिमा

अद्धंमासाः परू षिते मासाः आच्छयन्तु शम्यन्तः।
अहोरात्राणि मरूतो विलिष्ठ सूदयन्तु ते।।
यजुर023/41

वनस्पते ङवसृजा रराणस्त्मना देवेषु।
अग्निर्हव्य शमिता सूदयाति।।
यजुर027/21

## अथर्ववेद मे सूद वर्णन

यत्त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद्वा केशेषु प्रतिलक्षणे वा।
सर्व तद्वचाप हन्मों वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु।।
अथर्व01/18/3

आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु घृतेना नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हिरिप्रं प्रवहन्ति देवीः उदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि।।
अथर्व0 6/51/2

# विविध वेदों में सूद वर्णन

आ यदिषे नृपतिं तेज आनठ् शुचि रेतो निषित्किं द्योर भी के।
अग्निः शर्धमनवद्य युवानं स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च।।
ऋग्01/71/8यजुर033/11

यते सादे महसाशुकृतस्य पार्ष्ण् या वा कशया वा तुतोद।
रत्रचेुवता हविषों अध्वरेषु सर्वा ताते ब्रह्मणा सूदयामि।।
ऋग01/162/17 यजुर025/40

त अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः।
जन्मन्देवानां विशः त्रिष्वा रोचने दिवः।।
ऋग08/69/3 यजुर012/55/16/60

वेद मन्त्रों में महाराजा सुदास, दिवोदास आदि अनेकों राजाओं, यादव, पौरव, तर्बसु आदि जातियों तथा परूषणी सिन्धु आदि अनेकों नदियों एवं दासाज्ञ आदि युद्धों का वर्णन मिलता है जिससे वेद कालीन सामाजिक अवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। परन्तु सूद आदि शब्द प्रायः योगिक अर्थो में प्रयुक्त हुए है, लौकिक अर्थो में नहीं।

यहाँ एक विवादास्पद प्रश्न उठ खडा होता है कि वेदों में इतिहास है कि नहीं। कई बार अनेकों प्रकार से इस प्रश्न को उठाने का प्रयत्न किया गया। इसलिये लाहौर में महात्माहंस राज जी ने एक गोष्ठी का आयोजन किया था कि दोनों पक्ष इस विषय में अपने विचार रखें। महान विद्वानों ने सप्रमाण अपने–अपने तर्कदोनों पक्षों में

प्रस्तुत किये थे परन्तु अन्तिम निर्णय नहीं हो सका था। इस विवादास्पद विषय को हम अपना इस समय का विषय न समझते हुये हम इतना कह कर यहीं छोड़ते है कि सूद शिरोमणि महाराज सूदास के वर्णन के साथ ही ऋग्वेद के दसवें अध्याय में वर्तमान पंजाब का वर्णन मिलता है। जिसका वर्णन राजाकृष्ण मिशन ऑफ कल्चर ने Cultural Heritage of India के अर्न्तगत तीन जिल्दो में प्रकाशित किया इस वर्णन के अनुसारः–

The heart and centre of the Arya Dominion reflected by these earliest books is the Region between the Himalya and the Rajputana bounded by the upper courses of the Ravi on the West and by the Gangas and Jamuna. On the East. This only in the 10th book of the Rig Vedic Hymns-accepted as chronologically the latest stratism-that the Punjab is disclosed clearly to the view.

The home of the Aryan forces was north and East of the Satluj as "Sudas" the Vedic hero had the River Yamuna on his Eastern frontier and Sage Vashista describes the crossing of the Rivers from the Eastern side, commencing with the Satluj & going as far as the banks of Ravi.

Rig Veda III, 33VII, 18,3,83

इस प्रकार से महाराज की वीरता का वर्णन उस की राज्योंकी सीमा एवं राज्य में बहने वाली नदियों आदि का विषद वर्णन ऋग्वेद में स्पष्टतः मौजूद हैं।

# अग्नि कुल एवं प्रमार वंश

पीछे हम ने सूद जाति को जो अग्नि कुल एवं प्रमार वंश से लिखा है। इस की पृष्ठ भूमि एवं व्याख्या नितांत आवश्यक है।

पीछे हम सूद जाति को अग्नि कुल, प्रमार परिवार एवं चन्द्र वंशीय लिख आये है—इस से पूर्व कि हम इतिहास—सागर की गहराईयों में उतरें—इन उक्तियों की व्यााख्या एवं एतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालना अत्यंत आवश्यक है।

## अग्नि कुल

जहाँ तक अग्नि कुल का सम्बन्ध है। ऋग्वेद के रचनाकार महर्षि अग्नि माने जाते है। ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र—

**अग्निमीढेपुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम।**
**होतार रत्न धातमम्।। 1।।**

ऐसी धारणा है कि इन महर्षि के वंशज निरन्तर तपस्या में लीन सैकड़ों पीढ़ियों तक भारत की अध्यात्मिक उन्नति हेतु क्रियाशील रहे। महात्मा गौतम बुद्ध के समय में इसी वंश की विभूतिमारण्कय अथवा मेकव ऋषि आबू पर्वत पर साधना में लीन थे। इन्हीं के पास जाकर ब्राह्मणों ने दयनीय अवस्था में प्रार्थना की थी। कि हे ऋषिवर बौद्ध, जैन आदि नास्तिक मत भारत आर्यवत में फैल कर ब्राह्मण, ऋर्षि, यज्ञों एवं वेदों का घोर अपमान कर रहे हैं—भारत की अध्यात्मिक पूँजी लुट रही है—क्या वेदों एवं आर्य संस्कृति की रक्षा हेतु आप कोई उपाय नहीं करेंगें।

तब दयार्द होकर इन्होंने ही आबू पर्वत पर यज्ञ करने का आदेश दिया था तथा वशिष्टि मुनी जी की अध्यक्षता में अग्नि के सम्मुख दीक्षित करके भारत के चार महावीरों को प्रमार, चहवान, सोलकी एवं परिहार नाम देकर उन्हें स्वयं को एक परिवार अर्थात अग्नि कुलीन जानने एवं धर्म, वेदों तथा आर्य जाति की रक्षा एवं नास्तिक मत–मतान्तरों की समाप्ति का आदेश दिया था। जिसका वर्णन आगे करेगें।

इस प्रकार से शेष तीनों सहित सम्पूर्ण प्रमार वंश एवं उसकी मुख्य शाखा सूद अग्नि कुलीन सूद कहलाने लगे। यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर ने भी 'अग्नि कुल के सूदों' को अत्यंत वीर वचन के सच्चे, यज्ञ आदि नित्य करने वाले कह कर उन की प्रशंसा की थी। जो भी हो अग्नि कुल का सीधा सम्बन्ध आबू पर्वत पर हुये महायज्ञ एवं अभी तक वहां बने हुये अग्नि कुण्डों से है। ऐसा विचार भी है कि यह अग्नि कुण्ड इस यज्ञ से पूर्व ही वहां मौजूद थे और वहां ऋर्षि यज्ञ आदि किया करते थे।

## महायज्ञ की पृष्ठभूमी

महाभारत के युद्ध के पश्चात भारत की राजनैतिक तथा आर्थिक के साथ–साथ सामाजिक अवस्था भी अत्यंत शोचनीय हो गई थी। सारे देश में षडयंत्रों की भरमार हो गई तथा आर्य जाति की कमजोर स्थिति को भांप कर अनार्य साहित्य और राक्षिसी संस्कृति की लहर जोर पकड़ने लगी।

इसी लहर का विकास श्री रामचन्द्र जी ने रोका और इस अनार्य संस्कृति का नाश करके रावण को सपरिवार समाप्त किया जिसे अनेको रूपों में ग्रन्थों में प्रस्तुत किया गया है।

महाभारत तथा नागदमन यज्ञ के बाद इस संस्कृति ने पुनः जोर पकडा। इस लहर की दों धाराऐं थीं। प्रथम लहर तो दक्षिण के द्राविड़ ब्राहमणों की थी जिन्होंने संस्कृत का विद्वान होने के कारण वैदिक साहित्य तक पहुँच बना कर मन्त्रों की मनमाने ढंग से व्याख्या की तथा अर्थो का अर्नथ करके गौमांस, मदिरा, नरबलि आदि को वेदों में वर्णित तथा धर्म के अनुसार ठीक बताया साधारण जनता वेदों की विद्वान न थी अतः इन्हीं अनुवादों को पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया जाता था जैसे वाल्मीकी की रामायण तथा व्यास की महाभारत के सैंकड़ों मनमाने अनुवाद तथा भाष्य साधारण जन आज प्राप्त कर के पढ़ते है तथा हनुमान जी की पूंछ तथा द्रोपदी के पाँच पति एवं सागर को छलांग से पार कर जाने जैसी नई–नई कहानियों का जन्म होता गया हैं।

दूसरे चार्वाक, आनन्द मार्गी तथा आगे चलकर बौद्धी नास्तिक हुए जिन्हों ने अवैदिक साहित्य तथा नास्तिकता एवं नपुंसकता फैलाने वाली शंति को भारत के कोने–कोने में फैला दिया।

महाभारत के महानाश और नागदमन के भीषण परिणाम परस्पर की फूट, लाखों विधवाओं के आर्तनाद तथा राष्ट्र के चरित्र का पतन सामने था। ऐसे समय में ऋर्षि परम्परा अभी चली आ रही थी और ब्रहम ज्ञानी इन आर्य मुनियों नें ही राष्ट्र को ऐसे पतन के गर्त से बचाकर भारत को वर्ण संकर संतान तथा पतित विधवाओं से बहुत सीमा तक बचाये रखा।

अभी तक पुराणों की रचना नहीं हुई थी और एक ईश्वरवाद तथा वेदों के सिद्धांत ऋर्षि मुनियों में प्रेरणा फूँकते रहते थे परन्तु ऋर्षि युग का स्थान जैसे ही ब्राहमण युग ने लिया तो देश की एकता अनेकता के तथा वेद मत सैंकड़ों मत–मतान्तरों के बोझ तले छिप गया। उसी का परिणाम हम आज भुगत रहे हैं। इस से पूर्व वेदों ने भारत को अध्यात्मिक एकता के सूत्र में बांध रखा था

और प्रत्येक आर्य स्नान करते समय यही मंत्र बोला करता था।

गंगें च यमुने चैव सरस्वती गोदावरी
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिनसन्निंधि कुरू

अर्थात मैं गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी आदि नदियों के सम्मिलित जल में स्नान करता हूँ भले ही घर में स्नान कर रहा हो परन्तु उत्तर और दक्षिण की तमाम नदियों का नाम राष्ट्रीय अखंडता का प्रतीक था।

परन्तु इस के पश्चात ऋषि युग के समाप्त होते ही ब्राहम युग का आरम्भ हो गया। यह तपस्वी एवं मनीशी न हो कर मंत्रो को पुस्तकों से पढ़कर बोलने वाले रूढिवादी लोगों का समूह था। इन्होंने अपने प्रभाव को बढाने के लिए नए एवं तर्कहीन श्लोकों की रचना की।

यथा 'ब्रह्मद्रोही वनस्पति' अर्थात ब्राह्मण का द्रोह करने वाला नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार एक ईश्वर के स्थान पर नाना देवी देवताओं के अवतारवाद ने जन्म लिया। अनेकों पुराण इसी समय में रचे गये।

अग्नि, वरूण आदि वैदिक देवताओं का स्थान राम, कृष्ण श्री हनुमान, चण्डी भैरवी आदि अनेकों ने ले लिया और अपने इष्ट देवता को बडा सिद्ध करने के लिये अनेकों कथायें एवं ग्रन्थ रचे गये। सूर्य एवं चन्दरवंशी अपने–अपने वंश में जन्म लेने वाले अवतारों के नाम पर दूसरों के प्रति घृणा का प्रचार करने लगे।

सुदास के वंशज इस लहर के प्रभाव से तो न बच सके परन्तु इनके सम्मुख वैदिक एक ईश्वर एवं अध्यात्मिक एकता का महान आदर्श था। अतः जब आबु पर्वत के महायज्ञ का आयोजन तमाम आर्यो को अग्निवंश के एक मंच पर एकत्र करने के लिये किया गया तो सुदास वंशज प्रमार सबसे पहले एवं प्रमुख रूप में सम्मुख आये और अग्निवंश का नेतृत्व सम्भाला।

इस प्रकार वह भारत जो अनेकों विचार धाराओं मत–मतान्तरों, वंश–उपवंशों से खण्डित हो कर अपनी एकता खोचुका था उसे पुनः स्थापित करने के लिये आबू के महायज्ञ में सूद प्रमुख रूप से आगे आये।

## एक सूचना

महाभारत से लेकर सिकन्दर के आक्रमण तक का इतिहास पूर्णतः अधंकार में है। हमारी स्वयं इस विषय पर खोज पूर्ण पुस्तक 'महाभारत के बाद का भारत' श्री मदनेश लिखित प्रकाशित हो रही है जो आजीवन सदस्यों को निशुल्क दी जाएगी।

पीछे मैंने अवतारों का वर्णन किया है। प्रथम तो एक देवता के उपासकों ने दूसरे देवताओं के उपासकों के विरूद्ध घृणित एवं निन्दा योग्य मन गढंत कथाएं जोड़ी। दूसरे इस परस्पर की होड़ का लाभ उठाकर विदेशी आक्रमणकारियों ने इन देवताओं के रूप को अत्यंत विकृत करके उन्हें हास्यस्पद रूप में प्रस्तुत किया ताकि हम उनसे कोई प्रेरणा न पाकर स्वयं को हीन समझते रहें।

इसी प्रकार तो हनुमान जी को वानर जाति के श्रेष्ठ आर्य वीर समझने की अपेक्षा एक पूंछ धारी बन्दर बना कर रख दिया गया। द्रोपदी का विवाह अर्जुन से हुआ था। परन्तु उसेएक मन गढ़ंत नाटकीय कथा द्वारा पाँच पतियो की पत्नि बना दिया गया।

अकबर और औरगंजेब के समय में रामायण, महाभारत पुराणों आदि के ऊर्दू, हिन्दी फारसी में तथा अग्रेंजों के समय में ऐसे अनुवाद कराये गये जिनमें अर्थों का अनर्थ जानबूझ कर षडयन्त्र बनाकर प्रस्तुत किया गया ताकि संस्कृत से अनभिज्ञ गलत अनुवाद पढ़कर अपने पूर्वजों से घृणा करने लग जाये।

गलोसरी आफ ट्राइब एन्ड कास्टस में सूदों के समय में घृणित बातें तथा फरिश्ता के राजपूतों को रजियापूत (राजिया धोबिन की अबैध संतान)कह कर वर्णित किया जाना इसी श्रृंखला की कड़ीयाँ है।

इस विषय में हमारी संस्था द्वारा प्रकाशित किये जाने वाली पुस्तक 'भारतीय इतिहास सें विदेशी व्यभिचार' के अध्ययन से आप को ज्ञान का नया प्रकाश मिलेगा।

इस विषय में यह भी कह दूं कि इस व्यभिचार का सबसे बडा शिकार सूद एवं उन की पूंजी ही थी। इसका लाभ महाभारत सें बौद्ध युग तक आनन्द मार्गी चार्बाक, द्रविड, ब्राह्मण तक शक, हुण आदि अवैदिक तत्वों ने उठाया और देश, राष्ट्रउसकी परम्परा, महान पूर्वजों की साधना से संचित विरासत सब इस अज्ञानपूर्ण कालिमा के अन्य कूप में जा गिरी।

उस युग में रचित श्लोकों का एक रूप तो देखें।
मद्य मांस विहीनेन न करोति पूजन शिवे।

अर्थातः शिव जी कहते है कि मांस मदिरा के बिना मेरी पूजा नहीं की जानी चाहिये और स्त्री पूरूष गुप्तागों......................... आदि अश्लील कार्य पूजा का अंग बताये गये हैं।

देवताओं एवं अवतारों के साथ परस्पर विरोध भी बढ़ता चला गया। शैव, शाक्त, भैरव, कृष्ण पंथी, राम के पुजारी अपने इष्ट देवता को महान तथा अन्य को हेय सिद्ध करने के लिये नित नई कथायें रचने लगे। परिणाम स्वरूप राष्ट्र की एकता पर अनेकता छा गई। साथ ही एतिहासिक ग्रंथों में मिल गई इन बाद की कथाओं ने तमाम इतिहास को न समझ पाने योग्य उलझन तथा अविश्वास योग्य चमत्कार पूर्ण घटनायों का गोरखधन्धा

बना कर रख दिया। अपने प्रभुत्व प्रभाव तथा महानता को दूसरों से मनानेम के लिये संस्कृत ग्रंथों में अनेकों श्लोक स्वयं बनाकर मिला लिये।

नगरों में रहने के कारण ऋषि युग का अनुशासन, तपस्या तथा योग युक्त सात्विक जीवन समाप्त हो गया। एवं ब्राहमण नगरों के एश्वर्य तथा राजाओं एवं धनिकों के युग को अपने पीछे चलाने के स्थान पर स्वयं युग के पीछे–पीछे चलने लगे। ऋषि से ब्राह्मण युग में प्रवेश के साथ ब्रह्मण वर्ग भीख मंगों सा स्वाभिमानहीन एवं तेज हीन तथा धनी क्षत्रियों एवं वैश्यों पर आश्रित एक भाट एवं चापलूस वृति का समुदाय बन कर रह गया।

यही कारण है कि महाभारत के पश्चात परशुराम, गोतम, विश्वामित्र, कण्व, वसिष्ठ, भारद्वाव एवं कश्यप,अत्रि, अगस्तय आदि ऋषि केवल मात्र ग्रन्थों की ही गाथा बन कर रह गये।

इन्हीं कारणों से जन–जन में एकशंका उभरी कि कथा ऐसे ब्राहमणों में पूर्वंज महान ऋषियों का होना सम्भव भी कहा गया किवह सब कल्पना एवं सत्यहीन नाटकीय पात्र थे।

जैसे आज भी कभी–कभी डा. सरकार जैसे कुंठित वृति के विद्वान बोल उठते है कि रामायण तथा महाभारत काल्पनिक ग्रन्थ हैं। ऐसे कोई व्यक्ति अथवा घटानायें हुई ही नहीं। हालांकि रामायण तथा महाभारत में वर्णित एक–एक स्थान वहीं पर बराबर मिल रहा है यहाँ स्थित उसे इन ग्रन्थों में बताया गया है यथाः–

रामायण में वर्णित स्थानों में अगस्तय आश्रम, अर्ध गंगा, अपरताल ;रामपुर के उतर का प्रदेशद्ध अपर विदेह, अर्बुद ;आबू पर्वतद्ध अयोध्या, अंग अवन्ति, अशुमति, अर्नत ;ऊतरी गुजरातद्ध इक्षुमर्ता, इन्द्र प्रस्थ, इल्बल ;एलौराद्ध,

उज्ज़ीहान ;बदांयु जिलाद्ध, उशोनर ;दक्षिणी अफगनिस्तान, कर्णाट बीजापुर का क्षेत्र, कर्मनाशा, कालिंगा, कांची, कान्यकुब्ज, कामाश्रम ;सरयु तथा गंगा के संगम परद्ध कामरूप, कांलिदी काशी, किनिष्कन्धा, कुशावती, जाबालिपटन ;जबलपुरद्ध गंर्धव ;काबुल नदीं का तटद्ध, भेलसा, नैमिषारण्य पंचवटी, चित्रकूट, मल्लदेश ;मालवाद्ध महोदधि (बंगाल की खाडी) लाहौर (लवपुर) चन्द्रभागा, सरयु सरस्वती आदि सैंकडों स्थान आज हमें ज्यौ के त्यूं मिल चुके है।

ऋषि भारद्वाज का आश्रम इलाहबाद में गंगा के उस ओर था जो हमें सप्रमाण मिल चुका है और मैंने उसस्थान के दर्शन किये है। लोग प्रायः गंगा के इस ओर नगर में ही घूमते है। उस पार जंगली प्रदेश में लोग नहीं जाते यदि उस ओर पार करके तट के साथ–साथ कुछ समय चलते रहे तो भारद्वाज ऋषि के आश्रम के भग्नाशेष के दर्शन होते हैं साथ वह कुआं मिलता है जिसे महाराजा पुरवां ने बनवाया था। इसका नाम मनु की बेटी इला के नाम पर इला प्रदेश था। इस प्रकार से महाभारत में वर्णित यहीं दशा अध्यायों में वर्णित इन्द्रप्रस्थ (मेरठ) खाण्डवबन, विराट, (जयपुर के पास)(उतरी बुंदेल खण्ड) शौरसेन (मथुरा) गन्धार, कम्बोज, रोहतंग (रोहतक) आदि प्रदेशों की है अतः कैसे मान ले कि इन तमाम सत्य वर्णनों के होते हुए यह ग्रन्थ काल्पनिक तथा कहानीमात्र है। इसी का विस्तार से वर्णन महान ग्रन्थों और हमारी शोध पुस्तकों ‘‘भारतीय इतिहास से विदेशी व्यभिचार’’ तथा भारत का राष्ट्रीय इतिहास जैसे उज्जवल ग्रन्थों में मिलेगा जो हमारी संस्था प्रकाशित कर रहीं है।

इतना ही नहीं उन ग्रन्थों में वर्णित महान पुरूषों के वंशज एवं उन की संतान आज तक चली आ रही मिल चुकी है। इसका एक संक्षिप्त रूप देखें।

1 महाभारत के द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, आदि से मुहियाल ब्राहमण हुए?
2 महाभारत के पुरू की संतान प्रमार राजपूत तथा पंजाब के पुरी क्षत्रिय है।
3 कौरवों के वंशज पंजाब में कौर तथा पांडवों के वंशज कपूर है।
4 लव–कुश के वंशज पंजाब में मेहरा, खीसला, लाम्बा, सोढी., बेदी आदि हैं।
5 महाराज नल (दमयन्ति के पति) के वंशज चौपड़ा कहलाये।
6 महाराजा सूदास की संतान सूद कहलाई।
7 यादव से यदू वंश चला तथा इसी वंश के राजा भाटी से भाटिया वंश चला। आज के महाराजा जस्सलमेर इसी वंश तथा भगवान कृष्ण की सीधी संतान है तथा कृष्ण से वर्तमान महाराज जस्सलमेर तक ही पूर्ण वंशावलि हमारे कार्यालय में मौजूद है।

श्री राम के पूर्वज महाराजा काकुस्थ का वंश उत्तर में कक्कर, काकराण कहलाते हैं तथा दक्षिण भारत में काक एवं यू. पी. में काकराण कहलाते है।

श्री रामचन्द्र के वंशज उदयपुर के महाराणा है। सांगा तथा प्रताप इसी वंश में हुए। राजा बुध से बुधवार वंश चला। वरिक वर्द्धन से वरिक वंश।

इसी प्रकार भारत के आज के तमाम राजवंश, गोत्र जातियां एवं अल्ले किस महापुरूष की वंशज है इसकी पूर्ण सूची हमारे कार्यालय में मौजूद है।

अतः यह तमाम ग्रन्थ इतिहासिक है तथा काल्पनिक होने की बात वास्तव इतनी ही गलत है जितनी की गलोजरी आफ ट्राईबज एंड कास्टम में वर्णित

सूदों के दो चार सौ वर्ष के ही होने तथा ब्याज खाने वाली उक्ति गलत है।

वास्तव में पहले हमें ठगा था संस्कृत जानने वाले लोगों ने और अब हमारी विरासत को लूट रहे है संस्कृत न जानने वाले लोग और दोनों ही दिशाओं में लूटी है भारत की सांस्कृतिक पूंजी।

आज किसी में साहस नहीं कि कह सके कि अंजील बाइवल, कुरान तथा ईसा मुहम्मद आदि भी काल्पनिक पात्र हैं। परन्तु इस धर्म–निरपेक्ष भारत में केवल मात्र हिन्दु धर्म ग्रन्थ एवं संस्कृति को हर राह जाता व्याक्ति भी जो चाहे कह कर निकल जाता है कमजोरी हमारी अपनी है दोष दूसरों को क्या दें।

## महायज्ञ की ओर

ब्राह्मण युग के साथ–साथ अपने ही स्वार्थों के लिए ब्राहमणों में यज्ञ, धर्मकाण्ड तथा रीति–रिवाजों के सम्बंध में एवं दान–पुण्य के नाम लूट मचाने के लिये ऐसे–ऐसे श्लोक रचे गये और नई–नई पृथायें चलाई कि निर्धन जनता के लिये भगवान अत्यंत महंगी वस्तु बन गया। यज्ञ आदि केवल राजा गण तथा धनी–मानी लोग ही कर सकने योग्य रह गये।

यह लूट इतनी बढ़ी की बेकार बैठे पंडितों ने सस्ते दामों पर स्वर्ग के टिकट बेचना आरम्भ कर दिया। जो भी विशेष धनएवं गाय ब्रह्ममण को दे वह स्वर्ग चला जाये।

इसी प्रकार अपने दब–दबे को बनाये रखने को ब्रहमणों ने प्राचीन ऋषिओं के उदाहरण दे कर राजाओं से भी सम्मान प्राप्त करने का यत्न किया तो दूसरी ओर संस्कृत भाषा में स्वार्थ भरे श्लोक बनाकर उन्हे सुनाने

लगे जिसका अर्थ किब्राह्मण भगवान के सीधे प्रतिनिधी है ब्राह्मण देवता है। इनका विरोध करने वाला नष्ट हो जाता है आदि।

निर्धन लोगों को हरिजनों का दर्जा देकर उन्हें (धन न दे सकने के कारण) वेद तप तथा ज्ञान प्राप्ति के अयोग्य बना दिया गया।

## नयेयुग का आगमन

इसी अत्याचार जो प्रतिक्रिया हुई। पहले तो इन से ऊब कर लोग वेदों से दूर होने लगें फिर धर्म से दूर हो जाने पर व्यसनों में पड़ गये।

ऐसे समय में जनता को पतन से बचाने तथा जागृत करने के लिये दो महान हस्तियां आगे आई।

1 महात्मा बुद्ध
2 स्वामी शंकराचार्य जी

एक ने तो जनता को ऐसे धर्म, वेदोएवं रीति–रिवाजों के विरूद्ध जनता को ललकारा तथा अशांत शांति का लालच देकर गलत मार्ग पर ले चले।

दूसरे परम विद्वान तथा वेदो में पारंगत श्रेष्ठ तपस्वी थे। उन्होंने इसकी तमाम बुराईयों तथा ठोंसी बातों की परत को हटाकर धर्म, संस्कृति तथा वैदिक ग्रन्थों का असली स्वरूप जन–जनके सामने रखा जिसे पाकर लोग निहाल हो उठे और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा हो गई।

## एक शुभ सूचना

# मदनेश जी के भाषण

मदनेश जी केवल इतिहासकार नहीं आत्मदर्शी, तपस्वी तथा तरूण विचारक एवं उच्चकोटी केवक्ता भी हैं। जो संस्थायें उनके भाषण का लाभ उठाना चाहे वह निम्न पते पर सम्पर्क करें। विषय एतिहासिक, अध्यात्मिक एवं सामाजिक होना चाहिये।

- *Secretary*

**Lost Glory Research Institute**

Tripti Ashram, Ram Bagh Road Amritsar-2

अग्नि ऋषि के वंशजो ने आबू पर्वत पर वैदिक भारत की सांस्कृतिक मर्यादा की रक्षा हेतू जिस महायज्ञ का आयोजन किया वह एक एतिहासिक तथ्य है और वास्तव में हर विचार धारा की एक आयुहोती है। बौद्ध मत जिस तीव्र गति से फैला वह एक आश्चर्य से कम नहीं परन्तु इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि यह धर्म अपने जन्म स्थान भारत से ही शीघ्र ही बहिष्कार प्राप्त कर बैठा जब कि विश्व के अन्य भागों में अनेक रूपों में यह आज भी प्रचलित है। वास्तव में भारतीय विद्वानों ने भारत को इस मत से कुप्रभावों सें बचाने के लिये दोहरा आक्रमण किया। एक और वैदिक एवं पौराणिक मत के विद्वानों ने धर्म के पूर्ण उत्थान हेतु अभियान आरंभ कर दिया। जब दुर्गा काली,शीतला, भैरव आदि देवीयां एवं विष्णुराम कृष्ण आदि देवता लोक प्रिय होते गये तो विवश हो कर बौद्धों ने भी अपनी विचार धारा के प्रतिकुल मंजू श्री. तारा, अविलोकितेश्वर नामक देवी देवताओं की कल्पना कर डाली और पौराणिक मत के समान ही अपने मत को भी अनेको शाखायें बना डाली। यह बौद्धों की पहली हार थी। इसके उत्तर में सनातन भारतीयों ने बुद्ध को भी भगवान के दस अवतारो में गिन कर बौद्धों से उन का सर्वस्व छीन लिया। बौद्ध मत में अब पुरानी आचार–संहिता नहीं रह गई थी। यहाँ तक कि मांस खाना आदि उचित समझा जाने लगा था। तान्त्रिक पद्वति के प्रचार के कारण बज्र यानी शाखा के बौद्ध शाक्तों के निकट आते गये इसी प्रकार हिन्दु देवी–देवताओं एवं मन्दिरों की लोकप्रियता को देख कर जैन मत ने भी श्वेताम्बर, दिगम्बर आदि शाखाएंतथा मूर्ति पूजा एवं अन्यमन्दिरों के निमार्ण की प्रथा को अपना लिया बुढ़िया उस समय जब धार्मिक एवं सांस्कृतिक ''महाज'' पर विचार–धाराओं का युद्ध जारी था। तभी वाममार्गी, चारवाक एवं बौद्ध राजाओं की सैन्य शक्ति को तोड़ने के लिये आबू के महायज्ञ की पूर्णहिति डाली गई। चार चुने हुये महावीर तेजस्वी क्षत्रिय राजकुमारों को अग्नि से दीक्षित करके उन्हें अग्नि वंशीय राजपुत्रों का नाम दे कर उन्हे चारों दिशाओं से नास्तिक

वाम मार्गीथी द्राविडों, चारवाक एवं बौद्ध राजाओं को समाप्त करने एवं विशुद्ध भारतीय राज्य स्थापित करने की आज्ञा दी गई।

अब धर्म के उत्थान के युग का श्री गणेश हुआ।

वज्रयानी बौद्ध तो अब तक बौद्ध धर्म की कठोर आचार–पद्धति एवं भिक्षुकों के नियमों से तंग आ कर वाममार्गी बन चुके थे।

यावत जीवेत सुखम जीवेत
ऋणम कृत्वा घृतं पीवेत

अर्थात जब तक जिओं, सुख से जिओं तथा ऋण ले कर घी पीओ, यह समय का मूल मन्त्र बन चुका था।

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा
यावत्पतति भूतले

पीना जैसे एक प्रकार से धर्म का अंग बन चुका था।

महायान शाखा के बौद्ध शाक्तएवं जैन मूर्ति पूजको के समान लोक प्रिय बनने के लिये मूर्ति पूजा करने लगे थे। प्रायः बौद्ध समर्थक राजा भी इसी शाखा के अनुयायी थे। हीनयान शाखा के बौद्ध भिक्षु बने ''हीन'' रह गये थे। ऐसे समय में तेजस्वी क्षत्रिय राज–पुत्रों की क्रोधित तलवार की चमक से सिहर बौद्ध सिर छिपाने को भागने लगे।

वास्तव में महात्मा बुद्ध के विरूद्ध विद्रोह तो महात्मा बुद्ध के भाई देवदत्त के नेतृत्व में उसी समय उठ खड़ा हुआ था जब कि महात्मा बुद्ध 72 वर्ष के थे। उसी समय राजा अजातशत्रु की सहायता से बुद्ध की हत्या का प्रयत्न किया गया किन्तु विफल रहा।

# चार अग्नि वंशो का निर्माण

उस समय जब कि सारे देश और विदेश पर बौद्ध मत का प्रभुत्व था और समान धर्म के कारण एक स्थान अथवा देश के संकट पड़ने पर तुरन्त पहुँचते। उस समय नये हिन्दु राष्ट्र की रक्षा के लिये तेजस्वी क्षत्रिय राजपुत्रों का संगठन अनिवार्य हो गया तो बौद्ध प्रभाव क्षेत्र से दूर राजस्थान के पावन केन्द्र आबू पर्वत के सुन्दर ताल पर वशिष्ट महामुनि की अध्यक्षता में विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया।

ऐसी परम्परा है कि उस समय वर्तमान ऋषियों का एक निश्चय था कि क्षत्रिय वंश की विभूति चन्द्र वंशी राजा अग्रसेन के पाँचवे बेटे भलन्द जिस के नाम पर भलन्द नगर बसाया गया था तथा उस के वंशज सूर्य भान की संतान उस आग्रोदय गणराज के इन्द्र व्रत का पोता प्रेम कंवर जी महराजा सुदास की सन्तान का चन्द्र वंशी, शूरवीर राज कुमार था यदि इस राष्ट्रएवं धर्म के उत्थान के महाभियान की बागडोर का नेतृत्व करना स्वीकार कर ले तो अर्नाय नास्तिको का सरलता से नाश किया जा सकता है। जब ब्राह्ममणों के शीर्ष मण्डल ने प्रेम कंवर के पास पहुँच कर आर्यराष्ट्र के ऋषियों, तपस्वीयों एवं ब्राह्मएवं क्षत्रियों कें इस आशा भरे निर्णय को उस के सम्मुख रखा तो देश धर्म एवं जाति की रक्षा के लिये वह अपने चुने हुये क्षत्रिय सैनिको सहित अपने भाई कंवर मांकील के साथ आबू पर्वत पर आ पहुँचा।

जब यज्ञ आरंभ होने को ही था तो सूर्य एवं चन्द्र वंश के अन्य राज कुमार नवाजल कुमार तथा राठौर वहां पहुँच गये तथा राष्ट्र धर्म एवं क्षत्रिय जाति के पुर्नत्थान हेतू स्वयं को प्रस्तुत किया। तब वेद मन्त्रों सहित पावन अग्नि के सम्मुख दीक्षित करके उन्हे चारो दिशाओं से अर्नाय, द्राविड़, शक, बौद्ध आदि धर्म विरूद्ध मतों को नष्ट

करके एवं ओजपूर्ण क्षत्रिय राष्ट्र की स्थापना का आदेश दिया गया एवं अपने पूर्व नाम जाति को छोड़ कर एक ही अग्नि वंश ही से उनका अपना वंश निश्चित किया गया। तब उन्हें निम्नलिखित वीरता सूचक पदवियों से आलंकृत किया गया जो उनके नाम का ही पर्याय बन गई।

| नाम | पदवी | वेद शाखा |
|---|---|---|
| प्रेम कंवर | प्रमार | ऋग्वेद |
| कवर मांकील | सोंलकी | सामवेद |
| नवाजल कुमार | चौहान | यर्जुवेद |
| राठौर | परिहार | अर्थवेद |

इन में से प्रमार को विन्ध्याचल के ऊपरी भाग से यमुना तट तक तथा सम्पूर्ण राजस्थान का राज्य दिया गया।
प्रमार के 35 बेटे हुए जिनका वर्णन आगे आएगा।

2. चाहवान को गंगा तथा यमुना का मध्य भाग का राज्य दिया। उस के 24 बेटे थे।नवाजल कुमार (चाहवान) की सन्तान में चत्रभुज तथा उसके क्षत्रिय–पाल हुआ जिस ने गोलकुण्डा नगरी बसाई आगे चल कर इसी वंश में पृथ्वी राज चौहन हुये।

3. कंवर मांकील से सोंलकी वंश चला। इसे गुजरात में पाटन का राज्य दिया गया। यही वंश आगे चल कर चालुकय नाम से उन्नति के शिखर पर जा पहुँचा? राठौर के दो बेटे प्रहार तथा राठौर हुये इस वंश का नाम दक्षिण में तोंमर वंश पड़ा। परिहार वंश को विन्ध्याचल से दक्षिण तक का राज्य मिला था। परिहार के सोलह तेजस्वी पुत्र हुये।

इस प्रकार से भारत के विभिन्न प्रदेशों के राज्य दे कर उन्हें वेदों के प्रचार की आज्ञा दी गई। प्रमार को

ऋग्वेद,चाहवान को यर्जुवेद, सोलंकी को सामवेद तथा परिहार को अर्थवेद की पुर्नस्थापना एवं प्रचार का दायित्व सौंपा गया। आगे चल कर इन्ही के वंशजों ने अपने अलग–अलग राज्य स्थापित कर लिये एवं समस्त भारत, कन्या कुमारी से इरान की सीमा तक लंका ब्रह्मा आदि पर प्रमार के 34, चाहवान के 24 परिहार के सोलह तथा सोलंकी के 8 बेटों का राज्य स्थापित हो गया। इस प्रकार प्रमार वंश की मुख्य–राजधानी अवन्ति के पास बसाई गई। जिसे धारा नगरी का नाम मिला।

चौहान वंश की राजधानी अजमेर थी। सोलंकी ने द्वारका पुरी को अपने राज्य का केन्द्र बनाया था तथा परिहार ने चित्रकूट पर्वत के पार कालिजर को अपनी राजधानी बनाया।

## ''भ्रान्ति का निराकरण''

जैसा कि स्पष्ट लिखा जा चुका है कि निष्क्रय शांति जन्य अक्रमग्यता, विश्व बन्धुता के उदधोषों के नीचे सिसकती राष्ट्रीय भावना तथा वर्ण व्यवस्था की समाप्ति एवं स्थापना के संघर्षों के परिणाम स्वरूप जब देश में शिथिलता व्याप्त हो गई तथा शांति एवं धार्मिक सहिग्णुता का अनुचित लाभ उठाने के लिये जब विदेशी एवं अर्नाय शक्तियों के मुँहमें पानी आने लगा तो राष्ट्रीय रक्षा के लिये पुरातन सूर्य एवं चन्द्र वंशी क्षत्रियों में से चार महान अग्नि कुलो का संगठन किया गया। उस समय ही राष्ट्रीय जनता को इन नास्तिक मतों के कुप्रभाव से बचाने के लिये विदेश जाना ''पाप'' एवं निषिद्ध घोषित कर दिया गया। इस समय चीन आदि देशों सें लाखों सैनिक बौद्ध राजाओं की रक्षा के नाम पर भारत में घुस आये।

श्याम देशोद्भवा लक्षास्तथा लक्षाश्च जापकः
द्श लक्षाश्चीन देश्या युद्धाय समुपस्थिताः

परन्तु तेजवान क्षत्रिय प्रमार आदि महावीरों की क्रोधाग्नि से जल कर दग्ध होने लगे तो उन के साथ ही लाखों बौद्ध उन राजपुत्रों के तेज को न सह कर विदेश को चले गये। भविष्य पुराण के प्रति सग. पर्व के निम्न मन्त्र के अनुसारः–

सर्वैश्य बौद्ध पृन्दैश्य तत्रेवशपंथ कृतम्
आर्य दश न यास्याम कदाचिद् राष्ट्र हेतेव

"युद्ध भूमि में ही बौद्ध आक्रान्ताओं ने शपथ ली कि भविष्य में कभी राष्ट्रीय हित के लिये भारत वर्ष में पांव नहीं रखेगें"

इसी पतन से राष्ट्र को बचाने के लिये तत्कालीन ऋषि एवं मनीषी समुदाय ने कुछ कठोर आचार सम्बन्धी नियम बनाये थे।

1 क्षत्रिय संगठन को नास्तिक एवं पतन ग्रस्त मता–
विलम्बीयों से पृथक एवं उच्च भावनायुक्त बनाने के लिये"राजपुत्र" शब्द क्षत्रियों के लिये नियत किया।

2 विदेश जाना पाप घोषित किया गया ताकि इस लहर में भारतीय विद्वान एवं भटके तरूण विदेश न चले गये।

3 बौद्ध मत तथा विशेषकर जैन मन्दिर में वैदिक अथवा सनातनी को किसी भी मूल्य अथवा कारण से पग धरने से रोक दिया गया।
हस्तिना पीडयमानेअपि न गच्छेज्जैन मन्दिरमं

अर्थात हाथी से कुचले जाने का भय होने पर भी जैन मन्दिर में जा कर प्राण रक्षा नहीं करें ऐसा ओदश हिन्दुओं का दिया गया।

जहाँ तक कि वर्ण व्यवस्था सम्बन्धी नियम कड़े कर दिये गये तथा वर्ण व्यवस्था विहीन देशों कों मलेच्छ घोषित किया गया ताकि बौद्ध जैन आदि मतों के प्रभावधीन कोई भी अपने वर्ण से बाहर न जा सके जैसा कि वर्ण व्यावस्था स्थापना पर (सोनायत ताम्रपत्र) तथा वर्णश्रम व्यवस्थापन प्रवृत चक्रः (माघवत ताम्रपत्र) आदि प्राचीन लेखों से सिद्ध है। यहाँ तक किः–

चातुर्वणर्यं व्यवस्थान यस्मिन्देशें न विद्यते
तं मलेच्छ देश जानीयादार्यावर्त स्ततः परम

'जहाँ वर्ण व्यावस्था नहीं वह मलेच्छ देश हैं। आर्य देश उस से पृथक है।''

ऐसी स्थिती में जो इतिहासकार इन राजपुत्रों को विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान लिखते है, उन की ''बुद्धि का शोग'' मनाने के अतिरिक्त हम क्या कर सकते है। अंग्रेज इतिहासकारों में विलियम कुक, टाड, कन्धिम, स्मिथ, इलियट आदि अनेकों ने एक षडयंत्र के अधीन हमें राजपुत्र के वास्तविक गौरव पूर्ण मर्यादा–पद से गिराने का प्रयास किया है। भण्डार कर, भट्टाचार्य लतीफ आदि भारतीय इतिहासकार भी अंग्रेजी लेखकों के प्रभावाधीन इन्हें शक, हुण, कुशान आदि विदेशी आक्रमणकारियों की संतान कहने का दुस्साहस करते है।

## राजपूत शब्द का निर्माण

शब्द राजपूत वास्तव में किस अर्थ में प्रयोग में लाया गया था। क्षत्रिय के परिचायक के रूप में यह शब्द अपने मूल रूप में प्राचीन काल से ही प्रयोग में लाया

जाता रहा है। ऋग्वेद के 2/27/7 मन्त्र में राजपुत्र शब्द बहु ब्रीही समास रूप द्वारा अदिति के लिये प्रयोग में लाया गया सिद्ध किया जा सकता है।

महाभारत के द्रौण पर्व में राजपुत्र शब्दः–

''ऐते रूकम स्यानाम राजपुत्रा महारथाः।
रथेष्वस्त्रेषु निपुण नागेषु च विशाम्पते।
और इसी प्रकार से शांति पर्व में
भैक्ष्यचर्या ततः प्राहुस्तस्य शुदस्य सर्द्धम चारिणः
तथा
वैश्यस्य राजेन्द्र राज पुत्रस्य चैवहिः

इसी प्रकार से संस्कृत भाषा के व्याकरण अष्टाध्यायी में महर्षि पाणिनी ने भी 4/2/41 सूत्र में ''तस्य समुह''

4/2/37 सूत्र के माध्यम से राजपुत्र शब्द को गोव्रो क्षोष्ट्रोरभ्र राज राजन्य राजपुत्र वत्स मनुण्याजाम दुअ

राजवंशी के समूह को राजपुत्र लिखा है। इसी आधार पर क्षत्रिय राजवंश के राजपुत्र को उस समय प्रचलित भाषा के अनुसार राजपूत लिखा गया। इस प्रकार से प्रचीन राजवंशों के क्षत्रिय वंशों से ही राजपूत दल का निर्माण हुआ था वास्तव में राजपूत एक जाति न हो कर एक आन्दोलन था जिस का उद्देश्य धर्म एवं जाति की मर्यादा की रक्षा करना एवं पाखण्डवादी मतों एवं शक्तियों को समाप्त करना था।

## आर्यो की सन्तान

इस प्रकार से अग्नि कुल के राजपूत प्रमार चौहान, सोलंकी, परिहार आदि प्राचीन आर्यो की सन्तान है। यह अलग बात है कि इस महान आन्दोलन के प्रवाह

में बह कर कईआक्रमणकारी तथा पथभ्रष्ट भारतीय भी इसी राजगंगोत्री में बाद में समा गये परन्तु सर्वामना राजपूत वंश की विदेशी आक्रमणकारियों अथवा जंगलों में बसने वाली गोण्ड, भील, खर आदि जातियों की सन्तान कह देना ऐसा ही कुत्सित एवं पापजन्य प्रयास है जैसे कि कुछ गन्दे नालों के गंगा में मिल जाने से पावन उद्धारक गंगा को ही गन्दे नालों से निर्मित कह दिया जाये।

## वास्तविकता के दर्शन

वास्तव में प्रमार चन्द्र वंशी की पौरव शाखा का रूपान्तर मात्र था। जिसका विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा। चौहान तो काशम्भी नरेश उदयन के वंशज वत्स गोत्री राजपुत्र स्पष्ट है।

सोलंकी चालुक्य वंश के तथा परिहार प्राचीन गुर्जर वंश के प्रतिनिधि राजपुत्र हैं। वास्तव में राजपूत शब्द आबू पर्वत पर हुये धर्म रक्षार्थ हुये महायज्ञ एवं बृहद आयोजन की महान देन हैं और यह नाम उन को क्षत्रिय राज–पुत्रों के प्राचीन क्षत्रिय राजवंशों से सम्बन्ध के कारण ही मिला था। अतः राजपूत आर्य है एवं प्राचीन क्षत्रियों की सन्तान है।

## प्रमार

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है प्रमार कुल पौरव वंश के चन्द्रवंशी क्षत्रियों का ही रूपान्तर है। ब्रह्माज्ञानी क्षत्रियों की अधिकता के कारण यह वंश इससे पूर्व ब्राह्मक्षत्र के नाम से पहले प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। जब इन ब्रह्म क्षत्रिय राजपुत्रों ने बौद्ध जैन, चार्वाक एवं वाममार्गी तथा अवैदिक तत्वों के विरूद्ध आबू पर्वत पर आयोजित महाभियान में अग्नि के सम्मुख दीक्षा लेकर

शस्त्र उठाये तो प्रमार उपाधि धारण करके इसी उपनाम से प्रसिद्धि प्राप्त की।

इसी प्रकार वंश की विभूति महाराजा भोज तथा उन के चचा मुज्ज के लिये प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान हलायुध पण्डित ने ''पिगल सुत्र वृति'' में ब्रह्म–क्षत्र शब्द प्रयुक्त करते हुये लिखा हैः–

ब्रह्मक्षत्र कुलीनः प्रलीन सामन्त चकनुतचरण
सकल सुकृतैक पुज्जः श्रीमान मुज्ज श्चिर जयति

इसी प्रमार वंश ने तब मालवा में धार देवास (छोटा–बडा) राजगढ., नरसिंह, उतर भारत में टिहरी, बुन्देल खण्ड में छतर पुर, बिहार में डुमराय, राजस्थान में जगनेर, विजोल्या आदि स्थानों पर राजधनियां स्थापित करके भारत के अधिकांश भू–भाग पर विशुद्ध भारतीय आर्यराज्य स्थापित किया। इस वंश का विकास होता गया एवं प्रमार के 35 बेटों ने सौने राजधनियों स्थापित करके ''सौ गद्दी'' उपनाम कमाया । अमरकोट, चितौड. अलोर, पाटन, माखाड आदि राज्यों पर अधिकार कर लिया।

## प्रमार वंशावलि की रूप रेखा

प्रमार वंश का वर्णन करते समय जिन राज कुमारों का वर्णन आया है उनकी वंशावलि बनाने में कई कठिनाईयों का सामना करना पडता है। कई प्रकार के साधन होते हुये भी कोई विश्वसनीय वंशावलि प्रस्तुत करना सरल नहीं। कारण यह कि कई सही शिलालेख प्राप्य ही नहीं कुछ में नाम बिगड़ कर प्रस्तुत हुए मिलते है। कुछ लेखों पर तिथि ही मौजूद नहीं। मुसलमान और अग्रेंज आदि इतिहास–कारो ने भी कई नाम अपने भाषा एवं उच्चारण की भिन्नता के कारण गलत एवं विकृत रूप

में पेश किये है कुछ लेख ईर्ष्या वश भी दूसरे के हितों के विरूद्ध लिखे गये है। तो भी अनेको शिला लेखों तथा अन्य रिकार्ड के अध्ययन के पश्चात हम वंशावलियों का निर्माण करने मे सफल हो गये है।

पीछे जिस प्रेम कंवर तथा कंवर मखील का वर्णन आया है उस अग्नि वंश की प्रमार शाखाका प्रथम सम्राट का वंश इस प्रकार से चलता है।

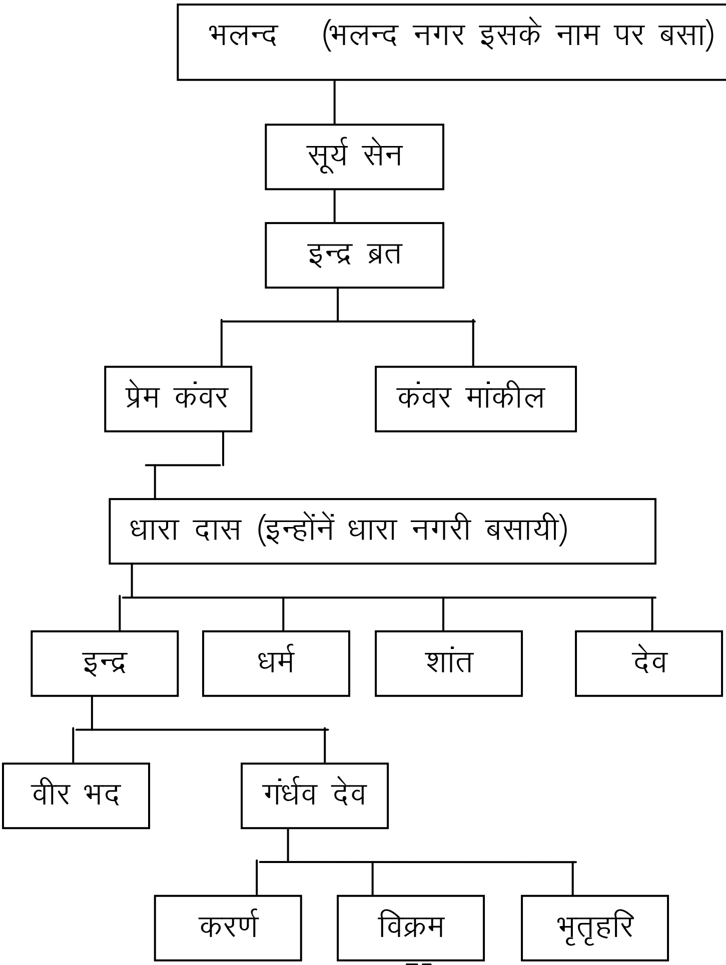

व्रिकम का राज्यकाल इसी से कुछ पूर्व का है और एक नग्न सत्य है कि शल्यबाहन, विक्रम और ईसामसीह समकालीन थे और शल्यबाहन की भेंट ईसामसीह से हुई थी जब वह ज्ञान प्राप्ति के भारत को एक से दूसरे तीर्थ एवं शिक्षा केन्द्रों में भटक रहे थें।

विक्रमादित्य की कोई संतान नहीं थी और प्रमार राज्य पर आगे चल कर माल देव अथवा प्रमार देव गद्दी पर बैठे। प्रमार देव शुद्ध नाम है जो वंश की सूचक है।

एक अन्य सूचना के अनुसार यह प्रमार देव विक्रम का चाचा था विक्रम का भारतीय साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जिसका विस्तृत विवरण बाद में दिया जायेगा यहाँ हमारा व्यय केवल वंशावलि तैयार करना हैं

दूसरी ओर आठवीं शताब्दी से ले कर राजा भोज के पिता एवं चाचा तक की वंशावलि का एक परिचय निम्नालिखित है। इसमें अनेंको शिलालेखों तथा दान–पत्रों के अनुसार काफी अन्तर है परन्तु मोटे तौर पर यह वंश इस प्रकार से आगे बढा।

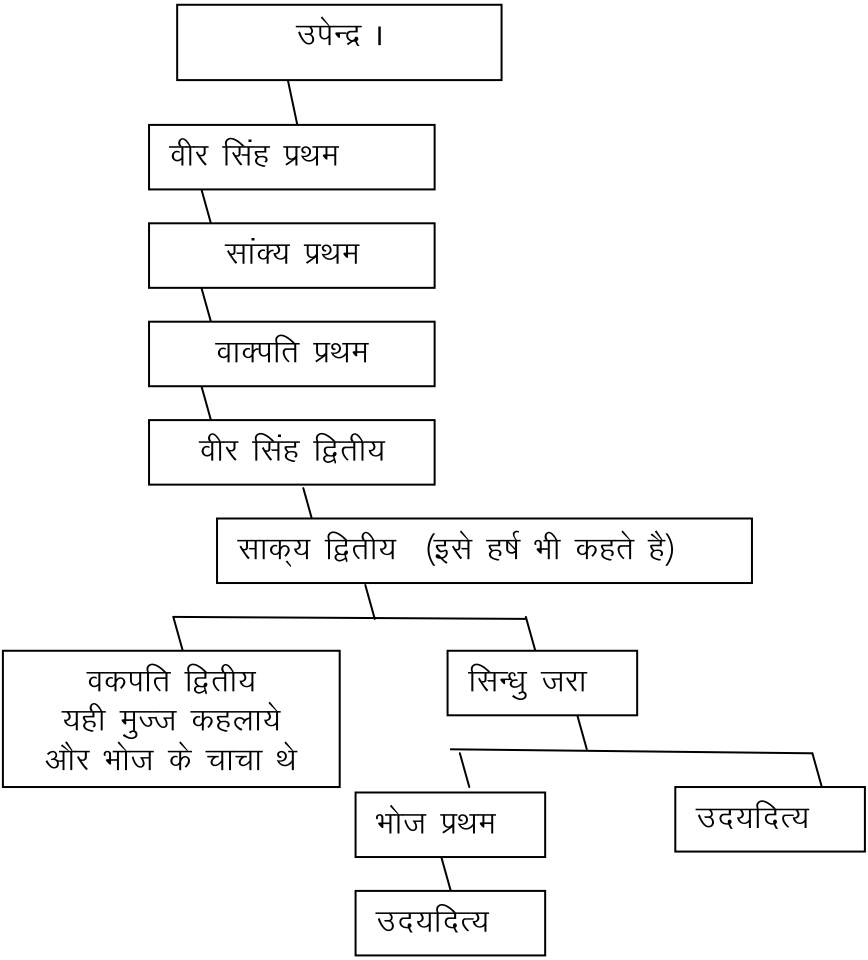


प्रमार की 35 सन्तानों का ब्यौरा सूद महानुभाव इस प्रकार से देते है।

# मोरी या मौर्य

यह प्रमार राजा का सब से बडा. बेटा था। चन्द्र–गुप्त मौर्य इसी का वंशज था। महाराजा विक्रमादित्य एवं भोज इसी परिवार से सम्बंध रखते थे। यह स्पष्ट करदूं कि चन्द्रगुप्त मौर्य इस वंश का संस्थापक नहीं था। वास्तव में मौर्य वंश की सत्ता पहले ही विद्‌यमान थी तथा महात्मा बुद्ध इनके सम्बन्धी थे। इसी लिये महाराज अशोक जो चन्द्रगुप्त मौर्य का पोता था, बौद्ध धर्म का सब से बड़ा समर्थक था। कदाचित इसी सम्बन्ध के कारण पिप्पलीवन राज्य के मौर्य ने कुशिनारा राज्य के मल्ल क्षत्रियों के पास मृत्यु के पश्चातमहात्मा बुद्ध की राख एवं फूल (हडियों का भाग) मांगते हुये सन्देश भेजा था। बौद्ध ग्रन्थ ''महापरिनिव्वान सुत'' मे वह सन्देश इस प्रकार से है:–

भगवा पिखतियों मय भपि खतिया। मयमपि अरह्मम भगवती सरीरांन भाग भगवती सरीरांन पुपंच महच्च करिस्सामाति''

अर्थात महात्मा बुद्ध क्षत्रिय थे और हम भी क्षत्रिय है अतः भगवान बुद्ध के शरीर का भाग हमें भी मिलना चाहिये।

क्योंकि चन्द्रगुप्त के द्वारा ही मौर्य वंश का प्रसार उस समय हुआ जिससे पूर्व का कोई स्पष्ट इतिहासकार चित्र हमारे सामने नहीं है। अतः प्रायः सभी एहिासिक तथा उन्हीं के कारण पाठक गण चन्द्र गुप्त मौर्य को मौर्य वंश का प्रर्वतक मान बैठे है। साथ ही मुसलमान अग्रेंज तथा अल्पज्ञानी एवं परस्पर राज–वंश के गौरव–पूर्ण पद तथा स्वाभिमानपूर्ण अतीत को कलंकित करने के लिये नाई की सन्तान, मूरा नामक नीच जाति की सन्तान तथा नन्द की नीच जाति की पत्नि की सन्तान जैसे अनेको कपोंल–कल्पित तथा तत्वहीन क्षेपक एतिहासिक ग्रन्थों में

मिलाने के लिये गढ़ डाले। परन्तु यदि हम अपनी सत्य की खोज की पिपासा लिये प्राचीन संस्कृत साहित्य के मूल रूप का गहन अध्ययन करें तो सत्य तमाम पर्दे फाड़ कर हमारे सम्मुख आ खड़ा होता है।

महाभारत में अनेकों अन्य जन पदों तथा राज वंशों के साथ मोरी, मयूर तथा मौर्य वंश अपने मूल रूप में वर्णित मिलता है। सभा पर्व के श्लोक 3–57 में वर्णित यह सत्य मुसलमान, अग्रेंज तथा अग्रेंजों द्वारा छोडी गई झूठी बुद्धि वाले काले अग्रेंजो के मुख पर करारी चपत है। नकुल जबराजसूय यज्ञ हेतू सेना ले कर युद्ध के लिये निकलता है तो मयूर जनपद के वीर उस से भयानक रूप में युद्ध करते हैः–

''तत्र युद्धं महच्चा सिच्छरै मयूरकैः''

साथ ही महाभाष्य में मौर्य वर्णनः–

''मौर्य हिररायार्थिभि अर्चाः प्रकल्पिता''

इस प्रकार से धन प्राप्ति के लिये मौर्य लोगों का मूर्ति निर्माण में जुटे रहने का वर्णन है।

प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ ''महा निब्बान–सूत'' का उदाहरण तो हम पीछे दे ही चुके है।

कामन्दकीय नीतिकार के अनुसार भी चन्द्र गुप्त ''मौर्य कुल में उत्पन्न'' हुआ था वह मौर्य वंश का प्रर्वतक नहीं था। मौर्य वंश की सत्ता तो उससे दो हजार वर्ष पूर्व भी विद्‍यमान थी।

बौद्ध ग्रन्थ ''महावंश'' में भी मौर्य वंश की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गई है। ''संस्कृत साहित्य का इतिहास'' में जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने मौर्य जन की पृथक तथा स्वतन्त्र सत्ता मानी है जैसा कि उन्होने पृष्ठ संख्या 143 पर इस तथ्य का संकेत दिया है।

इतना ही नहीं ''रायल एशियाटिक जरनल'' में भी प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार कन्निधम ने पृष्ठ 360 पर भी इसी तथ्य को वर्णित किया है। राजपुताना गजट, बकाये राज स्थान, टांड राज स्थान तथा ओझा जी कृत राजपूताने का इतिहास में भी मौर्यों को क्षत्रिय ही माना गया है।

वास्तव में मोरी अथवा मौर्य अग्नि वंशी प्रमार कुल की प्रमुख शाखा तथा इस नाते क्षत्रिय राजपूत है।

समय के परिवर्तन के साथ राज्य सत्ता समाप्त को जाने पर भी चितौड़ पर इस राज–वंश का अधिकार निरन्तर बना रहा था।

चितौड़ के प्रसिद्ध नगर तथा दुर्ग का निर्माण भी अग्नि वंशी प्रमार राजा चिन्तांगद ने कराया था। चित्रकूट के नाम से बसाये गये इस दुर्ग तथा नगर में चित्रांगद मौर्य ने ''चित्रंग'' नामक सरोवर का भी निर्माण कराया था। ''कुमारपाल चरित्र'' नामक ग्रन्थ में पृष्ठ 302 पर इसका स्पष्ट वृतांत प्राप्त है।

इसी वंश में आगे चल कर राजा ''मान मौर्य'' चितौड़ का राजा हुआ। जिसने मान सरोवर नामक तालाब बनवाया इसी स्थान पर एक प्राचीन शिलालेख 313 ई. का प्राप्त हुआ है जिस में इसी मौर्य वंश के चार राजा माहेश्वर, भीम, भोज तथा मान मौर्य के चितौड. पर राज्य करने का वृतांत प्राप्त होता है। इन्डियन एंटिकवेरी जिल्द 19 के पृष्ठ 55–57 पर भी एक मौर्य राजा धवल द्वारा कोटा की प्राचीन भूमि पर राज्य करने का वर्णन मिलता है। कोटा के एक शिव–मन्दिर से जो कि करष्वाश्रय जिसे अब करण्सबा कहा जाता है से एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिस से धवल मौर्य के कोटा में राज्य करने की पुष्टि भी हो जाती है।

बृहतर बम्बई के खानदेश के बांधली गांव से प्राप्त एक शिलालेख में 1069 ई. तक बीस मौर्य राजाओं के राज्य करने का वर्णन प्राप्त होता है। उपरोक्त वर्णन अधिकतर चन्द्र गुप्त मौर्य तथा नन्द राजाओं से पूर्व का संस्कृत तथा पालि प्राकृत साहित्य से सम्बन्ध रखता है और आश्चर्य की बात है कि महाभारत से नन्द वंश तक का लगभग दो हजार वर्ष के समय में मौर्य वंश के गौरव एवं स्वाभिमान पर कलंक का एक छींटा भी नहीं पड़ा और चन्द्र गुप्त के विरोधी अनाचारी एवं अत्याचारी नन्द राजा के साथ ही कंलक–कथाओं का झंझा सा उमड़ पडा।

वास्तविकता यह है कि चन्द्र गुप्त मौर्य राजपरिवार का सदस्य था। राज्य का उतराधिकारी था। नन्द राजा ने प्रथम तो धन एवं पद का लोभ देकर स्वंय को ब्राह्मणों द्वाराक्षत्रिय घोषित कराने का प्रयत्न किया परन्तु निष्फल रहा। जातिय कट्टरता के उस युग में ब्राह्मण समुदाय ने नन्द राजा को क्षत्रिय एवं राज्याधिकारी मानने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस पर नन्द ने ब्रह्मणों पर अकथनीय अत्याचार करना आरम्भ किये। परिणाम स्वरूप विद्वान ब्राह्मण समुदाय देश छोड़ कर धार्मिक ग्रन्थों एवं वेद–साहित्य योरूप की ओर चले गये तथा एक निर्जन प्रदेश को बसाकर उस का मन्त्र का प्रयाय शब्द ''श्रमण'' रख कर वहां निवास करने लगे यही श्रमण वेद मन्त्र शब्द वहां के भाषा उच्चारण की जर्मन जाति शुद्ध ब्राह्मण एवं आर्य है। प्रमाण स्वरूप गणेश जी स्वास्तिकः चिन्ह जर्मन के हिटलर के किसी चित्र में उस की भुजा पर स्पष्ट देखा जा सकता है। वेद एवं अन्य प्राचीन साहित्य, ज्ञान तथा वेदों में वर्णित तकनीकी जानकारी सब से अधिक जर्मन को ही प्राप्त है

इस प्रकार से क्षत्रिय घोषित न किये जाने पर नन्द भय और क्रोध में भर उठा उधर चन्द्र गुप्त को प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ विद्वान चाणक्य का संग प्राप्त हो गया

और कृष्ण अर्जुन की इस जोडी ने नन्द वंश का नाश करके अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक अखण्ड भारत पर 20 वर्ष अकन्टक राज्य किया तथा भारत की योग्यतम राजाओं की श्रृखंला महाभारत के पश्चात प्रथम बार प्राप्त हुई।

इस प्रकार बौद्ध और ब्राह्मणों के संघर्ष तथा परस्परके विरोध से उत्पन्न ऐसी असंगत एवं सारहीन कपोल कल्पनाऐं सर्वथा त्याग देने योग्य है यह तो मात्र चन्द्र गुप्त मौर्य को तत्कालीन समाज की दृष्टि से गिराने तथा राज सत्ता पर उस के अधिकार को समाप्त करने और राज वंश के गौरव को कंलकित करने का कुत्सित प्रयास मात्र था जिसे हमारे वर्तमान इतिहासकारों ने समझने तथा धोने का प्रयास ही नहीं किया।

पीछे हमने राजा मान मौर्य का वर्णन किया है। इसी के धेवते का नाम था बप्पा रावल जिसे चितौड़ जैसे प्रसिद्ध दुर्ग के नाम से परिचित हर भारतीय भलीं–भांन्ति जानता होगा।**'हिन्दुआ सूरज'** की उपाधि से विभूषित इस महावीर ने अपने नाना राजा मान मौर्य से राज्य छीन कर दरबार एवं सामन्तों की इच्छा से वह चितौड. का शासक बना। इस का वृतांत प्रसिद्ध ग्रन्थ समूह ''राज–प्रशास्ति'' महाकाव्य के सर्ग में यूं प्राप्त होता है।

ततः स निर्जित्य नृपं तु मौरी जातिय भूप मनुराज संज्ञम्।
गृहीतवां श्रिचत्रित चित्रकूट चकेत्र राज्यं नृप चकर्वी।।

इस घटना की पुष्टि प्रसिद्ध इतिहास–वेता नैणसी ने भी अपनी ख्यात में निम्नलिखित शब्दों में की है।

''मौरी दल मारेब राज रार्याकुर लीघौ''

# बप्पा रावल कौन था

बप्पा वल्लभीपुर के प्रतापी सम्राट महाराजा शीलादित्य का बेटा था। उस की कई रानियों में एक पुष्पावती चितौड़ के राजघराने से थी एवं नाते में राजा मान मौर्य की बेटी थी। मन्त्री के द्रोह पूर्ण षडंयत्र से महाराजा शीलादित्य धोखे में आकर मारे गये तथा रानियों उसके साथ सती हो गई। रानी पुष्पावती उस समय गर्भवती थी। अतः राज–पुरोहित एवं सम्बधियों के अत्याधिक हठ पर उस ने बालक के जन्म तक जीवित रहना स्वीकार कर लिया ताकि राज–वंश चलता रहे। गर्भावस्था पूर्ण होने पर उसने एक सुन्दर बालक को जन्म दिया जिसे राजस्थान का करण कण गुहा अथव गोहिल के नाम से जानता है। इसी वीर के नाम पर गहलोत वंश चला। रानी पुष्पावती उसे कमलावती नामक ब्राह्मणी को सौंप कर स्वयं सती हो कर क्षत्रिय धर्म को गई। युवावस्था तक यह वीर बालक भीलों के साथ घुमता तथा उनके युद्धों में साथ जा कर वीरता के कृत्य करता रहा राज्य छिन चुका था परन्तु रकृ राज्य वंश का था उसने झोलों को संगठित राष्ट्र का मार्ग सुझाया और भीलों के सरदार चन्डोलिकके पश्चात उसे भीलों के इड़ंर राज्य का राजा चुन लिया गया। इस वंश में आठ राजे और हुये। आठवें राजा नवखत के समय में भीलों ने क्षत्रिय राजा की अधीनता से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये उसका वध कर दिया।

उसका एक अल्प व्यस्क बेटा था। भगवान की लीला देखें कि जिस कमला ब्राह्मणी ने आठ पीढी पहले पुष्पावती के गुहा नामक बेटे का पालन पोषण किया था उसी की सन्तान में राजा के सेवक नागर ब्राह्मण ने पुष्पावती की नवीं पीढ़ी के इस बालक की पुनः रक्षा की तथा तीन वर्ष के उस बालक को उठा कर भंडेरी के दुर्ग मे ले गया। यहाँ भी उसे सुरक्षित न जान कर वह उसे

पीढ़ीसर के पहाड़ी जंगलों के मध्य नगेन्द्र नामक एक ब्राह्मण बस्ति में ले गया। इस अलंध्य तथा दुर्गम–स्थान के पास ही दस मील के अन्तर पर उदयपूर नामक नगर बाद में बसाया गया जहां महाराणा प्रताप हुये। यहीं बालक बप्पा रावल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दुर्गम पहाड़ों पर भीलों के मध्य उस ने वीरता के कृत्य सीखें। एक दिन जंगल में खेलते समय इसने भील साथियों देवा तथा हल्ल के साथ मिल कर प्रदेश के सरदार सोंलकी राजा की कन्या से विवाह का खेल खेला। बचपन तथा यौवन के मध्य खडें इस बालक के लिये अभी विवाह खेल ही था परन्तु सोंलकी सरदार के क्रोध से बचने के लिये उसे भाग जाना पडा। भटकता हुआ वह टांगर के जंगलों में पहुँचा जहां गुरू गोरख नाथ जी के दर्शन एवं आर्शीवाद प्राप्त हुआ। जा कर नाना मान–मोरी से मिला तथा उसे अपनी माता एवं अपने मोरी वंश से होंने का कथा कह सुनाई राजा ने उसे सेनापति नियत किया। बप्पा ने अपनी वीरतातथा योग्यता से राजा का हृदय जीत लिया। तमाम दरबारी उसकी नित्य कि प्रशंसा सुनकर जलने लगे।

तभी एकाएक खुरासान के राजा सलीम शाह ने भारी सेना के साथ आक्रमण कर दिया। संकट का अवसर देख कर तमाम सरदार अंड गये कि अब अकेले बप्पा को ही रक्षा के लिये भेजे। व्यग सुन कर बप्पा ने स्वंय को प्रस्तुत किया तथा स्वंय सेना लेकर युद्ध में जा डटा। भारी मार काट के पश्चात जब विजय श्री बप्पा रावल को प्राप्त होने लगी तो राष्ट्र प्रेम तथा जनता की दृष्टि से गिरने से बचनें हेतू सभी सरदार भी युद्ध में आ पहुँचे और सलीम अपनी बेटी का विवाह बप्पा रावल से कर के वापस जान बचा कर चला गया। उस का वंशज ईरान का राज्य–परिवार है जिस के नाम के साथ आज भी आर्य तथा मिहिर (सूर्य) लगा हुआ है। बप्पा रावल ही ''हिन्दुआ सूरज'' कहलाता था।

तमाम सरदार बूढ़ेराजा मान–मोरी से अप्रसन्न थे क्योंकि उस ने उन की जागीरें छीन ली थी तथा सभी की दृष्टि बप्पा पर लगी थी और उन्होंने एक षडयन्त्र से राजा मान–मौर्य की हत्या करके राज्य सिहांसन पर बप्पा रावल को बिठाया यह घटना 747ई0 की है।

भारी सेना का साथ अटक पार करके बप्पा ने अफगानिस्तान, (उपगण–स्थान) ईरान, इराक तथा वापसी पर काश्मीर कान्धार आदि राज्यों पर अधिकार करके इन तमामराजाओं की बेटियों से विवाह किये तथा 30 सन्तानें उत्पन्न की।

नौशेखां पठान उसी के वंशज है। उस की एक प्रिय रानी इस्तम्भोल ''ईराक'' के राजा की बेटी थी जिससे अप्राजित नामक बेटा हुआ जो बाद में मेवाड का राजा बना।

यहाँ सुर्य वंशी पिता तथा मोरी (प्रमार) वंश की राज कुमारी की इस सन्तान का वर्णन इसी लिये किया गया है कि एक तो राज्य कुलीन राज वंश का रक्त छिपा नहीं रहता तथा साथ ही बप्पा की वीरता पर लगाये जाते विदेशी धब्बे धोने का प्रयास किया गया है। तीसरे यह कि पाठकगण यह न समझें कि हमारे पूर्वज केवल बेटियों का विवाह विदेशी आक्रमणकारियों से करके छुटकारा प्राप्त करते थे ।110 वर्ष की आयु में संसार से कूच करने से पूर्व बप्पा ने इरानी, मुसलमान, अफगान, तुर्क आदि अनेकों राजकुमारियों से विवाह वीरता के बल पर किये। विस्तृत विवरण के लियेः–

# “बप्पा रावल की गौरवशाली गाथा”

लेखक श्री मदनेश जी का अध्ययन आप सब के ज्ञान में वृद्धि करेगा।

यह पुस्तक हमारी प्रकाशन–योजना के अधीन तैयार होगी।

इस प्रकार प्रमार वंश की 35 शाखाओं में मुख्य शाखा मोरी का विवरण ऊपर दिया गया है। इसी महान राज वंश की विभूति थे महाराजा विक्रमादित्य। विक्रमादित्य के विषय में अनेकों विवादास्पद घटनायें प्रसिद्ध है। संक्षेप से हम प्रमार वंश के इस आभूषण का वर्णन यहाँ करते हैं। पूर्ण विवरण के लिये हमारी संस्था की LostGlory Reserch Instituteको “विक्रमादित्य का गौरवशाली भारत” नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें। आजीवन सदस्य बन जाने पर तो ऐसी सैकड़ों शोधपूर्ण एवं ज्ञानदायक पुस्तकें तथा ग्रन्थ आपकों (free) निशुल्क प्राप्त होते रहेगे।

बप्पा रावल अथवा बप्पा राय प्रमार जाति की प्रमुख शाखा मौरी अथवा मौर्य वंश से सम्बन्ध रखता था। बप्पा जीको अनेकों प्राचीन ग्रन्थों में ब्रह्मण लिखा गया है जो उचित नहीं है।

यथाः— चितौड प्रशस्ति एवं कुम्भलगढ प्रशस्ति तथा एकलिंग महात्मय में भी बप्पा को ब्रह्मण नागर वंश को आनन्द देने वाला लिखा है।

इसी प्रकार सेः—

आनन्दपुर विनिर्गतः विप्रकुला नन्दनों महीदेवः
जयति श्री गुहदतः प्रभव श्री गुहिवंशस्य।

अर्थात बप्पा के पूर्वज गुहादत को भी ब्रह्मण से क्षत्रिय घोषित किया गया वर्णित किया है। आटपूर आहाड में 1034 विक्रमी के शिलालेख के अनुसार एवं नैणसी की ख्यात के आधार पर यही सिद्ध करनें का यत्न किया गया हैः—

यथाः—

आदमूल उत्पति ब्रह्मपित खत्री जाणा।
आनन्दपुर सिगार नागर अहेश्वर वाणः।।

परन्तु सत्य का तो हम पहले वर्णन कर ही चुके है और वास्तविकता यही है कि पुष्पावती रानी ने सती होते समय बच्चा नागर ब्रह्मणी कमला को पालन हेतू दे दिया था तथा उसी ने उसका लालन—पालन किया। उसी के वंश जी ने बप्पा रावल का जंगलों में छिप कर पालन किया था।

बप्पा रावल के वंश में महाराणा कुम्भा, राण रत्न सिंह महासति पदमनी, राणा साँगा एवं प्रण वीर प्रताप जैसे जवलन्त तेज पुज्ज उत्पन्न हुये जिनका ब्यौरा इस प्रकार है।

1 बप्पा रावल
2 खुम्भान
3 मातर
4 भर्तृभट
5 रवुभाण
6 सहायक
7 रवूम्भाण ॥
8 भ्रतभट ॥
9 वम्लाट (971 ई.)
10 नरवाहन
11 शल्यवाहन
12 शक्ति कुमार
13 अम्बा प्रसाद

14 शूचि कुमार
15 कीर्ति वर्मा
16 योग राज
17 विराट
18 हंस पाल
19 वैरि सिंह
20 विजय सिंह (1164 सम्वत)
21 अरि सिंह
22 चौड सिंह
23 विक्रम सिंह
24 रण सिंह ''यहाँ से राणा तथा रावल दो शाखायें हो गई।
25 क्षेम सिंह
26 सामन्त सिंह
27 कुमार सिंह
28 मन्थन सिंह
29 दपम् सिंह
30 जेत्र सिंह
31 तेज सिंह
32 रत्न सिंह
33 हमीर
34 क्षेत्र सिंह
35 राख लाखा(राण जेव सिंह ने 1270 से लेकर 1309 सम्वत तक अनेकों मुस्लिम आक्रमणों से चितौड की रक्षा की)

जेत्र का बेटा तेज सिंह (1317–1324 सं.) हुआ जिस के सपूत स्वनामधन्य महाराणा रत्न सिंह थे जिनकी धर्म परायण साहसी सुन्दरी पदमनी को प्राप्त करने की लालसा में अलाऊदद्दीन खिलजी ने चितौड पर आक्रमण किया लम्बे युद्ध के पश्चात छदम बल से अलाऊदद्दीन ने विजय प्राप्त की परन्तु मिला क्या?

शीलवन्ती सहियों की चिताओं की गर्म राख।

26 अगस्त की पावन प्रातः को हज़ारों राजपूत ललनाये ''जौहर'' करके चिता पर बैठ गई और हठीले राजपुत्र म्याने तोड़ कर तलवारें हाथ में लिये युद्ध में खेल रहे। रत्न सिंह के बेटे हम्मीर राणा ने पुनः चितौड को स्वतन्त्र कराया। मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण किया परन्तु परास्त हुआ और तत्कालीन ख्याता के अनुसार पच्चास लाख रूपये तथा एक सौ हाथी दे कर जान बचा कर दिल्ली लौट गया।

हमीर के बेटे क्षेत्र सिंह (1364 सं) तथा उसके मेवाड कुल भूषण महाराणा लाखा हुये। जिन्होंने मुसलमानों द्वारा तोड़े ध्वस्त किये गये मन्दिरों का उद्धार किया। इनके बेटे मोकल हुये जिन्होंनें संसार को विश्व को कुछ महानतम वीरों में एक महाराणा कुम्भा जैसा वीर सपूत दिया। पैंतीस वर्ष निरन्तर एक लाख सेना तथा चौदह सौ हाथी साथ लिये वह भयंकर युद्धों में सलम्ब रहे। सुलतान मुहम्मद खिलजी को हरा कर (बन्दी बनाया) तथा मालवा एवं समस्त राजस्थान, गुजरात, अहमदाबाद नागौर माल्हू आदि दर्जनोंदुर्गो तथा प्रदेशों पर केसरिया पताका लहरादी। राणा कुम्भा केवल वीर ही नहीं अपितु विद्वान एवं विदु–जनों का मान करने वाला भी था। इन्होंने गीत–गोबिन्द पर रसिक प्रिय टीका लिखी तथा चार नाटक भी लिखे। अनेको पुस्तके विद्वानों से भी लिखाई तथा विद्वानों को आश्रय दिया।

राणा कुम्भा का बेटा ऊदा जेक्रोधी एवं लम्टर था जिस ने राज्य के लोभ में वृद्ध पिता की हत्या कर दी। वास्तव मे युवराज तो भोजराज थे परन्तु उनकी मृत्यु पिता से पूर्व ही हो गई। इसी भोज की पत्नि थी महारानी मारावाई कृष्ण भक्ति की अनन्त आराधिका मीरा बाई इस वंश की प्रसिद्ध नारी थी।

अब राजगद्दी पर बैठे महाराणा संग्राम सिंह जी राणा कुम्भा के पोते थे। बाबर से लोहा लेने वाले यही राणा सांगा थे। 21 फरवरी 1527 के पावन दिवस को बाबर के मुगल राणा के आंतक से बचने के लिए स्थान ढूँढते आठ मील पीछे भागते चले गये थे।

राणा सांगा के पश्चात कुछ समय संघर्ष में बीता तब राणा उदय सिंह गद्दी पर बैठे। पन्ना बाई ने ही अपनी संतान की बलि देकर इसे बचाया था। इन्ही की संतान थे बीरबर महाराणा प्रताप हिन्दु पद रक्षक हुए जिनके बेटे थे अमर सिंह।

इसके पश्चात कर्ण सिंह, राज सिंह–जय सिंह, जगत सिंह

आदि से वर्तमान, भूतपूर्व राजा महाराणा सुदर्शन दबे जी पर यह महानशाखा आ टिकती है।

## मौरी अथवा मौर्य वंश का विस्तार

मौरी वंश का वर्णन विस्तार से इस लिए किया गया कि वह प्रमार वंश की प्रमुखशाखा है तथा सूद पौराणिक कथाओं के अनुसार वह सूद का बडा भाई था। मौर्य अथवा मौरी का नाम वास्तव में महामय था और प्राचीन काल से चली आ रही मौर्य शाखा का नायक बनने के कारण ही वह मौरी कहलाये। इसी प्रकार से सूदों भी सुदासराजा, जिसका वर्णन पीछे कर आये हैं, के वंशजों का मुखिया बनकर सूद कहलाये। इसी प्रकार से सांकल जिसे प्रमार की तीसरी संतान कहा जाता है। सांकल राज्य एवं जनपद का नायक था।तात्पर्य यह कि 35 अल्ले शाखाएं अथवा चन्द्रवंशी प्रमार कुटुम्ब के विभाग अथवा परिवार थे जिन का पुर्नगठन प्रमार के समय में हुआ। इनका निवास अलग–अलग प्रदेशों में परिवारों के समूहों के रूप में था, जिन प्रदेशों के शासक प्रमार के 35 बेटे थे। प्रमार के चौथे बेटे का नाम खिर था।

सम्भवतः दक्षिण की खरे एवं पंजाब की खेड़ा (सिख जाट) जाति इन्ही की प्रजा थी।

प्रमार की पाँचवी संतान थी उमरा अथवा अमर। सूदों की प्रसिद्ध रियासत अमरकोट का नाम इन्ही के नाम पर रखा गया था। अमरकोट ही वास्तव में प्रमार वंशीयों का देवालय है आगे चलकर सूद इसी प्रदेश पर सैकड़ों वर्ष राज्य करते रहे तथा सारा राजस्थान अमरकोट के भ्रू–संकेत से परिचालित होता रहा जिसका विशद वर्णन आगे आयेगा।

प्रमार की छटी संतान का नाम बहल आया है जो वास्तव में बृहदबल का बिगड़ा हुआ रूप है यह बृहदबल काकण प्रदेश के राजा के रूप में महाभारत काल में प्रसिद्ध थे तथा महाभारत के युद्ध में मारे गये थे। इन्ही की संतान गुजरात, काठियावाड, राजस्थान, मालवा, मध्य प्रदेश में फैली तथा यही प्रमार के अधिकार में आये जो उसने अपने बेटों में बाँटे थे। इसी परिवार के मुखिया के रूप में बहल अथवा बृहदबल ने प्रसिद्धी प्राप्त की आजकल के बहल पंजाबी खत्री सम्भवतः उसके वंशज हैं। ऊपर वर्णित बृहद्वल राजा सुदास की लगभग तैंतीस पीढी बाद हुये थे और महाभारत के समकालीन थे।

प्रमार की सातवीं संतान थी नगावत जो राजस्थान के बिज्जोली प्रदेश का शासक बना। आठवीं सतांन का नाम भुल्लर था। सम्भवतः भुल्लर जाट इसी के वंशज हैं। भुल्लर को उतरी परत का प्रदेश मिला था और पंजाब उनका निकटतम प्रदेश था इसी प्रकार से नवां बेटा खिवा सौराष्ट्र में, दशम् उमत ने उमत वाडा (मालवा) में राज्य किया। खिवा की संतान इस समय सिराही प्रदेश में है।

शेष में से ढुन्ढा, रिहाड, सरौठ अथवा सरोठिया, हरियार आदि मालवा के विभिन्न प्रदेशों के सरदार बने। कुल पैंतीस के नामों की सूची इस प्रकार से है।

1 महामय ''मौरी'' –चितौड एवं उत्तर भारत
2 सूदा –धात प्रदेश
3 सौकल –पुश्कल एवं भारवाड.
4 खिर –खिरालू
5 अमरा –अमरकोट
6 बृदबल –चन्द्रावती
7 नखावत –विजौली (राज)
8 भौल्लर –ऊतरी भारत
9 खिवा –सौराष्ट्र
10 उमत –उमत वाड़ा (मालवा)
11 ढून्ढा
12 सरौठिया– मालवा के विभिन्नदुर्गो के सरदार थे।
13 हरियार
14 राय

शेष इक्कीस के नाम इस प्रकार है।

15 चविंडा16 खिज्जी (खिघ्जी)(चौमुडा) 17 सौधरा18 बरकोटिया 19 पौनी 20 श्यामपाल 21 मेसवी22 कालपीसर23 कालवाहया24 गोहिला25 पीपा26 धौरिया27 ढुन्ढा28 धेबा29 बृहर30 चापकार31 पौसर32 धुन्ता33 रूकर्मया34 ढायेका35 समर

इनमें से वह जो सिन्ध के उस पार अफगानिस्तान (उपगणस्थान) बलोचिस्तान (बलउच्चस्थान) हिरात (हरिआय) ईरान (आर्यान) इराक आदि में अपने में अपने विजयों के पश्चात बस गये थे वह वहीं मुसलमानों के भीषण आक्रमणों के फंदे मे फंसकर मुसलमान हुए इस समय भी मुस्लिम देशों में इन मुसलमान बने राजपूतों में कई हिन्दु रिवाज जीवित मिलते है। यथा ईरान के वृजिन्द नगर में मुसलमान सिर पर चोटी रखते है

यदिउनसे ऐसा करने का कारण पूछा जाये तो उत्तर मिलता है कि हमारे पूर्वज ऐसे ही चोटी रखा करते थे। दूसरे समरकन्द की दीवारों पर हमीरी भाषा मे मिले लेख इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

तीसरे खुरासान के हिरात नगर का मूल शब्द हरि है। हरीकुलस = हरि+कुल+ईश है जैसा कि टाड साहिब ने भी राजस्थान के इतिहास में इस तथ्य को स्वीकार किया है। अफगानिस्तान से चालीस मील दूर कंधार प्रदेश में एक पर्वत का नाम अब कोंह शेव बोलान है। संस्कृत साहित्य में इसका नाम शिव–भोला मिलता है। इसी स्थान पर एक गुफा है जहां अनन्त काल से पानी सिमट कर एकत्र होता तथा जम कर शिव लिंग का रूप धारण करता रहता है और शनः–शनः स्वयं ही पिघलकर गुम हो जाता है। इसी गुफा में अनादि से एक ज्योती जलती आ रही है जिसका भेद आज तक कोई जान नहीं सका। पारसी जो मुसलमानी आक्रमण के प्रवाह में बह गये चन्द्र वंशी आर्य सिद्ध होते है तथा अब भी जनैऊ पहनना अपना धर्म समझते है।

सिन्धु से इराक तक का एक–एक नगर हिन्दु भारत की महानता के अनुपम् उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। कन्धार प्राचीन गांधार के हिन्दु राज्य एवं चमन चयबन का बिगड़ा हुआ रूप है। वृजिन्द वृज शब्द का ही पर्याय मात्र है और बृज शब्दमथुरा तथा गोकुल के प्रदेश को कहते है। हम मान पूर्वक कहते है कि सिन्ध के मुसलमान, बलोचिस्तान के बलौच, पुख्तुन, अफगान अधिकतः सूद एवं यादव राजपूत है जो मुसलमानी आक्रमणों के मध्य बिछुड कर स्वधर्म एवं स्वदेश को भूल बैठे।

प्रमार की इन्ही अल्लों एवं शाखाओं का विवरण यथास्थान पुनः प्रस्तुत किया जायेगा।

# प्रमार कुलभूषण महाराजा विक्रमादित्य

विक्रमादित्य भारतीय इतिहास की सबसे बडी उलझन है। इतिहास के अनेकों महारथी इसकी भूल–भूलैयों में उलझ कर रह गये। परिणाम यह हुआ कि विक्रमादित्य के विषय में अनेकों कथा कहानियां, पौराणिक अटकले आदि जन्म लेती रही और वास्तविक विक्रमादित्य इनमें खो गये। प्रायः इतिहासकार गुप्त वंश के चन्द्र गुप्त प्रथम के पोते तथा समुन्द्र के बेटे चन्द्र गुप्त –।। विक्रमादित्यको ही सही विक्रमादित्य मानते आ रहे है जो उचित नहीं। एक अन्य महाराजा यशोथर्मदेव विक्रमादित्य को भी इसी प्रकार से प्रसिद्ध विक्रमादित्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु विदेशी लेखकों के अंग्रेज़ी संस्करणों को आधार बना कर इतिहास की पुस्तके लिख डालने वाले काले अंग्रेज (भारतीय) इस तथ्य को भूल जाते है कि उनके नाम क्रमशः चन्द्र गुप्त द्वितीय तथा यशोधर्मदेव थे। विक्रमादित्य नहीं, विक्रमादित्य तो मात्र उपाधि थी जो इन महान राजाओं ने अपने महान कार्यो के अनुरूप धारण की थी। इसका अर्थ यह हुआ कि उन दोनों से पूर्व कोई विक्रमादित्य नामका महान राजा हो चुका था जिनकी महानता को आदर्श एवं उदाहरण बना कर इन दोनों राजाओ ने अपने नाम के साथ विक्रमादित्य की उपाधि लगानी आवश्यक समझी–अर्थात् इन्होंनें उस–विक्रमादित्य को स्वंय अपने से अधिक महान तथा श्रद्धा योग्य समझा।

तो वह विक्रमादित्य कौन था।

अपने योग्य पाठकों की सेवा में हम इस उलझन का निम्नलिखित रूप प्रस्तुत करते है।

पीछे हमने पृष्ठ 66 पर एक वंशावलि प्रस्तुत की है। उस में धारा नगरी के निर्माता राजा धारादास का नाम आया है। इसी धारा दास के बडें बेटे इन्द्र के दो बेटे थे।

वीर भद्र तथा गंर्धव देव। गंर्धव देव की तीन सन्ताने हुई जिन के नाम थे।

1 कर्ण
2 भ्रतहरि
3 विक्रम

यह विक्रम उपाधि न हो कर नाम था उस महान प्रतापी सम्राट का जिस का श्रद्धा पूर्वक हम दो हजार वर्ष से विक्रमी संवत के साथ स्मरण करते चले आ रहे है।

धारा दास प्रेम कंवर अर्थात प्रमार के बेटे थे। उनका संघर्ष निरन्तर बौद्ध, जैन, द्राविड एवं अन्य अर्नाय जातियों के राजाओं से निरन्तर चलता रहा। क्योंकि प्रमार वंश की उत्पति ही नास्तिक राजाओं के नाश के लिये हुई थी। गंर्धव सेना अपने एकमात्र बड़े बेटे कर्ण को सिंहासन देकर स्वयं युद्धों एवं वेदमत के उत्थान मे मग्न हो गये। पीछे बौद्ध राजाओ ने गंर्धव सेना की अनुपस्थिती में आक्रमण कर दिया। दुर्ग में सेना कम थी। कर्ण वीरता पूर्वक युद्ध करते मारे गये भृतहरि बहुत छोटे थे और विक्रम अभी संसार में आये ही न थे। एक ही पुत्र—शोक से व्याकुल राजा धारा दास अपने भाई वीर भद्र का राज्य दे कर जंगलों में चले गये परन्तु वहां वीर मति नामक सुन्दर अप्सरा के प्रेम—पाश में पड कर एक संतान को जन्म दिया जिस का नाम था विक्रम यह घटना भाद्र मास कृष्ण पक्ष 89 ई. पूर्व की है। पांच वर्ष की आयु में वह पिता के साथ तपादि का प्रभाव ग्रहण करता रहा तथा संसार से विरक्तशांत एवं सुलझे हुये मस्तिष्क का स्वामी बना।

वीर भद्र की मृत्यु के पश्चात राज्य रक्षा एवं परिस्थीतियों से विवश हो कर राजा गंर्धव सेना को पुनः राज्य की बाग—डोर सम्भालनी पड़ी। इसी मध्य तीसरे बेटे भ्रतहरि का जन्म हुआ।

विक्रम वही जंगल के पास जब्बल नगरी के पास नर्मदा के तट पर बने गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करते रहे। यहीं पर भ्रतहरि भी बाद में शिक्षा हेतू भेज दिये गये।

जब विक्रम बीस वर्ष के हुये तो राज्य के अधिकारी वही रह गये अतः इन्हे बुला कर सिंहासन दिया जाने लगा। परन्तु विक्रम तो जंगल के स्वतन्त्र शांत एवं धार्मिक वातावरण से भीग चुके थे अतः उन्होंने स्वेच्छा से राज्य का अधिकार अपने छोटे भाई भृतहरि के लिये छोड दिया।

भ्रांति प्रेम के इस उच्च–उदाहरण के कुछ ही समय बाद भ्रतहरि के जीवन में ऐसा मोड आया कि जिस ने उस के जीवन की धारा ही पलट दी।

अपनी पत्नि के दुश्चरित्रा एवं कुलटा होने का प्रमाण उन्हे एकाएक मिला जिसे पाठकगण जन साधारण में प्रचलित प्रसिद्ध कथा के रूप में जानते होंगे कि किस प्रकार से एक अमर फल राजा का किसी सन्यासी ने भेंट किया और राजाभ्रतहरि ने अत्यधिक प्रेम के कारण वह फल अपनी महारानी को भेंट किया। महारानी नगर कोतवाल के प्रेम मे फंसी थी। उस ने वह फल अपने प्रेमी को दिया और वही फल उस कोतवाल ने अपनी प्रेमिका एक वेश्या को भेंट किया और वेश्या ये उस फल को राजा के ही योग्य समझ कर अथवा इनाम के लालच में पुनः फल राजा को भेट कर दिया। राजा ने खोज पूँछ की तो भेद खुल गया।

नारी की इसी बेवफाई से निराश हो कर भ्रतहरि ने राज्य का त्याग कर दिया एवं उच्च कोटि के सन्त बने।

इन की प्रसिद्ध रचना भ्रतहरि शतक वैराग्य एवं अध्यात्मवाद के क्षेत्र में एक अमुल्य देन है। नीति के तीन ग्रन्थ उनकी अमर कृतियां है।

भ्रतहरि के पश्चात विक्रम को विवश कर के राजगद्दी पर बिठाया गया क्योंकि राज परिवार में केवल वही एक मात्र जीवित पुरूष थे।

सन्त स्वभाव बुद्धिमान विक्रम ने पिता के समान प्रजा का पालन करते हुये उज्जैन के राज्य सिंहासन को विश्व में अमर कर दिया।

आयू बढ़ते जाने पर भी सन्तान एवं उतराधिकारी की प्राप्ति के लिये विक्रम का विवाह प्रमार के दूसरे बेटे सूदा की बेटी शिखावती से कर दिया गया। परन्तु इस के विपरीत राजा के यहाँ कोई सन्तान न हुई।

विक्रम के राज्यकाल में बौद्ध समर्थक एवं शक आदि राजा निरन्तर आक्रमण करके इस एक मात्र महान हिन्दु मालवा राज्य को समाप्ति के लिये प्रयत्नशील रहे। परन्तु विक्रमादित्य ने वीरता पूर्वक शको को उज्जैन से बाहर खदेड़ दिया तथा उसका सेना पति मातृ गुप्त पीछा करता मुलतान तक जा पहुँचा जहाँ से शक सरदार काश्मीर भाग गया और वहां पीछाकिये जाने पर शकों ने भयभीत हो कर हिन्दु धर्म स्वीकार कर लिया और कुशान काश्मीर के जंगलों में छिप कर अवसर ढूढँते रहे। शको के साथ हुणों के भीषण छापे भी आरम्भ हो चुके थे और इन्होनें सिन्ध के मार्ग से पश्चिमी पंजाब, कन्धार, मरी रावल पिंडी मार्ग से कश्मीर आदि प्रदेशों में घुस कर षडयन्त्रएवं उत्पात मचा रखा था। वह मिहिरकुल एवं तोरमान नामक सरदारों के वंशज एवं सन्तना नामक सरदार के अधिन सक्रिय थे जो मातृ गुप्त से हार कर भाग गया था।

## विक्रमी सम्वतका आरम्भ

विक्रमादित्य न केवल वीर योद्धा ही था अपितु योग्य एवं विद्वान भी था। शन्नै–शन्नै तमाम उतरी भाग एवं दक्षिण के प्रमुख प्रदेशों पर अधिकार करके उन्होने अखण्ड हिन्दु राज्य की स्थापना की उनकी सभा के नव

रत्न संसार के अमर महापुरूष हो चुके है। जनता को स्नेह से तथा शत्रु को कटार से जीत कर एक छत्र शांत राज्य की स्थापना की।

नव रत्नों में नाम तथा कृतियॉ इस प्रकार है।

| | |
|---|---|
| 1 धन्वन्तरी | विश्व प्रसिद्धवेद्य |
| 2 अमर सिंह | संस्कृत की अमर कृति अमर कोष के रचयिता |
| 3 कालिदास | प्रसिद्ध नाटककार एवं कवि। मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तल आदि के अमर रचयिता। |
| 4 वराह रूचि | प्राकृत व्याकरण के रचनाकार। |
| 5 राधा मिहिर मंजम | प्रसिद्ध गणितज्ञ। |
| 6 शशंकू | तक्र शास्त्री एवं चिन्तक। |
| 7 कक्षयक | दाशर्निक |
| 8 दत्तल भट | हास्यविनोद महारथी। |
| 9 खट्टर | राज्य प्रबन्ध के प्रमुख। |

नवरत्नों से परार्मश पा कर इन्होंने तमाम राष्ट्र को अधीन करके नया संवत जारी करने का निश्चय किया और क्षेयक, शशकू एवं खट्टकर पर आधारित समिति से प्रजा–तन्त्रिक ढंग से परामर्श मांगा और क्षात्र धर्म के अनुकूल इरान, इराक तक के प्रदेशों के शासकों को कर देने पर विवश किया तथा उस समय के सब से बलवान रोम के प्रसिद्ध कैसर जुलियससीजर को एकेले मल्ल युद्ध में चुनौती दे कर पराजित किया एवं लौट कर विक्रमी सम्वत तथा महाराजाधिराज के साथ आदित्य अर्थात् (वीरता का सुर्य) की उपाधि धारण की यह जो ईसा से 57 वर्ष पूर्व की है।

# “शल्यवाहन से युद्ध”

अब यहाँ मौर्य परिवार का इतिहास सूद के परिवार से मिलता है और हमारे सामने इतिहास की दूसरी सब से बड़ी उलझन शल्यवाहन प्रस्तुत होते है जिसका ब्यौरा यूं है।

प्रमार के दूसरे बेटे सूदा की चौदह संताने थी जिन में दस बेटे थे और चार बेटियाँ थी।

सूद के बेटे मंजन राय की लगभग अठारहवीं पीढ़ी से निधार राय राजा हुए।

निधार राय सान्थाल प्रदेश में राज्य करते थे। उनके एक बेटेका नामशल्यवाहन था। अभी उसकी आयु चार वर्ष की ही थी कि वह एक षडयंन्त्र द्वारा उठा कर गुम कर दिया गया। शल्यवाहन का वास्तविक नाम शक–भरण था। माता–पिता तथा जन्म–भूमि से छूट कर वह बालक पटन के एक कुम्हार के घर पलता रहा और होश सम्भालने पर उसे त्रिहुत के राजा के पास नौकर करा दिया गया। यह प्रदेश आज ज़िला, दरभंगा तथा मुज़्जफराबाद के जिलों में है तथा प्राचीन काल से यही प्रदेश मिथिला के नाम से प्रसिद्ध था।

माता–पिता वंश, धर्म सभी से अपरिचित यह राजपुत्र राज–महल से सम्बन्धित सेवा कार्यों मे लगा रहा।

राजा का एक बेटा था चन्द्र–शिखर तथा एक बेटी चन्द्र कुमारी थी। प्रायः राज कुमारी चन्द्र कुमारी नित्य ही शक–भरण को देखती थी। शनः–शनः दोनों के हृदय में आदर और पसंद का स्थान प्रेम ने ले लिया । अब प्रेम की अभिव्यक्ति नयनों के स्थानपर शब्दों के द्वारा होने लगी एवं दोनों घन्टों बैठे बातें करते रहते थे।

राजकुमारी युद्ध विद्या एवं शिकार मे अत्यंत निपुण थी तथा शिकार पर शल्यवाहन उस का अंग–रक्षक बनकर साथ जाता एवं दोनों घनी झाड़ीयों में प्रेम का आदान–प्रदान करते रहते यहाँ तक कि राज कुमारी गर्भवती हो गई। उन्ही दिनों चन्द्र गुप्त का वंशज श्याम चरण मौर्य मुगर के दुर्ग का स्वामी था। वह चन्द्र कुमारी से अत्यधिक प्रेम करता था। उसने चन्द्र कुमारी से विवाह की इच्छा प्रकट की जिसे त्रिहुत राज ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

यह घटना दोनों प्रेमियों पर वज्र के समान गिरी। चन्द्र कुमारी तो इस बात को सुनते ही बेहोश हो कर गिर प्ड़ी राजा और रानी ने राज वैद्य को बुला कर कारण पूछा तो उन्होंने कह दिया कि चन्द्र कुमारी गर्भवती है। राजा के क्रोध की कोई सीमा न रही। उन्होंने एक ओर तो श्याम चरण को बुला कर सत्य स्पष्टतः प्रकट कर दिया और दूसरी ओर पूछ ताछ पर भेद खुलने पर शक–भरण (शल्यवान) की दंडित करने की सोची कि शक–भरण प्रदेश छोड़ कर निकल गया।

अत्यधिक प्रेम की भावुकता में श्याम चरण मौर्य ने अब भी चन्द्र कुमारी को अपनाने की इच्छा प्रकट की तथा उसे विवाह कर साथ मुगेर ले गया।

चन्द्र कुमारी अपने शिकार आदि के व्यसन के कारण जंगल मे निकल जाया करती थी और पूर्व निधार्रित स्थान पर शल्यवाहन से मिल लिया करती। चन्द्र कुमारी ने शल्यवाहन की बेटी को जन्म दिया।

एक दिन जब दोनों जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठे थे तो श्याम चरण मौरी ने सैनिको सहित आकर उसे पकड़ लिया और बौद्ध पर उस की बलि देनी चाही परन्तु शल्यवाहन एक सैनिक की कटार खींच का घोड़े पर कूदा और भाग निकला। और भागता हुआ कश्मीर जा पहुँचा।

यह घटना सन् बाइस की है जबकि कुशान वंश का राजा कनिष्क भारत में पांव जमाने का यत्न कर रहा था कि महाराजा विक्रमादित्य के सेनापति मातृ गुप्त ने निरन्तर आक्रमणों द्वारातमाम प्रदेशों पर अधिकार करके शक हुण, कुशान आदि अर्नाय बौद्ध सर्मथक से भारत को साफ करना आरम्भ कर दिया। कनिष्क को कश्मीर के बाहर जंगलो में छिप कर प्राण बचाने पड़े। शल्यवाह श्यामचरण के प्रदेश से भागकर कश्मीर के जंगलों में से निकल रहा था कि कनिष्क ने उसे वहाँ रोका और उस के चेहरे पर राजसी तेज देख कर नाम पता आदि पूछा। शल्यवाहन के अपना नाम एवं बीती हुई घटनायें कनिष्क को कह सुनाई। कनिष्क ने उसे एक दूसरे की मदद के वचन पर अपना सेनापति बना कर सेना की काश्मीर विजय का आदेश दिया क्षत्रिय तेज पुज्ज उस वीर ने तीन भीषण युद्धों के पश्चात कश्मीर पर अधिकार कर लिया। अब कनिष्क को प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। उसे मानो कुशानों के भारत–विजय के स्वप्न साकार करने का साधन ही मिल गया।

तुरन्त ही उसने पचास हज़ार सैनिक देकर उसे उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य पर आक्रमण की आज्ञा दी। क्योंकि समस्त भारत में शक, हुण कुशान एवं बौद्ध नास्तिकों के विरूद्ध प्रमार वंश के उस महान वीर की कटार निरन्तर म्यान से बाहर आ रही थी।

शल्यवाहन चल पड़ा परन्तु वह नहीं जानता था किवह अपने ही घर–परिवार पर आक्रमण करने जा रहा है।

इधर साम्थाल के राजा निधार राय सूद ने बेटे के गुम हो जाने पर निराश हो कर सन्यास ले लिया था और अपनी एक बेटी शिखावती अर्थात अपने बेटे शल्यवाहन की बहन का विवाहमहा प्रतापी सम्राट विक्रमादित्य से कर

दिया था। सभी ही शल्यवाहन की ओर से निराश हो चुके थे।

इधर कुशान सेना धूल उडाती हुई शल्यवाहन के नैतृत्व मे उज्जैन की ओर बढती चली गई। यहाँ तक कि उज्जैन से पाँच मील दक्षिण में एक स्थान पर डेरा डाल दिया जो यहाँ बौद्ध सर्मथकों के संहार के कारण बौद्ध शाका के नाम से प्रसिद्ध थी।

आक्रमण की सूचना पा कर राजा विक्रम ने अपनी महारानी शिखावती (शल्यवाहन की बहन) तथा अपनी बेटी (शल्यवाहन की भांजी) को पास के दुर्ग में सुरक्षित स्थान पर भेजकर सेना का दुर्ग से निकल कर आगे बढ़ने की आज्ञा दी।

युवा क्षत्रिय तेज बूढे क्षत्रिय महाराजा से जा टकराया और रक्त पात हुआ और भीषण युद्ध करते हुये शल्यवाहन ने अपना वज्र थके हुये महाराजा के सिर पर दे मारा बूढे विक्रम यह चोट न सह सके परन्तु गिरते–गिरते भी उन्होंने अपनी कटार का भीषण वार शल्यवाहन के सिर पर कर ही दिया। जिस से माथे पर गहरा घाव बन कर बह निकला।

महाराजा के नव रत्न भी युद्ध मे संलग्न रह कर महाभारत कालीन भारतीय परम्परा को आगे बढ़ा रहे थे। घायल एवं अचेत महाराजा को सैनिकों ने उठा कर दुर्ग के भीतर महल में पहुँचा दिया एवं राज वैद्य उपचार आदि में लग गये। उधर शल्यवाहन भीषण घाव से व्याकुल और अर्ध मूर्छित हो भाग निकला और शक तथा बौद्ध सेना भाग निकली। शल्यवाहन भागते हुये उस स्थान के पास से निकला जहाँ महारानी तथा उनकी बेटी रह रहीं थी। शल्यवाहन घाव की पीडा से व्याकुल हो कर दुर्ग के पास ही उद्यान के कोने में गिर पड़ा।

महारानी शिखवती जो पास ही उद्यान में युद्ध के समाचारों की प्रतीक्षा में थी उसने जब एक तेज वान शस्त्र धारी युवक को घायल अवस्था में गिरते देखा तो एकाएक जैसे मातृ प्रेम के रक्त ने जोश मारा। भाग कर उसने कवच खोल कर रक्त सने वस्त्र को खींच दिया तो जैसे दूर ही कोई बिजली कौंध गई।

वर्तमान चवन्नी जितना एक दाग जो जन्म से ही उसके भाई की बगल में था उसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था। राजसी तेज से भरे उस राजरक्त को पहचानते रानी शिखावती को देर न लगी और सुख–दुखः के आँसुओं में डूबी उसे महल में ले गई।

राज वैद्य को बुला कर मरहम पटटी की गई और उस के होश आने पर शिखावती रूधे कन्ठ से भाई से लिपट गई और अपने हक्के–बक्के भाई को उस के बचपन में खो जाने की कथा कह सुनाई। अपना अतीत शल्यवाहन के सामने घूमने लगा और उस ने अपने कारण से महा प्रतापी विक्रम पर आये कष्ट के लिये क्षमा याचना की।

अभी महाराजा विक्रमादित्य की दशा गम्भीर ही थी कि सूचना पहुँची कि कनिष्क स्वयं भारी सेना के साथ बढ़ा चला आ रहा था। घायल पति एवं भाई तथा शत्रु की भारी सेना से आने वाले संकट का सामना करने के लिये महारानी ने नवरत्नों से परार्मश किया और स्वयं सेना का नैतृत्व सम्भाल कर युद्ध क्षेत्र मे आ डटी। घमासान युद्ध हुआ। क्षत्राणी की हुंकार पर वीर बढ़ कर वार करने लगे और कनिष्क की सेना भीषण मार खा कर पीछे हटने लगा। इस पर कनिष्क में राजनैतिक दावपेंच और पासे फैंकने आरम्भ किये। उसने सफेद झण्डी लहरा दी। शांति स्थापना एवं सन्धि की प्रार्थना रानी ने स्वीकार कर ली और सेना को दुर्ग में चले जाने का आदेश दिया। अभी आधी सेना की दुर्ग के भीतर पहुँच गई थी और शेष

आधी सेना ही बाहर थी कि कनिष्क ने उस सेना को घेर कर भरपूर आक्रमण कर दिया। रानी सूचना पाते ही तेज से पलटी और घेरे को चीरती हुई भायानक मार काट करने लगी। परन्तु शत्रु हजारों थे और रानी थी घिरी हुई वीर हजारों को काट कर शहीद होते गये। अन्तः में स्वयंरानी के साथ दो सौ सैनिकों तथा नवरत्न ही शेष रह गये। दो नवरत्न दुर्ग में थे और द्वार पर युद्ध जारी था।

जीवित नव रत्न थेः– 1 वत्सल 2 शिशंकू 3 धन्वन्तरी तथा चौथा कालीदास। इस में धन्वन्तरी महाराणा विक्रमादित्य एवं शल्यवाहन का इलाज उपचार कर रहे थे और कालीदास मृत्यु सैया पर पड़े महाराज का युद्ध की घटनाओ से अवगत करा रहे थे।

रानी हजारों पिशाचों और आनार्य के घेरे में थी। भयानक घायल होने के बाद भी उस के हाथ बौद्ध और कुशानों के काटते जाते थे। तभी घायल रानी शिखावती मूर्छित गिरने लगी थी कि नवरत्न वत्सल तीव्रता से तलवार चलाते उसे घेरे से बाहर निकाल लाया।

सैनिक महारानी को उठा कर महल में ले जा रहे थे कि मासियों ने बेहोश रानी को मृतक समझ कर भाग कर महाराजा की यह दुखदायी सूचना जा सूनाई। बूढ़े महाराजा विक्रमादित्य कदााचित महारानी की ही प्रतीक्षा में जीवित थे। बुदबुदाते अस्फुट स्वर में इतना ही कहा और प्राण त्याग दिये किः–

## "हरि इच्छा सम्पूर्णि"

इस प्रकार से विक्रमी संवत के महान प्रवर्तक, वंश की परम विभूति शक हुण बौद्ध आदि के लिये नर–केहरि महान विद्वान एवं शूखीर सम्राट का अन्तः हुआ।

तत्पश्चात कई इतिहासकारों के अनुसार विक्रमादित्य का पोता शल्यवाहन राजगद्दी पर बैठा परन्तु यह सत्य नही है। महाराजा विक्रमादित्य की कोई संतान न थी और उनका दाह–संस्कार प्रजा ने किया था जो महाराजा को पुत्रवत थी। अतः हमारे विचार की पुष्टि स्वयं ही हो जाती है कि विक्रमादित्य के पश्चात जो शल्यवाहन राजगद्दी पर बैठा, रानी शिखावती का भाई तथा महाराजा विक्रमादित्य का साला यही शल्यवाहन अथवा शक भरण ही था। इस प्रकार से महान तेज वान राज वंश प्रमार रवान्दान का राज्य उसी वंश की दूसरी शाखा ''सूद'' के हाथ आ गया। विक्रमादित्य के पश्चात–आपात काल में महाराजा मालदेव ने राज्य सम्भाला था और फिर उसे जनता जनार्दन की इच्छानुसार प्रतापी युवक शल्यवाहन को पाटन का राज्य दिया था।

## ''भ्रान्ति का निराकरण''

शल्यवाहन का जीवन–चरित्र भी विक्रमादित्य के समान ही भ्रान्तियों से पूर्ण है। वास्तव में इतिहासकारों ने एक से अधिक शल्यवाहन नाम के राजपुत्रों को एक ही स्थान पर एकत्र कर के उनके कृत्यों को गलत–मलत कर दिया है।

वास्तव में प्रसिद्ध महाप्रतापी शल्यवाहन यही सूद–सुत ही था। एक दुसरे शल्यवाहन यादव अथवा भट्टी वंश के महाराजा गज सिंह कें वंशज राजा शल्यवाहन पंजाब में भी हुये है जिन्होंने ''शल्यवाहन कोट'' (स्यालकोट) बसाया तथा गजनी पर राज्य किया।

यह काश्मीर के राजा गंधर्व की कन्या से था। एक अन्य शल्यवाहन नाग वंश (तक्षक) के सुर्य वंशी भी हुए है। वास्तव में विदेशी इतिहासकार केवल नाम और शब्दों के अर्थो के आधार पर ही निश्चय लेते है। जिन से

भारतीय इतिहासकार भी वैसे ही नकल कर लेते है। इस प्रकार से इतिहास बुद्धि से बाहर उलझनों का गुच्छा बन कर रह जाता है।

## लालकिला का निर्माता

पाठकगण चौंक उठेंगे कि लाल किला का यहाँ क्या अर्थ। वास्तव में भ्रान्ति हमारे अज्ञानी भारतीय जनो के मस्तिष्क में आक्रमणकारी विदेशीयों के चाटुकार जातीय द्वेष से भरेदरबारी इतिहासकारों ने बिठा रखी है कि ताजमहल, लाल किला, कुतुब की लाट आदि शाहजहाँ आदि मुगल राजाओं ने बनवाये थे। यह नितान्त असत्य भ्रान्ति पूर्ण तथा हमारी निर्माण कला पर डाके समान है। लाल किला वास्तव में महाराजा विक्रमादित्य की अस्थायी राजधानी दिल्ली में महाराजा का आवास स्थान यही महल था। यही भवन आगे चल कर चौहान सम्राट पृथ्वी राज को उस के नाना से प्राप्त हुआ था और पृथ्वी राज कि पत्नि संयोगिता इस महल के पिछले द्वार से निकल कर यमुना स्नान करती तथा प्राचीन के गुम्वज से सुर्य को अर्ध्य चढ़ाया करती थी। शाहजहाँ के पूर्वजों ने अभी भारत मे पांव तक नहीं धरा था।

इसी प्रकार से वर्तमान ताजमहल भी अति प्राचीन भारतीय भवन था जिसका एक भाग मन्दिर था। आगे चल कर राजा जय–सिंह सवाई इसी में निवास रखते रहे जिस से यह भवन शाहजहाँ ने प्राप्त करके ऊपरी भाग गिरा कर लगभग उसी नींव पर मकबरा और ऊपर का भवन बना डाला।

यही दशा कुतुब की लाट, काली मस्जिद, मथुरा–काशी बनारस तथा अयोध्या आदि में बनी मस्जिदों आदि की है।

ईसा पूर्व 322 में जब सिन्कदर के सेनापतियों एवं सैनिकों को भारत से खदेड़ कर पुनः स्वाधीन राज्य स्थापित किया तो उप–अभियान की नामक कृष्ण अर्जुन की जोड़ी चन्द्र गुप्त और चाणक्य की ही थी। चन्द्र गुप्त मौर्य ने भारत में महाभारतके पश्चात प्रथम बार ऐसा विशाल एवं अखण्ड मौर्य हिन्दु राज्य स्थापित किया जिसकी उदाहरण नहीं मिलती। अदूर्दशी एवं जातिय द्वेष से भरे स्वार्थी इतिहासकारों ने जो नर्नगल लाच्छान पूर्ण कथाऐ चन्द्र गुप्त एवं मोरी वशं से सम्बन्ध में थी उन सब का तक्र पुर्वक सप्रमाण खण्डन हम पीछे कर ही आये है।

चन्द्र गुप्त मौर्य के बेटे बिन्दुसार ने अपने महान पिता की उत्तम परम्पराओं को अक्षुष्य बनाये रखा एवं एशिया माईनर तथा मिश्र देश के राजाएवं रानी से उचित व्यवहार द्वारा देश विदेश मे अपने प्रताप में वृद्धि की।

उस का वंशज था विश्व के छः महान सम्राटों में एक माना जाने वाला महान सम्राट अशोक महान । मैं पीछे कह चुका हूँकि महात्मा बुद्ध और मौर्य वंश परस्पर एक दूसरे से संबंधित थे। कदाचित इसी कारण प्रायः मौर्य राजा बुद्ध मत के अनुवादी रहे एवं प्रशंसक रहे।

महाराजा अशोक तो जैसे बौद्ध विचार–धारा का जीवित उपघोष ही बन गये थे। ऐसा कहीं किसी शिला लेख आदि में स्पष्ट वर्णित नहीं कि उन्होंने बुद्ध धर्म को स्वीकार किया था उपगुप्त द्वारा धर्म परिवर्तन की घटना भी स्पष्ट नहीं है। अपितु अहिंसा, सत्य, दया, नेकी जैसे बौद्ध सिद्धान्तों पर अशोक से अधिक किसी ने भी जोर नही दिया।

राजा मान मौर्य, श्यामचरण मोरी एवं अन्तिम मोरी राजा बृहद्रथ सभी ही प्रायः बुद्ध के समर्थक थे और कदाचितइसी कारण हर राजा मान मोरी को सिंहासन एवं प्राण दोनों ही खोंने पडे और इसी कारण ही अन्तिम मौर्य राजा बृहद्वल को उस के ब्राह्मण सेनापति पुष्य मित्र ने

मान कर 184 ई. पूर्व में मौर्य वंश का अन्त कर डाला अशोक के पश्चात नेत्रहीन बेटा कुनाल राजा बना।

आठ वर्ष राज्य करने के पश्चात उसके बेटे दशरथ ने फिर उस के पुत्र सम्प्रति ने 9 वर्ष राज्य करके जैन धर्म की भारी सेवाये की। तब शाक्ति, देव वर्मा तथा फिर उस के दो पुत्रों शतधनुष तथा बृहदरथ ने क्रमशः राज्य पाया। इसी बृहदरथ की ब्राह्मण सेनापति द्वारा हत्या कर दिये जाने पर मगध राज्य में मौर्य शासन का अन्त हो गया तथा मेवाड बाद मे ही भारत में मौर्य शासन का केन्द्र बन गया जहाँ उस के वंशज मान मोरी राजा बना।

प्रमार वंश की महान विभूति

# महाराजा भोज

संसार के कुछ महानतम् सम्राटों में जो न केवल वीर ही थे अपितु स्वंय विद्वान–विद्यारिसक तथा विद्वानों के आश्रय दाता भी थे। उन में महाराजा भोज का नाम सर्व–प्रमुख है। 513 विकमी संवत 530 में जन्म पाकर महाराजा भोज ने 567 ई. में अपने पिता सिन्धु राज की मृत्यु के पश्चात अपने चाचा मुज्ज से व्यस्क होने पर उत्तराधिकार प्राप्त किया तथा 595 तक प्रजा का पालन किया तथा तलवार और लेखनी महाकाली लक्ष्मी एवं सरस्वती का अभूतपूर्व संगम प्रस्तुत किया। प्रजा पालन में भगवान राम के पश्चात महाराजा विक्रमादित्य तथा फिर महाराजा भोज का ही नाम लिया जाता है 595 ई. में राज्य त्याग कर निरन्तर छब्बीस वर्ष तपस्या करने के पश्चात 621 वि:सः में सांसारिक लीला समाप्त की उन्नतीस वर्ष निरन्तर कैलाश पर्वत से मलय पर्वत तक महाराजा पुथु के समान ही धरती का राज्य–सुख भोग अमर स्थान प्राप्त किया। पूर्ण विवरण जीवन चरित्र में पृथक दिया जायेगा।

# हठ के नीचे तड़पते सत्य

निरन्तर दो हजार वर्षों के बाहरी आक्रमणों परस्पर गृह युद्धो, अस्त व्यस्तता एवं लूट माने भारत के इतिहास को घटनाओ की सरकस मात्र बना कर रखा दिया है। कोई भी घटना सत्य है या असत्य, निश्चय से नहीं कहा जा सकताविशेष कर मुसलमान और अंग्रेज इतिहासकारों ने तो संस्कृत साहित्य तथा भारतीय परम्पराओं से अनभिज्ञ होने के कारण जैसे ''भारतीय इतिहास के साथ इतना भीषण व्यभिचार'' किया है कि इतिहासिक सत्यों की कमर टूट कर रह गई है। फिर मुसलमानी तथा अंग्रेज लेखको के (देसी नक्काल) भारतीय लेखकों ने जल्दी पी. एच. डी. करने अथवा नई खोज कर के बड़ा इतिहासकार बनने के लालच में कुछ भी नया लिख देने तथा अग्रेजी और मुसलमानी लेखों को आधार बना कर उसे डिटो (पुष्टि) करने से कभी संकोच नहीं किया।

महाराजा भोज ही को ले। इस नाम के अनेकों राजा भारत की धरती पर हुए है और प्रायः तीन तो उन में से ऐसे है जिन की राज्य की अविधि एवं महानता लगभग समान ही है और उनमें एक प्रमार वंश की महान विभूति है।

अब यह महाप्रतापी विश्व विखयात भोज कौन है यह भारत के इतिहास की महानतम उलझन है।

स्कूलों, कालिजों की पुस्तके एवं इलियट, कूक, फलीट विल्सन, रिजले आदि अंग्रेज तथा भंडारकर, मजूमदार, लतोफ, भटट्चार्य आदि भारत के इतिहास के विद्धान प्रायः सभी ने भोज को ग्यारहवीं शताब्दी में वर्तमान माना है एवं प्रायः 1011 के आस पास ही उस के

राज्य काल का आरम्भ किया है जबकि वास्तविक इस से नितांत उल्ट हैं।

भोज नाम के एक प्रतापी राजा ग्यारवीं शताब्दी में हुयेअवश्य है परन्तु वह प्रमार न हो कर परिहार वंश के थे। उन्होंने भी लगभग पच्चास वर्ष राज्य किया तथा विद्या एवं वीरता दोनों में ही प्रसिद्धी प्राप्त की। कदाचित इसी कारण से इतिहासकार परिहार वंश के भोज को प्रमार वंश का भोज मान गये। मुसलमानों में फरिश्ता, अल्बरूनी, शमशुददीन अबुलफजल आदि तो भाषा के अज्ञान के कारण की परिहार को प्रमार मान बैठे क्योंकि प्रमार वंश ही राजपूतों में सर्वधिक प्रसिद्ध र्कीतिमान एवं चर्चा का विषय रहा था और हमारे अग्रेज तथा भारतीय इतिहासकार उन्हीं के आधार पर निरन्तर प्रमार को परिहार ही लिखते चले गये और इस प्रकार भोज के जन्म काल में लगभग पांच सौ वर्ष का अन्तर डाल दिया। इस विषय में तनिक और गहरा अध्ययन करेगें तो इतिहास में तीन भोज राजा एक सी परिस्थतियों में राज्य करते मिलते है।

पहला भोजदेव संवत 631 अथवा 575 ई.
दूसरा भोज संवत 721 अथवा 665 ई.
तीसरा भोज संवन 1100 अथवा 1044 ई.

अब इन में से कौन से राजा प्रमार वंश का था यही जानना शेष है।

नीचे से ले तो तीसरा भोज प्रमार न हो कर परिहार था, यह निश्चित प्रायः है प्रमाण रूप में लिख दे कि यह कनौज का राजा था। इसने पचास वर्ष राज्य किया तथा इस का बेटा महेन्द था। (देखे भारत के इतिहास का सरल पथ पृष्ठ 335)

दूसरे भोज के विषय में प्रायः एतिहासकार एकमत हैं कि वह भोज प्रमार न था। प्रथम भोज ही वह महापुरूष रह जाते है जिनका जीवन कृत्य एवं अन्य प्रमाण उन्हें प्रमार सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है।

एक प्राचीन ग्रन्थ ''महाराजा भोज'' 1925 ई. में पूर्ण खोज के पश्चात श्री रघुबीर सिंह जी ने लाहौर से प्रकाशित किया था। बडी कठिनता से वह ग्रन्थ मैंने अपने विचार एवं उपरलिखित विवरण की पुष्टि को ढुढ निकाला है। मेरे सम्मुख पडे इस ग्रन्थ के पृष्ठ संख्या 14 पर स्पष्ट वर्णित है कि ''संवत 543 विक्रमी में ज्येष्ट मास मेघ नक्षत्र'' में महाराजा भोज ने जन्म लिया गर्भ के समय जन्म न लेने पर विद्वान पंडितों ने परामर्श दिया था कि यह अति विद्वान बालक होगा जो धरती पर सीधे पधारेगा। शीश के बल जन्म नहीं लेगा। अतः भोज की माता को उल्टे लटका दिया गया और भोज तो उत्पन्न हुआ परन्तु तत्काल उस की माता की मृत्यु हो गई।

इसी ग्रन्थ में वर्णित है कि 549 विक्रमी में भोज के पिता सिन्धु राज ने मरते समय अपने भाई मुज्ज को वसीयत की भोज को युवराज बनाना।

भोज अल्पव्यस्क था। मुज्ज ने राज्य के लालच में उस की हत्या का यत्न किया परन्तु मासूम बालक भोज के एक पत्र ने उसकी आखें खोल दी। वह पत्र हमारे इस ग्रन्थ मे अन्त में दिया जायेगा। इसमें पृष्ठ 22 पर 567 विः में भोज के सिंहासन पर बैठने का वर्णन है इसके अतिरिक्त तारीख अजूबा रोगार, महाराजा विक्रमादित्य का चरित्र, नीति गुटिका, इतिहास भोपाल, तारीख तिलसमबकावली, सिंहासन पच्चीसी, जामेंजहां (तृतीय भाग), ग्रन्थ क्षीर सागर आदि पुरातन ग्रन्थ ग्रन्थ एवं उनके विद्वान लेखकों ने जिस परिश्रम एवं फल के लोभरहित सेवा भाव से मेरे ऊपर वर्णित तथ्यों को ही अपने ग्रन्थों में लिखा है। उस लग्न एवं परिश्रम की

आशा आज के व्यस्त, धन कमाने एवं पदवियां प्राप्त करने में लीन फैशन के रोगी प्रोफेसरों एवं इतिहासकारों से नहीं की जा सकती। विशेष कर जब कि हमारे प्राचीन ग्रन्थ आज हम से पुर्णत्या छिन्न चुके है, हम उन सादे बेलाग विद्वानों द्वारा लिखित निर्णयों को केवल इसी लिये गल्त नहीं मान सकते कि वह अग्रेजी न जानते थे और उर्दू एवं फारसी में ''महानतम'' रचनाऐं छोड़ गये है।

कुछ अन्य प्रमाण भी है यथाः— महाराज भोज ने भोज पुर नामक नगर बसाया था जिसे आजकल भोपाल कहते है।

अपनी माता की मृत्यु का कारण स्वयं को मान उन्होंने भोपाल के पास ''भोपाल—ताल'' नामक बान्ध बनवाया जहाँ विभिन्न तीर्थों का जल डाल कर चालीस दिवस यज्ञ करके इस का पश्चाताप किया। देखने में भोपाल के जो प्राचीन चिन्ह रह गये है वह पूर्णतया मौर्य युग से मिलते—जुलते है यदि भोज ग्यारवीं शताब्दी में होते तो यह नितान्त भिन्न शैली के होती एवं उन में मुस्लिम प्रभाव स्पष्ट दृष्टि गोचर हो सकता था। मस्जिद एवं भवन भोपाल में बाद में मुगल काल मेंबनाये गये।

इसी प्रकार उसके मन्त्रियों में प्रसिद्ध विद्वान कूका पण्डित एवं भास्करचार्य भी थे जो छटी शताब्दी में वर्तमान थे।

यही दशा विक्रमादित्य एवं शल्यवाहन आदि के विषय में है। गुप्त वंश के विक्रम (मूलनाम चन्द्र गुप्त 380 ई.) चालुकय वंश का विक्रम ''मूल नाम त्रिभुवन 1076 ई. एवं दो तीन अन्य विक्रमादित्य की उपाधि धारण करनें वाले राजाओं को कई इतिहासकार प्रथम शताब्दी के प्रमार वंश शिरोमणि विक्रमादित्य (मूल नाम) से गलत—मलत कर देते है भट्टी वंश के शल्यवाहन तक्षक जाति के शल्यवाहन एवं सूद वंश के बीर पुरूष

शल्यवाहन को भी इसी प्रकार गडबड कर दूध पानी एक भाव कर देते है।

भोज प्रमार के पश्चात उसकी विदुषी पत्नि लीलावती जो उसके मन्त्री भास्कराचार्य की बेटी थी, राज्य करती रही। वह स्वयं विद्वान एवं उच्च कोटि की लेखिका थी जबकि व्यस्क होने पर अपने बेटे सरजीत को उसने राज्य सम्भाल दिया ग्यारवीं शताब्दी के भोज के बेटे का नाम महेन्द्र पाल था एवं यह भोज कनौज के राजा थें जबकि भोज प्रमार की राजधानी धारा नगरी थी।

इसी प्रकार स्वामी शंकराचार्य का जन्म प्रायः इतिहासकार 788ई. में मानते है जबकि शंकराचार्य की पदवी का श्री गणेश आबू पर्वत पर हुए यज्ञ के समय हो गया था और इन्हीं ने स्वंय चारो अग्नि वंशों को अलग–अलग वेद की पुर्न–स्थापना का भार सौंपा था। वास्तव में शंकराचार्य एक परम्परा थी जो आगे चलती रही।

## एक नग्न सत्य

नीति गुटिका उज्जैन की प्रमार भूमि के एक विद्वान द्वारा संस्कृत में लिखित एक दुर्लभ ग्रन्थ था जिसकी तेलगू भाषा में अनुवाद की एक प्रति उक्त श्री रघुबीर सिंह जी को कहीं से प्राप्त हो गई थी। उसमें भोज के पिता सिन्धु अपने भाई मुन्ज के नाम वसीयत लिखते हुये यूं वर्णित है।

''549 विक्रमी संवत में सकृान्ति के सत्रह आसन निकल जाने पर राजा सिन्धु ने अपने छोटे भाई मुन्ज को वसीयत की। ''पृष्ठ16''

इस से अधिक स्पष्ट प्रमाण हमारे हठीले इतिहासकार जाने क्या माँगते है।

इसी सन्दर्भ में कुछ भी निश्चय न कर पाने एवं उलझ जाने का प्रमाण कन्धिम कीSurvey reports की जिल्दVIपृष्ठ 141–142 के इन शब्दों से मिलता है।

Only reasonable explanation. I can give is that there were several Bhojas, several chander Senas & several Vikarmadityas which has created all the confusion.

## प्रमार वंश ईसा से पूर्व का है

प्रायः अधिकतर नये युग के इतिहासकार अग्नि वंश की चारों शाखाओं को प्राचीन न मान कर सातवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ मानते है। यह राजपूत आन्दोलन का समय अवश्य था तथा वाह्म आक्रमणों की अधिकता के कारण राजपूत जो बौद्ध, जैन, द्रविड़ आदि अर्नाय मतों के विरूद्ध संघर्षशील थे, पलट कर इन विदेशी आक्रमणकारियों के विरूद्ध आ डटे परन्तु परस्पर संघर्षएवं ईर्ष्या द्वेष वंश मात्र वीरता के प्रदर्शन के लिये गृह युद्धों में ही उलझ कर बह गये।

अपितु प्रमार आदि राज्य वंश आबू पर्वत पर हुये महायज्ञ के साथ ही अस्तित्व में आ गये थें यह आबू पर्वत का महायज्ञ हुआ इस विषय में तमाम इतिहासकारों सहित हमारा इतिहास रहस्यमय ढंग से मौन है और जब बोलते है तो इतिहासिक सत्य एवं मर्यादा मुँह छिपाने लगती है। प्रथम हो हमारे इतिहासकार उस सत्य से ही इन्कार करते हैं कि कोई ऐसा महायज्ञ हुआ हालांकि तमाम प्रमाणों सहित आबू पर्वत पर अग्नि कुण्ड अभी तक बिछमान है।

दूसरे तमाम विदेशी इतिहासकार एवं उनके भारतीय ''शिव्य'' इस महायज्ञ को विदेशी हुणशक कुषण आदि को शुद्ध करके हिन्दु धर्म में सम्मिलित करने के लिये हुआ बताते है। फिर उन्हीं विदेशियों से राजपूत जाति का निर्माण हुआ मानते हैं।

तीसरे वह फिर इसे सातवीं शताब्दी के पश्चात हुआ मानते है।

इनसे सत्य नाम का कोई सम्बन्ध ही नहीं। अब हम कुछ ऐसे एतिहासिक चमत्कारों एवं रहस्यमय सत्यों से आवरण हटाते है जिसे पढ़ कर बुद्धिवादी आश्चर्यचकित रह जायेगे।

जैसे कि पीछे कह आये है कि यह महायज्ञ बौद्ध प्रभाव को नष्ट करने तथा वैदिक भारत के पुर्नजीवन हेतू किया गया था अतः इस का सीधा संबंध महात्मा बुद्ध एवं उसके समय से है।

## यह महाभियान महात्मा बुद्ध के जीवन

यह महाभियान महात्मा बुद्ध के जीवन के अन्तिम वषों में ही आरम्भ हो गया था। और आर्य विद्वानों एवं क्षत्रिय कुल के राजाओं के दोहरे आक्रमण के सम्मुख महात्मा बुद्ध को एक बार तो भारत छोड़ जाने पर विवश कर दिया गया था। वह अनुयायी राजाओं की सहायता से एक नैया द्वारा शीघ्रतापूर्वक छिपा कर निकाल दिये गये। नैया एक छोटे से द्वीप के तट पर जा लगी थी जिसका नाम न जान पाने के कारण उसी द्वीप में शरण लिये जाने के कारण उसका नाम ''शरण द्वीप'' रखा। वास्तव में यह लंका(Cylone) का राज्य था। और चार लाख बौद्ध अनुयाइयों में अधिकतर अग्निवंशी छत्रियों की क्रोध भरी कटार से कट गये औरशेष धरती एवं सागर मार्ग से चीन जापान, ब्रह्मा, लंका, हिन्द–एशिया आदि कि ओर चले गये। यही कारण है कि उन देशों में मतः आज भी जीवित है और भारत में इसका अस्तित्व तक नहीं। यह दुखदायी तथ्य है कि हमारी सरकार नपुस्कता पूर्ण शान्ति का नारा दे कर बहिष्कृत इस बौद्धमत का पूर्न आयात करने में आवश्यकता से अधिक तत्परता दिखा रही है।

# महात्मा बुद्ध ही हजरत आदम

आबू पर्वत के यज्ञ पर तो इस के पश्चात लिखूँगा। पहले वचन के अनुसार कुछ चौंका देने वाले तथ्य प्रमात्मा प्रस्तुत करता हूँ।

विश्व की बहुत बडी जनसंख्या हजरत आदम की अनुयायी है एवं उसे विश्व का प्रथम पुरूष मानती है जो सप्रमाण की आज्ञा का उलंघन करने के अपराध में जन्नत ''स्वर्ग'' से निकाल दिये जाने पर शरण द्वीप के कोहे आदम (''आदम पर्वत'') पर गिरे जहां उनके पाँव का निशान मौजूद है। इन्जील एवं कुरआन आदि के अनुसार जन्नत के उस बाग से जहाँ नेकी और बदी की पहचान का फल फूलयुक्त वृक्ष तथा हर प्रकार के फल–फूल जीवधारी आदि के मध्य जहाँ आबे हयात जैसे साफ जल एवं शहद की नदियाँ बहती है, जो मनुष्य की आत्मा को उज्जवल, निर्मल बना देती है, मौजूद है और जो अदन से पूर्व की ओर है वहां से आदम उस शरण द्वीप के आदम पर्वत आ गिरा।

(अनुसार तौरात, भाग दो आयत आठ)

आइये हम पहले इसी कथन का परीक्षण करे। तो अदन से पूर्व की ओर तौरेत के वर्णन के अनुसार एक सरल रेखा खींचे तो हमारी दृष्टि सीधी उस स्थान पर पड़ती है जिसे वेदों,पुराणों एवं प्राचीन शास्त्रों में आर्यवर्त कहा गया है।

तमाम उतम वस्तुऐ जो उस ''जन्न्त'' में वर्णित की गई है। वह सभी इसी आर्य वर्त में ही मिलती है। अन्य कहीं नहीं। वास्तव में बात को समझानें एवं आर्य देश से स्वयं को पृथक सिद्ध करने के लिये उन्हें बदले हुये नामों से ढाँक दिया गया है तथा वह शैली अपनायी

गई है जिसे भारतीय साहित्यकार प्रतीकात्मक शैली कहते है। वह प्रतीक इस प्रकार से हैं।:–

| **जन्नत की वस्तु का नाम** | **छिपे अर्थ** |
|---|---|
| 1 नेक वदी की पहचान का वृक्ष | 1 काशी विश्व विद्यालय जो नेकी बदी काज्ञान देता है। |
| 2 कौसर, अमृत, तुल्य, जल की नदियाँ | 2 गंगा और यमुना। |
| 3 शहद की नदियाँ | 3 दूध एवं मक्खन की अधिकता। |
| 4 हूर | 4 भारत की सुन्दर आर्य नारियाँ |
| 5 पवित्र शराब | 5 ब्रह्म ज्ञान |
| 6 खल्लील मुल्लामक | 6 ऋषि मुनी। |

## ''जन्नत'' संस्कृत का शब्द है

इतना ही नहीं ''जन्नत'' शब्द वास्तव में संस्कृत के मूल शब्द ''जनस्थ'' का बिगड़ा हुआ रूप है। जनस्थ का अर्थ है ''नेक लोगों का देश'' संस्कृत की अनभिज्ञता से एवं भाषा तथा उच्चारण की भिन्नता से अरबी में जनस्थ को ही जन्नत कहा गया है।

## आदम बुद्ध का ही नाम है

इसी 'जन्नत निशा' भारत में महात्मा बुद्ध ने काशी आदि स्थानों पर ज्ञान एवं अज्ञान की पहचान कराने वाली शिक्षा प्राप्त की। शाक्य मुनि, गौतम बुद्ध आदि के बाद ज्ञान प्राप्ति के पश्चात उसका नाम वास्तव में 'आंदग' पड़ गया एवं उसके शिष्य भी स्वयं को आँदग कहने लगे जिसका अर्थ है कि हम से पहले कोई नहीं था अर्थात बौद्ध महात्मा बुद्ध को ही अपने ग्रन्थों में भी पहला व्यक्ति ''ज्ञानी'' मानते है।

यही आँदग शब्द बिगड़ कर अरबो द्वारा आदम बन गया जैसे कि ओं शब्द वास्तव में ओन पढ़ा जाना चाहिये परन्तु ओम बोला जाता है अर्थात न काम में और ग ''आंदग'' का म ''आदम'' में बदल जाना सैंकड़ों अन्य प्रमाणों द्वारा भी सिद्ध किया जा सकता हैं।

## आदम (बुद्ध) का जन्नत (भारत) से निकाला जाना

अंजील के अनुसार आदम ने ''नेकी एवं बदीं'' की पहचान के वृक्ष के फल सम्बन्धी प्रमात्मा की आज्ञा न मान कर स्वर्ग (जन्न्त, भारत) में दुर्गंध फैलाई।

अर्थातः– वेदों की आज्ञा न मान कर काशी के नेकी तथा वेदों के ज्ञान दायक फल ''शिक्षा'' लेकर फिर गन्दगी ''गलत,वेद ज्ञान के उलट उपदेश'' द्वारा जन्नत (भारत वर्ष) में दुगर्ध फैलाई परिणाम स्वरूप वेद मत वालों ने नास्तिकवाद एवं वेदों के उल्ट ज्ञान के फल का दुरूपयोग करने वाले बुद्ध (आदम) की (जन्नत निशा)(भारत वर्ष) से निकाल फैंका। आदम शरण द्वीप के पहाड़ पर डेरा जमा कर बैठ गये। क्या यह हमारे विचारों की पुष्टि के लिये काफी नहीं। आइये आप को आदम और बुद्ध के समय की समानता का तनिक परिचय दें।

युद्धिष्ट्री सवंत कें अनुसार बौद्ध मत के भारत में फैल जाने के समय को 1974 तक 4890 वर्ष हो चुके है जब कि अरबी एवं इसाई मत के अनुसार हजरत आदम को जन्नत से निकाले 1974 तक 4774 वर्ष का समय बताया जाता है 116 वर्ष का इतना अधिक नहीं और हजारों वर्ष पूर्व की घटनाओं के लिये एवं मत भेद के कारण इतना समय गिनती की भूलों में आ सकता है। रामायण, रघुवंश आदि प्राचीन ग्रन्थों में लंका ही मूल नाम

आया है परन्तु यहाँ बुद्ध (आदम, आंदग) के शरण लेने पर ही इस का नाम शरण द्वीप रखा गया था।

## देवासुर संग्राम तथा बुद्ध

पुराणों में देवासुर संग्राम का प्रतीकात्मक शैली में विशद वर्णन मिलता है।

वह देवासुर संग्राम अन्य न  हो कर आर्य वैदिक मत वालीएवं बौद्धों आदि नास्तिको के मध्य हुआ युद्ध ही था। श्रेष्ट आर्य हिन्दु सन्यासी देवता एवं नास्तिक बौद्धों के लिए (असुर) शब्द हमारे ग्रन्थों में प्रयोग में लाये गये है। इस तथ्य का वर्णन प्रसिद्ध अग्रेंज इतिहासकार एवं अन्वेषक कन्धिम ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थSurvey reports Vol VIपृष्ठ 45 पर इस प्रकार से किया है।

"The Sanskrit term Asur" is said to be derived from the negative Particle "a" signifying "not" or "without" Prefixed to the word "Sur" Which  in this case means a divinity or deity and therefore "a+Sur would literally mean not divine or anti divine or atdiest or infihel or one without God or against the Gods."

देवा सूर संग्राम की पृष्ठ भूमि में वर्णित देवता एवं असुर की यह परिभाषा आर्य–बौद्ध संग्राम पर पूरी उतरती है।

## आबू महात्मय एवं शंकराचार्य का निश्चित काल

आबू पर्वत का भारतीय इतिहास के साथ अत्यंत निकट का सम्बन्ध है। आबू के मूल रूप में इस का अर्थ है ''बुद्धि–मता की पहाडी'' इसके सर्वोच्च शिखर का नाम ऋषि की चोटी अथवा गुरू शिखर है। प्रसिद्ध इतिहासकार पिल्नी ने इसे ''मांऊट कैपीटोलिया'' लिखा

है। यह राजस्थान के सिरोही जिला के अंतर्गत नगर के दक्षिण में राजपूताना मालवा रेलवे मार्ग पर ''आबू रोड'' स्टेशन से 17 मील तथा बम्बई से 442 मील उतर मे स्थित है।

''आबू महात्मय'' नामक एक ग्रन्थ प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नलटाड को उस की यात्रा के मध्य प्राप्त हुआ था परन्तु उसके पश्चात इस ग्रन्थ का कहीं पता नहीं चला। यदि यह ग्रन्थ प्राप्त हों जाता तो सम्भवत हमारे इतिहास के कई और छिपे तथ्य सम्मुख आ जाते।

टांड साहिब की इच्छा के अनुसार उसके संग्रहीत तमाम अमुल्य ग्रन्थों का भण्डार रायल एशियाटिक सोसाइटी को सौंप दिया गया था। उस सूची को देखने परCetalogue of Tod Collection of Indian MSS in possession ofRoyal Asiatic Societyby L.D. Barnett)उस में आबू महात्मय का कहीं नाम नहीं मिलता। इतना ही नहीं मैनें Royal Asiatic Societyके लंदन कार्यालय को पत्र लिख कर इस विषय में जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया परन्तु परिणाम कुछ न निकला।

## सूद स्थान की झलक

ऋषि की चोटी अथवा गुरू शिखर पर खड़े हो कर चारोंओर दृष्टि दौड़ाये तो दूर–दूर जहाँ भी दृष्टि पहुँच सकती हैं वह तमाम प्रदेश कभी प्रमार वंशीय एवं सूद राजाओं के गम्भीर एवं कठोर उदधोषों तथा जय के नारों से गुजायमान हुआ करता था। इसी शिखर पर से सुदुर बहता सिन्धु नदी का नीला जल स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है एवं सम्मुख विभिन्न मार्ग पट्टियों का विचित्र लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। इसी पर्वत की तलहटी में पाटन चन्द्रावती, पदमावती आदि प्राचीन सूद राज्यएवं बम्बई सौराष्ट्र अलोर एवं सम्बन्ध मार्ग में प्रसिद्ध सूद रियासत अमर कोट को जाते मार्ग दृष्टि गोचर होते है। दरा के निकट सिन्धु नदी की शाखा पर स्थित पुल

“सौगदी” राज्य के प्राचीन वैभव का जीवित चिन्ह बन कर आज भी वहीं खडा हैं।

अलोर तो इस प्रदेश में अति प्राचीन काल से ही सिन्धु की राजधानी रहा है।

इस प्रकार अमर कोट से पाटन (राजस्थान) वहां से पट्टन (सौराष्ट्र)एवं सिन्धु मार्ग से करा कुकर्म की आज वीरान पड़ी पहाड़ियों के पार के पाटन के बीच एक तीन बिन्दुओं को मिलाती हुई रेखा खींच जाती है।

## जगत गुरू शंकराचार्य का समय

जगत गुरू शंकराचार्य का सूद इतिहास ए आबूवं के महायज्ञसे सीधा सम्बन्ध है। दोनों का समय लगभग एक है और दोनों ही समकालीन थे। खेदका विषय है कि प्रायः सभी अग्रेंज इतिहासकार, मुसलमान लेखक तथा बिना पूरी छान बीन किये उन्ही की नकल कर देने वाले भारतीय इतिहास–वेताओं ने श्री शंकरचार्य एवं आबू के महायज्ञ का समय ईसा बाद आठवीं शताब्दी माना है। अधिक दुख की बात तो यह है कि हमारे अपने कहलाने वाले तथा कथित इतिहासकारों ने राजनैतिक शतरंज के खिलाडी जातिय स्वार्थ से भरे अग्रेंज एवं मुसलमानों के इस राजनैतिक षडयन्त्र का भांडा फोड़ न करके नई फसल के पाठकों के सम्मुख हमारी प्राचीनता एवं महानता का कितना गल्त स्वरूप प्रस्तुत किया है।

हम अब संस्कृत साहित्य में प्राप्त शुद्ध प्रमाण सहित सिद्ध करेगें कि आदि शंकराचार्य जी ईसा सें 509 वर्ष पूर्व उस समय भी विद्यमान थे जबकि अग्रेंज जाति जंगली संस्कृतिका हिसक जीवन बिता रही थी और शंकराचार्य की मृत्यु के पाँच सौ वर्ष बाद भी वह लोग

इतने जंगली थे कि उन्होंने ईसा मसीह जैसे महात्मा को भी सूली पर चढ़ा दिया था।

यह ईसा मसीह कौन थे। पश्चिम से भारत में आये ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक इस भोले युवक ने काशी विश्वविद्यालय में कई वर्ष रह कर शिक्षा प्राप्त की। फिर बुद्ध धर्म का अध्ययन करने तिब्बत गया। वहाँ से लौट कर बुद्ध भिक्षु बन कर ज्ञान एवं अहिंसा का उपदेश देने अपने अर्ध–सभ्य अग्रेंजों के देश में चला गया जिन्होंनें शिकार और मांस मदिरा के व्यसनी होने के कारण अहिंसा के पुजारी को सूली पर चढ़ा दिया। इसकाविस्तृत विवरण जानने के लिये हमारी सन् 75 के प्रकाशन में शामिल पुस्तक श्री मदनेश लिखित ''ईसा मसीह बुद्ध भिक्षु थे'' का अध्ययन आप के सम्मुख ज्ञान के नये आयाम प्रस्तुत करेगा।

## शंकराचार्य बनाम आबू पर्वत

आबू पर्वत का पावन यज्ञ स्वामी शंकराचार्य जी के परार्मश पर उस समय आरम्भ किया गया जबकि महात्मा बुद्ध भारत के क्षितिज पर छा चुके थे परन्तु शंकर, कुमारिल भट्ट आदि भारतीय विद्वानों के जोरदार सास्कृतिक आक्रमण वैदिक ज्ञान के प्रसार एवं तेजस्वी ब्राह्मण समुदाय की तर्क संगत शास्त्र युक्त वाणी के आगे बौद्ध ढोल की पोल खुलने लगी।सही वेद भाष्य एवं सत्यार्थ जनता के सम्मुख आने से बुद्ध से लोगों की श्रद्धा घटने लगी तो बौद्ध महाधीशों ने चीन, लंका, मंगोलिया आदि देशों से लाखों सैनिक अपनी रक्षा के लिये इस आधार पर बुला लिये कि बुद्ध देशों के लोग अपनेबौद्ध भाईयों की रक्षा हेतु भारत मे आये है। यह स्थिती अत्यंत गम्भीर थी एवं देश की स्वन्त्रता एवं संस्कृति विदेशी हाथों में चले जाने का संकट सम्मुख दीख पडता था। विदेशों से आये भिक्षु वेश धारी सैनिक गैर–बुद्ध राजाओं एवं

जनता को हिंसा से समाप्त कर रहे थे। और शक्ति का सामना केवल शक्ति से ही सम्भव था। अतः हिन्दु सैनिक संगठन की आवश्यकता अनुभव की गई जो इस नये संकट का सामना करती। इस विषय में भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व का श्लोक प्रमाण रूप में हम पीछे लिख आये है। परिस्थिति ऐसी ही थी कि जैसे आज देश का साम्यवादी दल यह कारण दे कर चीन अथवा रूस की सेना को देश में बुला ले कि वह साम्यवादीयों की रक्षा के लिये यहॉ आये है।

इसी गम्भीर संकट का अध्ययन वशिष्टएवं कश्यप मुनि की अध्यक्षता में किया गया एवं श्री शंकराचार्य जी की आज्ञा से आबू यज्ञ का आयोजन किया गया।

अब यदि हम प्रमाण दे दें कि शंकराचार्य जी 509 ई. पूर्व उत्पन्न हुए थे तो आबू के यज्ञ के समय का हमारा अनुमान गल्त नहीं होगा। साथ ही प्रमार वंश एवं इस यज्ञ को आठवीं शताब्दी के बाद का मानने वाले अनाड़ी एवं झूठे तथा ऐसे भारतीय अंग्रेजो की कार्बन कापी मात्र सिद्ध हो जायेगे।

## सत्य प्रमाणों का ढेर

यह तथ्य प्रायः सभी भारतीय जानते है कि स्वामी शंकराचार्य ने वेदों एवं सत्य ज्ञान के पूर्न स्थापन के लिये भारत के चारों कोनों में चार मठ स्थापित किये थे।

ईसा से 494 पूर्व प्रथम मठ शंकराचार्य जी ने दक्षिण में काँचीपुरम में स्थापित किया था। अठारवीं शताब्दी तक यह मठ वहीं रहा और फिर इसे कुम्भाकोनम के स्थान पर स्थानातरित कर दिया गया। इस मठ में तथा तीनों मठों में आज भी जगत गुरू शंकराचार्य विराजमान है अर्थात इस पद पर परम्परागत एक के बाद

एक धुंरधर विद्वान आसीन होते रहे। इन मठों में लगभग ढाई हज़ार वर्ष का सम्पूर्ण रिकार्ड संस्कृत भाषा में सुरक्षित पड़ा है एवं सत्य का ही दूसरा रूप है और हमारे इतिहास लेखक इस ऑखों देखें वृतांत तक पहुचने की अपेक्षा अग्रेजों एवं मुसलमानों के काल के स्वार्थ भरे पोथों में यह सब ढूढते फिरते है। मठों में ''पुण्य श्लोक मज्जरो'' में दिन, बार पक्ष, लग्न, मास वर्ष तक का ही वृतांत गुरूजनों द्वारा सुरक्षित लिखा पड़ा है।

इस दिशा में दो अति प्राचीन ग्रन्थ अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. बृहत शंकर विजय 2. जिन विजय

**बृहत शंकर विजय** श्री चितसुखाचार्य की अमर रचना है। यह चितसुखाचार्य शंकर जी के सहपाठी एवं मित्र थे। जब देश वर्ष की आयु में (499 बी.सी) शंकर ने सन्यासी हो गये एवं शंकर ने ''वेदान्त'' की पताका ले कर जब भारत की ज्ञान–विजय यात्रा आरम्भ की तो तमाम शास्त्रोंर्थो एक बौद्धों जैनों एवं वाममार्गीयों से हुये वाणी–युद्धों में उन के साथ रहे। उन के वृतांत में कम से कम जन्म और मृत्यु का समय तो गल्त नहीं लिखा जा सकता। उसी ऑखों देखी साक्षी का लिखा एक श्लोक श्री शंकराचार्य के जन्म के विषय में हर प्रश्न एवं भ्रान्ति का सीधा उतर दे देता है।

तस्य प्रायतानल सेवधि वन्ः नेत्रे
ये नन्दाना दिनमानम बुधागाहव भानी
राधे अदिते रूदु विनिर्गतम माधॉ लग्ने
अस्याहू, तनये शिव गुरोश्रच शंकरेति

(व्याख्याः–अनल–3, सेवधि–9, बन–5, नेत्रा–5)

यह बनता है कलियुग का 2593वां वर्ष जो ईसा पूर्व के 509 ई0 के बराबर है।

**अर्थः–** इतबार, बैशाख, शुकला पंचमी, धन लग्न नन्दाना वर्ष में एक बालक शिवगुरू के यहॉ हुआ जिसका नामशंकर रखा गया।
**(यह नन्दाना वर्ष का समय गणना पर 509ई0 पूर्व बैठता है)**

दूसरी प्राचीन रचना जिन विजय जैन मत का उस समय का धर्म ग्रन्थ है।

इस में उस समय के प्रसिद्ध विद्वान कुमारिल भट्ट से शंकराचार्य की हुई भेंट का वर्णन एवं शंकर जी के स्वर्ग वास का समय आदि स्पष्ट दिया हुआ है।

रूशिर वनः स्ताधा भूमि मार्ती अक्षाऊ वमा मेलानात
एकात वेनः लाभेत्मक्म तामरक्षा तत्रा वत्स राहा
''व्याख्याः– ऋषि–7, वनः–5, भूमि–1, मृत्याक्षु–2

इन को एकत्र करें तो 2157 युधिष्ट्री संवत बनता है।

जैन ग्रन्थों में युधिष्ट्री संवत प्रयोग हुआ मिलता है। अब कलियुग के वर्ष जोडने पर 2157+468=2625 कलि संवत अथवा 3102–2625–––477 वर्ष ईसा से पूर्व (2622+477––3102)यहाँ स्पष्ट कर दूं कि जैन धर्म का शंकराचार्य एवं कुमारिल भट्ट से घोर विरोध था अतः अपने विरोधी के लिखे जन्म दिवस को तो कम से कम गल्त नहीं कह सकते।

इसके अतिरिक्त कॉंचीपुरम के मठ में सुरक्षित वंशावलि सम्बन्धी संस्कृत सहित्य में 1974 तक 68 शंकराचार्य के होने का वर्णन मिलता है। वह 509 ई. पूर्व से 1974 ई. तक68 शंकराचार्य की गद्दी की सूची यह है।

**नोटः–** क्या इस के बाद भी हम स्कूलों में इतिहास के नाम पर बच्चों को ''कचड़ा'' पढ़ाया जाना सहन करते रहेगें।

अतः आएभारत के इतिहास के पूर्ण लेखन के इस महायज्ञ में अपनी श्रद्धा एवं समर्थ के अनुसार आहूति डाल कर भारत की एक मात्र संस्था को ''राष्ट्र का इतिहास'' लिखने में सहयोग दें। याद रखें कि मदनेश लिखित ''भारत का राष्ट्रीय इतिहास'' ज्ञान के नये आयाम छूएगा।

भारत की पुरातन विरासत की रक्षा के एक मात्र आशा केन्द्र कर्मयोगी मदनेश के पुनीत प्रयत्नो में अपने प्रयत्न भी शमिल करेएवं मन अथवा धन से हमें नेक मिशन की पूर्ति के योग्य बनने में सहयोग दें।

**(सम्पादक)**

प्रथम मठ कॉंचीपुरम में स्थापित करके श्री शंकराचार्य जी स्वंय इसके जगतगुरू आचार्य बने थे। तब से लेकर अब तक का ब्योरा सन् एवं वर्षो सहित यूँ हैः–

| जगत गुरू का नाम | अंग्रेजी संवत | पद पर रहने का समय |
|---|---|---|
| 1 श्री शंराचार्य | 476 ईसवी पूर्व | 6 वर्ष |
| 2 '' सुरेश्वराचार्य | 406 '' '' | 70 वर्ष |
| 3 '' सर्वज्ञमन | 364 '' '' | 42 वर्ष |
| 4 ''सत्य बोध | 268 ईसवी पूर्व | 96 वर्ष |
| 5 '' जनन्य नन्द | 205 '' '' | 63 '' |
| 6 '' सुधा नन्द | 124 '' '' | 81 '' |
| 7 '' आनन्द जन्न | 55 '' '' | 69 '' |
| 8 '' केवलिय नन्द | 28 ईसा बाद | 83 '' |
| 9 '' कृपा शंकर II | 69 '' '' | 41 '' |
| 10 '' सुरेश्वर | 127 '' '' | 58 '' |

| | | |
|---|---|---|
| 11 '' चित धून | 172 '' '' | 45 '' |
| 12 '' चन्द्रशेखर I | 235 '' '' | 63 '' |
| 13 '' सच्चितधन | 272 '' '' | 37 '' |
| 14 '' विद्या धन I<br>''शक संवत 239'' | 317 '' '' | 45 '' |
| 15 '' गंगा धर1 | 329 '' '' | 12 '' |
| 16 '' उज्जवल शंकर III | | |
| 17 '' सदाशिव | 375 '' '' | 8 '' |
| 18 '' सुरेन्द्र<br>''कलिसंवत 3486'' | 385 '' '' | 10 '' |
| 19 '' विद्याधन II | 398 '' '' | 13 '' |
| 20 '' मूकशंकर IV<br>''शक संवत 359'' | 437 '' '' | 39 '' |
| 21 '' चन्द्र सुधा I | 447 '' '' | 39 '' |
| 22 '' परिपूर्ण बौध | 481 '' '' | 34 '' |
| 23 '' सच्चित सुख | 512 '' '' | 31 '' |
| 24 '' चित सुख I | 527 '' '' | 15 '' |
| 25 '' सच्चिदानन्द<br>(शक संवत 470) | 548 '' '' | 21 '' |
| 26 श्री प्रजन् धन | 564 '' '' | 16 '' |
| 27 '' चित विलास | 577 '' '' | 13 '' |
| 28 '' महादेव जी I | 601 '' '' | 24 '' |
| 29 '' पूर्ण बोध | 618 '' '' | 17 '' |
| 30 '' स्वामी बोध I | 655 '' '' | 37 '' |
| 31 '' ब्रह्मनन्द धन I | 668 '' '' | 13 '' |
| 32 '' चितधनन्दा धन | 672 '' '' | 4 '' |
| 33 '' सच्चिदानन्द II | 692 '' '' | 20 '' |
| 34 '' चन्द्रशेखर II | 710 '' '' | 18 '' |
| 35 '' चित सुख II | 737 '' '' | 27 '' |
| 36 '' चितसुखानन्द | 758 '' '' | 21 '' |
| 37 '' विद्या धन III | 788 '' '' | 30 '' |
| 38 '' अभिनव शंकर<br>(कलि संवत 3941) | 840 '' '' | 52 '' |

| | | |
|---|---|---|
| 39 '' सच्चिदा विलास | 873 '' '' | 33 '' |
| 40 '' महादेव II | 915 '' '' | 42 '' |
| 41 '' गंगा धर II | 950 '' '' | 35 '' |
| 42 '' ब्रह्मानन्द II | 978 '' '' | 28 '' |
| 43 '' आनन्द धन | 1074 '' '' | 36 '' |
| 44 '' पूर्ण बोध II | 1040 '' '' | 26 '' |
| 45 '' परम शिव I | 1061 '' '' | 21 '' |
| 46 '' बोध II | 1098 '' '' | 37 '' |
| 47 '' चन्द्रशेखर III | 1166 '' '' | 68 '' |
| 48 '' अद्वैतानन्द बोध | 1200 '' '' | 34 '' |
| 49 '' महादेव III | 1247 '' '' | 47 '' |
| 50 '' चन्द्र सुधा V | 1297 '' '' | 50 '' |
| 51 '' विद्या तीर्थ | 1385 '' '' | 86 '' |
| 52 '' शंकरा नन्द | 1417 '' '' | 32 '' |
| 53 पूर्ण नन्द सदाशिव | 1498'' '' | 81 '' |
| 54 महादेव IV | 1577 '' '' | 9 '' |
| 55 चन्द्र सुधाIII | 1524 '' '' | 17 '' |
| 56 सर्वजन सदाशिव बौध | 1539'' '' | 15 '' |
| 57 '' परम शिव III | 1586 '' '' | 47 '' |
| 58 '' आत्म बोध | 1638 '' '' | 52 '' |
| 59 '' बोध III | 1692 '' '' | 54 '' |
| 60 '' अद्वैत्मा प्रकाश | 1704 '' '' | 12 '' |
| 61 '' महादेव V | 1746 '' '' | 42 '' |
| 62 '' चन्द्रशेखर IV | 1783 '' '' | 37 '' |
| 63 '' महादेव VI | 1814 '' '' | 31 '' |
| 64 '' चन्द्रशेखर V | 1851 '' '' | 37 '' |
| 65 '' महादेव VII | 1891 '' '' | 40 '' |
| 66 '' चन्द्रशेखर VI | 1908 '' '' | 17 '' |
| 67 '' महादेवVIII | 1908 '' '' | 7 दिन |
| 68 '' श्री श्री श्री चन्द्रशेखर | 1908 '' '' | अब तक |

# सूद वंश का विकास

इस प्रकार से भारत के इतिहास की तीन सब से बडी उलझने सुलझा लेने के पश्चात अब हम सूद वंश के परम्परागत विकास एवं उन परिस्थितियों का वर्णन करेंगें जिन के विषय में मैक्समूलर जैसे संस्कृत के जर्मनी विद्वान की निम्न पंक्तियॉ नितान्त पूरी उतरती है।

"They rose to such hights where their lungs only could breath: where those of otherswould have burst."

अर्थातः– उन महापुरूषों ने (उन्नति की) उन ऊँचाईयों को छू लिया जहाँ केवल उन्हीं के फेफड़े साँस ले सकते थे और जहाँ अन्य के फेफड़े फट कर रह जाते।

वह समय था जब बच्चों के नाम पिंकी और बाबी नहीं अपितु विक्रम और अनुरूद्ध होते थे। आज के चाय और डालडा की निचली धरातल पर खड़े हो कर हम उन ऊँचाईयों का अनुमान लगा ही नही सकते। उपरोक्त तीनों तथ्य शायद प्रथम बार इस प्रकार विस्तृत प्रमाणों के साथ सम्मुख आये है। इसी ईसा से 500 वर्ष पूर्व के प्रमार के वंश का उत्तरात्त्तर विकास का ब्यौरा नीचे वर्णित है।

प्रमार के एक बेटे का नाम सूद दत था। इसे हम वास्तव में सूद द्वितीय कह सकते है। सूद प्रथम महाभारत से भी लगभग चालीस पीढी पहले हो चुके हम पीछे वर्णित कर चुके है। उन्हीं से सूद जनपद एवं सूद वंश का श्री गणेश हुआ था। पुराणों में उन्हें सूददत, सुदास, सुधन्य आदि अनेकों नामों से वर्णित किया गया है। यह सूद द्वितीय उन्हीं महाराजा सूददत की परम्परा में उन्हीं के वंशज थे।

वास्तव में जिन्हें इतिहासकारों ने प्रमार के पैंतीस बेटे बहा है, वह तो प्रमार वंश की पैंतीस अल्ले अथवा शाखायें थी। सत्य यूं है कि आबू पर्वत पर प्रमार के

अधीन चन्द्र वंश के पैंतीस भिन्न–भिन्न परिवारों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। यह तमाम प्रतिनिधि महाराज सुदास से ले कर प्रमार तक चले एक ही चन्द्र वंश के विभिन्न परिवारों के सदस्य थे और इन में एक–एक शाखा का नेतृत्व प्रमार के एक–एक वंशज को सम्भाला गया था। परिवार तो बहुत पहले ही मौजूद थे। जैसे मोरी अथवा मौर्य परिवार तो महाभारत के समय में भी था परन्तु प्रमार के बडे बेटे महामय ने इस का नेतृत्व सम्भाला था। इसी प्रकार से बल (बहल) वंश वहल्क अथवा बहलीक के नाम से महाभारत में वर्तमान थे और प्रमार के अन्य बेटे का पद इस लिये बहलीक हो गया कि वह इस परिवार का नेता था। इसी सूदा॥ की चौदह संताने थी।

दस बेटे और चार बेटिया। सूद को पिता की ओर से सान्थाल का राज्य मिला था। अन्य को छोड कर अब हम केवल सूद वंश के विकास पर प्रकाश डालेंगें।

सूद के बडे बेटे मंजन राय को ही राज्यतिलक हुआ और यह परिवार लगभग 500 ई. पूर्व से 330 ई. पूर्व तक, जबकि सिंकदर ने भारत पर आक्रमण किया था, क्या वंश वृक्ष इस प्रकार से फैला।

सूदास अथवा सूद दत॥!
मंजन राय!
विचित्र राय ''यह सात भाई थे''
ऋज राय ''यह तेईस भाई थे''

अनुरूद्ध प्रथम (युधिष्ट्री संवत के तीन हजार वर्ष बीतने पर उत्पन्न हुआ)

कानन राय (यह बीस भाई थे।न में राज्याधिकार प्राप्ति के लिये युद्ध हुआ और कानन राय सफल हो कर 3009 युधिष्ट्री संवत में शक्रवार रोहिणी नक्षत्र में गद्दी पर बैठा)

अल्ल राय (यह नौ भाई हुये)
याचक राय (यह अठाइस भाई थे)
टिहरी राय
जगदेव (यह 3271 युधिष्ट्री संवत में पोष मास में गद्दी पर बैठा)
अनुरूद्ध (II)
श्री हर्ष (यह अत्यंत प्रतापी राजा थे। इस के समय तक सूद राज कुमारों ने सौ से अधिक राज्य एवं दुर्ग स्थापित करके सौगद्दी नाम पाया)

मेहर सेन इन्हीं ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की

राय शाह सूद (सिंकदर का आक्रमण इसी के समय में हुआ और यह ईसा से 330 वर्ष पूर्व वर्तमान थे)

राय शाह की कोई संतान न थी अतः राज्य उन के भतीजे अन्न राय को मिला।

अब इससे पूर्व कि हम अन्न राय से राजा दाहिर (प्रथम मुसलमानी आक्रमण का समय) एवं दाहिर से राय प्रसाद सूद (अकबर का समय) तक हुये सूद राजाओं की वंशावलि प्रस्तुत करके सूद वंश के गौरवशाली विकास की परम्परा से अवगत कराएं यह आवश्यक है कि उपरोक्त राजाओं के विषय में कुछ प्रकाश डाले।

प्रथम तो यह केवल उन सूद राजाओं का वृतांत है जो राजगद्दी पर बैठे। अभी उन के भाईयों एवं उनकी संतानों जो अपने अलग–अलग राज्य स्थापित किये उनके विषय में सभी वर्णन नहीं किया गया है।

सूददत के चौदह संतानों में मंजन राय को राज्यधिकार मिला एवं उसके भाई विभिन्न प्रदेशों के प्रशासक नियत हुये थे। उसके विशाल राज्य की सीमायें सिन्धु नदी के दहाने ओर सागर तट से ले कर सतलुज

के बांए तट पर स्थित दिपालपुर तक थी। दिपालपुर सूदराज्य का एक अत्यंत मजबूत दुर्ग था। तमाम सिन्धु प्रदेश और अटक के उस ओर सिस्तान प्रदेश तक सूद राज्य का प्रभावशाली नियन्त्रण था। निर्माण कला का विचित्र संगम था। वर्तमान जेसलमेर से परे राजस्थान की बाडमेर सीमा के उस ओर वह वैभवशाली दुर्ग आज खण्डरों में उस महान युग की साक्षी दे रहा है जब सम्पूर्ण सिन्धु एवं राजस्थान सूद महाराजों के जय घोष एवं सूद वीरों के घोडों की हुकार और कटारों की टंकार से गुंजा करता था। पांच हजार भवनों वाले इस सुन्दर नगर में कुछझोपड़ियों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। भक्खार सिन्ध, (पाकिस्तान) के मध्य सुरक्षित एवं अलोरा के कुछ कोस पर स्थित भव्य सूद राजधानी थी कदाचित इसे मंसूरपुर कहते है। सिकन्दर के सिन्ध से निकलते समय यहीं से सूद सेना ने बढ़कर सिकंदर का मार्ग रोका था।

गौरी का शाही खजाना भी सूद एवं भाटियों ने मिल कर इसी प्रदेश में लूटा था। बाम्यान, देवल, भयावह, ब्रह्मपुरः पाटन,धारण, ऊर्जा, स्म्रष्टा, अग्रोदय, बडकोट अन्य प्रसिद्ध दुर्ग थे। मंजनराय के पश्चात राज्य विचित्रराय को मिला यह सात भाई थे। विचित्र राय अत्यंत प्रतापी सम्राट था। उसके तेईस सन्तानें हुई। बड़ा ऋजराय था। वहीं राजा बना इस समय तक सूदो का भाग्य श्री उन्नति की प्राकाष्टा पर थी। लोहाना, चिनार, लांघा आदि जाट एवं राजपूत तथा अनेक बौद्ध राजा सूदों के अधीन थे। यह घटनाऐं उस समय की है जब युधिष्ट्री संवत को आरम्भ हुये तीन हजार वर्ष बीत चुके थे।

ऋजराय सूद का बेटा अनुरूद्ध प्रथम था जिसके समय कंधार से बलोचिस्तान (बल उच्चस्थान) सीस्तान एवं वर्तमान मकरान के प्रमुख भाग सूदों के झडें तले थे। उतरी काबूल पर भाटियों का राज्य था एवं दक्षिण अफगानिस्तान (उपगण स्थान सही नाम है) पर महाभारत युग के द्रोणचार्य एवं कृपाचार्य के वंशज राज्य करते थें जो भारद्वाज गोत्र के मुहियाल ब्राह्मण कहलाते हैं।

अनुरूद्ध सूद का बेटा था कानन राय यह बीस भाई थे। विशाल राज्य में सम्पूर्ण अखण्ड भारत का चौथाई से अधिक भाग सूदों के अधिकार में था। परन्तु भाग्य श्री शायद सूदों से रूठ रही थी। बीस भाई अपने महान पूर्वज सूददत आदि के समान परस्पर मिल कर न रह सके बंदर बांट आरम्भ करके वह अपनी इच्छा के क्षेत्रों में स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की चेष्टा करने लगे। कलयुग अपना प्रभाव दिखाने लगा। कानन रायने पाटन और अलौरा की बाँट का प्रश्न मर्यादा का प्रश्न बना लिया। वह चितौड का राज्य देता था परन्तु भाई पाटन का राज्य मांगते थे परिणाम स्वरूप एक छोटा महाभारत पुनः छिड़ गया। कौरव पांडव सत्य और असत्य भाई से भाई टकरा गये। सेनाएं नष्ट हुई और भारत का सबसे बड़ा शक्तिशाली साम्राज्य शिथिल पड गया अनेकों राजकुमार एवं सेनापति इस गृह युद्ध की भेंट चढ़ गये। शेष भाग कर अमरकोट में अपने सूद भाईयों की शरण में चले गये यह युधिष्ट्री संवत 3009 की बात है। इस आश्य का एक शिलालेख कोटा बूंदी की सीमा के पास सूदानी घाटी में मिला जिसका आश्य निम्नलिखित है।

''धर्म पुत्र युधिष्ट्री के सम्वत 3009 में भगवान की कृपा से कौरवों की भांति जब पाँडवों को अपने राज्य का अधिकार ना मिला तो शिव जी की आराधना करके शुभ घड़ी मे युद्ध आरम्भ किया गया। धर्म की जय हुई अधर्म का नाश हुआ। अभिमानी कन्नराय कन्नकच्छ को उचित दंड मिला गोरी नन्दन की कृपा से सब महायोद्धा कन्न रखा गंदाल अपना अधिकार प्राप्त करके शुभ घडी शुभ लग्न में पाटनकी गद्‌दी पर बैठा अधर्म दुर हुआ। सब प्रजा प्राणी एवं पशु सुख को प्राप्त होंगे। वेद, ब्राहमण और साधुओं का सम्मान होगा। चन्द्रवंशीय प्रमार कुल के सूदों का यश बढेगा। स्वर्ग वासी राय सूद, मंजन राय, ऋज, अनुरूद्ध का यश प्रताप बढ़ेगा।''

शुक्रवार, रोहिनी नक्षत्र कुल श्री सम्वत 530

यहाँ स्पष्ट हो कि यह कुल श्री संवत शायद आग्नि कुल एवं आबू के महायज्ञ के समय आरम्भ हुआ था जिसके स्थान पर बाद में विक्रमी संवत आरम्भ किया गया। तारीखें सूदों के लेखक ने इसे बौद्ध सम्वत माना है जो उचित प्रतीत नहीं होता। बौद्धो के कटर शत्रु बौद्ध संवत का प्रयोग नहीं कर सकते। यह समय इसवी अथवा अंग्रेजी संवत के आरम्भ से काफी पहले का है।

इस प्रकार 3009 युधिष्ट्री संवत में सूद राजकुमार अपने सहायको एवं शेष सेना के साथ अमरकोट पहुंचे और दूसरे गुट ने भारी रक्तपात के पश्चात तमाम राज्य सम्भाल लिया।

इस संकट के अवसर पर अमरकोट के सूद राणा ने अपने शरणागत सूद भाईयों की भरकस सहायता करके उन्हें पुनः बसाने का प्रबंध किया। उसने धात का प्रदेश उन्हे रहने के लिये दे दिया।

प्रथम राजाकुमार जो अपने परिवार सहित इस धात प्रदेश में आया वह अनुरूद्ध था। अनुरूद्ध बहुत वीर एवं चतुर था। उस ने अपनी सैन्य शक्ति एकत्र करके एवं सूद राणा अमरकोट की सहायता से माखाड के बडे भाग पर अधिकार कर लिया। यहाँ से सूदों की माखाड से शत्रुता की नींव पड़ गई।

अनुरूद्ध अत्यंत प्रतापी नीतिवान एवं योग्य शासक था उसने न केवल अपने मिले हुये छोटे से धात प्रदेश की नींव परएक विशाल साम्राज्य की स्थापना की अपितु विजित प्रदेशों का राज्य प्रबंध भी अत्यंत उत्तम ढंग से करके जन–जन का मन जीत लिया।

अमरकोट एवं धात, प्रदेश तथा माखाड़ पर आधारित एक छत्र साम्राज्य के साथ सूद वंश जो गृह युद्ध के कारण अत्यंत निर्बल एवं विवश हो गया था। पुनः उन्नति की ओर अग्रसर हुए।

यहाँ तक कि जगदेव सूद के समय तक सारा सिन्धु प्रदेश एवं अरब सागर के तट से कश्मीर तक के

प्रदेशों पर एक छत्र सूद राज्य स्थापित हो गया। नौ मजबूत दुर्गो से संचालित यह विशाल साम्राज्य ''नौ कोटि मरूस्थल'' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

इतने विशाल साम्राज्य का संचालन अमरकोट के सुदुर स्थित दुर्ग से करना कठिन था अतः जगदेव सूद ने अमरकोट के स्थान पर अलोरा को अपनी राजधानी बनाया।

पीछे हम ने जो शिला लेख सुदानी घाटी का वर्णन किया है वह लगभग इक्कीस सौ वर्ष पुराना है तथा उसकी भाषा के शब्द घिस एवं टूट जाने के कारण पढ़ें जाने योग्य नहीं रह गये है परन्तु सूदों के उस अनर्थकारी गृह युद्ध की कथाएं लोकगीतों एवं कहावतों के रूप में आज भी विद्यमान है।

## महाराजा जगदेव सूद

जगदेव सूद जो जगदेव केसरी (सिंह) के नाम से भी जाना जाता है, का राज्यकाल तो सूद वंश का स्वर्ण युग कहा जा सकताहै। अपने विशाल राज्य को प्रान्तों में बाँट कर उस ने अपने भाईयों एवं अन्य राजपरिवार के वीरों को वहाँ प्रबंधक नियुक्त किया।

व्यापर की ओर जगदेव ने विशेष ध्यान दिया तथा विदेशी राज्यों से व्यापार समझौते करके देश को धन–धान्य से भरपूर किया। महाराजा भोज के बाद विद्यारसिक तथा दानी के रूप में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह जगदेव सूद का ही है।

जगदेव के दान एवं वचन का धनी होने के सम्बंध में एक कथा प्रसिद्ध है कि काली नाम की एक परोहिनत स्त्री का जगदेव ने प्रसन्न हो कर कुछ मांगने के लिये कहा तो उस ने राजा की प्रतिज्ञा की सत्यता की परीक्षा लेने के लिये राजा का सिर मांग लिया। राजा ने तुरंत ही सिर काट दिया। अब काली घबरा गई और विलाप करती हुई बोली कि वह तो मात्र परीक्षा ले रही थी इतने वीर

तथा दानी राजा की अकारण मृत्यु का कारण वह नहीं बन सकती।

तब उसने प्रतिज्ञा की कि वह यदि ब्राहमण की बेटी है तो राजा को पुनः जीवित कर दिखाएगी।

सिर को धड से जोड कर मंदिर में ले जा कर काली ने शिव–पूजन आरम्भ किया। तीन दिन मंदिर मे बंद हो करवह तपस्या करती रही और तीसरे दिन राजा का सिर एवं धड जुड. गये तथा वह जीवित हो उठा।

इस पौराणिक कथा पर आज के भौतिक युग में विश्वास करना कठिन है परन्तु आधुनिक युग में भी जिन्हों ने स्वामी राम कृष्ण परम हंस के चमत्कार देखे सुने है वह इस कथा को असंभव नही मानते। ऐसा मत एक सूदों के भाट ने भी व्यक्त किया था कि वास्तविक सूद जो जगदेव के वंशज एवं रक्त में शुद्ध है उनके गले के चारों और एक चिन्ह गोलाकार हुआ करता था जो सिर जुड़ने की सत्यता का प्रतीक था। यह भी कि सिर जुड़ने से अब सूदों का गला छोटा होता है।

## राज सूय यज्ञ

जगदेव बहुत प्रतापी सम्राट थे। उन्हों ने गृह युद्ध में शिथिल हुये राज्य को पुनः उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया और बौद्ध नास्तिक राजाओं को परास्त करके तमाम सिन्ध ही नहीं अपितु उत्तरी भारत के प्रमुख भागों सिन्धु, कश्मीर, राजस्थान तथा सौराष्ट्र की तट तक राज्य का विस्तार किया।

इस प्रकार राज्य की नींव पक्की करके जगदेव ने इन विजयों की स्मृति में यज्ञ का आयोजन किया। इस में बीस बड़े–बड़े राजाएवं अनेकों सामन्त तथा सरदार सम्मलित हुये। यह यज्ञ युधिष्ट्री संवत के **3279** वर्ष बीतने पर अर्थात आज से तेइस सौ दस वर्ष पूर्व अथवा ईसा से चार शताब्दी पूर्व में रविवार पोष नक्षत्र के शुभ दिन सम्पन हुआ एक विजय सत्मभ इस यज्ञ की स्मृति में

स्थापित किया गया जिस पर इस आश्य का संस्कृत का श्लोक कुलसर में खुदा हुआ हैं।

अति प्राचीन होने के कारण लेख पूर्णतया स्पष्ट तो नहीं है परन्तु कुलासर के ज्योति नन्दन पुरोहित के पास इसका वास्तविक अनुवाद एवं सही शिलालेख की नकल कुछ ही वर्ष पहले मौजूद थी यत्न करने पर भी मैं उन ब्राहमण महानुभाव के दर्शन नही कर सका। काश उस की मूल प्रति सही रूप में यहाँ दे देते परन्तु अंग्रेजी संस्करण में उसे अवश्य ही प्रकाशित करने का यत्न करूगा। इस में सूदा की सतांन की वंशावलि जगदेव तक दी गई है। जिस में अन्य ग्रन्थों के आधार पर निर्मित वंशावलि सही सिद्ध हो गई है अब सूद राजधानी अमरकोट के स्थान पर अलौरा बन गई।

जगदेव का बेटा अनुरूद्ध द्वितीय था। उसने पिता के राज्य को अक्षुण्य बनाये रखा परन्तु महाराजा हर्ष प्रथम के अपने पिता अनुरूद्ध की गद्दी सम्भालते ही स्थिती और भी मजबूत होने लगी। महाराजा हर्ष ने महाराजा धिराज की उपाधि धारण की और सौ दुर्गों अथवा राजगद्दीयों के स्वामी होने के कारण सूद सौगद्दी उपनाम से प्रसिद्ध हुए।

इसी मध्य दो सौ वर्ष तक बौद्धो से युद्ध करने के अतिरिक्त सूदों ने बिकटोरिया से इरान मार्ग से हुये अनेको आक्रमणों को विफल बना दिया। व्यापार की निरन्तर वृद्धि, समुचित राज्य प्रबंध एवं आन्तरिक शांति तथा सुरक्षा के कारण असख्य धन–धान्य देश मे एकत्र होने लगा।

इसी हर्ष के वंशज थे सूद शिरोमणि अलौरा सम्राट महाराजाराय शाह जिनके तेज़ के सामने सिकन्दर की युनानी सेना भी न ठहर सकी थी। इसका विस्तृत वर्णन हम पीछे कर आये है।

राय शाह सूद की कोई संतान न थी अतः राज्य का अधिकार उनके भतीजे अन्न राय को मिला। जिसका वंश इस प्रकार से आगे बढ़ा।

| | | |
|---|---|---|
| अन्न राय सूद, | मंगल राय, | सिन्धु राय |
| श्री श्याम राय, | सझौली राय, | कान्त राय |
| भूरि राय, | श्री हर्ष, | मेहर सेन |

इसी वंश में आगे चल कर राजा दादिर हुए जिसके समय में मुहम्मदबिन कासिम का प्रथम सुनियोजित मुस्लिम आक्रमण भारत पर हुआ जिसका वृतान्त आगे आयेगा।

यहाँ स्पष्ट कर दें कि फारसी की पुस्तकें एवं मुस्लिम इतिहासकारों की रचनायें ही हमारे इतिहास की सामग्री का आधार बनती रही है और युनान आदि के लेखको ने अपने भाषा उच्चारण की भिन्नता के कारण हिन्दु सूद राजाओं के नामबुरीतरह से बिगाड़ दिये है। तारीखें सूदों के लेखक ने भी नामों को वैसे का वैसा ही दे दिया है।

सिन्धुराय को हिन्दार राय, श्री श्याम को सरसाम, श्री हर्ष को सहरस तथा मेहर सेन को मेहरस लिखा गया है और यह नाम हम ने शुद्ध करके दिये है।

उधर मुसलमान धर्म जिसे जन्म लिये अभी कुछ ही समय हुआ था मिश्र और यूरोप को रौंद कर भारत की ओर बढ़ने के स्वप्न देख रहा था। मानो कल का बालक बूढ़े दादा को गिराने का कुत्सत प्रयास कर रहा हो। उधर ईरान मार्ग से निरन्तर काबूल तथा सिन्ध मे क्रमशः राज्य कर रहे थे इन नृंशस आक्रमणों को असफल करते जाते थे। परन्तु निरन्तर युद्धों के कारण सूदों की सैन्य शक्ति घटती जा रही थी उधर सूदों एवं भाटियों में भी शत्रुता के बीज बोने जाने लगे थे।

श्री हर्ष तथा राय मेहर सेन सूद के समय में इरान की ओर से दो आक्रमण हुये परन्तु सूद सेना के लोह द्वार से सिर टकरा कर उन्हें वापस लौटना पडा। इसी समय प्रसिद्ध पहलवान रूस्तम ने भी इधर आक्रमण किया परन्तु अभी युद्ध जारी था कि उसे अपने प्रदेश में विद्रोह हो जाने पर लौटना पड़ा।

## उर्दु फारसी के गलत विवरण

यहाँ तारीखे सूदों ''ऊर्दु'' के लेखक सहित अनेकों इतिहास लेखकों ने मेहरसेन ''उनका मेहरस'' के बेटे का नाम देवायजलिखा है तथा देवायज के बेटे का नाम दाहिर लिखा था जो ठीक नहीं है। वास्तव में इस बीच में अनेकों राजाओं के नाम छोड़ दिये गये है अथवा छुट गये है। वरना सिकंदर से दाहिर तक के लम्बे समय में चन्द राजाओं के नाम ही सम्मुख ना आते।

हमारी सूचना एवं अध्ययन खोज आदि के अनुसार देवायज के बेटे का नाम मेहरसेन था जिसका बेटा साहसी राय हुआ। यह दोनों शासक अधिक प्रसिद्ध एवं योग्य न थे परन्तु उन के बेटे मेहरसन तृतीय की योग्यता एवं प्रताप ने सूद राज्य को और सुरक्षित बनाने का यत्न करते हुये आक्रमण के आधार देश इरान के राजा नीमोरोज पर आगे बढ़ कर आक्रमण कर दिया। भयानक युद्ध के मध्य राजा मेहरसेन गले में तीर लगने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुये।

इसके बेटे प्रतापी सम्प्रट साहसीराय द्वितीय ने युद्ध जारी रखा परन्तु सन्धि हो गई।

राय साहसीराय ने बाहरी आक्रमणों से देश की रक्षा के लिये उचित प्रबंध किये।

उसने प्रजा से विशेष रक्षा धन एकत्र करके मऊ, सिवराय, आलौरा माथेला और शिवि स्थान के दुर्गो की रक्षा एवं आक्रमण शक्ति का विकास किया।

जितनी सुख सुविधायें इस राजा ने जनता को दी उतनी कदाचित किसी सिन्ध के राजा ने न दी होगी।

यह समय सूद वंश की समृधि एवं प्रताप का था। सूद राज्य पश्चिम में देवल बन्द्रगाह तथा मकरान तक, पूर्व में कन्नौज राज्य की सीमा तक तथा कश्मीर में उतर में फरदान, केकानन कन्धार एवं सेस्तान तथा सुलेमान की पर्वत श्रृखंला तक एवं दक्षिण में सूरत की बन्दरगाह तक फैला हुआ था।

## गृह युद्ध के बाद

पीछे सूदों के परस्पर राज्य बाँटने के लिये हुये युद्ध का वर्णन किया था। यह अपने आप में एक भीषण क्रान्ति थी। कान्नकच्छ सूद अपने भाईयों को चितौड का प्रदेश देता था जब कि वह पाटन का सिंहासन मांगते थे कर्णा कच्छ के भाई बन्धु सभी मारे गये और उनके सहायक अमरकोट की ओर भाग गये।

अमरकोट का राणा बनवीर था। उसे अपनी जाति की इस तबाही पर भारी दुख था उसने धात का प्रदेश दे कर उजड़े हुये बन्धुओ को बसाने का प्रबंध किया।

दूसरी ओर गंदल के वंशज पाटन में राज्य तो करते रहे परन्तु गृह युद्ध के दंड से वह भी बच न सके। यादवों ने अनेकों राजपूत राजाओं को साथ मिलाकर सूदों पर आक्रमण किया और सूद पाटन छोड कर भागने पर विवश हो गये। कुछ गंगा पार जा बसे। शेष जहां पहुंचे व्यापार आदि से जीवन यापन करने लगे परन्तु बहुत से जिनमें राज्य परिवार भी थे पुनः अपने उन्ही सूद भाईयों की शरण में धात प्रदेश पहुंचे जिन के पूर्वजों अनुरूद्ध आदि को गृह युद्ध करके निकाल दिया था।

यह घटना गृह युद्ध से एक सौ वर्ष के पश्चात की है। यादवों ने धात प्रदेश पर भी आक्रमण किया परन्तु यहाँ से उन्हें पीछे हटना पडा।

## यादवों की सूदो से शत्रुता

यादव एवं सूद वैसे तो परस्पर दो भाई यदु और पुरू की संतान होने के कारण परस्पर भाई है और मुसलमानों के विरूद्धकदाचित कोई ही युद्ध होगा जिस में सूदों एवं भाटियों ने परस्पर सहयोग न दिया हो। परन्तु कई अवसरों पर इन में परस्पर भी भीषण शत्रुता एवं भारी मार काट के अवसर आते रहे है।

यथा युधिष्ट्री संवत **2609**में सूद राजा वज्र ने अपने बेटे का विवाह मूंगी पाटन के राजा की बेटी क्षत्रिय बाला से कर दिया। इस से पूर्व इस राज कुमारी का विवाह यादव राजकुमार से किये जाने का निश्चय हुआ था। इस परिवर्तन को यादवों ने अपमान समझ कर पाटन पर आक्रमण कर दिया था। सूद शक्तिशाली थे और भाग्य ने भी उन का साथ दिया और वज्र सूद के हाथों बुरी तरह पीट कर यादव को पीछे हटना पडा।

यादवराजा घायल युद्ध भूमि में ही छटपटा कर मर गया परन्तु मरने से पूर्व कह गया कि शुद्ध यादव वह होगा जो सूदों से इस अपमान का बदला लेगा। तब से सूदों एवं यादवों में दर्जनों बार भीषण युद्ध हुए। अन्त में राजा हमीर सूद ने इन में परस्पर सुलह करा दी परन्तु तब तक कई सूद एवं यादव कुलें इन युद्धों पूर्णत्या समाप्त हो चुकी थी।

कृपाल चरित नामकग्रन्थ में एक घटना यूं वर्णित है किराजकुमारी का नाता पहले यादवों के यहाँ पर हुआ था बाद में पाटन के राजकुमार से उस का विवाह कर दिया गया। यादवों ने इस अपमान का बदला लेने के लिये जा रही बारात पर आक्रमण कर दिया। सूद राजकुमार एवं उसकी नव वधु की हत्या कर दी गई। राजकुमारी अपने पिता की अकेली संतान थी जिससे वह कुल वही समाप्त हो गया। इस प्रकार अनेकों कुल इनके परस्पर युद्धों की भेंट चढ़ गये।

सूदों एवं भाटियों के एक युद्ध का वर्णन भाटों ने यूँ किया है।

रथ हद उडन – नदी हद सागर
जल हद गंग– सूद हद वीरता
शत्रु के मार हेतू– वैरि के संहार हेतू
धर्म को निखार हेतू– सूद हद धीरता
यादव अभिमान तोड़– सामन्ती दी मरोड
योंद्धा भगे मुख मोड़– यदु रणा भूमि में
काली आ के खप्पर भरे–भैरोंसूद यश करे
जोगिनी तब नृत्य करे–सूदा रणा भूमि में

## प्रहलाद भक्त एवं सूद

जैसे अन्य पैराणिक कथाओं का सही रूप हमने पीछे आपके सम्मुख रखा है वैसे ही प्रहलाद के विषय में प्रचलित पौराणिककथाभा ाा प्रतीको में लिखी गई है अथार्त इस को अप्रत्यक्ष अर्थ भी है कि हिरण्यकश्यप राजा बौद्ध धर्म की वज्रयानी शाखा का अनुयायी हो गया था जो करोड़ों रूपये की धन राशि एवं मठो में कर्म हीन जीवन बिताते हुये अनेकों व्यसनो को अपना चुके थे। वही वाममार्गी शाखा थी इसका पूर्व रूप चार्वाक था। इस को प्राचीन ग्रन्थों मे रक्ष संस्कृति एवं अनेकों स्थानों पर राक्षस–संस्कृति का नाम दिया गया।

बकरे एवं अन्य जानवरों की बलि का ढोंग रचा गया। मद्य–मांस मछली एवं पुरूष तथा स्त्रीयोनि आदि पंच मकार को मोक्ष का मार्ग दर्शाया गया।

## वेदों के विषय में

''त्रयों वेदस्य कर्तारो भारांड धूर्त निशाचर'' अथति वेदों की रचना करने वाले को भाण्ड मूर्ख राक्षस आदि कहा गया एवं शराब न पीने वाले को ''अछूत'' घोषित किया गया।

इसी राक्षस–संस्कृति के प्रसार के लिये रावण ने दिग्विजय यात्रा आरम्भ की। रावण के नाना सौमाली नें अफ्रीका में इस संस्कृति का प्रसार करते हुये वहां सौमालिया नामक राज्य स्थापित किया जो आज भी विद्यमान है।

इसी धर्म का अनुयायी नास्तिक वेद–विरोद्धी राजा था हिरणयकश्यप उसका बेटा प्रहलाद था। उसने किसी प्रकार से वेद पठन एवं ईश्वर के प्रति आस्तिकतापूर्ण श्रृद्धा योग्य ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

वह ईश्वर का प्रबल विश्वासी एवं वेद मत का अनुयायी था। पिता ने समझा कर एवं फिर अनेकों कष्ट दे कर उसे राक्षस–संस्कृति का अनुयायी बनाना चाहा परन्तु व्यर्थ।

क्रोधित पिता ने पुत्र की जान लेने का निश्चय किया परन्तु सूदों ने ऋग्वेद की सवारी आगे करके पीछे सेना लेकर उसके शाकल राज्य पर प्रबल आक्रमण कर दिया एवं हिरण्यकश्यप का वध करके प्रहलाद को बचा लिया।

स्थान कम होने से इतना ही आप लोगों की सूचना मात्र सेवा में प्रस्तुत हैं।

## इस्लाम की आंधी

इधर जिस समय भारत में मेहरसेन एवं साहसीराय द्वितीय सिन्ध को भारत का लोह द्वार बनाने के लिये प्रयत्नशील थे। उसी शताब्दी में 20 अप्रैल 571 ई. में कुरैशी जाति के एक निर्धन पुजारी के घर में अरब के मक्का नगर में एक ऐसे महान व्यक्तित्व का उदय हुआ जिस ने सारे संसार पर सदैव के लिये अपनी अमिट छाप छोड़ दी। वह पुण्य आत्मा थे हज़रत मुहम्मद साहब।

कुरैशी वास्तव में करू वंशीय के बिगड़ा हुआ रूप है और महाभारत के युद्ध के पश्चात हार कर बचे हुये कौरव वंशीय लोग सपरिवार पांडवों के भय से अरब देश में जा बसे थे।

इन दिनों अरब धार्मिक क्रान्ति के दहीने पर खड़ा था। अध्यात्मिक चेतना जन–जन में जागृत हो रही थी। एक ओर उन दिनों अरब में मक्का का विशाल मन्दिर सारे विश्व में प्रसिद्ध था कदाचित यह मन्दिर जो शिवलिंग की पूजा के लिये बना था। कौरवों के वंशजों ने ही बनवाया था। बाद मे यही मन्दिर काले पत्थर के नाम से प्रसिद्ध हुआ कहने का तात्पर्य यह कि हज़रत मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व अरब हिन्दु मत का अनुयायी था।

अब भी शिवलिंग मक्का की मुख्य मस्जिद के बाहर पड़ा हुआ है और इसे अब ''सगे–अस्बद'' कहा जाता है। मक्का के तींथ यात्री इसे चूमते थे क्योंकि उनका विश्वास है कि यह पवित्र पत्थर (शिवलिंग)मनुष्य के तमाम पाप अपने भीतर खींच लेता है ऐसे शिवलिंग अरब में असंख्य थे।

उन दिनों इसाई पादरी नेस्टर इसाई धर्म का प्रचार करते तथा मुर्ति पूजा के विरूद्ध बोला करते थे उनके सम्पक्र में किशोर हज़रत मुहम्मद साहब का विश्वास मूर्ति पूजा से हट कर एक निराकार ईश्वर की ओर हुआ।

पच्चीस वर्ष की अवस्था में हज़रत मुहम्मद साहब का विवाह एक चालीस वर्षीय धनी विधवा स्त्री खदीजा बेगम से हो गया।

देश में अकाल पड़ा तो हजरत मुहम्मद साहब ने सेवा कार्य का संचालन किया। इसके बाद जनता का ध्यान पेट की भूख से हटा कर आत्मा की भूख की ओर दिलाया और प्रचलित कुप्रथाओ का विरोध करने पर आप को मक्का से निकाल दिया गया परन्तु आप के अनुयायी काफी संख्या में बन गये। वहां से मदीने को अपने प्रचार का केन्द्र बना कर हजरत मुहम्मद साहब ने एक लाख अनुयायीयों के साथ मक्का पर अधिकार कर लिया और 360 मूर्तियों को तुड़वा कर नये धर्म की नीवं रखी। परन्तु इस के सगे चाचा आबू अन्ततक शैव के पुजारी रहे। इधर जून 632 में हजरत ने शरीर छोड़ा और उधर उन के अनुयायीओं ने सारे संसार को हजरत मुहम्मद साहब एवं उसके कुरआन–ज्ञान का अनुयायी बनाने के लिये बौद्ध धर्म के स्तर पर परन्तु तलवार के बल पर देश जीतना आरम्भ कर दिये।

636 ई. में मैसोपोटामिया, इराक, सीरिया तथा 651 ई. में इरान 715 ई. तक तहार, तुक्रिस्तान इटली पोलैंड, युनान, बाल्कान आदि देशों को रौंद डाला। संसार का सब से बडा ज्ञान भंडार सिकंदरिया का पुस्तकालय

10 लाख ग्रन्थों सहित जला कर छः मास तक पाँच हजार हम्माम गर्म किये जाते रहे।

इससमय सिन्ध में वृद्धराजा साहसीराय का राज्य था और उसका मंत्री था। रामराय साहसीराय के पूर्वजों ने इससे पूर्व अनेकों इरान मार्ग से होने वाले आक्रमणों का सफलता पूर्वक सामना किया था और भारत की सीमा की रक्षा की थी परन्तु अब तक उनके शेष सहयोगी निरन्वर दो सौ वर्ष युद्ध करते–करते जीण–शीर्ण हो चुके थे।

यहाँ स्पष्ट कर दूं कि काबुल में उन दिनों भाटियां वंश का शासन सैंकड़ो वर्षो से चला आ रहा था। भाटिया श्री कृष्ण जी के वंशज यादवों का ही दूसरा नाम है। इन्ही के महाराज गजसेन ने गजनी को बसाया था तथा रोम से होने वाले आक्रमणों का सफलता से सामना किया था। निरन्तर भयानक आक्रमणों तथा रक्षा के लिये गजनी को सुरक्षित न जान कर उन्हीं के वंशज शल्यवाहन ने शल्यवाहन कोट अथवा स्यालकोट की नींव रखी थी।

गजसेन की मृत्यु से भारत की रक्षा पांक्ति की एक मजबूर दिवार टुट गई। दूसरी ओर सूद निरन्तर के वाहय तथा परस्पर के युद्धों में काफी शक्ति खौ बैठे थे। इस पर भी मुसलमान सिन्धमार्ग से भारत भूमि में प्रवेश न कर सके। एक दो आक्रमणों में सूदों द्वारा बसाये गये रोहडी प्रदेश में मुसलमानों ने घुसपैठ की परन्तु तुरन्त ही सूद नेता ने आ कर उन्हें बाहर निकाल दिया।

अनेकों बार हार कर कुरआन और तलवार दोनों हाथों में थामे धार्मिक जनून के साथ युद्ध करने वाले खलीफा के अनुयायी यहाँ सफलता मिलती न देख कर कूट नीति एवं षड़यंत्रों से काम निकाल लेने की सोचने लगे।

# पतन की ओर

उन दिनों भारत के भाग्य में शायद नीच ग्रहों का प्रभाव था। साहसीराय के मंत्री राम का एक सेवक था चच्च वह जाति का मुहियाल ब्राहमण और सुन्दर युवक था। उसकी योग्यता देख कर राजा ने उसे महल का रक्षक नियुक्त कर दिया यह भारत की भाग्य श्री के लिये मनहूस आरम्भ था।

वृद्ध राजा साहसीराय रोगी हो कर बिस्तर पर पड़े थे। उनकी युवा पत्नि थी सुहानदी अथवा सूदानन्दी चरित्र की दुर्बलता समझे अथवा विनाश काले विपरीत बुद्धि–रानी के अनैतिक सम्बंध इस चक्च से हो गये और इस बल कर उसने कृधन्ता से बिमार राजा का वध कर दिया।

राज्य अब चक्च और नैतिक पतन ग्रस्त रानी की दया पर था। प्रजा ने इस दुष्टता का सहन न करके विद्रोह कर दिया।

राजा का बेटा दाहिर अभी अल्प व्यस्क बच्चा था। चक्च को दंड देने के लिये साहसीराय सूद के दामाद चितौड़ के राजामहारथ राय ने सेना ले कर आक्रमण किया। चक्च घबरा कर भागने की सोचने लगा तो रानी से अपना भविष्य धुँधलाते देख कर पुनः उसे छल से बाजी जीतने को विवश कर दिया।

दोनों ने मिलकर सन्धि और राज्य साहसीराय के बेटे को लौटा देने का विश्वास दिला कर महारथ राय को महल में बुला कर मार डाला अब देश में अत्याचार का दौर आरम्भ हो गया। जनता के विद्रोह को शांत करने में खजाना खाली हो गया।

इसी संकट का अवसर जान कर अत्याचारों से पीड़ित बौद्ध तथा लोहाना सरदार स्वतंत्र होने के लिये षड़यंत्र रचने लगे।

अनेकों बार हार कर खलीफा अब गुप्तचरों द्वारा तमाम सूचनायें प्राप्त करके अवसर की ताक मे था। सिन्ध में अशान्ति और षड़यंत्रों का जाल फैलते देख कर उसने भी पासा फैंका।

चक्च का राज्यकाल विद्रोहों एवं षड़यंत्रों में बीत गया और उसके पश्चात सरदारों एवं मन्त्रियों ने साहसी के बेटे दाहिर को गद्‌दी पर बैठाया। यहाँ इतिहासकार विशेष कर मुसलमान इतिहासकार एक गलत एवं भ्रान्त वात इतिहास में वर्णित करते है वह यह कि दाहिर चच्च का ही पुत्र अथवा पौत्र था जो ठीक नहीं है। सुहानन्दी रानी को अपना कर चक्च ने उसके बेटे को गोद ले लिया था।

इसी कारण दाहिर को मुसलमान एवं उनके आधार पर ग्रन्थ लेखकों ने याहिर को ब्राह्मण लिखा है जो गलत है।

खलीफा ने षड़यंत्र यह रचा कि अल्लाफी नामक एक मुसलमान चतुर सरदार को सिन्ध में दाहिर के पास भेजा। उसने दाहिर को एक बनी बनाई कहानी सुनाई कि मैनें खलीफा के विरूद्ध विद्रोह किया और खलीफा ने मेरे परिवार के सदस्यों को मरवा कर मेरी तमाम जायदाद छीन ली है मै प्राण बचा कर कुछ सहायको के साथ आप की शरण में आया हूॅं।

राजा दाहिर इस के झांसे में आ गये और राज्य दरबार में स्थान दे कर उसे नावों के बेड़े का मुखिया नियत कर दिया।

शनः–शनः इसने दरवार में काफी प्रभाव प्राप्त कर लिया। उसने दरबार के सरदारों से मित्रता सम्बंध बनाये तथा बौद्ध और लोहाना जाट एवं सिन्ध की शुद्र आदि छोटी जातियों को उन पर होने वाले अत्याचारों की याद दिला कर उन्हें विद्रोह के लिए उकसाया बौद्ध मठों की अनमिणत दौलत को बौद्ध–राज्य की स्थापना के लिए

लगाने की ओर प्रेरित किया परिणाम यह हुआ कि सारे सिन्धु राज्य में विद्रोह की अग्नि भड़क उठी।

इस प्रकार अशान्ति की ज्वाला स्वंतन्त्र फैल जाने पर खलीफा ने युद्ध की तैयारी एवं बहाने ढुंढने आरम्भ कर दिये। उन दिनों अरब के कुछ व्यापारी जहाज अरब सागर में समुद्री डाकुओं ने लूट लिये और खलीफा ने उसकी क्षति–पूर्ति करने तथा अल्लाफी को उसे सौंप देने के लिये दाहिर का कह भेजा। दाहिर ने जहाजोंने लूट की घटना को अपने राज्य की सीमा से बाहर बताया तथा ''शरणागत अल्लाफी'' को वापस लौटाने से इंकार कर दिया।

इस नाटक के साथ ही खलीफा ने अपने बीस वर्षीय भतीजे को सेना दे कर सिन्ध पर आक्रमण करने के लिये भेज दिया।

इस समय सिन्धु में चारों और अशांन्ति थी। मुसलमानों के एक ईश्वरवाद तथा उच्च–नीच के विरोध से एवं अल्लाफी के प्रचार से बौद्ध एवं सिन्ध की छोटी जातियों ने कासिम को अपने लिये स्वतन्त्रता की आशा समझा एवं उससे जा मिले। बौद्धों ने भी शत्रु का साथ दिया परन्तु दाहिर भारी सेना के साथ कासिम को पाठ सिखानें कें लिये अलौरा के दुर्ग से बाहर निकल आया। आठ दिन के घोर संग्राम में कासिम पिटते–पिटते भागनें को था कि बौद्ध गुप्तचरों ने उसे हिन्दु सेना की धार्मिक दुर्बलताओं के भेद देने आरम्भ कर दिये। कभी गाय के डेर आगे करके तथा मंदिर के झंडे गिरा कर कासिम नीति से युद्ध करता हुआ देवल आ निकला।

देवल बन्द्रगाह में कासिम को घेरने के लिए दाहिर से मुहम्मद वारिस अल्लाफी को जो दाहिर की शरणागत तथा जल सेना का मुखिया था तमाम सैनिकों को नावों में देवल पंहुचाने की आज्ञा दी तो अल्लाफी कासिम की मौत सामने देख खुलकर सामने आ गया। उसने अपने पांच सौ मुसलमानसाथियों की आज्ञा देकर

तमाम खाली नौकाओं को बन्धन काट कर उन्हें दूर सागर की ओर धकेल दिया।

यहाँ स्पष्ट कर दूं कि देवल वर्तमान कराची से केवल चन्द मील की दूरी पर सिन्ध का सबसे धनी नगर तथा रक्षा का मुख्य दुर्ग था। दाहिर के चच्चा राय मेहता ने कई वार अल्लाफी के षड़यंत्रों से राजा दाहिर को अवगत करा कर उसे निकाल देने के लिये कहा था परन्तु दाहिर सदा ही अल्लाफी पर अन्ध विश्वास करता रहा।

इस नावों की घटना के समय भी राय महता ने तलवार निकाल कर अल्लाफी जैसे कृतधन को समाप्त कर देना चाहा परन्तु याहिर ने शरणागत की हत्या कह कर उसे रोक दिया।

राय मेहता को बेटा और पौता बाम्या आदि दुर्गो के प्रशासक थे। उन्होंने फिर सहयता मांगी परन्तु नौकाएं तो दूर सागर में चली गई थी और अल्लाफी हाथ जोड़ कर दुष्टता पूर्ण नम्रता से कह रहा था महाराज हमारे धर्म में मुसलमान को मुसलमान की हत्या का कारण बनने का निषेध है।

इस बात पर दाहिर और राय मेहता में कह–सुनी हो गई और राय मेहता अपने पुत्र पौत्र एवं सहायक सैनिकों सहित कन्नौज के राजा के पास सरहिन्द में चले गये। यह सूद राज्य पर दूसरा आधात था कन्नोज का शक्तिशाली राजा जो सूदों का सम्बन्धी चन्द्रवंशी राजा था। मुहम्मद विन कासिम को सुगमता से भगा देने की स्थिती मे था। राय मेहता से तमाम समाचारसुन कर राय मेहता को सरहिन्द का प्रशासक नियुक्त करके स्वयं कन्नौज चला गया।

इसी भीतरी संघर्ष से लाभ उठा कर कासिम ने इसी बीच देवल और बाम्यान के दुर्ग जीत लिये। अब सिन्ध के प्रसिद्ध नगर ब्रह्मणवाद के लिऐ संकट उत्पन्न हो गया था अतः उस नगर की रक्षा के लिये राजा सेना सहित आगे बढ़ा परन्तु कासिम ने गुप्तचरों से भेद प्राप्त करके दाहिर की पत्नि उस की दोनों बेटियाँ तथा पांच

सौ रक्षक ही किले में थे। रानी ने अत्यंत वीरता से सामना किया परन्तु भारी संख्यक शत्रुओं के कारण उसे दुर्ग में लौट आना पड़ा। किला घिर गया दुर्ग की दिवारों को सुरंग लगानें का प्रबन्ध किया गया।

अन्तः में रानी को रक्षा का विश्वास दिलाया गया कि सन्धि की जाने पर किसी की प्राण अथवा मान–हानि नहीं की जायेगी।

रानी ने किले के द्वार खोल दिये परन्तु मुस्लिम सेना ने दुर्ग पहुँचते ही निरपराधों की हत्या करनी आरम्भ कर दी रानी ने कटार घोंप कर आत्म हत्या कर ली।

अलौरा को नष्ट करके कासिम ब्रहाणबाद में दाहिर के पीछे बढ़ा। ब्राह्मणवाद नगर के बाहर घमासान युद्ध हुआ मुस्लिम सेना को भारी प्राण हानि उठानी पड़ीं परन्तु अचानक राजा का प्यासा हाथी चिंघाड़ता हुआ भागा और झील में घुस गया। इसअलग–अलग अकेले राजा पर मुस्लिम सैनिकों ने वार पर वार करने आरम्भ कर दिये। घायल राजा अनेकों को मार युद्ध क्षेत्र में खेत रहा। राजा के मरते ही सेना तितर बितड़ हो कर भाग गई। दाहिर के दोनों बेटों ने काफी प्रयत्न किये कि सेना को पुनः एकत्र करे परन्तु मुस्लिम घुड़सवारों के घेरे में आकर विवश हो गये।

इस प्रकार से सिन्ध के सूद राज्य का पतन हुआ। परन्तु राजपूत बेटियों ने अभी अपना प्रतिकार लेना था।

राजा दाहिर को दो युवा–बेटियाँ इस युद्ध में कासिम के हाथ पड़ी। खलीफा को प्रसन्न करने के लिये उसने सुन्दर भेंट भेजने का निश्चय किया।

## दो सूद ललनाओं की वीरता

अलौरा में सेना रहित दुर्ग पर कासिम ने छल से अधिकार किया तो वीर दाहिर ही पत्नि नें लाज की रक्षा

के लिये आत्महत्या कर ली। परन्तु दाहिर की दो युवा कन्याएं कासिम के हाथ लग गई। उनके नाम थे।

1. स्वरूप देवी 2. वीरल देवी

दाहिर की बहन ने मृत्यु का समाचार सुन कर राज परिवार की स्त्रीयों के साथ चिता में जल कर जौहड़ किया। उधर मुहम्मद ने 17 वर्ष से अधिक आयु के पुरूषों का वध तथायुवा स्त्रीयों को सैनिकों का भाग होने की घोषणा कर दी। साथ ही 75 चुनी हुई सुन्दर स्त्रीयों राजा दाहिर का सिर तथा लूट कर पाँचवा भाग उस ने हज्जाज की सेवा में प्रस्तुत किये। हज्ज़ाज ने कासिक को सम्मानित करके उसे सिन्ध का गवर्नर बना कर पुनः भारत भेज दिया और उन पचहतर सुन्दर स्त्रीयों को अपने हरम में प्रविष्ट कर लिया।

हज्जार के सम्मुख पेश किये जाने पर इन असहाय अबला नारियों के हृदय में पितृ–हत्या से बदला लेने की सुलगती ज्वाला और भी भड़क उठी तथा उन्होंनें अपनी योजना के अनुसार हज्जाज से कहाः–

''हमें मत छुएं हम आप जैसी पवित्र हस्ति के योग्य नही रह गई है। कासिम ने हमारा धर्म बिगाड़ कर आपने पास नुची हुई कलियों का उपहार भेजा है''

इतना सुनना था कि हज्जाज क्रोध से तमतमाता हुआ बाहर निकल आया। उसने तुरन्त ही काजी को बुला कर अपने स्वामी की अमानत में ख्यानत करने वाले का दंड पूछा तो काजी ने कहा किः–

''ऐसे नीच को बैल की चमड़ी में जीवित सी देना चाहिये''

तुरन्त हज्जाज ने सैनिको को फरमान दिया कि कासिम को बैल की खाल में सी कर दरबार में हाजिर करो।

सैनिक जब सिन्ध पहुँचे तो कासिम दरबार लगाये बैठा था आज्ञानुसार उसे बैल की चमड़ी में सी कर इराक

ले जाया गया तो मार्ग में उसी दिशा में कासिम की मृत्यु हो गई।

भरे दरबार में कासिम की बिगड़ी हुई लाश हज्जाज ने उन दोनों बहनों को बुला कर दिखाई तो हंसते हुये उन वीरांगनाओं नें कहा, कासिम तों हमे छू भी नहीं सका–न ही हमें तुम छू पाओगे हमने तो अपने देश वासियों तथा पिता की हत्या का बदला लिया है''

हज्जाज इस रहस्य के प्रकट होने पर तथा अपने प्रिय स्वामी भक्त सेनानी की लाश को देख कर क्रोध और विषाद से दांत पीसने लगा और उसने तुरन्त दोनों बहनों को जीवित जला देने की आज्ञा दी।

चिता पर बैठते हुए उन दोनों सचरित्रा क्षत्रियों बालाओं में मुख पर आत्म विश्वास एवं तृप्ति का दिव्य तेज था कि वह देशके आपमान का बदला ले सकी।

ब्राहमनाबाद में दाहिड़ को हराने के पश्चात महमूद ने अरोड पर आक्रमण किया। यहाँ दाहिर का भतीजा फूफी प्रशासक था। वह समझता था कि दाहिर जीवित है तथा छिप कर सेना एकत्र कर रहा है। सूद राजकुमारी लाढी को फूफी को समझाने के लिये कासिम ने भेजा कि व्यर्थ युद्ध न करे। परन्तु वह कासिम की चालों से परिचित था अतः उसने लाढी को कासिम की जासूस कह वापस भेज दिया। अन्तः में आक्रमण आरम्भ हुआ परन्तु सैनिकतथा खुराक की कमी के कारण फूफी दुर्ग छोड़ कर चितौड़ की ओर जा निकला। इसके बाद कासिम मुलतान की और बढ़ा मार्ग में अरोड़ सेर आये हुंये दाहिर के भतीजे ककस्थ को अधीन किया। अरोड़ का मदिन्र गिरा दिया। अरोर सूद राज्य का प्रसिद्ध नगर तथा दुर्ग था।

## ''अरोड़''

अरोड़ जिसे मुस्लिम लेखकों ने अजोर भी लिखा है सुकुर ''सिंध'' के रोहडी ताल्लुका में 27 डिग्री, 39छ और 68 डिग्री, 50म के मध्य स्थित है। 1901 की गणता

के अनुसार इसकी आबादी 939 रह गई थी। यह सूद राजाओं की बहुत देर प्रान्तीय राजधानी रही।

712 में इसे कासिम ने जीत लिया। यह सिन्धु के पुराने मार्ग के तट पर स्थित है। जिसे पहले मिहरान कहते थे। एक भयानक भूकम्प में यह नगर नष्ट हो गया।

962 ई. के लगभग नदी ने मार्ग बदल लिया। बादशाह आलमगीर की बनवाई हुई एक मस्जिद यहाँ मौजूद हैं।

यहाँ एक पवित्र गुफा भी है जो कालिका देवी जी की पवित्र गुफा है। यहाँ प्रति वर्ष मेला लगता है।

# सोने का भारत

712 ई. में अलौरा देवल और ब्राहमनावाद के मुसलमानों के हाथों में आते ही उनकी आंखें फटी रह गई। इतना धन उन्हों ने अपने विश्व विजय के अभियान में अभी देखा भी न था।सब से पहली चोट कासिम ने अपने हाथों से एक 120 फुट ऊंचे मंदिर पर की जिस के पुजारी ने जान–बखशी तथा लालच में आकर गुप्त खज़ाने का भेद कासिम को बता दिया। यहाँ पर कासिम को 40 देगो में 17200 मन सोना प्राप्त हुआ जिस का आज मुल्य 35 अरब से भी अधिक है। छः हजार मूर्ति ठोस सोने की इससे अतिरिक्त थी। इस कार्य के लिये अल्लाफी ने नगर कोट ''वर्तमान हैदराबाद सिन्ध'' के किले के सरदारएवं यहाँ दाहिर के सेना नायक को छल एवं लालच से अपनी ओर मिला लिया था।

इसी विजय के बाद सिन्ध की जनता पर भारत में पहली बार जज़िया लगाया जिसे घर–घर से उगाहने के लिये 713 ई. में कासिम ने सारे सिन्ध का दौरा किया।

तलवार हाथ में लिये ''जजिया दो या मुसलमान बनो'' का नारा देते हुये सिन्ध की तमाम छोटी जातियां, अछूत, शुद्र, बौद्ध आदि जो क्षत्रिय राजाएवं ब्राह्मण मंत्री

के मिथ्याभिमान के कारण अत्यंत दुखी थे, सामुहिक रूप से मुसलमान हो गये।

अल्लाफी ने धूम–धूम कर उन तमाम सरदारों लोहाना जाटों की पूरी सेना एवं परिवारों सहित मुसलमान बना लिया जो उसने दाहिर के विरूद्ध भीतर तैयार किये थे।

पहला सूद राज परिवार का सदस्य जो इल्लाफी के साथ कासिम के पास आकर मुसलमान बना कुम्भा सूद था। दाहिरका सम्बंध मोखा भी इसी प्रकार मुसलमान बन गया परन्तु मुख्यतः सूद सिन्ध छोड़ की सरहिन्द की ओर प्रस्थान कर गये। यह सूद 20 गोत के थे और सरहिन्द पहुँच कर इनमें 20 गोती सूदों ने परस्पर विवाह सम्बंध करना आरम्भ कर दिये।

# मुसलमानों को निकालना

इस प्रकार अपनी भूलों के कारण युद्ध से हार कर दाहिर के बेटे जीत सिंह तथा दाहिर सिंह अपनी वीरता एवं देश भक्ति के विपरीत अपनी सूद प्रजा की दुर्दशा की कथायें सुन कर दांत पीसने के अतिरिक्त कुछ न कर सके।

सिन्ध के आस पास के जंगलों में बिखरी हुई सूद सेना को फिर से एकत्र करके जीत सिंह ने गुरेला युद्ध आरम्भ कर दिया मुसलमान सेना की रसद लूटना जजिया उगाहने निकले सैनिकों का कत्ल तथा मुसलमान बनने वाले हिन्दुओं पर आक्रमण करके इन सूद वीरों ने मुसलमानों का जीना हराम कर दिया। खलीफा को नित्य बुरी से बुरी सूचनायें मिलने लगी। उस ने तेजी से सारा सोना एवं खजाना सिन्ध से ऊँटों पर लाद कर निकाल लिया जीत सिंह ने अनेकों किले पुनः जीत लिये परन्तु सारा सिन्ध अब खन्डहर बन चुका था। विद्रोही सूद सेना ने फसलें जला डाली। पानी के मार्ग काट दिये और मुसलमान सेना को भूखे प्यासे तड़पने पर विवश कर

दिया। इस प्रकार विवश हो कर इराक के हज्जाज ने सिन्ध के उजड़े प्रान्त को दरिद्र ''प्रान्त'' घोषित करके उसे छोड़नें तथा सेना को वापस बुलाने की घोषणा कर दी।

मुसलमानों के निकलते काफिलों पर भी सूद गुरेला दस्तों ने अपने छापे जारी रखे और मुसलमान सेना को भारी कष्ट और बाधायें पहुचाई जहॉ तक कि क्रोध में आकर मुस्लिम सेना ने अलौरा का भव्य नगर खण्डहरों में बदल दिया।

मुसलमानों के निकलते ही दाहिर की संतान ने सिन्ध पर पुनः अधिकार कर लिया।

यहाँ यह बता दें कि दाहिर का एक चचा मोरवाराय था। उस ने राज्य के लालच में मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया और भारत में मुस्लिम प्रदेश का शासक नियत किया गया था। सिन्ध सूद के हाथ आते ही वह लोग सपरिवार वहां से निकल गये।

अलौरा का प्रदेश लुट पिट कर इतना नष्ट हो चुका था कि अब सूदों ने अलौरा के स्थान पर पुनः अमरकोट को राजधानी बना कर वहाँ से राज्य का संचालन करना आरम्भ कर दिया।

## भूल का परिणाम

सूदों की सिन्ध में पराजय का कारण शूरवीरता में कमी न था अपितु इन वीर क्षत्रिय राजपूतों की सादगी, कुटनीति युक्त राजनीति तथा दुदर्शिता की कमी एवं अंधविश्वास ही उन की पराजय का मुख्य कारण थे।

सूदों की पराजय का हम निम्न ढंग से विवेचन कर सकते है।

सूद दाहिर राजाएवं सरदार प्रायः हाथियों पर चढ़ कर लड़ते थे और युद्ध में हाथी को मुख्य शक्ति समझा जाता था जब कि मुसलमान घोड़ों पर सवार हो कर युद्ध

लड़ते थे। घोड़ा हल्का एवं तीव्र गामी साधन होने से मुड़ना, पीछा करना एवं चारो और फैल कर शत्रु को घेर कर वार करने के लिये अत्यंत उपयुक्त हथियार था। हाथी प्रायः घायल हो कर पीछे दौड़ते और अपनी ही सेना में खलबली मचा देते थे।

सूदों की हार का मुख्य कारण था। दुर्दर्शिता पूर्ण राजनीतिक दाव–पेंच की कमी।

सूद प्रायः अन्य राजपूतों की तरह ही विजय प्राप्ति की भावना से युद्ध नहीं लड़ते अपितु वीरता दिखाने के लिये युद्ध लड़ते थे निहत्थे शत्रु पर वार न करना, परास्त शत्रु को पकड़ कर छोड़ देना एवं युद्ध में मरने का कोई भी अवसर हाथ से न जाने देना वीरता के प्रतीक तो थे परन्तु राजनीति केवल विजय और उसके लिए हर ढंग एवं साधन का प्रयोग आवश्यक समझती हैं।

सूद सदैव ही शरणागत की रक्षा के लिये मर मिटते थे और उनकी इसी कमजोरी का लाभ उठा कर शत्रु अपने गुप्तचरो को वहां रहने के लिए भेज देते थे। जो भेद नीति से वहां परस्पर वैर–विरोध तथा भ्रान्तियां उत्पन्न करके विद्रोह करवाते तथा सैनिक एवं स्थिती कमजोर करके आक्रमण के लिये साधन जुटाते थे।

हमारी दूसरी बडी कमजोरी है हमारी धार्मिक उदारता तथा सहनशीलता का सोमा से अधिक होना। इल्लाफी का उदाहरण आप के सामने है कि किस प्रकार सिन्ध विजय कामुख्य कारण वह बना तथा भारत की एक हजार वर्ष की गुलामी की नींव रख गया।

सिन्ध विजय के बाद मुसलमान व्यापारियों तथा सन्त फकीरों के वेश में भारत के विभिन्न भागों में पांव जमाने लगे थे।

कोकड़ा तथा कन्याकुमारी में हिसाम कबीले के अरबी मुसलमान पहुंचे। इन्होंने मालावार में रह कर यहाँ के निवासियों से विवाह सम्बंध स्थापित किये। राजाओं की उदारता का लाभ उठा कर मस्जिदें बनाई इन फकीरों और सन्तों ने वह कार्य कर दिखाया कि जो कासिम और गौरी की तलवार भी न कर सकी थी और शीघ्र ही इन

पीरों फकीरों की कबरों पर मस्तक निवाने वाले हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों से भी अधिक हो गई। मालावार का राजा चिरामन पैरूमल प्रथम मुस्लिम बनाया गया राजा था जिस ने अबदुलरहमान का नाम धारण करके अरब की यात्रा की तथा अरब में रह कर वहां से मुसलमानों को अपना प्रतिनिधि नियत करके भेजता रहा जिन्होंने सारे दक्षिण में मस्जिदों एवं मुसलमानों का जाल फैला दिया। कालीकट के राजा ने प्रजा को आज्ञा दी कि प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति मुसलमान बन जाये।

परिणाम यह हुआ मथुरा में पीर अलीयारशाह, तिरचनापली में मजदवली, पेन्नूकोड़ा में फखरूद्दीन, अजमेर में शेखमइउद्दीन चिस्ती और इसी प्रकार से शेख सादी बाबा फरीद, तावीजी बाबा, कादरी पीर, इस्माइयल बुखारी निजामुद्दी औलिया आदिसैकड़ों फकीर भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक छा गये। हर हिन्दु राजा ने इन्हें धर्म प्रचार से रोकने की बजाये इन्हें मान दिया जिस से प्रजा को इन्हें प्रभावित करने का अवसर मिल गया। आज के करोड़ों मुसलमान उसी का परिणाम है इसी प्रकार सेना में भी मुसलमान योजनाबद्ध रूप में मिल गये और शीघ्र ही दक्षिण के राजा वीर वल्लाल की सेना में बीस हजार–जयचन्द्र की सेना में पचास हजार मुसलमान सैनिक हो गये।

राजा जयपाल ने शेख हमीद नामक मुसलमान को पेशावर का प्रबंधक नियुक्त कर दिया। दूध की रखवाली बिल्ली करने लगी। उधर पेशावर पर मुसलमानों का अधिकार भी हो चुका था। और शेख हमीद जयपाल को संदेश भेज रहा था कि हमने शत्रु को भगा दिया है।

ऐसी उदारता हमारी इतिहास की सबसे बड़ी भूल तथा एक हजार वर्ष की पराधीनता का मुख्य कारण थी।

## दाहिर तथा राय महता का हठ

राय महता और दाहिर के बीच अल्लाफी जैसे कृतध्न को लेकर कहा सुनी हो गई और राय महता अपनी सेना तथा सम्बंधियों सहित सरहिन्द चला गया। इस प्रकार उस संकट के समय सूद सेना एक योग्य नेता की सेवाओं से वंचित हो गई। यहाँ दाहिर का हठ न केवल उसे ही अपितु सारे देश को ले डूबा।
दूसरा हठ किया राय मेहता ने कि यदि दाहिर से कही सुनीहो गई थी तो उसेराष्ट्रीय संकट को ध्यान में रख कर यह प्रतिज्ञा नही करनी चाहिए थी कि वह जीवन भर दाहिर का मुँह नहीं देखेगा तथा वापस नहीं लौटेगा।

राज महता को कन्नौज के राजा ने दो लाख सेना देने का विश्वास दिलाया जिस से कि वह मुहम्मद बिन कासिम को नष्ट कर सके परन्तु राय मेहता ने दाहिर से सम्बधिंत किसी भी योजना में भाग लेने से इंकार कर दिया।

यहाँ स्पष्ट कर दूँ कन्नौज उन दिनों भारत का सब से शक्तिशाली राज्य था। यदि मेहता सेना लेकर जाते कि कासिम की बीस हजार सेना को काट कर रख देते। परन्तु व्याक्तिगत मर्यादा का प्रश्न बना कर राष्ट्र की मर्यादा नष्ट करने दी गई। यही जयचन्द और पृथ्वी राज ने किया और यही सूदों के गृह युद्ध का कारण था।

## राय मेहता तथा बीस गोत

राय मेहता के वापस न जाने तथा दाहिर की मृत्यु की सूचना पा कर कन्नौज के राजा ने राय मेहता को सरहिन्द का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। कन्नौज का राज्य जालंधर तक फैला हुआ था। राय मेहता के साथ गये तथा दाहिर की मृत्यु के पश्चात वहाँपहुँचे सूदों

ने परिवारों के समूहों के आधार पर बीस गोंते नियत की और फिर अलाद्दीन खिलजी द्वारा अमरकोट नष्ट कर दिये जाने पर बतीस गोत के सूद और वहांआ गये अतः कुल बावन गोत हुए जो स्थान पर बिखरने और स्थानीय नामों से और बढ़ गये।

सरहिन्द में राय मेहता की संतान ने सूद के वशं के स्थान पर मेहता शब्द का प्रयोग आरम्भ कर दिया आज भी मेहता सूदों की अल्लों में प्रमुख नाम है। इस का विस्तृत विवरण अंत में दिया जायेगा।

## अत्याचार का भीषण परिणाम

कहते है सीमा से पार हर बात बुरी होती है। लौहाना जाटों, बौद्ध मठधारियों तथा छोटी जातियों ने अल्लाफी के उकसाने पर विद्रोह किया था। चच्च के भीषण अत्याचार भी इसका एक कारण थे एक चरित्र हीन स्त्री के कठपुतले चच्च के अधीन रहना भी उन्हें खलता था जो स्वयं केवल एक द्वारापाल था। इसके विपरीत जब विद्रोह को सूद सेना ने दबा दिया तो अत्याचार का वह भयानक रूप सामने आया कि लोग काँप उठे। यह अत्याचार दो प्रकार के थे।

एक तो सूद राजाओं ने जो विद्रोहियों पर किये और दूसरे वह जो कासिम ने सिन्ध विजय के बाद सूदों और ब्राह्मणों पर किये।

सूदों ने दसो विद्रोही राजाओं की हत्या का दी। बौद्धों को बरबस हिन्दु बनाया गया। मठ तोड़ दिये गये। करोड़ों रूपये का सोना एवं धन मठों से सूदों को प्राप्त हुआ। लौहाना जन को घोड़े पर बैठने तथा पगड़ी बांधने से निषेध कर दिया गया। राहमिले हर सूद को प्रणाम करें। दुल्हन पालकी की बजाये चारपाई पर लाई जाये आदि। यहीं बाते आगे चक कर कासिम की सफलता तथा सूदों के पतन का कारण बनी।

दूसरी ओर कासिम ने ब्राहमणों तथा सूदों पर भीषण अत्याचार किये। नारी जाति का अपमान किया। वसिष्ट ब्राहमण पुरोहितों से गंदगी साफ करवाई पानी भरने तथा हुक्के भरने की आज्ञा दी फिर उन्हें मुसलमान बनाना आरम्भं किया। सूद स्वंय संकट में थें अतः पुरोहितों की सहायता न कर सके। वसिष्ट ब्राहमण भाग कर पजांब की पहाड़ियों कांगड़ा, शिमला, डल्होजी, चम्बां एवं जम्मू प्रदेश में जा छिपे तथा संकट का समय निकालने लगे। सैकड़ों वर्षो के निरन्तर छिपे जीवन से यह लोग शिक्षा सामाजिक स्तर आर्थिक क्षेत्र आदि में पिछड़ गये औार आज यह लोग अछूत (शडयुल्कास्ट) कहलाते हैं हालांकि उनका जीवन आज के पवित्र तथा धनी लोगों से भी अधिक स्वच्छ है। खडडी आदि दुनाई का कार्य करते हुये भी वह पवित्र एवं स्वच्छ साफ–सुथरा जीवन व्यतीत करते हैं। ब्राहमण और क्षत्रिय के अतिरिक्त न किसी के हाथ का खाते है न ही नौकरी करते है। पूजा का सामान हर स्थान पर साथ लिये फिरते है।

इनके रीति–रिवाज सभी हिन्दु है। आर्य समाज एवं हिन्दु परिषद जैसी, संस्थाएं ऐसी जातियों को शुद्ध करके उन्हे आत्म विश्वास तथा हिन्दु जाति को नई शक्ति दे सकते हैं।

इतना ही नहीं राजपूताना के जंगलों के कुछ जातियाँ आज भी बेघर अर्धसभ्य तथा पिछडा हुआ जीवन व्यतीत कर रही हैं। इन में से कुछ तो उनकी संतानें है जिन्हों ने महाराणा प्रताप के साथ चित्तौड़ छोडते समय प्रतिज्ञा की थी कि चितौड़ दोबारा वापस लिये बिना न घर बसायेंगे और न ही वर्तन में भोजन करेंगें आदि।

दूसरे सोढा जाति के वह सूद भाई जो अमरकोट के नष्ट हो जाने पर जंगलों में जा छिपे थे और कई पीढियां स्वतत्रंता के लिये मुगलों से छापा मार युद्ध लड़ते रहे। उन के वंशज आज भी अपने अमरकोट तथा घात प्रदेश की प्रप्ति लग्न पके ज्वलंत प्रतीक है।

कुछ लोगों तथा सरकार की दृष्टि में यह नीची एवं अछूत जातियाँ है हम इन पर दया करते है परन्तु

इनका अधिकार उन्हें नहीं दे रहें। हिन्दु संस्थाओं को चाहिये कि निजी प्रचार तथा कुर्सी लोभ को त्याग कर इन महान परिवारों के जले हुये फुलों का पुनः वहीं ताजगी दे जो कभी इन राज परिवारो के मुख पर व्याप्त थी क्या सा. सूद सभा इन और ध्यान देगी।

## सूद–भाटिया भाई चारा

यूं तों तुर्क और रोम के आक्रमण भारत पर सिकन्दर के बाद निरन्तर होते रहे और सूद एवं भाटिया भारत के द्वार रक्षक बन कर इन आक्रमणों का मुंह तोड़ते रहे परन्तु हजरत मुहम्मदके पश्चात खलीफा का पद आरम्भ होते ही मुसलमानों का पूरा ध्यान भारत की ओर लग गया। खलीफा ने कई आक्रमण कराये परन्तु निराशा ही हाथ लगी।

विक्रमी 769 में एक भीषण आक्रमण में खोई हुई शक्ति तथा थकी हुई सेना के साथ राजा भाटी का बेटा मंगल राव भाटिया हार गया और दुर्ग के पीछे से उत्तर के जंगलों में चला गया।

भटकता हुआ मंगल राव सूदों के पास घात प्रदेश में आया इस संकट के अवसर पर सूदों ने नष्ट हो रहें भाटिया भाई का हाथ थामा और उसे रहने के लिये जागीर दे दी। इसी समय सूदों सें और सहायता प्राप्त करके मंगल राव ने पोगल, बराहा तथा लोद्रवा के राजपूतों को अपने अधीन किया तथा पुनः एक मजबूत भाटिया राज्य की स्थापना की।

मंगल राव भाटी का बेटा मंगल राय था वह भी स्यालकोट से अपने पिता के साथ बच कर सूदों के पास आ गया था। सूद राणा ने उसे भी कृष्ण का वंशज होने के कारण लोद्रवा का राजा बना दिया और धात के सूद राजा ने अपने हाथों से राज तिलक किया साथ ही उसने अपनी बेटी का विवाह मंगल राय से करके सूद तथा भाटियों में स्थायी एकता उत्पन्न कर दी। इससे मंगल

राय का प्रभाव और भी बढ़ गया तथा अनेक छोटे राजाओं ने उसे राजा मान लिया।

इसी मंगल राय का बेटा केहरि उसका, तनुराय और तनुका दो सांझ हुआ। इसी दोसांझ का चाचा मूल राज भी सूद राज कुमारी से विवाहित था।

1219 विक्रमी में दोसांझ के पोते याचक राय ने जो युद्ध लड़े उनमें भी सूदों की सेना भाटियों के साथ थी।

विधि का विधान देखे कि काबुल गजनी से भाटियों तथा सिन्ध से सूद जब निकले तो दोनों ही राजपूताना के मरूस्थल में पहुंचे।

सूद अमरकोट में तथा भाटिया जेसलमेर में आकर ऐसे टिके कि अन्त तक वहीं ठहरे रहे और जितने भी युद्ध बाहरी आक्रमणकारियों से लड़े इनमें सें कोई भी परस्पर सहायता के बिना नहीं लड़ा। दुख–सुख बांटे और दोनों ही रियासतें अन्त में मुसलमानी आक्रमणों विशेष कर अल्लाऊद्दीन खिलजी के हाथों नष्ट हुई।

## भारत का मुस्लिमकरण

सिन्ध विजय के बाद तीन सौ वर्ष तक मुसलमानों को भारत पर सशस्त्र आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ परन्तु यहाँ की संस्कृति पर इतनें नम्रता और सादगी से किया कि भारत में मुस्लमानों की संख्या अरब के मुस्लिमानों से भी अधिक हो गई। इसी बीच काबुल, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान तक के तमाम प्रदेश मुसलमान हो गये। बौद्धों ने तो सामुहिक रूप से मुसलमान धर्म ग्रहण कर लिया।

तब अफगानों ने तो खैबर की घाटी को मार्ग बनाकर भारत पर निरन्तर आक्रमण और लूट मार आरम्भ कर दी। सबुक्तगीन ने भारत पर आक्रमण किया तो जयपाल ने पेशावर का गर्वनर शेख हमीद को बना रखा

था। उसने पहले तो आक्रमण की सूचना ही न दी। फिर कुछ धन देकर मुसलमानों को वापस भेज देने को विवश किया और अन्त में युद्ध के समय भारतीय सेना के मुसलमान तोपचीयों से भारतीय सेना की रक्षा पंक्ति की उड़वा दी।

इधर मुसलमानों ने हिन्दुओं की साधू संतो ंके प्रति आस्था एवं विश्वास देख कर साधू फकीर रूप में भारत में भ्रमण करना आरम्भ कर दिया। जिसका वर्णन पीछे कर आये है।

सबुक्तगीन का उत्तराधिकारी बिन मुहम्मद गजनवी ने दिल्ली तक अपनी तलवार चलाई और हरियाणा में से दो लाख हिन्दु नर–नारियों को भेड़ बकरियों की भांति ले जा कर गजनी में दो तीन रूपये प्रति–व्यक्ति नीलाम किया तो दोष किस का है। जाने वालों का या उनका जिनके सामने दो लाख निरीह धक्के खाते लोग चुप–चाप भारत से चले जाने दिये गये।

# सूदों की सौ गद्दियाँ
# और
# सूदों का सौ गद्दी कहलाना

सिकंदर के वर्णन तथा श्री हर्ष सूद का वृतांत देते समय हमने लिखा था कि सौ दुर्गो का निर्माण सिन्धु नदी के साथ दूरतक करके सूदों ने सौ राजधानियों के स्वामी अथवा सौगद्धी उपनाम कमाया। सिंकदर के समकालीन युनानी इतिहासकारों ने भी सूदों को सौ गद्धी एवं अग्नि में से उत्पन्न तथा अग्नि की पूजा करने वाले (यज्ञ करने वाले) लिखा है। एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है चज्जनामा। इसमें सिन्ध का इतिहास तथा सूदों के राज्यों का वृतांत मिलता है और सौगद्धियों का विस्तार से वर्णन तथा राज्य की परिस्थितियों का पता चलता है।

यह चच्च नाम के तीन व्यक्ति इतिहास में हुए है जिन में से दो का सूद इतिहास से सीधा सम्बंध है। एक चच्च तो सिंकदर के समकालीन राय शाह सूद का मंत्री था तथा दूसरा चच्च ब्राह्ममण हुआ है।

वैसे यह पुस्तक सिंकदर के समय की रचना नहीं है। कारण कि एक तो ''नामा'' शब्द फारसी भाषा का घोतक है। दूसरे इसमें सातवीं शताब्दी तक का वर्णन मिलता है जब कि सिकंदर का समय उससे एक हजार वर्ष पहले का है।

यह ग्रन्थ प्राकृत संस्कृत में था तथा मेरे जयपुर जाने पर जहाँ गलेमर फोटो स्टूडियों के स्वामी कृष्ण सूद जी तथा उनकी पत्नि न अत्यंत प्रेम और सेवा भाव से सहयोग दिया। यह ग्रन्थ मुझे वहाँ देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उसके अनुसार सौ गद्दियों का विवरण निम्नलिखित है।

## सौ गद्दियों का विवरण

**राजा का नाम राजधानी राजा का नाम राजधानी**
**चित्रसेन भाम्यान महाराजा दाहिर अलौरा**
**वत्स राय सिस्तान**

(सिस्तान शब्द शिविस्थान असली है। वही शिवि प्रसिद्ध दानी जिन्हों ने शरण में आये कबूतर की रक्षा के लिये अपना मास काट कर दे दिया था यह प्रदेश उन्ही के राज्य में था)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कोला राजा | क्षीर सागर | धवल | धूमिला |
| चित्राहन | भाखाड़ | वज्र | कोटल |
| फाग सिंह | अलकनन्दा गढ़ | तक्क राय | फिलफोड़ गढ़ |
| तिलक | कोहलीय दुर्ग | नल | संचार गढ़ |
| तेज सिंह | हिसार | बड़ शील | विछोहा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्रहम सिंह | अलूना | दाहिर सिंह | कुलेसर |
| ढ़ूँढा राय | कर्माण | धवल | आमली |
| वीरम सिंह | कुसवा | मडल सिंह | उर्जा |
| धीरज | मोदी गढ़ | ढ़ाल सिंह | अरोड़ा |
| अधिराम | लोह कर्णा | माक्कर सिंह | शशिवाल |
| लिप्सार | सागरा गढ़ | मांझ | श्री माल |
| माली सिंह | वेरका | मान सिंह | सरस गढ़ |
| रूद्र | सिंहल | धन चक्र | भैरों गढ़ |
| लौकी राय | सूहा बन | सांवल सिंह | जगत गढ़ |
| राय पाल | देवडा दुर्ग | चन्द्म | शिवि गढ़ |
| राय प्रसाद | कोकान | देवायज्ञ | खम्भात |
| गोपाल | धारण गढ़ | दय धनों | आमना गढ़ |
| उधारथ | ब्रहमपुर | दूली राय | विराम गढ़ |
| गुज्जर राय | कबानिया | अभय राज | हांसू |
| विरंची राय | अरिधूल | अक्षतराय | अरोड़ा |
| ढ़ूंढण राय | जम्मीर | मुनन्दराय | विस्तार |
| गोबिन्द राय | मान गढ़ | लेह नर सिंह | कोमल गढ़ |
| राय नन्दन | वराहि | गजराय | श्री याणा |
| राय चन्द | नाश भूल | भूकाला | श्रीवंद''सरमदा'' |
| रख मल | बरकोटा | शिवा | श्री शिला |
| बोध राय | द्वारिका | ''सिन्धप्रदेश में'' | |
| राय खूरपाल | इस्काना | भूरि राय | नरसिंह गढ़ |
| राय नाहर | मुल्तान | जयाद्रपाल | सहारन |
| शाह धवल | व्यावह | बरूर राय | देवाराय |
| सागर | म्मतानी | सारण | नैहरा |
| धवल राय | अरिजन | देव राज | बामकस्थ |
| विनय राय | नहल गढ़ | कोमल''काका'' | स्वजन |
| राय शल्य | उद्यान | कोला राय | रथवाहन |
| सगर सिंह | आयुष्मान | राय श्री हर्ष | दिपालपुर |
| जगरथ | कर्लेष | माहिल सिंह | झंझोट |
| श्री श्याम | महाबन | ओंगल सिंह | मक्खर |
| आचार्य | सरसान (श्री स्थान) | पहाड़ सिंह | कुलसी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| राय सांकल | पाटन | गोधर | वर्तमा पाक पटन |
| नाभ राय | अनूप गढ़ | माक्कर सिंह | द्वीप समूह का राजा |
| आदरी राय | लख्खी बन | बली गण | तिल अम्ब |
| अमर सिंह | मलहार | गज | झनोट |
| भीम | श्री कान्त गढ़ | अरोरा राय | शामली |
| इन्द्र राय | अभिशाना | राय स्वरूप | स्म्रष्टा |
| भूरे राय | तवंग प्रदेश | हर मुख | सुन्दरगढ़ |
| श्री रैया | विश्व नन्दनी | बलायंचा | तलमेर |
| मान कान्त | थल प्रदेश | रूपराय | श्वेत बाडी |
| सन्चार | फरशव | बाड़ा राय | अग्रदेश |
| शिवराओं | लवकोट | भिंडार | गौरधा |
| बेखोरिया | चकौन(चकऊना) | तीरवा तिक्ष) | गरूड़ प्रदेश |

## सौ गद्दियों का विवरण

इस प्रकार सौ के प्रशासक सूद सूरवीरों से अनेकों के वंशजो से आगे नये—नये वंश अथवा गोत आरम्भ हुये। इस समस सूदो की अल्ले अनगिणत है परन्तु उनमे सें 104 मुख्यः चुने जा सके है। इन में 52 मैदानी तथा 52 पहाड़ी सूदों की अल्लें हैं। सूदों की गोतों तथा अल्लों को विभिन्न आधारों पर मुख्यतः तीन भागों में बांट सकते हैं।

1. प्राचीन राजाओं के नाम जीवित रखने के लिये उनके नाम पर वंश चलाये गये इनसुदास प्रथम (महाभारत में पूर्व) तथाप्रमार के बेटे सुदत की चौदह संतानों तथा उनके वंशजों का नाम भी शमिल है।
2. सौ गद्दी उपनाम धारण करते समय सिंकन्दर के समय के लगभग जो दुर्गो तथा गद्दियों के प्रशासक एवं मुखिया थे उन के नाम पर चले वंश। यथा राय तेजा के तेजी।

3. सूद जहां कहीं किसी भी कारण से बिखरे वहां अपने पूर्व स्थान अथवा उस स्थान केनाम को साथ लगाते रहे यथा।

| | |
|---|---|
| दिल्ली से | देहली सूद |
| कुठाला से | कुठालिया सूद ''पहाड़ी'' |
| इन्दौर से | इन्दौरिये ''पहाड़ी'' |

इस प्रकार यदि हम सूद पुत्रों तथा सौगद्धियों के मुखिया जन की तुलना वर्तमान गोतों अथवा अल्लों से करे तों यह भेद स्पष्ट हो जायेगा कि

**फक्काः–** पीछे छपी सौ सूद दुर्गों की सूची ध्यान से देखें तो आठवें स्थान पर राय फक्का वंश का मूर राज्य भरतपुर जिला के अर्न्तगत व्याना में था और फक्का वंश के वहां राज्य होने के प्रमाण स्वरूप शिलालेख भी प्राप्त हुये है और इस तथ्य की पुष्टी ''जाट इतिहास'' के विद्वान लेखक ने भी पृष्ठ 628 पर की है। इसी फक्का राय के वंशज को सिन्ध के चन्द्रवंशी सूद भाईयों से जागीर प्राप्त हुई जब इन्हें यह प्रदेश छोड़ना पड़ा।

इसी फक्का राय का वंश आगे चल कर अनेकों प्रदेशें में भाषा उच्चारण की भिन्नता के कारण फौगाट नाम से भी प्रसिद्ध हुआ।

पृथ्वी राज चौहान (बारवीं शताब्दी) के समय पृथ्वी राज के बेटे विल्हन का विवाह राजा धारा नन्द सूद की बेटी से हुआ और उसने वर्तमान रोहतक से 20 मील दूर कुछ प्रदेश दहेज रूप में अपनी बेटी को दिया। उस पर एक गांव फौगाट उस राजकुमारी के वंश नाम पर बसाया और वहीं रहने लगा जिस से फौगाट वंश प्रसिद्ध हो गया। फक्का व्याना ने निकल कर वर्तमान सरहिन्द के मुसलमानों द्वारा उजड़ जाने पर उसके पास के प्रदेशों लाहौर जालंधर कपूरथला के आस–पास के प्रदेशों में फैल गये। आजकल दिल्ली में इन की स्थिती काफी अच्छी है।

प्रसिद्ध संत यमुना दास इसी वंश की विभूति थे।

**नेहराः—** राय नाहर का नाम भी सौ गद्दियों की सूची में स्पष्ट है। इस वंश का प्रचलन तो चन्द्रवंशी प्रसिद्ध राजा उशिनार के बेटे नव हुआ था। महाभारत के सभा पर्व (**39—6**) में राजा नव द्वारा नवराष्ट्र जनपद ''स्टेट'' की स्थापना का वर्णनः—

''नव राष्ट्र चनिर्जित्य''

इस प्रकार से मिलता है।

इनका राज्यमुख्यतः राजस्थान के झुंझनू प्रदेश के आस—पास था। मथुरा में भी कभी इनका राज्य था। आज भी मथुरारोड़ पर 'नोह' नामक गांव है जो कभी नेहरा राज्य का एक प्रमुख नगर था। इस वंश ने सूद राज्य के उत्थान के दिनों में सिन्ध से आगे बढ़ कर वर्तमान मुस्लिम राज्य खोतान पर भी अपनी पताका लहरायी और इस वंश की स्मृति के रूप में वहां एक झील मौजूद है जिस का नाम बिगडते—बिगडते 'नूह' रह गया है।

प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार ग्राऊस ने सतरहवीं शताब्दी तक मथुरा मेमार्यस में आगरा तथा गुड़गांव तथा मथुरा के बीच का प्रदेश नाहरों का माना है।

राजस्थान के झंझनू प्रदेश के पास नेहरा पर्वत तथा मरौय पर्वत क्रमशः आज भी नेहरा और मौर्य दोनों चन्द्रवंशी अग्निकुलीन भाई—धरानों के वैभव की याद दिलाने की मौजूद है। यहाँ नाहर नामक एक ग्रम कभी एक भव्य नगर था। इसी नगर के मध्य बना एक सुन्दर दुर्ग अपने टूटे भग्नाशेष रूप में वहाँ आज भी मौजूद है इसी ग्राम से 16 मील पश्चिम की ओर नेहरा पर्वत के नीचे नाहर पुर नामक बस्ती कभी सुन्दर रमणीय स्थली थी। कुछ इतिहासकारों ने राजस्थान के नाहर पुर को मथुरा के नौह से पृथक करने का यत्न किया है जो उचित नहीं यह प्रदेश सिन्ध के सूद राज्य का भाग था।

16वीं शताब्दी के अतः में तथा सत्रवीं शताब्दी के आरम्भ में नेहरा वंश के मुसलमानों से निरंतर संघर्ष होते रहते थे। इन्हीं संघर्षो से उकता कर कम संख्यक होने के कारण नेहरा लोगों का एक दल पंजाब में आ निकला

तथा नेहरा वाल नामकएक नगर बसाया जो आज 'नारोवाल' पाकिस्तान के अर्न्तगत है। लुधियाना और दिल्ली में नाहरों की स्थिती अच्छी है।

## दोसांझ

यह आज सूदों की सर्व प्रमुख अल्ल अथवा गोत है। दोसांझ गोत के विषय में एक भ्रान्ति पाई जाती है कि दोसांझ 1100 विक्रमी में राज्य करने वाले भाटिया राजा दोसांझ की संतान है। यह भ्रान्ति ऊर्दू की एक पुस्तक तारीखे सूदा "लेखक ला. सलामत राय दोसांझ तरखेरी वाले" में इस प्रकार के वर्णन से उत्पन्न हुई और शायद तारीखें शुदा इसी कारण शुदों का इतिहास न बन कर भाटिया जाति का एक परिचय मात्र बन कर रह गई है उनके अनुसार दोसांझ भाटीयों से निकल कर सूदों में आ गये। पृष्ठ 15 पर तो उन्होंने जाने किस ज्ञान के बल पर यहाँ तक लिख दिया है कि दोसांझ भाटी के अतिरिक्त और कोई दोसांझ नाम का राजा हुआ ही नहीं में उनके परिश्रम का सम्मान करते हुये भी उनके इस अल्पज्ञान पूर्ण गलत वृतांत पर दुख अनुभव करता हूँ कि इतनी बड़ी भ्रान्ति उनकी तनिक नादानी से सारी जाति में फैली। अब मैं महाराजा दोसांझ सूद का वर्णन आप के सम्मुख करता हुं जिस की संतान सूदों के दोसांझ गोत वाले वास्तव में है।

हमने ग्रन्थ में किसी स्थान पर सूद की संतान का वर्णन किया है तथा वंशावलि भी दी है।

सूद के बेटे मंजन राय का बेटा विचित्रराय का बेटा ऋज राय उसका अनुरूद्ध तथा उसका बेटा कानन राय हुये। इन्हीं केसमय में सूदों में राज्य प्राप्त करने के लिये परस्पर गृह युद्ध हुआ।

यहाँ स्पष्ट कर दूं कि जो राजाओं के नाम हमने लिखे है वह उन बड़े लड़कों के नाम है जिनको युवराज मान कर राज्य मिला परन्तु उसके अनेको भाई और भी थे

जिनके नामों का वर्णन नहीं मिलता। शायद इसीलिये ला. सन्तराम लेखक तारीखे सूदों को भ्रान्ति हुई।

अब हम उन्हीं सूद के दूसरे बेटे के वंश पर दृष्टि डालें तो दोसांझ वंश की स्थिती पूर्णत्या स्पष्ट हो जायेगी। जो इस प्रकार से है।

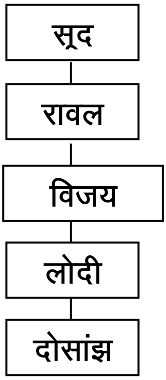


अब विद्वान पाठक सोचे कि कहाँ तो ईसा से भी दो सौ वर्ष पूर्व का राजा दोसांझ और कहाँ ईसा से एक हजार वर्ष बाद का राजा दोसांझ। भाटी–इसी दोसांझ की संतान है दोसांझ सूदां यह दोसांझ राय (द्विसांझ सही नाम है) या दो सारथी भी कहलाते थे।

यह इतने वीर एवं योग्य थे कि दो रथों पर एक साथ खड़ेहो कर दोनों घोड़ो की लगामें थामें भगाते हुए ले जाते थे। इसी वीर एवं विद्वान राजा ने पाटन की गददी पर बैठ का 28 अठाइस गोतों के सूद सम्बधिंयो को उच्च पद पर लगा कर सुन्दर राज्य प्रबंध किया। इससे पूर्व यह क्षत्रिय नाम से प्रसिद्ध थे तथा दोसांझ के समय से ही विशेष ''सूद'' नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्हीं अठाइस गोंतों मे आगे चल कर गृह युद्ध हुआ। बीस गोत एक और तथा आठ गोत्र एक ओर हुए तथा सूद राज्य को संकट में डाल दिया। सूद वंश के इन महाराजा दोसांझ का वंश इस प्रकार से आगे बढ़ा।

## दोसांझ सूद की वंशावलि

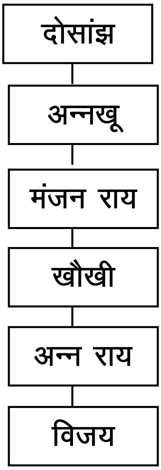


अब इसे सूद के बड़े लड़के की वंशावली से तुलनात्मक ढंग से मिलाते है।

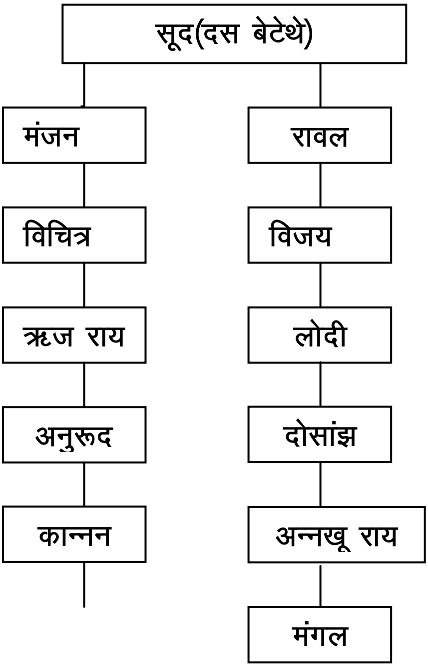

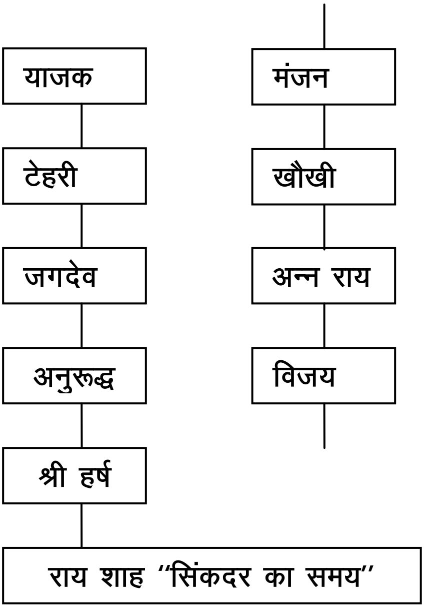


यह दोसांझ युधिष्ट्री संवत के 2900 वर्ष बीतने के बाद हुआ जब कि आबू के पर्वत का यज्ञ युधिष्ट्री संवत के 2700 वर्ष बीतने पर हुआ था इसका अर्थ यह हुआ कि आबू पर्वत से यज्ञ के दौ सौ वर्ष बाद दोसांझराजा बना।

परस्पर के गृह युद्ध के बाद दोसांझ के वंशज पाटन में ही रहे। मुस्लिमानी आक्रमणों के समय यह इधर–उधर बिखर कर व्यापार कार्यो में लग गये और सिंकन्दर लोदी, फिरोज शाह तथा तत्पश्चात औरंगजेब के भीषण आक्रमणों के बाद दोसांझ सूदों के दल पंजाब में आ गये और लुधियाना के पास फलौर के स्थान पर टिक गये। फिलौर में यह सरहिन्द होकर आये अतः तारीखे सूदा का यह विचार गल्त है कि भटनेर में दोसाझं सीधे लुधियाना आ गये। फलौर से ही दोसांझ सूद आगे फैले।

फिलौर के दुर्ग का वर्णन हमें चच्च माना मे भी मिलता है तथा इसका वर्णन पीछे दी गई सौ दुर्गो की सूची में दिया गया है जिस का राज्यपाल तक्क राय था। यह दुर्ग सूद सरदार फिलो राय के नाम पर बसाया गया

था। यह अति प्राचीन नगर है। फिल्लोर लुधियाना से चन्द मील दूर है।

परस्पर युद्ध के बाद सरहिन्द से फिलौर आने का वर्णन प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पॅडित सन्त राम शास्त्री, राज गुरू रियासत जुब्बल ने इस प्रकार किया हैं।

बाद मरन इस भूप के बड़ी इर्षा काम
गोत्रबीस इन आठ से परस्पर भया संग्राम
रण भूमि इस युद्ध में बारह वर्ष गये बीत
गये अष्ट कुल हारसों गोत्र बीस गये जीत
आति आतुर हुये युद्ध सो रहीं न शक्ति लरन
आकर हुये आबाद सब भूप सरहिन्द कि शरन
कई एक बीस गोत्र बसे आय शर हिन्द
आजकल सब उस जगह है आबाद आनन्द
दूसांज के अधीन हो भये अमीर वज़ीर
राजधानी के बीच में भये बड़े बलबीर
जिस समे सिकन्दर लोदी औरगंजेब भया दौर
धर्म रक्षा के कारने गये भाग फिलफौर
इधर–उधर सब जा बसे उंच नीचे अस्थान
करे बनज व्योपार सो सूद वंश गुजरान

हमने ऊपर कुछ सूद गोतों का संक्षिप्त से वर्णन किया है। विस्तार से लिखने पर प्रत्येक गोत की अलग पुस्तक बन सकती है और यहाँ इतना स्थान नहीं अतः केवल नाम आदि गिना कर यह अध्याय समाप्त करेंगें। अंग्रेजी संस्करण में और अधिक विस्तार से वर्णन करेगे। यदि प्रत्येक गोत के कुछ महानुभाव तनिक साथ दे तो प्रत्येक मुख्य गोत का अलग–अलग इतिहास छप सकता है।

## दोसांझ भाटियों का आगमन

यह तो हुआ दोसांझ सूदों का विवरण इस के साथ ही यह भी एक निर्बिाद सत्य है कि जेसलमेर के

भाटियों की एक शाखा दोसांझ एक भाटी राजा दोसांझ से प्रचलित हुई थी। कालान्तर में इनका राज्य भटनेर में हो गया जो राजस्थान एवं हरियाणा की सीमा के पास का प्रदेश है।

यहाँ स्मरण रहे कि यह दोसांझ भाटी राजा संवत 1100 में राज्य करता था जब कि धात का राजा सूदों का राजा हमीर सूद था। फिर दोसांझ सूद ईसा से पूर्व की बात है अतः इन दोनों को एक नहीं समझा जा सकता।

## दोसांझ भाटी का लुधियाना आ बसना

दोसांझ भाटि भटनरे के निरन्तर मुसलमानी आक्रमण नष्ट हो जाने पर वहाँ से निकल कर लुधियाना आ बसे जहां दोसांझ सूद पहले ही इस प्रदेश में बसे हुए थे। दोसांझ वंश की पीछे दी गई सूची देख कर ज्ञात होगा कि दोसांझ सूद के बेटे रावल की चार पीढ़ी बाद लोधी नामक राजा हुआ जिस से लोधी वंश चला। मुसलमानों के निरन्तर आक्रमणों एवं अत्याचारों से विवश हो इस वंश कें एक राजकुमार से इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया जिससे इस शाखा में मुख्यतः मुस्लिम धर्म स्वीकार का लिया।

उधर दोसांझ की संतान विजय राय भाटी हुई जिसकी संतान को सूदों से जागीर मिली और यह वंश इस तरह आगे चला।

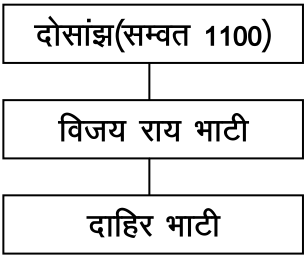


दाहिर को सूद राजा के जागीर मिली यह दाहिर सूद से अलग था।

मूलराज भाटी ने अपने भतीजे दाहिर भाटी को भठिंन्डा तथा भटनरे का प्रदेश जागीर में दे दिया

था।परन्तु मुसलमानों ने जब जेसलमेर को नष्ट किया तो यह जागीर भी उन्हीं के अधिकार में चली गई। इस प्रकार यह प्रदेश अनेकों बार मुसलमानों एवं भाटियों के हाथा आता रहा और हर राजा के मरने पर युद्ध तथा मुसलमानों का हस्ताक्षेप जारी रहा और अन्त में तैमूर लंग का भारत पर आक्रमण हुआ। 9 नवम्बर 1398 को तैमूर भटनेर पहुँचा और 13 नवम्बर को वहां से चल पड़ा। इन चार दिनों मे उस नृशंस मंगोल ने वह तबाही मचाई कि स्त्री पुरूष बच्चा वृद्ध कोई भी उसके कटार से तभी बच सका यदि वह भटनेर का प्रदेश छोड कर निकल पाया इसी समय दोसांझ भाटी वहां से निकल कर पास के प्रदेश सरहिन्द, लुधियाना, पाला के जिलों में जा बसे और मुख्यतः क्योंकिलुधियाना में दोसांझ सूद थे ही अतः उन में मिल कर स्वंय को छिपाना सहज जानकर वह अधिकतः वहीं आ रहे। शनै–शनै दोसांझ सूदों एवं दोसांझ भाटियों में रिश्ते–नाते भी होने लगे क्योंकि दोनों ही उच्च कोटी के क्षत्रिय राजा भाईयों यादव एवं पुरू के वंशज थे।

अब तो दोनों के रक्त परस्पर इतने मिल चुके है कि दोसांझ भाटिया से अलग हो चुके है एवं दोसांझ सूद के रूप में ही सूदों का प्रमुख भाग है।

स्मरण रहे हक तैमूर के आक्रमण के समया भटनेर का राजा राय दुल चन्द भाटीया था और वह तैमूर से युद्ध करता मारा गया था।

इसी प्रकार भोपाल दिल्ली, जालन्धरे, इन्दौढ़िये बिजवाड़िये क्रमशः भोपाल, दिल्ली, जांलधर, इन्दौर तथा बिजवाड़ा के निवासी होने के कारण स्थान सूचक नाम है और जहाँ भी गये अपने नगर नाम के रूप में प्रसिद्ध हुए। जैसे पंजाब भूतपूर्व मुख्य मंत्री प्रताप सिंह कैरो वंश के दिलों थे परन्तु अपने गांव कैरो के नाम पर कैरो ही प्रसिद्ध हो गये थे

इसी प्रकार महोदय गोत के सूद भारत के प्रसिद्ध प्राचीन नगर महोदया के निवासी थे जिसे अब उज्जैन कहते है। विक्रमादित्य तथा भोज के समय यह भारत का मुख्य नगर था।

# ''भड़ाक''

भराक सूद क्षत्रियो का वह दल था जो अति प्राचीन काल से ही वरिक के नाम से भारत में राज्य करता था। महाभारत में इस का वर्णन कर्ण पर्व के **37–33**में इसे पड़ौसी राजा मद्र देश हो कर देने वाले लिखा है। इसी स्वतंत्र जनपद वरिक ''मूल शब्द वाहिक है'' का रूप बिगड़ते–बिगड़ते वरैक भराक बन गया है।

इस वरिक (अब भर्राक)क्षत्रिय सूदों के राज्य की सीमा वर्तमान शेखू पुर, गुजरावाला (पाकिस्तान) के अर्न्तगत थी। सिन्ध सीमा के पास आराट नामक दुर्ग इनकी राजधानी थी।

महाभारत के कर्ण पर्व (27–54) में कारस्कर, महिषक, करम्भ कटकालिक, कक्रर और वरिक गढ़ जैसे प्रसिद्ध नगर इस राज्य के निगये गये हैं। यह महाभारत में पांडवों की और से लड़े थे। इनके राजा का नाम वरिक वर्द्धन था कदाचित उसी के नाम पर इस राज्य का नाम पड़ा था।

इसी वंश की एक शाखा ने बाद में सदूर दक्षिण में जाकर वरिकः प्रदेश को आबाद किया जो बिगड़ कर भहराइच या भरैच कहलाया।

महाभाष्य, अष्ठाध्यायी, काशिकावृति आदि ग्रन्थों में इस वंश का वृतान्त प्राप्त होता है जिन में से बारह प्रसिद्ध दुर्ग इस वंश के निम्नलिखित कहे गये हैं।

आरट, कास्तीर, दासरूप (मंदसौर) शाकल (सियालकोट) सौसुक, पाटनप्रस्थ, नन्दीपुर, कौकुन्डींबह, मौल, द्ववत, कक्रर तथा बरिकगढ़।

भरतपुर में व्याना से तीन मील दूर विजय मंदिर गढ़ दुर्ग के पास एक सत्मभ ''वरिक विष्णूर्वद्धन विजय सत्मभ'' के नाम से मिला है। उस पर वंश के राजाओं का लेख इस गोत पर काफी प्रकाश डालता है। यह सत्मभ पांचवी शताब्दी में राजा विष्णु वर्द्धन वरैक ने भारत को

हुण आदि विदेशी आक्रमणकारियों के त्रास से मुक्त करके एक यज्ञ के पश्चात स्थापित किया था उस पर लिखा है कि:—

''ब्याधराज के प्रपौव्र यशोराज के प्रपौत्र तथा यशोवर्द्धन के पुत्र बरक राजा विष्णु वर्द्धन ने पुडरीक यज्ञ करके यह सत्मभ विक्रमी संवत 828, फाल्गुन वदि 5 को स्थापित किया''

प्रसिद्ध इतिहासकार चिन्तामणि विनायक वैध की रचना ''हिन्दु मैडिवल इन्डिया'' (मोती लाल नेहरू) लाइब्रेरी में प्राप्त के अनुसार तो पश्चिमी मालवा का राज्य भी इसी सत्मभ वाले विष्णु वर्द्धन वरैक के अधीन था।

मदसोंर ''झालावाड'' से प्राप्त तीन शिलालेखों से इन राजाओं का काफी परिचय मिलता है। इन शिला लेखों में इन राजाओं को वर्मान्त अर्थात् नाम के अन्त में वर्मा तथा वर्मन शब्द लगा कर वर्णन किया गया है। इन राजाओं के समय समुन्दर गुप्त

मगध का राजा था। इन शिलालेखों के अनुसार इस वंश का परिचय यूँ मिलता है।

नरेन्द्रराज जय वर्मा (404 ई0) में मंदसौर का राजा था।

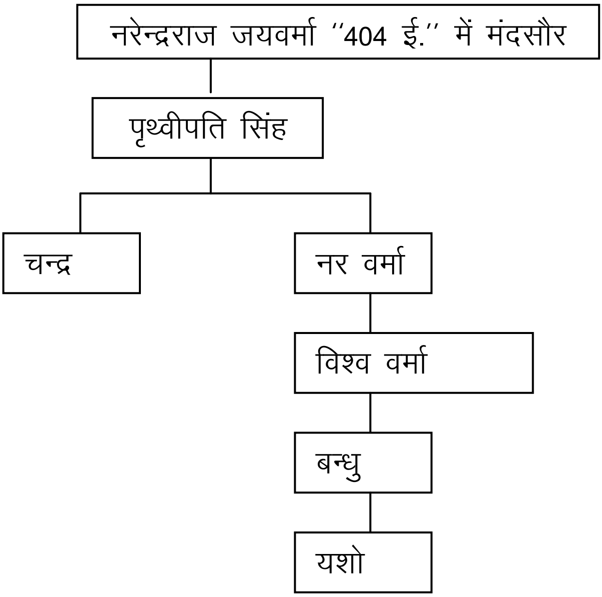

इसी यशोधर्मा जैसे प्रतापी राजा सूद वंश क्या सारे भारत में गिनती के ही मिलेगें। उस समय जब मिहिरगुल के नेतृत्व में जाबर हुंणों के समूह सारे भारत को रौंदने के लिए बार–बार चढ़ आते थे इसी यशोधर्मा ने उन्हें न केवल हराया अपितु पीछा करते हुये उन्हें काश्मीर तक भगाते चले गये  और इस प्रकार भारत को हुंणों के संकट से छुटकारा दिलाया।इसी महाराजा यशोधर्म के तीन शिलालेख प्राप्त हुए है।

ये भुक्ता गुप्तनाथैर्न सकल वसुधा कान्ति इष्ट प्रतापी नाज्ञा हुंणाधिपाना क्षितिपति मुकटाध्यासिनी यान्प्रविष्टां देशास्तान्धन्व शैलयद्रुम गहन सरित वीर बाहूपगूढ़ा वीर्यावस्कन्न राज्ञः स्वगृह परिसराज्ञया यो भुजक्ति

अर्थात् प्रबल बलशाली गुप्त वंश के राजाओं ने भी जिन देशों का (राज्य) नहीं भोगा और न प्रचण्ड हुण राजाओं की राजाज्ञा ने ही–वह प्रदेशों पर भी वराक वंशी महाराजा यशोधर्मा का राज्य है।

दूसरा शिलालेख कहता हैः–

आलाहित्योपकन्ठतलावन गहनोपत्यकादामहेन्द्रात
आग गाश्लिष्ट सानोस्तुहिन शिखरिणः पश्चिमादायोधे
सामन्तैयर्स्य बाहुं द्रविण हृतमदैर्पादयोरानमदिम
चूड़ारत्नाशु राजि व्यातिकर शवला भूमि भागकियन्ते

अर्थात् पूर्व में ब्रह्मपुत्रा से पश्चिमी समुद्र तक, उतर में हिमालय से दक्षिण महेन्द्र पर्वत तक के सामान्त मुकुटमणियों से सुशोभित अपने सिर को सम्राट यशोधर्मा के चरणों में नवाते हैं।
तीसरे शिलालेख में

नीचैस्तेनापि यस्य प्रणति भुज वला वर्ज्जनाकिलष्ट मूधना
चूडा पुण्पौपहारै मिहिरकुल नृप्शार्चितिं पाद युग्मम

अर्थात यशोधर्मा के चरण कमलों में हुणों के प्रतापी सरदारमिहिर गुल को भी झुकना पड़ा।

राजतरंगिनी आदि के अनुसार इसी महाराजा ने विक्रमादित्य की उपाधि भी धारण की। यह भी वर्णन मिलता है कि विक्रमी संवत का आरम्भ भी इसी विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाले यशोधर्मा ने मालवा संवत के आधार पर किया था।

प्रसिद्ध काश्मीरी राज कवि कल्हन ने तो महाकवि कालिदास का भी इसी राजा के अधीन होना लिखा है।

इसी यशोधर्मा के पुत्र विष्णु धर्मा ने पुडरीक यज्ञ किया था उसका पुत्र शीलादित्य (उपनामहर्ष) को मालवा का राजा बनते ही राज्य छोड़ कर कश्मीर में आश्रय लेना पड़ा। बाद में भयंकर आक्रमणों से इस राज्य का अन्त हो गया।

भौरोः– इसी वराक वंश के एक सरदार भूरि राय ने पंजाब से पूर्व की और बढ़ कर दुर्ग बना कर सामन्ती जागीर कायम की और उसकी संतान भौरी ''भूरि की संतान जैसे पोरी पुरू की संतान'' कहलाई।

404 में जयवर्मा नें मन्दसौर में शासन किया।

मारकन्डेय पुराण (अध्याय 5, 32–35) में भी वृक नामक महा जनपद का वर्णन मिलता है।

## बहल

बहल का सही रूप बल्हीक अथवा बृदद्वल है। योंगिनी तंत्र में 1014 इसका स्पष्ट वर्णन मिलता है। चन्द्र के महरौलीसत्मभ से सिद्ध होता है कि बल्हीक वंश के चन्द्र वंशीय लोग सिन्धु नदी के उस पार जनपद ''स्टेट'' बना कर रहते थे। अफगानिस्तान के पास वर्तमान बलख प्रदेश बल्हीक वंश का ही गढ़ था तथा यहाँ से वह भारत

पर होने वाले हर बाहय् आक्रमण को स्वंय पर झेलते थे। बलख वास्तव में वृद्वल का मुसलमानों द्वारा भाषा उच्चारण की भिन्नता के कारण बिगाडा गया रूप है। इस वंश का प्रतापी राजा चन्द्र वर्मन था। राजा समुन्द गुप्त के सत्मभ में वर्णित चन्द्र से इसे कई इतिहासकारों ने मिलाया है।

वास्तव में बहल वंश का निवास आबू की तलहटी में ही है और इसे चन्द्रावती कहते थे। आज भी चन्द्रावती स्टेट के खंडहर आबू पर्वत के जिला सिरौही के पास ही राजस्थान में मौजूद है और सूद से यह राज्य सोलंकियों के हाथों में चला गया था।

पाठकों को याद होगा कि हमने पीछे परमार के पैंतीस बेटे में छठे का बृद्वल अथवा बहल लिखा है और उसे चन्द्रावती का राज्य मिला ऐसा वृतांत हमने दिया था।

''राजपूताना के कुलों का इतिहास'' के पृष्ठ 67 पर स्पष्ट वर्णित है कि बल्हीक के वंशजों ने सिन्धु के पूर्वी तट पर अरोर राज्य की स्थापना की थी। महाराणा मेंवाड के दरबार के 16 सर्वोच्च अधिकारियों में एक विज्जोलिया का सूद वंशीय बहल गोत का सरदार था।

बल्हीक का वंशज राजा दाहिर था जिस का युद्ध प्रथममुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम से हुआ था।

1294 ई. में चन्द्रावती का राजकुमार प्रहलाद सूद था जिसने प्रहलाद पाटन नामक नगर बसाया। बाद में राजा पालदेव सूद ने इसका नाम पालनपुर रख दिया था।

1337 ई. में चन्द्रावती का राजा कानड़देव सूद (बहल) था।

# कठारिया या कठियाला

यह शब्द अपने मूल शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है परन्तु एक बात स्पष्ट है कि मूल शब्द कठ है और कदाचित कठोपनिषद् के निर्माता कठ ऋषि क्षत्रिय ही थे। इतिहास के पुरातन पन्ने खोले तो यह वंश हमें रावी नदी के समीप शासन करता मिलता है जब सिंकदर ने भारत पर आक्रमण किया तो उसे महान कष्ट देकर घायल कर देने वाले कठारिया ही थे। उस युद्ध में 17 हजार कठाहिरये या कठियाला जन मारे गये थे।

युनानी इतिहासकारों ने इनके विषय में अत्यंत सुन्दर वर्णन किया है यह लोग अति सुन्दर एवं साहसी थे। सती–प्रथा इनमें थी। विवाह स्वंयवर द्वारा तथा राजा चुनाव द्वारा चुने जाने की रीति का वर्णन भी मिलता है सिंकदर से बचे–खुचे कठ पास के पठानकोट, जम्मु, होशियारपुर, कांगड़ा आदि के पहाड़ी प्रदेशों में जाकर बस गये।

कठ का अर्थ काठ अर्थात लकड़ी भी है कदाचित रावी एवं व्यास द्वारा लकड़ियों का व्यापार इनका का मुख्य धन्धा था और यही व्यापार यह मुख्यतः आज भी अपनाये हुये है। इन्ही के निवास के कारण गांव का नाम कठाला पड़ा और यह जहां भी गये कठियाला कहलाये। ऐसा नहीं कि कुठाला गाँव के कारण यह नाम गोतका पड़ा जैसा कि कुछ लोग सोचते है।

कुठाला गाँव जैजों द्वाबा जिला होशियारपुर में है जहां से स्वनाम धन्य प्रातः स्मरणीय  रायबहादुर जोधामल ने पुनः उत्थान को प्राप्त करके इस शूरवीर तथा दानवीर वंश का नाम पुनः उज्जवल कर दिया। इनका जीवन चरित्र आगे यथा स्थान आयेगा।

# बेरी

बेरी तमाम क्षत्रियों की एक प्रमुख अल्ल है प्राचीन समय में जब कि मुख्य पेशा सैनिक एवं युद्ध ही था एक राज परिवार के युद्ध में नष्ट हो जाने पर एक गर्भवती स्त्री को कुल का नाम जीवित रखने के लिये सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया। उन दिनों स्त्रीयाँ सती होती थी। उसे मार्ग में ही पीड़ा हुई और अंग रक्षकों की सहायता से एक बेर के वृक्ष (बेरी) के नीचे उस की पालकी रखी गई जहां उसने एक बच्चे को जन्म दिया जो बेरी के नीचे जन्म लेने के कारण बेरी कहलाया और इस गोत का प्रवर्तक बना।

इस प्रकार ने ढोगर अथवा डोंगर गोत के सूद वह है जो जम्मु के ढोंगर प्रदेश से शेष स्थानों पर फैले। यहाँ स्पष्ट हो कि जम्मु का पहाड़ी प्रदेश डोगराल कहलाता है। और वहां के निवासी ढोंगर या ढोगराल कहलाते है।

सैठ सूद वह पहाड़ी सूद है जो महाजनी ज़मीदारी तथा अन्य ब्याज आढ़त के कार्यो में लग गये।

महोदय गोत के सूद महोदय नगरी के निवासी थे जो प्राचीन काल में भारत में अयोध्या और काशी के समान ही पवित्र वैभवशाली तथा धनधान्य से भरपूर नगरी थी। जिसे अब उज्जैन कहते है।

# कड़ौल

1348 ई. में जब महाराजा अर्जुन देव यादव ने करौली (कल्याणपुर) नाम की नगरी बसाई तो यादव और सूदों के मैत्री सम्बंधों के अतिरिक्त विवाह सम्बंध भी बहुत अधिक होते थे जैसे राजा मंगलराय भाटी का बेटा मंजम राय भाटी धात के सूद राणा की बेटी से विवाहित था। दोसांझ भाटी का परदादा तथा चाचा भी सूदों के यहाँ

विवाहित थे। यह तो राजाओं की दशा थी सरदार एवं साधारण जन में भी इन दो वंशो में विवाह सम्बंध भारी संख्या में थे कदाचित इसी कारण अमरकोट तथा धात प्रदेश से अनेकों सूद निकल कर करौली की नई रियासत में आ बसे थे।

फिर इस राज्य पर आक्रमणों अथवा अन्य कारणों में वह यहाँ भी गये करौली के निवासी होने के कारण करौली कहलाये।

# शल्य शल्य सल्हारिये

यह एक अति प्राचीन चन्द्रवंशीय कुल था। जब आबू पर्वत पर तमाम क्षत्रिय आये तो यह वंश भी उस समय प्रमार समूह के अर्न्तगत दिक्षित हुये थें। वास्तविक नाम शाल्व है जिसका वर्णन हमें महाभारत के विराट पर्व, द्रोणापर्व तथा वनपर्व में अनेकों स्थलों पर मिलता है। जैसेः–

1. दशार्णा नवरा ट्रच्चमल्ला शल्वा युगन्धराविराटपर्व **1–6**
2. हतः सौभपतिः शाल्वस्त्वया सौभं चपातिनम (वनपर्व 12–13)
3. शाल्वस्यनगर सौभम(वनपर्व 14–2)

महाभारत युद्ध में इन्हों ने कौरवों का साथ दिया था तथा युद्ध के पश्चात लम्बा समय इन्हें राज्य हीन रह कर बिताना पड़ा।

काशिका वृति ग्रन्थ के अनुसार (4–1–17) यह वंश छः भागों में बँट गया था। आठवीं शताब्दी तक इनका इतिहास प्रायः अन्धकार में है 843ई. के बम्बई प्रान्त के थाना ज़िला में कृष्णगिरी से प्राप्त हुये शिलालेखों के अनुसार थाना जिला पर इनका राज्य 800 से 1300ई. तक किये जाने का वर्णन मिलता है। इस वंश के 11

राजाओं ने गुजरात में काफी समय राज्य किया। शल्व ही भिन्न–भिन्न भाषा भेदों के कारण साल्य, सालार, संलारिये आदि नामों से प्रसिद्ध हुए।

सिद्धराज जय सिंह सोलकी ने इन्हें गुजरात तथा अन्हिलवाड़ा पाटन से निकाला और तत्पश्चात मुसलमानी आक्रमणों के कारण यह लोग कांगड़ा कुल्लु शिमला आदि दूर के पहाड़ी स्थानों पर रहने लगे सल्लन नाम भी इसी का बिगड़ा हुआ रूप है।

## चहालिये

चहालिये गुजरात के चोल वंश का ज़ीवित चिन्ह मात्र हैं। आगरा में चाहर घाटी इनका प्रसिद्ध प्रदेश था जहां राम चाहल ने मुगंल राज्य पर भारी चोटें की थी। दक्षिण में राज्य के मुसलमानी आक्रमण से समाप्त हो जाने पर यह लोग राजस्थान और वहां से लायल पुर।

## गाजरी

गाजरी सूदों का सीधा सम्बंध गुजरात से है। इस को तीन भाग है। एक वह जो सिन्ध से निकल कर गुजरात काठियावाड़ में आ गये। दूसरे वह जो मुगल सेना के साथ गुजरात के विद्रोही गवर्नर सर बलन्द खां को दबाने गये और जागीरें प्राप्त करके वहां बस गये। तीसरे वह जो गुर्जर अथवा गुजरात के मूल निवासी है। यहां में एक अत्यंत भान्ति पूर्ण बात को स्पष्ट कर दूं कि गुर्जर का अर्थ कोई जाति न हो कर गुजरात का रहने वाला है और प्रत्येक वंश के गुजरात के राजा को भले हीवह मुसलमान हो उसे हमारे प्राचीन साहित्य में गुर्जर भूपः कहा गया है। यथाः–

यदि न भवति रणमल्ल प्रति मल्ल पातशाह कटकानाम
विकीयन्ते घगडै बाजारे गुर्जर भूपः

इस दृष्टि से श्री प्रतिपाल भाटिया के ग्रन्थ प्रमारज के पृष्ठ 15 का उदाहरण देते है।

"The word Gurjara was applied to the Prethiars when they were the rulers of Gurjaratra Later. It was transferred to the chaulukya who ruled over Gujrat for a long period. The Ranamallachander applies it to all the Princelings of Gujrat of which ever clanthey they might have been. It will be of interest to note that the term Gujarbhupa has been used even for the muslim rulers of Gujrat.'

शायद इसी कारण अंग्रेज इतिहासकार बाटसन, कैम्पवैल आदि तथा भारतीय इतिहासकार भंडार कर तथा श्री रे. ने. प्रमारों को गुर्जरों की एक शाखा लिखा है कि वह प्रमुखतः गुजरात के राजा थे परन्तु वह भूल गये कि गुजरात का हर निवासी गुजराती एवं गुर्जर कहलाता है जैसे पंजाब का निवासी पंजाबी कहलाता है।

अब और स्पष्ट कर दूं कि गुजरात का प्रमुख भाग प्राचीन काल में सूदों के अधीन था। कभी सूरत तक का सारा प्रदेश एवं कच्छ की खाड़ी का तक का प्रदेश सूदों के अधीन था अन्तः सूद वहाँ प्राचीन काल से थे एवं सूदी कहलाते थे। शेष मुहमिद बिन कासिम और गौरी के आक्रमणों के बाद फिर सूद सिन्ध से सुरक्षित स्थानों की ओर इधर आ गये। सूदों के यहाँ बसने का एक कारण और भी है नादिर शाह के दिल्ली लूट कर चले जाने के बाद मुगल राज्य अत्यंत कमजोर हो गया था इसी का लाभ उठा कर गुजरात के गर्वनर सन–बुलन्द खां ने विद्रोह कर दिया। सर बुलन्द के फ्रांसिसी तोप खाने के भय से कोई भी उस विद्रोह को दबाने के लिये जाने का साहस नहीं कर पा रहा था। बड़े–बड़े सेनापति शांत थे। तभी अभय सिंह राठौर ने स्वंय को प्रस्तुत किया और सूद और कच्छवाहों की सेना भेजने की शर्त रखी।

भारी सूद सेना एवं कच्छवाहे आदि अन्य सैनिकों सहित अभय सिंह गुजरात पहुंचा तो सर बुलन्द खां भाग निकला। यहाँ सूदा वीरों को भारी मात्रा में जागीरें आदि दी गई और वह वहीं ठहर गये। अभी तक सूद गुजरात में काफी धनवान हैं।

मुगल राज्य में उन जागीरों पर कोई लगान नहीं देना पड़ता था। 1857 के विद्रोह में इन्होंने स्वतंत्रता प्रेमियों की धन आदि से सहायता की थी जिससे अंग्रेजी ने पुनः लगान लगा दिया।

यहाँ बता दूं कि धर्मदास सूद गुजरात का बहुत समय तक राज्य पाल रहा और उसके सम्बंधी परिवार भी वहीं जागीरदार बन कर बस गये।

इस के पश्चात वहां से सूद निकल कर औंरगजेब के समय में पाकिस्तान में गुजरात नगर का पुनः निर्माण कर वहां रहने लगे।

तब से गुजरात के सूद जहाँ–जहाँ भी फैले वह गुजरात के कारण गाजरी ही कहलाए तथा वह इन की गोत ही बन गई।

## सूद रियासत चन्द्रावती

सिंकदर के समकालीन युनानी इतिहासकार टोलमी ने जिसे (Sandrabati)कह कर वर्णित किया है। वह चन्द्रावती जयपुर से 25 मील दूर दक्षिण में और धौंसा से 35 मील दक्षिण पश्चिम में वर्तमान चाटसु का ही पुराना नाम है। इसका पहला नाम ताम्वावती था और इसे विक्रमादित्य महाराज के पिता गंर्धव सेन ने बसाया था। इस नगर के आस–पास तांबे की दीवार थी।

फिर इसका नाम चम्पावती रखा गया। कई विद्वान इसे वहीं चम्पावती बताते है जिसका वर्णन हमे पुराणों से प्राप्त होता है। यहाँ के राजा का नाम चन्द्र सेन

था और इसी ने चन्द्रावती (झालड़ पटटन के पास) पुनः बसाई और बाद में यह नगर गहलोत गोत वालों के अधिकार में चला गया। इसका वृतांत प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार तथा भुगर्भवेता कन्निधम ने अपने ग्रन्थ (Arcaeoligical Survey Reports dh Volume VI) के पृष्ठ 117–119 पर दिया है। इसी से सम्बंधित पुराणों मे वर्णित एक कथा भी कन्निधम महोदय ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ 139 पर दी है जो पदम पुराण में इस प्रकार से हैं।

चन्द्रावती (वर्तमान चाटसु) का प्रतापी राजा चन्द्रसेन (बहल गोत थी) एक बार शिकार के लिये गये। दिन भर भूखे प्यासे घूमते रहे परन्तु शिकार हाथ न आया। सांझ के समय दूरएक प्राणी की झलक नजर आई और राजा ने वाण निशाना पर फैंका। जब राजा वहाँ पहुँचे तो देख कर चकित रह गये कि वह एक बुढे ऋषि थे जो घायल हो कर तड़प रहे थे। इस प्रकार आगे राजा की क्षमा याचना ऋषि का शाप तथा राजा का प्रायश्चित आदि की कथा है जिसे विस्तार से वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं।

यहाँ स्पष्ट कर दूं कि चन्द्र सेन ईसा के जन्म से पहले हुये थे। एक चन्द्र सेना पांचवी तथा एवं ग्यारहवीं शताब्दी में हुए है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के वार्षिक प्रगति पत्रों में भौगौलिक विवरण जो प्राप्त होते है उनके अनुसार 1915–16 की रिर्पोट में श्री एम. बी. गर्दने पदमावती के विषय में एक लेख प्रकाशित किया था जो पदमावती को विष्णु पुराण में वर्णित तीन राजधानियों में से एक मानते है। जिसका वर्णन भवभूती ने मालतीमाधव में उस स्थान के रूप में किया है जहां माधव का पिता उसे भेजता है। पदमावती की पहचान सिन्धु और पार्वती के संगम पर स्थित आधुनिक कस्बा पव्वैया नाम के स्थान से की गई हैं।

इसी प्रकार से अन्य गोत भी है। यह अनादि काल स`चल बनते बिगड़ते चले आ रहे वंश एवं गोत प्रमार के झंडे तले एकत्र हुए।

इनमें बागड़े तो बागड़ देश के निवासी होने के कारण ऐसाकहलाये। भागड़ कदाचित भारत का सबसे खुश्क तथा गर्म प्रदेश है जो हरियाणा तथा राजस्थान के मरू भागों में फैला हुआ प्रदेश है। वहां सूद सब ओर से बच कर विवश होकर जा बसे थे और इतने गर्म खुश्क प्रदेश में युद्ध लड़ना मुसलमानों के बस की बात न थी। शायद कष्ट प्रद होने के कारण ही कबीर ने इसे जलन भरा संसार की उपमा दे कर कहा था।

बागड़ देश लूवन का घर है तहां जनि जाई दाहन का डर है।

भारत के इतिहास में बागड़ देश सुरिक्षत आश्रयदाता प्रदेश के रूप में प्रसिद्ध रहा है। इसी प्रकार गोयल शब्द वास्तव में गुहिल है पीछे हमने चितौड़ के प्रतापी गुहादित्य का वृतान्त दिया है वहीं गुहिल गोहिल अथवा गोयल गोत के प्रर्वतक थे।

## कलन्दर

यह गोत उन सूदों का समूह है जो भारत में अन्य की देखा–देखी मुसलमान पीर फकीरों के अनुयायी तथा मुरादें मांगने वाले बन गये। आज भी भारत में इन पीरों की कबरों पर फुलिया बताशे चढ़ाने वालों में हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों से कहीं अधिक हैं।

शेख सादी भारत आए और सोम नाथ में रहे शेख मुइनुददीन चिश्ती ने अजमेर में पृथ्वी राज चौहान की आँख तले अजमेर के महंतो राय देव तथा अजयपाल को मुसलमान बनाकर समस्तराजस्थान को एक नई राय दिखा दी। शाहमदार शेख फरीद, बाबा ताजीन तावीजी,

सावर अली, निजामुछद्दीन दर्जनों ही ऐसे मुसलमान पीर फकीर हुए जिन के अनुयायी मिलकर कबरों तथा दरगाहों पर आज भी मिल कर गाते हैः–

**दमादम मस्त कलंदर**
**दमादम दम के अन्दर**

सूदों में जो लोग इन पीरों के अनुयायी बने वह कलन्दर कहलाये।

## साम्भ

इसी प्रकार चप और चाम्ब के नाम से एक गोत सूदों की बताई जाती है। वास्तव में यह शब्द साम्भ है और साम्भ श्री चन्द्र वंश के आभूषण श्री कृष्ण के बेटे का भी नाम था।

साम्भ का सीधा सम्बंध जम्मु तथा उसके समीप के साम्भ (वर्तमान छम्ब) से है जो सिकदंर के आक्रमण के समय अलौरा के सूद राजा रायप्रसाद के अधीन केदार सूद के द्वारा शसित किया जाता था। वहीं से यह सूद शेष स्थानों पर फैले। साम्बा का कस्वा आज भी जम्मु प्रदेश का प्रमुख भाग है।

## मसन्द

मसन्द एक उपधि सूचक शब्द है और कई जातियों विशेष कर सिखों में भी यह दल पाया जाता है।

मसन्द वह सूदों का समुह था जिस के अधीन दिवानीविभाग होता था। इनका कार्य राज्य के कर ''टैक्स'' उगहा कर सरकारी खजाने में जमा कराना होता था जिसके बदले इन्हें कमीशन अथवा जागीर आदि मिला करती थी। इस प्रकार पल्काहिये वास्तव में बलखाइये सूदों की गोत है जो पहले तो फैलते हुये बलख बुखारा तक के प्रदेशों के शासक बन गये और फिर निरन्तर मुसलमानी आक्रमणों के कारण वापस आ कर विभिन्न

प्रदेशों में बस गये तथा बलख से आने के कारण बलखाहे या बलखाहिये कहलाये। इसी प्रकार कोटावे कोटा के तथा बधू बूँदी के शासक थे। इनमें धवल वर्मा प्रसिद्ध शासक था।

इसी तरह चकेडे अथवा चकेहिये तो चन्देरे अथवा चन्देड़िये है जो प्रसिद्ध चन्द्र वंशी रियासत चन्देर के निवासी होने के कारण उस नाम से प्रसिद्ध हुए।

इसी भांति वर्णावाल वह सूद है तो वर्ण व्यवस्था के पक्के अनुयायी थे। भारत के प्राचीन इतिहास में वर्ण व्यवस्था का विशेष महत्व था अनेक शिलालेख तथा ताम्र पत्र इस पर प्रकाश डालते है। वर्ण व्यवस्था स्थापना पर (सोनायत ताम्र पत्र) तथा वर्णाश्रम व्यवस्थान प्रवृत चक्रः (मघवत ताम्र पत्र) के अतिरिक्त चातुर्वरर्ण्य व्यवस्थान यस्मिन्देशे नविधते तं मलेच्छ देश जानी–यादार्यावर्त स्ततः परमः अर्थात जिस देश में वर्ण व्यवस्था नहीं है वह मलेच्छ देश हैं।

केवल वर्ण व्यवस्था ही नहीं, वर्णाश्रम (जीवन के चार भाग) में भी हमारे इन आये पुवर्जो का अटल विश्वास था। इसीलिये उनकी गोत का नाम वर्णावाल पड़ा।

इसके अतिरिक्त सूद की संतान तथा प्रमार के वंशजों और सूदों के प्रमुख राजाओं के नाम पर भी अनेकों गोते चल निकली यथा तेजाराय से तेजी गोत। धारण के सरदार गोपाल से गोपाल मुकन्द राय से मुकन्दी आदि।

वास्तव में इस सूची में व्याक्तियों के नाम न हो कर गोतों के नाम है। जिस नगर का दुर्ग में जिस गोत के लोग बसते थे उसी गोत के नाम से राजा या मुखिया को पुकारा जाता था।

अधिक कितनी गोतों का थोड़ा–थोड़ा वर्णन किया जाय।

# मुस्लिम युग में प्रवेश

जैसा मैंने पहले लिखा था कि पूर्ण विवरण के लिये प्रत्येक अल्ल अथवा गोत की एक–एक अलग–अलग पुस्तक बन सकती में अतः इतना स्थान न होने के कारण हमने केवल दो एक गोतों का संक्षिप्त विवरण दिया है। इसी प्रकार गुहा से गुहिल अथवा गोहिल गोत चली जो अब बिगड़ कर गोयल कहलाने लगी है।

अब तमाम गोतों का यहा विवरण न देकर हम मुहम्मद बिन कासिम की सिन्ध विजय के सूत्रों को फिर थाम कर सूद इतिहास की माला बनानी फिर आरम्भ करते है।

# भारत का मुस्लिमकरण

खलीफा ने जब छापा मार युद्ध से विवश हो कर सिन्ध प्रदेश छोड़ दिया तो उसके पश्चात तीन सौ वर्ष तक मुसलमानों को इधर दृष्टि उठा कर देखने का साहस न हुआ परन्तु तलवार के बल पर सारे अरब, एशिया तथा यूरोप को रौंध डालने वाले मजाहदों ने सिन्ध के जल को लाल होते देख कर अपनी नीति पहली बार परिवर्तित कर ली और देश की सीमाओं के स्थान पर देश की सभ्यता संस्कृति धर्म तथा इतिहास पर आक्रमण आरम्भ कर दिये।

हिसाम कबीले के अत्यंत नम्र मुसलमान व्यापारी बन कर मालाबार के तट पर उतरे और यहाँ रहते हुए विवाह सम्बंध कायम किये। भारतीय राजाओं ने उन्हें यहाँ निवास और भूमि खरीदने तथा मस्जिदें बनाने की आज्ञा दे दी जो हिन्दुओं को कश्मीर में आज भी नहीं है।

कुरीतियों तथा जाति–पांति के सताये निर्धन एवं निम्न जातियों के हिन्दुओं को जाति तोड़क भाईचारा का मुस्लिम ढंग प्रभावित करने लगा विश्वास तथा संस्कृत के

मंत्रों के स्थान पर सामुहिक पूजा ''नमाज़'' वातावरण मिला।

कहने का अर्थ यह कि सेना का कोई आक्रमण 300 वर्ष तक न होने पर भी अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, कान्धर, चमन बुखरा और अराकान तथा खैवर तक का प्रदेश मुस्लिम धर्म की भेंट चढ़ गया।

दक्षिण में चेरामण पैरूमल वह पहला सरदार था जिसने मुस्लिमान बनकर अब्दुल रहमान नाम रख कर अरब की यात्रा की।

वहाँ से वह अपने प्रतिनिधि राज्य प्रबंध के लिये भेजता रहा और स्वंय वहीं रहा और उन प्रतिनिधि मुसलमानों ने मालाबार में मस्जिदों तथा मुसलमानों का जाल बिछा दिया। परिणामतः इब्नेबतूता की यात्रा के समय चौल बस्ती में दस हजार, बगंलौर में 4201 मुसलमान थे। गोवा पर मुस्लिम राज्य हो गया। तामिल की सेना में बीस हजार, मुसलमान थे। यह था पीरों फकीरों का कमाल यहीं दशा उन दाहिर के सम्बंधी परिवारों की थी जिन्होंनें कासिम के भय अथवा लालच से मुसलमान होना स्वीकार कर लिया था और सूद राज्य को सिन्धु में पुनः स्थापित होते देख कर अफगानिस्तान एवं बलोचिस्तान में मिली जागीरों के सरदार बन कर नये मुस्लिम राजा बन बैठे जो अपनी दुर्बलता तथा छोटा सा प्रदेश के स्वामी होने के कारण सदा ही मुस्लिम आक्रमणकारियों के हाथों में खिलौना बने रहे।

इस समय 1100 सम्वत में दोसांझ भाटी राजा था जबकि धात प्रदेश में सूद राजा हमीर के अधीन सूद सेना नये प्रदेश विजय करती जा रहीं थी। सूद सेना ने लोद्रवा में दोसांझ भाटी पर भी चढ़ाई की परन्तु दोसांझ युद्ध की स्थिती में न था। उसने भाटियों तथा सूदों की मित्रता एवं नाते–दारी की याद लिया कर शक्ति आपसी युद्धों में नष्ट न करने की प्रार्थना की। इस परहमीर सूद धात प्रदेश में

वापस चला गया। ऐसे ही वर्णन मिलता है कि दोसांझ ने अपनी बेटी का विवाह हमीर सूद ने करके इस नाते को और भी पक्का कर दिया।

## राणा हमीर सूद

राणा हमीर कदाचित सूद वंश का मुसलमानी युग के समय सबसे प्रतापी राजा था। धात प्रदेश से सूद सेना लेकर उसने चारों ओर के प्रदेशों पर अधिकार कर लिया और कासिम के आक्रमणों से शियिल तथा बिखरा हुआ सूद राज्य पुनः एक नई शक्ति बन कर उभर आया।

सरस्वती नदी इस समय तक वटनेर से होकर बहती थी जो अब सूख चुकी है। बीर विनोद में भी धाघरा नदी का वृतांत मिलता है।

राजा हमीर सूद की बेटी भठनेर के राजकुमार से विवाहिता थी राजा हमीर ने भटनेर ने दस मील पूर्व की और एक भव्य राजमहल अपनी बेटी को बनवा कर दिया था। यह धाघर नदी के तट पर था तथा नदी में प्रयाप्त जल रहता था।

इसी महल के खडंहरों से भटनेर के दुर्ग को मुरम्मत किया गया। हमीर सूद ने राज्य की सीमा उदयपुर तथा चित्तौड़ तक बढ़ा ली।

राणा हमीर ने सोढ़ा की उपधि धारण की एवं राजस्थान के सूद सोढ़ा कहलाने लगे।

यहाँ स्पष्ट कर दूं कि सोढ़ा का मूल शब्द सूद ही है और अन्तर केवल स्थानीय भाषा का है। अतः किसी भान्ति में पड़ने की अवश्यकता नहीं। भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास पर दृष्टि डाले तो एक हज़ार से 1375 तक का समय वीर–गाथाकाल कहलाता है अर्थात इस समय की भाषा में कटार की धार–प्रवाह है।

राजस्थानी भाषा में द और त प्रायः ढ़ में बदल जाते है यथा ज़ैत्व से जेठवा (जाटइतिहास पृष्ठ 152) इसी प्रकार सूद से सोढ़ा। हिन्दी साहित्य तथा भाषा के विद्यार्थी इसे सुगमता से समझ सकते है अतः राजस्थान के सोढ़ा अथवा सोढे सूद एवं हमारे भाई है जिन्हे आज भी अपने अमरकोट की ऐसे ही लग्न है जैसे चित्तौड़ के सिसोदियों को चितौड़ की लग्न है जो मुसलमानों से प्रदेश वापस लिये बिना आज भी पतल पर भोजन करते है। सूद अर्थ हमने पीछे दिया है ''सुगमता से उन्नति करने वाला'' अथवा (सुगमता) से उत्थान (उच्च कुल) को प्राप्त कर सकने वाला और राजस्थानी भाषा में सोड़ा का अर्थ भी है अच्छे कुल वाला (कुलीब) इस राणा हमीर सूद ने सूदलपुर का नगर बसाया तथा अपने भव्य महल बनवाये।

1219 विक्रमी में सूदों तथा भाटियों ने मिल कर चिनार राजपूतों से युद्ध करके उन्हें पराजित किया। परन्तु लूट की बांट पर परस्पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ और सूद राणा अरि सिंह ने याचक देव का सामना किया परन्तु सेना कम होने के कारण सन्धि कर ली।

## सती का शाप

मुहमद गौरी तथा उसके बाद अलाऊद्दीन से हुये युद्धों के वर्णन से पूर्व यहाँ हम उस शाप का वर्णन करते है जो एक सूद देवी ने सूद वंश को दिया जिसके प्रभाव से अमरकोट नष्ट हो गया एवं सूद स्थान–स्थान पर बिखर गये।

1271 विक्रमी अथवा 1213ई. की बात है जब राणा लाखन देव भाटी राजा बना।

वह अत्यंत सीधा साधा, सरल तथा अविकसित मस्तिष्क का स्वामी था। उसका विवाह अनभिज्ञता में ही

अमरकोट की सूद राजकुमारी से हो गया। राजकुमारी अत्यंत बुद्धिमान, चतुर तथा योग्य सूद ललना थी।

राज्य दरबार षड़ंयंत्रों का गढ़ बन चुका था। राणा की मुर्खता से वह दरबारी नित्य नये प्रकार के आज्ञापत्र निकाल कर राज्य एवं राजा की खिल्ली तक उड़ाने से नहीं चूकते थे।

उदाहरण के लिये रात्रि को समीप के जंगलों में गीदड़ों के बोलने की आवाज आया करती थी। राणा ने कारण पूछा तो भाटी सरदारों ने कहा महाराज, इन्हें सर्दी लगती है अतः इनके लिये गर्म बिस्तर तथा मकान बनवाये जाने चाहिये। राणा ने तुरन्त वहीं भारी रकम उस कार्य के लिये दे दी।

इस प्रकार सामन्त लूट मचा रहे थे। सूद महारानी ने तब राज्य का संचालन करने के लिये अमरकोट से अपने कुछ सूद सम्बंधी अधिकारी बुला लिये। इनमें रानी के भाई भी थे।

सामन्तों ने अपनी न चलती देख कर सीधे से राणा लाखा को बहकाया कि यह सूद हमारे राज्य पर अधिकार करने तथा आपको मारने के लिये बुलाये गये है अतः इन का वध कर दिया जाना चाहिये।

इस प्रकार धोखे से हत्या की आज्ञा प्राप्त करके भाटियों ने रात का सोये हुये सूद अधिकारियों का वध कर डाला और लाशें दुर्ग से बाहर फैंक दी।

प्रातः यह सूचना अमरकोट पहुँची तो वहाँ कुहराम मच गया। क्रोध से विफरी हुई सूद सेना ने तुरन्त भाटीयों की ईंट से ईंट बजा दी। भारी रक्तपात हुआ और राणा लाखन देव की हत्या कर दी गई। सूद रानी ने यह समाचार सुना तो विर्दीर्ण ह्रदय वह अपने पति के साथ सती होने को प्रस्तुत हुई।

एक और अयोग्य पति का दुख तथा राज्य का भार एवं दूसरी ओर दरबार के षडंयत्र रानी का जीवन एक तपस्वनी का जीवन बना हुआ था।

सती होने से पहले उस सुन्दर युवा रानी ने गंगा जल से स्नान करके श्रंगार किया तथा श्वेत वस्त्र धारण करके चिता के सम्मुख आई। चारों ओर एकत्र हुए विजयी सूदों को सम्बोधित करके उस तेज वान सूद ललना ने कहां ''आप ने मेरे बेसमझ सीधेतथा निर्दोष पति को व्यर्थ में मारा। दोष तो भाटी दरबारियों का था। भगवान करे तुम सूद लोग दर–दर भटकों अमरकोट नष्ट हो कर तुमसे छिन जाये और तुम कहीं के न रहो''

तमाम सूद इस शाप को सुनकर स्तब्ध रह गये और क्षमा मांगने लगे परन्तु कुछ भी मुख से न बोल क रवह सूद सती पति की चिता पर जा बैठी और भस्म हो गई।

हर वर्ष पूर्ण अमावस को इस की सती ''समाधि'' पर मेला लगता है और सूद इस सती से क्षमा याचना करते हैं।

## गौरी से संघर्ष

मुहम्मद गौरी के आक्रमण ग्यारहवीं शताब्दी में भारत के प्रमुख मंदिरों पर हुए।

इस आक्रमण के लिये मैदान तो मुसलमान सन्तों पीरों तथा फकीरों ने पहले ही तैयार कर दिया था। इन्हीं के वेश में अनेकों जासूस राजपूत राजाओं पर अपने दैवी ज्ञान का प्रभाव डाल कर अनेकों प्रमुख स्थानों पर बैठे तमाम सूचनाये गजनी में पहुंचा रहे थे। इससे पहले महमूद का पिता सबुक्तगीन पेशावर के क्षेत्र में जयपाल को हरा कर अपना प्रतिनिधि यहाँ नियुक्त कर गया था।

1058 ई. में भांटिडा के राजा आनन्द पाल ने मुहमद गजनी का मार्ग रोका परन्तु मन्दिरों के अपार धन को लूटने के लालच मेंआयें लाखों अफगान बलोचों तथा घर में बैठे अनकों भेदियों के कारण महमूद विजयी हुआ और नगरकोट (कांगड़ा) जा पहुंचा। वहां पहुंच कर मन्दिरों के अपार धन को लुटा तथा मंदिर ध्वस्त कर दिये।

यहाँ दो हजार मन चॉदी का एक भवन तुड़वा कर साथ ले गया। अगले वर्ष उसने जनवरी 1075ई. में कन्नौज पर आक्रमण किया और भारी धन–राशि लूट कर चला गया।

महमूद गजनी ने मथुरा के मंदिरो का लूट तथा एक सौ मूर्तियां सोने की तथा असंख्य द्रव्य प्राप्त किया। इनमें से एक मूर्ति को गलाया गया तो 1027 तोले सोना मिला। इन मूर्तियों की आंखों में लगे हीरों तथा पन्नों का भारी मुल्य आंका गया। इस प्रकार आग और तलवार से उत्पात मचाता महमूद गजनी सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर की ओर बढ़ा। 1082 सम्वंत के पौष मास में महमूद अनहिलवांडा पहुँचा। भीम चोल अथवा चालुक्य उस का सामना करने की अपेक्षा किले में ही बैठा रहा। देवल वाड़ा प्रभास पटन से महमूद निकला परन्तु धर्म प्रिय जनता को विश्वास था कि महमूद स्वयं मौत के मुंह में बढ़ रहा है।

जेसलमेर, भाखाड़ और गुजरात से होता हुआ महमूद गजनी पौष मास के अन्तिम गुरूवार को सोमनाथ के द्वार पर जा पहुँचा।

प्रमार वंश का महान राजा भोज उन दिनों दक्षिण में कोकंण के स्थान पर युद्ध में व्यस्त था। सोम नाथ का आक्रमणका समाचार सुन का भोज ने अपने दक्षिण के युद्ध को तुरंत समाप्त करके सोम नाथ की ओर कूच किया।

उधर सोम नाथ के दुर्ग के द्वारा बंद करके तमाम हिन्दु जनता किलों की दीवारों से महमूद की सेना की खिल्ली उडातें हुये फलों के छिलके आदि फैंक रहे थे।

जन–जन का विश्वास था कि भगवान सोम नाथ तुरंत ही मुहमुद की सेना को नष्ट कर देगें। उनकी आँखें तब खुली जब प्रातः होते ही मुसलमान लुटेरे किले को सीढ़ियां लगा कर द्वारा पर चढ़ गये।

भीषण संग्राम आरम्भ हुआ। लोग रो–रो कर सोम नाथ भगवान के चरणों में लिपटने तथा विजय की प्रार्थना करने लगे और युद्ध की बजाय प्रार्थनाओं में ही सारी रात व्यतीत कर दी इतने में महमूद के काफी सैनिक द्वार से किले कूद गये और मार–काट करके द्वार खोलने का यत्न करने लगे।

मुसलमानों के किले में पहुँचते ही जनता को भगवान की दैवी शक्ति से महमूद के नाश का आश्वाश्न दिलाने वाले पुजारी भाग निकले और उन के भागते ही जनता में भगदड़ मच गई। पचास हज़ार हिन्दु उन नर–पिशाच लुटेरों की तलवारों का निशान बने। हिन्दु कैदी भारतीयों ने महमूद गौरी को अपार धन राशि देने का विश्वास दिलाया यदि वह मुर्तियों को न तोड़े।

महमूद नें तुरन्त फटकार का कह दिया कि मुसलमान केलिये मूर्ति बेचना गुनाह है।

भारी शिव लिंग जब किसी भांति टूट न सका तो उसका आधा भाग कठिनता से जलाया गया। उससे महमूद की इतने हीरे जवाहरात प्राप्त हुए कि महमूद जैसा लालची लुटेरा भी तृप्त हो गया। 20 मन का सोने का द्वार ही था।

अब तक महमूद को भोज के उसकी और बढ़ने का समाचार मिल चुका था। अपनी लूट का माल खो जाने का भय उसके सम्मुख आ उपस्थित हुआ।

सूद रक्त का मालवा के धारा नगरीका प्राकर्मी सम्राट था प्रभार भोज।

उन्होंने आबू के राजा परमदेव सूद को महमूद का वापसी का मार्ग रोकने तथा सोम नाथ का पूरा बदला चुकाने की आज्ञा भेज दी थी।

अब महमूद को संकट सामने नजर आने लगा। लाचार हो कर उसने एक हिन्दु पथदर्शक को साथ लिया और उस मार्ग से चुपचाप रातों रात चल पड़ा जो नरक का मार्ग था। यह मार्ग कच्छ की दलदली खाड़ी में से जाता था। हजारों सैनिक मार्ग में दलदल में फंस कर तथा प्यास से तड़प का मर गये। महमूद के प्राण भी कठिनता से बचाये जा सके।

इस तथ्य का वर्णन मुसलमान इतिहासकारों ने अपने–अपने ढंग से करते हुए भी मूल बात को माना है। नाजिम तथा विशेष कारगर्दीजी ने तो इसका स्पष्ट वर्णन निम्न शब्दों में किया है।

"From that place Mahmud turned back and the reason was that Param Dev, who was the greatest king of the Hindus, was in the way and Amir Mohmud feared lest this great Victory might be spoiled, he did not come back the direct way but took guide and marching by the way of Mansura and the bank of Sihun went to wards. Multan his soldiers suffered heavily on the way both form dryaness of the desert and from the jats of sindh. Many animals and a large number of men of the muslim army perished on the way and most of the beasts of burden died, till at last they reached Multan"

## आगे मौत खड़ी

महमूदभोज के हाथों बच कर सिन्ध के भयानक मार्ग की कठिनाई सहसा इस लिये आया था कि उसकी लूट का माल उस से छिन न जाये

परन्तु सिन्ध में सूद शूरबीर जंगलों एवं सुरिक्षत स्थानों पर उसकी प्रतीक्षा में धात लगाये बैठे थे। उनके साथ लाहोना, गख्खर आदि हिन्दु जाट थे।

इस का बदला लेने के लिये महमूद ने गजनी पहुंच कर नई सेना के साथ सिन्ध पर भयानक आक्रमण किया। 150 नौकायों में सिन्ध के जल में मुस्लिम सेना थी। जलयुद्ध में अग्नि बाण फैंक कर सूदों एवं जाटों ने अधिकतर नौकायें डुबों दि और सैनिक मार डाले मिश्र बन्धु के अनुसार (पृष्ठ 489 भारत का इतिहास) इस युद्ध में महमूद इतना झुंझुला उठा था कि उसने भविष्य में भारत पर कोई भी आक्रमण करने से तौबा कर ली।

## महमूद गौरी

1087 संवत में जब महमूद गजनी की मृत्यु हुई तो गौर नामक नई शक्ति ने मुस्लिम नेतृत्व सम्भाला और अलाऊद्दीन गौरी ने गजनी नगर को नष्ट कर के गौरी वंश की नींव रखी। इसी अलाऊद्दीन गौरी का भतीजा था महमूद गौरी। उन दिनों दिल्ली पर पृथ्वी राज चौहान, कन्नौज में जयचन्द्र राठौर, मालवे में प्रमार देव, गुजरात में सोलंकी तथा सिन्ध के उतरी भाग में सूदों का अधिकार था।

छोटे राज्य और उन में भी परस्पर शत्रुता, यह भारत का सब से बड़ा दुर्भाग्य था। पोरस और अम्भी की शत्रुता ने तो समस्त भारत की लुटिया ही डूबो दी।

जय चन्द ने अपनी बेटी संयोगिता का स्वंयवर रचकर पृथ्वी राज को न्यौता देने के स्थान पर उस कीमूर्ति बना कर द्वार पाल के स्थान पर रखा दी।तमाम चौहानों ने इसे जाति का अपमान समझा परिणाम स्वरूप 108 सेनापतियों की अधीनता में लाखों सैनिकों को स्थान 2 पर नियुक्त कर के पृथ्वी राज ने गुप्त मार्ग से नगर में

प्रवेश कर के संयोगिता को उठा कर घोड़े पर बिठा लिया और जय चन्द को चुनौती दे कर निकल आया।

जय चन्द ने दाँत पीसते हुये अपनी समस्त 18 लाख सेना को युद्ध में झोक दिया। 94 दिन अलग–अलग सेनापति अपनी सेनासहित राठौरों से लड़ते रहे जब तक कि पृथ्वी राज दिल्ली पहुँच न गये। इस एक घटना का मुल्य इस देश को नौ लाख सैनिक तथा 64 सेनापतियों की मृत्यु के रूप में चुकाना पड़ा। ऐसे समय में जब कि एक ओर लाखों सैनिक तथा युद्ध सामग्री नष्ट हो गये तो दूसरी ओर नई नवेली दुल्हन सयोंगिता के प्रेम विलास में डूबा पृथ्वी राज चौहान था, उसी समय अवसर की ताक में बैठे मुहमद गौरी ने एक लाख बीस हजार सैनिकों के साथ भारत पर आक्रमण के लिये प्रस्थान किया। यहाँ और स्पष्ट है कि मुहम्मद गजनी जब कन्नौज की और बढा था तो वहां के राजा राज्य पाल ने भारत उचित समझा था तथा गंगा पार से सन्देश भेज कर अधीनता स्वीकार कर ली थी।

इस प्रकार महमूद को आगे बढ़ने का मार्ग मिल गया था। कन्नौज जैसी पौराणिक एवं एतिहासिक राजधानी केराजा को इस प्रकार मुसलमानों के आगे घुटने टेकते देख कर महाराज प्रमार का रक्त खौल उठा। उसने विद्याघर चन्देल के साथ मिल कर इस कायरता का दंड़ देने के लिये कन्नौज पर आक्रमण किया कालचूरों राजा गंगा देव भी उन्ही के साथ समिलित था।

इस से पूर्व भी महमूद के आक्रमण हुए परन्तु मारवाड़ एवं चितौड़ जो महाराणा भोज प्रमार की रक्षा में थे, महमूद के पग उधर नहीं उठ सके। चिड़वा शिलालेख के अनुसार भोज ने चितौड़ के दुर्ग में त्रिभुवनरायण के भव्य मन्दिर कर निर्माण किया। इसकी पुष्टी 1021 के उज्जैन के शिलालेख से भी होती है।

भोजसर नामक झील तथा धारेश्वर के भव्य मन्दिर के निर्माण के वृतांत भी कुम्भालगढ़ के शिलालेख से प्राप्त होते हैं। यहां स्पष्ट कर दूं कि नागरी प्रचारणि पत्रिका भाग तीन पृष्ठ 1–18 के अनुसार त्रिभुवनरायण भोज देव प्रमार की ही एक उपाधी थी। उससे पूर्व भोज (गोहिल सूद) यहीं चितौड़ में राज्य कर चुके थे। यह झील वास्तव में उन्हीं को बनवाई हुई थी परन्तु जीर्ण शीर्ण होकर सूख चुकी थी। भोज प्रमार ने इस का पुर्नोद्धार किया था। इसी आश्य का वर्णन शिलालेख के सम्पादक श्री अक्षय कीर्ति व्यास ने भी किया है।

कुम्हालगढ़ प्रशस्ती के अनुसार भोज प्रमार ने योग राज को गद्दी से उतार कर बैराट सूद का गद्दी पर बिठाया। इस बात की पुष्टि अक्षय कीर्ति जी ने भी की हैं।

इस विषय में शिलालेख के निम्न श्लोक प्रमाण रूप में प्रस्तुत है।

ततक्ष योगराजोभून्मेदपाटे महीपति।। अपि राज्ये
स्थिते तस्मिन् तच्छाखा नोच्छय गता।। **43** ।।

पश्चाद ल्लटसंताने वैरटों भून्नरेश्वरः ।। ततः
श्री हंसपालश्च वैरिसिंहों नृपाग्रणी।। **44** ।।

अनहिलवाड़ा और अजमेर मार्ग से जब महमूद निकला था तो सूदों ने चितौड़ के राणा के नेतृत्व में अपनी सेना भेजकर महमूद का वीरता से सामना किया था और महमूद का इस मार्ग से वापस न लौटना इसका स्पष्ट प्रमाण है परन्तु छोटी–छोटी रियासतों में बांट परस्पर विरोध का शिकार भारत कहीं भी अखंड भारत बन कर विदेशी आक्रमणकारियों का मुंह न मोड़ सका।

महमूद गौरी ने भारत पर पहले कई आक्रमण किये थे परन्तु विफलता ही हाथ लगी थी। इसी पृथ्वी राज के हाथों तरावड़ी के स्थान पर हार कर महमूद ने

क्षमा मांग कर तथा भारत पर पुनः आक्रमण करने का साहस न करने का वचन देकर जान छुड़ाई थी परन्तु अब स्थिति ही बदल चुकी थी। युद्ध में हार इकलौती बेटी का अपहरण तथा आधी से अधिक सेना के नष्ट हो जाने से जयचन्द बौखला उठा था। उसने सोलकियों के साथ मिल कर मुहमद गौरी को पृथ्वी राज पर आक्रमण करने का न्यौता दिया। एक लाख बीस हजार पठान, अफगान, कवायलों लूटेरे भारत की असंख्य धन दौलत तथा हूर (स्त्रियों) का लालच पा कर तथा मूर्तियाँ तोड़कर गाजी बनने के धार्मिक नारे के नाम पर एकत्र करके गौरी भारत की ओर बढ़ा। इधर पृथ्वी राज नई नवेली पत्नि के प्रेम में असावधान पड़े थे। बडे–बडे सेनापति तथा लाखों सैनिक प्रेम की देवी अपहरण करने के युद्धों की भेंट चढ़ चुके थे। यहाँ बता दूं कि पृथ्वी राज के 64 सेनापतियों में जो इन युद्धों में शहीद हुये उन में छः सेनापति सूद थे। हजारों सूद सैनिक भी युद्ध में काम आये थे तो भी पृथ्वी राज ने अपने बहनोई चितौड़ के राणा समर सिंह की सेना के बलपर महमूद गौरी से तरावड़ी के मैदान में जोरदार टक्कर ली। राजपूतों की तलवारों के वीरों से बोखला कर मुसलमान सैनिक पेशावर की ओर भागने को हुए तो पीछे हर–हर महादेव की नारा लगाती जय चन्द की सेना ने आकर पुनः मुसलमानों के पांव टिका दिये। रात के युद्ध में हर–हर महादेव के नारे लगाती राठौर और सोलकी राजपूत सेना के धोखे में आकर पृथ्वी राज उन्हीं के हाथों पकड़ कर गौरी के सम्मुख ले जाये गये और गौरी ने तुरन्त पृथ्वीराज का अन्त करवा दिया।

## पृथ्वी राज रासो तथा जयचन्द विजय

पृथ्वीराज से मुहमद गौरी के दो युद्ध 1134 वि. तथा 1136 विक्रमी में हुये। सूदों ने दोनों स्थानों पर भारी वीरता का प्रमाण दिया। पृथ्वी राज के बहनोई चितौड़ के राणा की सेना में सूद काफी संख्या में थे ताकि पृथ्वीराज की निजी सेना के कुछ मुख्य सेनापतियों में एक सूद तथा

एक भाटी थे। इनयुद्धों के वृतांत विशेष रूप से पृथ्वी राज के राज कवि तथा मित्र चन्द्र वरदाई के ग्रन्थ पृथ्वी राज रासों में मिलते हैं यह महाकाव्य हिन्दी साहित्य की अमुल्य सम्पंति है तथा मिडल से एम0 ए0 तक यह किसी न किसी रूप में हिन्दी विद्यार्थीयों के अध्ययन का आवश्यक भाग हैं।

दूसरी और अंग्रेज़ विद्वान डा. वूलर का कश्मीर यात्रा के मध्य एक खंड़ित ग्रन्थ पृथ्वी राज विजय मिला जो जयानक नामक कवि की रचना है।

इन दोनों की घटनाओं में काफी अन्तर पाया गया इस लिये डा. वूलर ने रायल एशियाटिक सोसाईटी के प्रधान को तार भेज कर पृथ्वी राज रासों का प्रकाशन रोक देने की प्रर्थाना की थी। यहाँ स्पष्ट कर दूं कि काव्य लिखते समय कवि अपनी कल्पना तथा अपने आश्रयदाता का तनिक अतिश्याक्ति पूर्ण वर्णन कर सकता है और साथ ही रासों में कई लोगों ने स्वंय छनद बना कर इसे और भी नकली बना डाला है। परन्तु सूदों की सहायता एवं वीरता का प्रश्न स्पष्ट एवं असंदिग्ध है।

## जय चन्द की पराजय

अब करनी के बाद भारनी का समय आया। महमूद गौरी ने 1851 संवत में अर्थात् अगले वर्ष कन्नौज में जय चन्द को जा दबोचा

कार्य का ढ़ंग वहीं था। 50 हजार मुसलमान जयचन्द की सेना में भरती हो चुके थे। महमूद गौरी के सेनापति कुतबुददीन एबक का इस्लामी मुजाहिदों के आने का सन्देश मिलते ही वह युद्ध भूमि में खड़े तमाम सैनिक मुहमद गौरी की सेना से शस्त्रों समेत आ मिले और थोडी सी राठौर सेना को मार काट आरम्भ कर दी। जय चन्द ने गंगा पार निकल जाने का यत्न किया परन्तु डूब गया। कन्नौज के दो सौ मन्दिरों को लूट कर चार हजार

ऊँटोपर सोना चान्दी हीरे मोती लाध कर महमूद वापस चला गया।

# तीन मुसलमान वंश

1262ई. में मुहमद गौरी की मृत्यु के साथ ही तीन मुसलमान पठान अफगान वंश भारत की भाग्य श्री के स्वामी बनने के चक्र में लाखों जानों को ले दे कर समाप्त हो गये वह रक्त रंजित कहानी के रचियता तीन वंश यह थे।

1. गुलाम वंश
2. तुगलक वंश
3. खिलजी वंश

सूदों के लिये कष्ट प्रद बात यह थी कि सूद हर और से भारत की पंक्ति में सब से आगे थे। अफगानिस्तान से भारत को आने वाली सेना को सिन्ध में देवल अलौरा ब्राहमनाबाद में रोकते थे तो सूद और लूट मार कर सिन्धु मार्ग से लौटती सेना को लूट मार कर दंड देते थे तो सूद क्योंकि मार्ग यही था

दूसरी और धात अमरकोट, जसलमेर, चितौड़ किसी भी राजपूत राज्य पर विदेशी आक्रमण होने पर सूद सेना की सहयता के लिये अवश्य बुलाया जाता था और सूद शब्द जैसे शूर कर ही प्रयार्थ बन चुका था। सूदों को युद्ध के लिये हर पल तैयार रहना पड़ रहा था।

गुलामवंश के प्रथम एक कतुबद्दीन एबक ने अजमेर, गुजरात, कांलीजंर, गवालियर, त्णथम्मोर आदि दुर्गे पर आक्रमण किये और उन स्थानीय सेनाओं की सहायता में सूदों ने अपना रक्त बहाया। वरिव्तयार खिलजी ने उदन्ती पुर के 109 भवनों के तथा विश्वविद्यालयों तथा पुस्तक भंडारों को जला दिया बख्तियार ने काशी के मदिरों को लूट तो सूदों ने मार्ग में

उसे जा घेरा। इन्हीं दिनों कुतुबद्दीन ने पृथ्वी राज द्वारा निर्मित मीनार पर कुरआन की आयते खुदवा कर उसका नाम कुतुबदीन की लाट रखा दिया सौ वर्ष का गुलाम वंश का राज्य 1290 ई. में समाप्त हुआ ही जलालुद्दीन खिलजी ने अपना वंश चलाया।

फिरोजशाह खिलजी वह मुसलमान सुल्तान था। जिसने जेसलमेर पर सीधा आक्रमण किया। सूद सेना तुरन्त अपने इन विभिन्न एवं न सम्बंधी राज्य की रक्षा के लिये पहुंच गई। परन्तु सेना कम थी और आने सम्बंधी साधन कम थे। घिर जाने पर राजपूतों ने साका (जौहार) किया। 2400 भाटी एवं सूद स्त्रियां चिता में जलमरी और सूद तथा भाटी सैनिक म्याने फैंक कर तुलसी पत्र मुंह में रख कर चिताओं की राखमस्तक से लगा कर दुर्ग से बाहर निकले तथा हजारों मुस्लमानों को काट कर ढेर हो गये।

मुहम्मद तुगलक ने अत्याचारों की सीमा को और भी विस्तृत किया। फिरोजशाह तुगलक ने मंदिरों की लूट में एक नया अध्याय जोड़ा कि जम्मु कांगड़ा तथा अन्य आस–पास के प्रदेश जहाँ सूद भारी संख्या में रहते थे, पर भीषण आक्रमण किये और इतनी भारी और हिंसक सेना का सामना मुठ्ठी भर लोग जो आगे ही सैकड़ो वर्षो से युद्ध करते पिस चुके थे न कर सके।

नगरकोट (कांगड़ा) में तो इस नीचे ने गौ मॉस के थैले गले में डालकर बाजारों में जलूस निकाला। जम्मु के राजा ने फिरोज खिलजी को आदर से भेंट दी तो उसका धन्यवाद फिरोज ने इस प्रकार अदा कि गौ माँस उसके मुँह में ठोंस दिया।

## राय महता के वंशज

मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के समय दाहिर के सहज सरल स्वभाव तथा अदूरदर्शिता पूर्ण राजनीति के

कारण उस के चाचा राय मेहता सूद से उसकी अनबन हो गई थी और वह क्रोध से राज्य छोड़ कर सरहिन्द (श्री हिन्द) में आ गया था। यह नगर सूदों के इतिहास में विशेष महत्त्व रखता है और अमरकोट के बाद यही नगर सूदों का शताब्दीयों से राजधानी तथा तीर्थ रहा है।

सरहिन्द दाहिर के समय में कन्नौज के राज्य का एक भाग था और कन्नौज राज्य की सीमा जालन्धर नगर तक थी। कन्नौजका राजा राज्य प्रबंध देखने के लिये आया हुआ था। कन्नौज के राजा चन्द्र वंशी गहरवार राजा ने राय मेहता को दो लाख सेना दे कर वापस जाने तथा विदेशी अरबों को देश से निकालने की आज्ञा दी थी परन्तु जब राय मेहता ने उस धरती पर वापस पग धरने से इन्कार कर दिया तो उधर राजा राय महता को सरहिन्द का राज्य दे कर स्वयं वापस कन्नौज चला गया।

## बीस गोतों का निर्माण

राय मेहता के साथ बीस मुख्य सूद परिवार अपने तमाम सगे सम्बन्धियों सहित सरहिन्द चले गये उन्होंने शेष सूदों से सम्बंध टूट जाने के कारण बीस गोतों को अस्तित्व में ला कर परस्पर विवाह करने आरम्भ कर दिये थे। यह आज से ग्यारह सौ वर्ष पूर्व की बात है। यही से सूद आस–पास अर्थात् पटयाला, अम्बाला, लुधियाना, जांलधर, मोगा, लाहौर, अमृतसर आदि में फैले।

मुसलमानों के कन्नौज पर आक्रमण के पश्चात कन्नौज का राज्य बिखर गया तो राय मेहता की संतान सरहिन्द तथा आस–पास के प्रदेशों की एक छत्र शासक बन बैठी।

## बावन गोतों का होना

मुहम्मद तैमूर तथा विशेष कर अलाऊद्दीन खिलजी के अमरकोट पर आक्रमण का परिणाम यह हुआ

कि तमाम युवा वर्गसैनिक एवं नागरिक युद्ध की भेंट चढ़ गये। अमरकोट की ईंट–ईंट उखड़ गयी और भारत का वह महान राज्य खंड़हर बन कर रह गया। इस समय पुरोहितों नें अपना नाम धन्य करने का बीड़ा उठाया। पुरोहित अर्थात् परोहित अथवा अपने यजमान के हित के लिये र्सवस्व त्याग कर बूढ़े, रोगी, स्त्रियों एवं बच्चों के साथ लिया तथा उजड़ा जलता अमरकोट छोड़ कर उन्हें अपने सूद भाईयों के पास सरहिन्द में राय मेहता के वंशजों के पास ले आये।

सूद वंश का शेष बचा हुआ राजकुमार बाल सिंह ही इस परिवार का चिन्ह मात्र था।

सरहिन्द के सूदों ने अपने इन संकट ग्रस्त सूद भाईयों को आंखों पर बिठाया और सूद महानुभावों को उनकी योग्यता तथा पिछली स्थिती के आधार पर जागीरें तथा पद दिये गये।

राजकुमार बालसिंह को घुड़सवार सेना का सेनापति नियुक्त किया गया।

अमरकोट से सरहिन्द आये भाट को दस हजार मुद्रयें बीस घोड़े तथा चार हाथी दान दिये और आदर से पालकी में विदा किया।

गिरिजानन्द नामक इस भाट ने उस समय एक कविता इसी आश्य का लिखा जो निम्नलिखित हैं

चन्द वंश के चन्द्रमा सूद वंश के शूर।
द्रव्य दाता धन धान्य से सदा रहो भरपूर।

मरू देश को छोड़ निवा कियों सरहिन्द नरेश पे जाये जो हारे।
नाम लियों धन–धाम लियों अरू ग्रम आराम लियो गृह बिसारे।
सूदों के हम भाट महाभाट बाटपड़े सुन नाम तिहारों।

रघु के रघुबलि जीते रहों प्रमार सूद सभी यजमान हमारों।

दस स्हस्त्र मुद्रा दिये बीस अश्व गज चार।
विदाकियो दे पालकी विप्र कहयो आवन बहु वार।

यह अमरकोट से उजड़ कर आये सूद 32 गोतों पर आधारित थे। अतः इन बतीस गीतों के और आ जाने से। संख्या सूदों की कुल बावन हो गई और राय मेहता के अपने राजवंश ने स्वयं को मेहता घोषित करके महता गोत को जन्म दिया जिनके वंशज आज मेहता सूद हैं।

कालान्तर में मुसलमानों के पाँव भारत में जम जाने पर सरहिन्द मुगल राज्य का एक भाग बन गया तथा सूदों के हाथों से सदैव के लिये जाता रहा जिससे कि सूद स्थान–स्थान पर बिखरने पर विवश हो गये।

## सरहिन्द तथा सूदों की स्थिति

सरहिन्द दिल्ली से लगभग 150 मील दूर हसंला नदी के तट पर है। पेशावर से दिल्ली आते हुए पुरातन राजमार्ग पर सतलुज नदी को पार करे तो प्रथम महत्वपूर्ण स्थान यहीं है और युद्ध की दृष्टि से इसका महत्वपूर्ण स्थान भी अधिक हो जाता है और यही कारण है कि सदैव ही विदेशी आक्रमणकारियों को दिल्ली पहुँचने के लिये सरहिन्द में लाशों पर से हो कर निकलना पड़ा है। यह नगर एक दुर्ग के रूप में था और नदी के तट पर पांच मील तक खूब फैला हुआ था। चारों ओर दृढ़ प्राचीर और एक ओर गहरी खाई है। चार मुख्य द्वार एवं विशाल गुम्मद भी थे जो सैनिकों की गतिविधियों की अग्रिम चौकी का काम देते थे।

दुर्ग नदी के तट पर है तथा वहां से राजमहल एवं राज उद्यान तक सुरंग भी थी। खुले बज़ारों उन दिनों यहाँ मकानों का मुल्य दिल्ली से काफी अधिक होता था।

सरहिन्द व्यापार का मुख्य केन्द्र का अतः लोग धनवान थे। नगर के उतर में की ओर चौंक तथा बतीस मुहल्लों में सूद साथ–साथ बड़े–बड़े मकानों मे आबाद थे। नगर का सब से मुख्य भाग सूद थे तथा अमरकोट से सूदों के आ जाने के बाद इन की आबादी और फैलनी आरम्भ हो गई थी।

सरहिन्द का नाम सूदपुरा था। सूदों के चेहरे गम्भीर, रीबोले तेज युकृ है तथा स्त्रीयाँ भी गहने तथा वेश–भूषा से राजपूत लगती है। सूद हठ तथा धुन के पक्के हैं। धन–धान्य में इन की कोई तुलना नहीं कर सकता। यह बनिया आदी की भांति व्यापार नहीं करते आपितु जागीरों अथवा कर उगाहने का ठेका अथवा सैनिक पर ही लेते है।

विवाह की रीतियां क्षत्रियों की सी परन्तु सादी है। किसी को पता ही नहीं चलता कि सूद लड़के अथवा लड़की का विवाह कब हो गया।

स्त्रीयाँ प्रायः आभूषण पहनती तथा घोड़े एवं पालको की सवारी करती है।

बेटे को पिता की सम्पति से कोई भाग नहीं मिलता अपितु एक विशेष आय का व्यस्क हो जाने पर तमाम सूद परिवार उसे दस रूपये तथा दस ईंट दे देते है जिस से उसके पास धन तथा मकान का स्वयं ही प्रबन्ध हो जाता है।

## धरणी वराह का सूद वंश

भारतीय इतिहास में सातवीं शताब्दी के पश्चात 12वीं. शताब्दी तक के समय को पूर्व मध्यकाल कहते है। महाराजा हर्ष वर्धन की मृत्यु (647) के पश्चात उत्तरी भारत का राज्य सिंहसन् असहाय हो उठा। कोई शाक्तिशाली राजा ऐसा न था जो सारे देश को अखंड एवं

एक सूत्र में पिरोया रख सकता। दिग्विजय तथा अश्वामेघ यज्ञ करने की भावना समाप्त हो गई थी।

कन्नौज के सिंहासन का महत्व पाटलीपुत्र के ही सामान हो चुका था अतः कन्नौज के स्वामी होने का गौरव प्राप्त करने के लिये गुर्जर, प्रतिहार तथा राष्ट्र कूट एवं पाल आदि वंशों में निरन्तर युद्ध छिड़ते रहे जिन्हें त्रिकोण युद्ध कहते हैं।

इसी समय में प्रमार वंश के सूदों में एक प्रतापी शासक का उदय हुआ। जिसने राजस्थान को एक सूत्र में पिरोकर मारवाड़ में बलशाली राज्य स्थापित किया। इसका नाम था धरणी बराह। एक धरणी बराह इसी वंश में विक्रमादित्य से कुछ पूर्व भी हो चुका है। प्रमार दर्पण में 55 तक राजाओं के नामों का वर्णन मिलता है।

मालवा के राजा सिंह सेन जिन्हें इतिहासकार इतिहास में वर्णित सीयक राजा के मिलाते है। इसके समय का एक शिलालेख 1005 का हसोले से मिला है। इसी का बेटा मुज्ज था। इसी बीच परिवार के भाई ही राजा बने ओर भोज सत्तावन वर्षराजा रहा जिसका लेख 1067ई. को मिला है। यह भोज छठी शताब्दी के भोज सूद से अलग था।

प्रसिद्ध लेखक नैनसी ने अपनी ख्यात में 64 तथा दयाल दास ने 132 पीढ़ीयाँ गिनाई है। प्रमार दर्पण तथा प्रमार वंशावली दोनों में ही धरणी बराह छत्तीसवीं पीढ़ी का राजा था। एक छप्पय जो दयालदास की ख्यात तथा प्रमार वंश बलि आदि ने दिया है। उसके अनुसार धरणी बराहु नौ कोटी मारवाड़ का एकछत्र राजा था। उसने अपने नौ भाइयों में यह तमाम राज्य बांट दिया था।

वह छप्पय इस प्रकार हैः–

मंडोवर सांमत हुवो अजमेर सिध्द सुव।

गढ़पूगोल गजमल्ल हुवौ लोद्रवै भाणभुव
अल्हपल्ह अरबध्द भोज राजा जांलधर।
जोग राजा धरधार हुवौ हांसू पारककर।
नवकोट किडारू संजुगत। थर पंवारहार थाप्पिया।
धरणी बराह धर कोट बांट जू जू दिया।

धरणी बराह दसवीं शताब्दी के अन्तिम बीस वर्षो में वर्तमान थे। उक्त श्लोकों में समांत सिंह को अजमेर सिध्द अजय सिंह को, पूगल गढ़ गंजसल को लोद्रवा, भोज को जालंधर ''जलौर'' आदि के प्रदेश मिले।

## वंश का विकास

आबू पर्वत के शिलालेख के अनुसार ध्रुभट तथा महिपाली नाम के दो बेटे धरणी बराह की मृत्यु के पश्चात राज्य करते रहे।इसी लेख के अनुसारः–

श्री धरणी बराहो भूत्प्रभूर्भू मेस्तद गजः। श्री ध्रुभटमही पाली।तत्सुनौ ''तो'' दधतुर्मही ''हीम'' ।।

इन्डियन एन्टीकबेरी में यह शिलालेख अपने पूर्ण रूप में वर्णित है। परन्तु किड़ादू के लेख में देवराज को धरणी बराह का उतराधिकारी लिखा गया है। यथाः–

सिन्धुराज धरा

धार धरणी धर धामवान् ''मा''
''।। 8।।'' दवेरा जोभवतस्मात
सुरराजो हराज्ञया। देवराजश्वर...''।। 9।।''

तत्पश्चात चन्द्रावती के शिलालेखों में महीपाल का अकेले ही उत्तराधिकारी के रूप में वर्णन मिलता है। वास्तव में देवराज महीपाल का ही दूसरा नाम है जिसका

वर्णन रोपी के शिलालेख ''ई. ए. 196–198'' में मिलता रहा।

यह परिवार इस प्रकार विकास को प्राप्त हो कर राजस्थान के विभिन्न भागों पर शासन करता रहा हैं

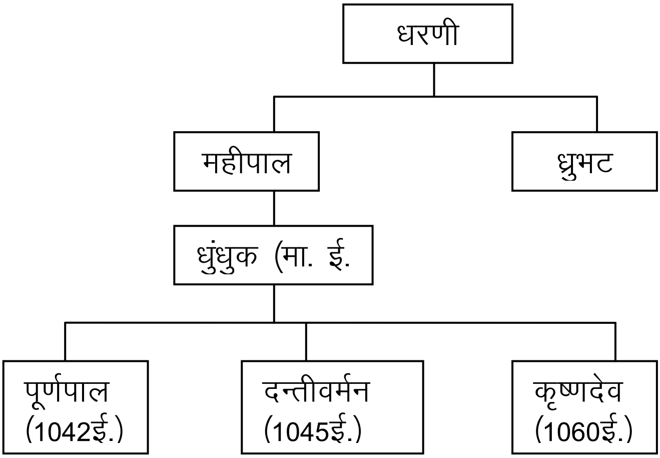


धुंधुक तथा पूर्णपाल के आबू पर राज्य के समय धार पर उन्ही वंश के राजा भोज प्रमार का शासन था। भोज की सहायता प्राप्त करके ही पूर्णपाल स्वाधीन महाराजा धिराज बन पाये क्योंकि उसके पिता धुंधुक शक्तिशाली चालुक्य राजा के दबाव के कारण अपने सम्बधीं राजा भोज के पास धारा नगरी में चले गये थे।

कृष्णदेव के दो बेटे थे। कंकाल देव तथा स्वच्छराज। कंकाल देव ही आबू का उतराधिकारी बना जब कि स्वच्छराज भीनमाल तथा किरादू प्रदेश का शासक बना। चन्द्रावती कास्वतन्त्र राज्य इसे प्राप्त हुआ। इसके कुछ आगे यह वश इस प्रकार बढ़ा।

## कंकालदेव (1067ई.)

## विक्रम सिंहा

विक्रम सिंहा को गुजरात के शक्तिशाली चालुक्य राजा ने गद्‌दी से उतार कर दन्दीवर्मन सूद ''पूर्णपाल के भाई'' के पोते यशोधवल को राजा बनाया।

इस प्रकार चन्द्रावती के राज्य की गद्‌दी एक दूसरे भाई की संतान को मिल गई। उसी आश्य का शिलालेख आबू से प्राप्त हुआ निम्नलिखित वृतांत देता हैः–

जातः काकलदेवांगा द्विक्रमासिंहाः क्षमाधिपः।
रामदेव तनोर्जातः श्री यशोध ''व'' लो नृपः।
(Epgraphica India)पृष्ठ 137 का अष्टम श्लोक

यशोधवल का राज्य चन्द्रावती में 1145 सें 1163 तक रहा। इस के शिलालेख प्राप्त हुये है। जिनमें से आबू पर्वत अचलेश्वर मन्दिर का लेख अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसके वर्णन में यशोधवल के दो बेटे थे। धारवर्षा तथा प्रहलादन। इन में धारवर्षा चन्द्रावती का सर्व प्रसिद्ध प्रतापी तथा जनप्रिय शासक था। आबू प्रशिस्त में उसे शस्त्रों एवं शस्त्रों में पारगत, प्रमार वंश के अभूषण तथा प्रजापालक कह कर उसकी अत्यंत प्रशंसा इन शब्दों में की गई है।

तत्सृनु परमार वंश तिलकः क्षोणांभुः–
जामग्रणीः शास्त्रास्त्रादि कलाकलाप कुशलो लध्धा (ब्धा)
नुरामो जने। श्री मानवु दभूमीमंडलपतिः प्रौढ़पतापान्ति
तो धारावर्षनरेश्वरो भवदसौ पुरण्य प्रभावोत्कटः।।
ऐसे अनेको शिलालेखों को दि प्रमारज में प्रस्तुत किया गया है।

(एपिग्राफिका इन्डिया)

# मुहम्मद गौरी की पराजय

धारवर्षा के राज्यकाल की सर्व प्रसिद्ध घटना 1178 में मुहम्मद गौरी के आक्रमण की है। मुसलमान से किरादू मार्ग से आगे बढ़ते हुए मुहम्मद गौरी ने कल्हन चौहान की राजधानी नदौल पर अधिकार कर लिया। आगे आबू पर्वत की ओर बढ़ने का यत्न करने वाली मुस्लिम लुटेरों की सेना के पग काँप उठे जब उन्होंने चन्द्रावती के महाराजा धारवर्षा सूद को सेना सहित सामने लोह–दिवार बने खडे पाया। प्रबन्ध कोष ग्रन्थ में इसकी विस्तृत अत्यंत रोचक ढंग से किया गया है। जिसमें मुस्लिम सेना की भयानक प्राणहानी महमूद गौरी के घायल हो कर भाग जाने का वृतांत लेकर दि प्रमारज के विद्वान लेखक ने पृष्ठ 176 पर इसे यूँ अनुदित किया है।

“Dharavarsa let the Muslims advance unmolested into the Pass and then closed upon from the rear and in the front. The Muslim soldiers were attacked by the gurjaras. A large number of muslim solders were killed and to those who survived had to suffer extreme hardships on their way back to gajni. Their leader Mahmud Ghori was wounded. This victory won by Parmars of Abu, while assisting their chaulakya overlord, was decisive as it kept away the muslims from gujrat for nearly thirteen years.”

यह स्थान आबू के पास जिला सिरोही (राज.) में वर्तमान कायदान है। इस प्रकार करारी पराजय के बाद 13 वर्ष तक मुसलमानों को इस ओर मुँह करने का साहस नहीं हुआ। इससे पूर्व धरणी बराह ने भी मुसलमानों को करारी हार देकर उनके नेता को बन्धी बना लिया था। अल्तमश नामक मुस्लमान ‘‘गुलाम वंश’’ राजा को भी वीर धवल के हाथों इसी स्थान के पास पराजय हुई थी जिसका वर्णन प्रसिद्ध इतिहासकार श्री डी. सी. गंगोली ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ The History fo Parmara Dynasty में किया है।

# कुतुबुद्दीन एबक का आक्रमण

मुहम्मद गौरी की मृत्यु हो गई और वह अपनी पराजय का कलंक न धो सका। उसके स्थान पर राज्य सम्भाला कुतुबुद्दीन एबक ने यह वही दुष्ट था जिसने पृथ्वी राज की बनाई लाट ''मीनार पर'' से श्लोक मिटाकर उसे दिल्ली में मेहरौली में वर्तमान स्थान पर स्थित करके उसे अपने नाम से प्रसिद्ध (बदनाम) किया था और उस पर कुरआन की आयतें खुदवा दी थी। वास्तव में देखें तो एक हजार वर्ष के मुस्लिम राज्य ने हमारे लिये नकली नामों के भारतीय कला भवनों के अतिरिक्त हमारे लिये छोड़ा क्या है। मुसलमान सभ्यता ने हमारे लिये विरासत में जो छोड़ा उसे एक पंक्ति में लिखे तो केवल चार शब्द बनते है।

1. चिक
2. हुका
3. मश्क (चमड़े की)
4. अप्राकृतिक मैथुन

लाल किला विक्रमादित्य महाराज ने बनवाया था परन्तु नाम अपना दे दिया उसको पांव शाहजहाँ ने। ताजमहल वास्तव में राजा जयसिंह स्वाई का महल था जिसके साथ एक मन्दिर भी था परन्तु उसका रूप परिवर्तित करके शाहजहाँ ने मुमताज के मकबरा का रूप दे दिया जो मुमताज के मरने के नौ मास बाद बना और मुमताज की लाश यू. पी. के एक बगीचे में दफनाई गई थी।

दिल्ली के काली माता के मन्दिर को गिराकर उसी समान से मस्जिद चुन कर उसे काली मस्जिद का

नाम दे दिया जिसके पांव में न खरोंचे जा सके संस्कृत शब्द आज भी देखे जा सकते है।

ऐसे सैकड़ो उदाहरण है। विस्तृत ज्ञान के लिये हमारी संस्था द्वारा योजनाबद्ध प्रकाशित होने वाली पुस्तक ''हमारे इतिहास से विदेशी व्यभिचार'' को पढ़े प्रसिद्ध इतिहास लेखक मदनेश ने इसमें विश्व के अत्यंत रोचक आंकड़े प्रस्तुत किये है। मैं कुतुबद्दीन एबक का वर्णन कर रहा था। उसने पश्चिमी भारत पर 1197 से अनेकों आक्रमण किये और नन्दौल पर अधिकारकर लिया परन्तु धारवर्षा की भांति ही रायकरण तथा धारवर्षा के अधीन भारी सेना आबू पर्वत के मूख पर किला बन्दी किये युद्ध के लिये तैयार खड़ी मिली है। जिनकी कटारे भालों तथा पर्वतों पर से पत्थरों ने मुस्लिम रक्त से धरती लाल कर दी।

निज़ामी और फरिश्ता जैसे मुसलमान इतिहासकारों के अनुसार अतः मुसलमान जीत गये परन्तु यदि ऐसा होता तो धारवर्षा का चन्द्रावती से राज्य समाप्त हो जाता। उसके साथी चालुक्य तथा बधेल भी राज्य हीन हो जाते जबकि तथ्य इसके उल्टे है। हमें इस युद्ध के बाद की तिथि के शिलालेख मिलते है तथा चालुक्य आदि भी गुजरात में पूर्वत राज्य करते मिलते है। यहीं से पाठक सत्यता का पता लगा सकते है। वास्तव में मुसलमान इतिहासकारों ने सत्य को अत्यंत तोड़–मरोड़ कर अपने हित में प्रस्तुत किया है और शोक है कि हम उन्ही की सामग्री के आधार पर इतिहास लिखकर बच्चों से पढ़ा रहे है।

धारवर्षा के बाद उसका बेटा सोमसिंह राजा बना। इस योग्य तथा वीर शासक का बेटा कृष्ण राजा बना और

उसके बाद प्रताप सिंह राजा बना। उसके पश्चात चन्द्रावती पर गुहल वंश का अधिकार हो गया।

इस प्रकार चन्द्रावती का प्रसिद्ध सूद राज्य चन्द्रावती समाप्त से समाप्त हो गया।

## मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान

मुहम्मद गजनी के अन्हलवाड़ा और अजमेर पर हुये आक्रमण के अलौरा से सूद सेना इन राजपूत राजाओं की सहायता के लिये लडती रही। जेसलमेर पर हुए हर मुसलमानी आक्रमण में सूदों ने बिना युद्ध का कोई मोल अथवा सेना व्यय लिये बिना ही अपने रक्त बहा कर इस भाटिया राज्य की रक्षा में सहयोग दिया। फिर जब मुहम्मद गौरी का समय आया तो उसने पृथ्वी राज चौहान पर आक्रमण किया। तरावड़ी के मैदान में ''पानीपत के पास'' भयानक युद्ध हुआ। इसमें सूद सेना भारी संख्या में पृथ्वीराज के साले समरसिंह के नेतृत्व में चित्तौड़ से आई थी। 1134 विक्रमी में इन्हीं ने मिलकर मुहम्मद गौरी को हरा कर और उसने क्षमा मांग कर छुटकारा पाया था। 1136 विक्रमी में जयचन्द का न्यौता पाकर परस्पर फुट का लाभ उठाने के लिये पुनः भारी आक्रमण किया इस समय जयचन्द की बेटी संयोगिता हरण तथा युद्ध के कारण राजपूत एवं गहलौत से साथ दिल्ली की रक्षा के लिये तुरन्त समरसिंह के साथ सामना किया। इसी सेना ने पुनः मुहम्मद गौरी की पठान सेना को भारी मार दे कर भगाया और घघ्घर नदी तक उन का पीछा करते चले गये।

तभी यहाँ गौरी ने एक चाल चली। उसने सिन्ध की प्रार्थना थी। ठीक समय जब कि पृथ्वी राज कुछ अंग रक्षक के साथ सन्धि की बातचीत कर रहे थे भारी तुक्र सेना ने एकाएक चारों ओर से निकल कर पृथ्वी राज को घेर कर गजनी भगा ले गये।

समर सिंह ने सूद एवं यादव आदि बचे खुचे सैनिकों की सहयता से भीषण रण मचाया परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी। समर सूद सेना सहित प्रतिकार के लिये युद्ध करते मारे गये।

पृथ्वी राज रासौ तथा पृथ्वीराज में इन युद्धों का अत्यंत सजीव तथा विस्तृत विवरण दिया गया है। वास्तव में अग्निकुल के वृतांत पर प्रथम ग्रन्थ रासौ ही माना गया है। राजपूद शब्द को प्रसिद्धि भी इसी ग्रन्थ द्वारा मिली। 36 राजपूत क्षत्रिय राजकुलों (प्रमार सहित) का वृतांत इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग पृष्ठ 5 पर यूं वर्णित है।

**रवि, शसि, जादव वंश, काकुरथ, परमार, सदावर,**
**चाहुवान, चालुक्य, छनद, सिलार, अभीचर,**
**दोयमत, मकवान, गरूअ, गोहिल, गोहिलपुत,**
**चापोत्कट, परिहार, राव, राठौर, रोषजुत,**
**देवरा टांक, सैन्धव, अनिग, यौतिक, प्रतिहार दधिषट,**
**कारट्टपाल, कोटदल, हुल हरितट गौर,**
**धान्य पालक निकुम्ब वर राजपाल कविनीस,**
**का लच्छुरकै आदि बरने वंश छतीस,**

''पृथ्वी राज रासौ भाग 1 पृष्ठ 54''

इस ग्रन्थ का वृतांत पीछे भी लिखा जा चुका हैं रवि तथा शसि का यहाँ अर्थ सूर्य एवं चन्द्र वंश से है रासो को पृथ्वी राज के दरबारी कवि एवं अभिन्न चन्द्र वरदाई ने लिखा था।

# अलाऊद्दीन खिलजी और सूद वंश

भारत पर पाँच विदेशी वंशो ने मुगलों से पहले राज्य किया वह पांच वंश निम्नलिखित थे।

1. गौरी
2. गजनी
3. गुलाम वंश
4. खिलजी
5. तुगलक

इसमें प्रथम तीन का वर्णन तो हमने पीछे किया है। फिरोज तुगलक की भी दुष्टता का वर्णन हम ने पीछे किया है। इसी फिरोजशाह ने जेसलमेर पर भी भारी पठान सेना के साथ आक्रमण किया। जीर्ण–शीर्ण तथा युद्धों से उजड़ उस भव्य दुर्ग की रक्षा के लिये बचे–खुचे भाटी एकत्र हुए। सूद सेना तुरन्त ही अपने भाटी बन्धुओं की सहायता के लिये पहुँच गई परन्तु दुर्ग में खुराक तथा गोला हथियार समाप्त थे और बहुत कम सेना को भारी शाही सेना का सामना था। परिणाम स्वरूप जौहर और साका किया गया तथा 2400 राजपूत नारियां ज़िनमें भाटी तथा सूद कन्याएं प्रमुख थी जीवित चिता में जलमरी तथा वीर सैनिक उनकी चिता की राख मस्तक सेलगाकर एवं म्याने फैंक कर तलवारें लिये शत्रु पर टूट पड़ीं और सैकड़ों को मारकर वीरगति को प्राप्त हुए।

फिर उसने छल से अपने चाचा को मार कर राज्य ले लिया। अलाऊद्दीन खिलजी ने दक्षिण में देव गिरि के राजा रामदेव यादव को छल से मार कर उसकी करोड़ों की सम्पति लूटकर अपने छल्ली होने का प्रमाण पहले ही दे दिया था। और कोई भी युद्ध इसने छल के

बिना नहीं जीता। इस विलासी निमर्म, अन्धधार्मिक अत्याचारी को भारतीय इतिहास का सब से छली राजा कह सकते है। जिसका कच्चा–चिठ्ठा यहाँ प्रस्तुत करना विषय से बाहर की बात है।

छल और विलासिला अलाऊद्दीन के जीवन का अंग थे। उन दिनो चितौड़ की महारानी पद्मनी अत्यंत सुन्दर, सचरित्र एवं वीर राजपूत ललना थी। केवल इसे प्राप्त करने की लालसा में अलाऊद्दीन ने चितौड़ पर भारी दल बल के साथ आक्रमण किया। यह 1218 विक्रमी ''1356ई.'' की घटना है। सूद, राठौर, गौड़ आदि तमाम राजपूत एक भारतीय ललना की मर्यादा की रक्षा के लिये मर मिटने के हेतू प्रस्तुत हो गये। केवल अलाऊद्दीन की विलासी आँखों को फौड़ने के लिये हजारों राजपूत, सूद, राठौर, कच्छवाहे वीर अपने एक भारतीय नारी की मर्यादा की रक्षा हो गईं अलाऊद्दीन खिलजी के हृदय में इस पराजय का कांटा सदैव चुभता रहा। और 1246 विक्रमी में जबकि चित्तौड़ पड़ोसी राजाओं के साथ युद्धों के कारणशिथिल हो चुका था, अलाऊद्दीन ने पुनः भारी तैयारी के साथ चित्तौड़ को जा घेरा। इस बार सूदों के अतिरिक्त कोई राजपूत राजा सहायता को न पहुँचा। धात की सूद राणा स्वयं सेना सहित युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए और राजपूतों साहित्य के इस कथन का सत्य सिद्ध कर दिखाया किः–

धर्म जाता धर पलटता त्रिया पड़ता ताव
यह तीनों दिन मरणरा कहां रंक कहाँ राव
(जयपुर के अजायबघर में से प्राप्त)

अर्थात् धर्म को संकट आये घर नष्ट हो रहा हो अथवा नारी की मर्यादा पर हाथ उठे तो वह दिन राजपूतों के लिये मर मिटने का है। कदाचित इसी दिन के लिये राजस्थान की नारियों में सर्वप्रसिद्ध यह लोकोक्ति रची गई थी।

भल्ला हुआ जु मारिआ बहिणी म्हारा कंत
अथवाः— पुते जांए कवणु गुणु अवगुण कवणु मुएणा
जा वप्पी की भुहड़ी चंपिज्जई अवरेण

इस प्रकार वीर पत्नियाँ, बहने तथा माताएँ अपने पति, भाई तथा स्त्री जाति की रक्षा करते हुए युद्ध भूमि में मरता देखने की इच्छुक रहती थी और हार कर वापस लौटने पर घर के द्वार तक नहीं खोले जाते थे। तो मैं कह रहा था कि धात का सूद राजा पद्मनि तथा पवित्र चितौड़ की रक्षा करते—करते शहीद हुए।

अलाऊद्दीन ने दुर्ग विजय न होते देखकर पुनः छल का अश्रय लिया उसने कहला भेजा कि यदि मुझें पद्मनि को दूर से ही दिखा दिया जाये तो मैं लौट जाऊँगा।

अन्त में एक बड़े शीशे के पीछे से पद्मनि को दिखाने का निश्चय किया गया। अलाऊद्दीन कुछ सैनिक रक्षकों के साथ महल में आया और पद्मनी को देख कर वापिस चल पड़ा चित्तौड़ का राणा शिष्टाचार के नाते खिलजी सुल्तान को दुर्ग से बाहर तक छोड़ने गये कि अचानक उसे उठा कर अलाऊद्दीन के सैनिक अपने खेमे में ले गये और संदेश भेज दिया कि यदि पद्मनी सुल्तान के हरम में न भेजी गई तो राणा को समाप्त कर दिया जायेगा। अब राजपूतों के परीक्षा का समय था। पद्मनी ने

अत्यंत धीरज तथा बुद्धिमता से खिलजी सुल्तान की मक्कारी का यथा योग्य उतर दिया।

उसने सुल्तान को कहला भेजा कि वह अपनी तमाम सखियों तथा दासियों के साथ पालकियों में अलाऊद्दीन के कैम्प में आएंगी परन्तु सुल्तान से मिलने से पहले वह अपने पति से अन्तिम बार अलग खेमे में मिलना चाहेगी।

विलासी अन्ध अनपढ़ अलाऊद्दीन तुरन्त मान गया। रानी ने तुरन्त पालकियों का भारी बेड़ा मंगवाया और प्रत्येक पालकी में जनाना कपड़ों कें अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित वीर भर दिये और उन पालकियों को उठाने के लिये भी शस्त्रधारी राजपूत सूद एवं गौड़ गोहिल आदि कहारों के रूप में नियत किये गये। शस्त्र कपड़ों के नीचे थे।

तुर्कों ने राणा के बंधन खोलकर उसे खुले मैदान में खड़े कर दिया गया और पालकियाँ सुलतान के सैनिक कैम्प के चारोंऔर रखदी गई। इनमें कुल 700 पालकियों से पाँच हजार राजपूत योद्धा थे जबकि अलाऊद्दीन की सेना तीस हजार थी एकाएक कौतक हुआ और तलवारे धारी राजपूत वीर राणा भीमदेव को घोड़े पर बिठा कर निकल भागे। शेष वीरों ने आल्हा तथा ऊदल के नेतृत्व में पालकियों से निकल कर भीषण मार–काट आरम्भ कर दी और जब तक सुल्तान इस आश्चर्यजनक नाटक को आँखे मल–मल कर देखे और समझे मुस्लिम सेना की भारी संख्या कट चुकी थी और साथ कट गये थे कि मुट्ठी भर राजपूत, सूद, राठौर, खिच्ची आदि योग्य सैनिक अलाऊद्दीन दांत पीसता रह गया। तुरन्त सेना तैयार

करके उसने और सहायता मगाई। तथा चित्तौड़ को फिर जा घेरा।

प्रथम बार युद्ध में हार और दूसरी बार कूटनीति की मात खा कर अलाऊद्दीन की दशा एक घायल सांप की सी हो गई थी। राजपूतों के मुख्य सरदार इन युद्धों की भेंट चढ़ चुके थे। शेष चार हजार सैनिक अपने से कई गुणा अधिक सैनिकों से लड़ रहे थे जबकि रसद आदि का अभाव भयानक संकट उपस्थित कर रहा था तब राजा भीम सिंह ने त्याग का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उसने अपने वीर बेटों में से एक–एक का राज्यभिषेक करके एक राजपूत दस्ता देकर युद्ध में भेजना आरम्भ कर दिया। तीस हजार सेना के सामने यह मुठ्ठी भर सैनिक सैकड़ों को मार कर स्वयं मरने लगे। यह काम ग्यारह दिन तक तथा ग्यारह राजकुमार इस प्रकार शहीद हो गये। यह सेना चला के पीछे छिप कर बैठने वाले राजाओं के लिये एक आदर्श थाऔर इसकी तुलना गुरू गोबिन्द सिंह के बेटों के बलिदान से की जायेगी।

बाहरवें दिन अपने सब से लाडले बेटे अजयसिंह को वंश को चलते रखने के लिये उन्होंने सेना को चीरते हुऐ बाहर निकल जाने का ओदश दिया तो वह भोला सुन्दर युवक चुने हुए अंग रक्षकों के साथ घोड़े पर से तलवार से वार करता हुआ मुसलमान सेना को चीरता हुआ निकल गया और कल्वाड़ा जा पहुँचा।

अब विजय की कोई आशा न थी। अतः जौहर व्रत करने का निश्चय किया गया तमाम गुहिल, गौड़, सूद राजकुमारी तथा राजपूत स्त्रीयाँ तहखाने में जमा हुई। चिता जलाई गई और मर्यादा की रचना एवं धर्म की रक्षा में वह सुमनों की पाखुरियाँ कोमल परन्तु हीरे सी कठोर

वह राजपूत ललना अगली प्रातः को धधकती चिता पर जा बैठी। शेष स्त्रीयों नें भी अनुरण किया।

यह दृश्य देख कर राजपूत जीवन के प्रति उदासीन होकर केसरिया धारण करके तुलसी पत्र मुंह में ले कर और म्याने फैंक कर नंगी तलवारे लेकर दुर्ग से बाहर निकले और काल बनकर मुस्लिम सेना पर ना टूटे। इन सैकड़ों ने हज़ारों को मारा और फिर एक–एक करके कट मरे। इस प्रकार लाशों के ढेर पर से हो कर अलाऊद्दीन ने पद्मनी को प्राप्त कर लेने की आशा से दुर्ग में प्रवेश किया।

परन्तु अब वहाँ बचा ही क्या था। लाशों के ढेर चिताओं का धुंआ था और जब अलाऊद्दीन को एक घायल तड़प रहे राजपूत सैनिक ने व्यंग किया कि यदि पद्मनी की तलाश है तो उस चिता पर चढ़ जाओं उसी के पास पहुँच जाओगे तो अलाऊद्दीन माथा पकड़ कर चिता के पास बैठा रह गया। कुछ समय बाद राजपूत पुनः एकत्र हुये और उन्होंने चितौड़ से मुसलमानों को निकालकर पुनः अपना अधिकार कर लिया। चितौड़ के राणा ने अपने सहायकों को जगीरें दी सूदों के गुण–वान वाल्लका कैसे प्रदेश की जगीर मिली।

अब अलाऊद्दीन के जेसलमेर पर आक्रमण का वृतांत लिखेगे। आठ वर्ष 1295 से 1303 तक अलाऊद्दीन निरन्तर जेसलमेर के छोटे से राज्य की दीवारो से सिर टकराता रहा परन्तु भाटी और सूदों ने मिल कर अलाऊद्दीन को नाकों चने चबा दिये।

घटना यूँ हुई कि जेसलमेर का रावल जीत सिंह था। उन दिनों सुल्तान और ठ्ठा से 15 सौ घोड़े और 1

सौ ऊंट सरकारी लगान के खजाने से लादे हुए हर वर्ष दिल्ली भेजे जाते थे। इस बार जीत सिंह ने सैंकड़ों घोड़े तथा ऊँट साथ लेकर व्यापारियों का वेश बना कर सैनिकों सहित उन्हें मक्खर के स्थान पर जा मिला और चार सौ पठान जो खजाने को सुरक्षित दिल्ली पहुँचा रहे थे। उनका वध करके तमाम खजाना लूट लिया और जेसलमेर ले आया।

अलाऊद्दीन ने जब सूचना सुनी तो आग बबुला होकर आक्रमण की आज्ञा दे दी। जीत सिंह को इसका विश्वास उसने अमरकोट के सूद रावल की सहायता का संदेश भेजा। जीत सिंह का विवाह अमरकोट की सूद राजकुमारी से हुआ था। विजय की आशा न होते हुए भी दोनों छोटे–छोटे राज्य एक भारी संगठित सेना का सामना करने को प्रस्तुत हो गये। तमाम राजकुमारियों एवं स्त्रीयों को अमरकोट भेज दिया गया।

अलाऊद्दीन स्वयं अजमेर ही रूक गया और भारी सेना को आक्रमण करने के लिये भेज दिया। इस सेना ने 56 मोर्चे बनाये परन्तु राजपूत भाटी और सूदों के पहले हमले में ही सात हजार मुसलमान मारे गये। अब मुसलमान सेना भागने की राह ढूढंने लगी परन्तु देवराज भाटी और समीर ने उन्हें पीछे से घेर रखा था। अब दुर्ग को घेरने वाले स्वयं घिर गये थे।

जीत सिंह को अचानक बीमार पड़ने से मृत्यु हो गई आठ वर्ष के घेरे में तमाम रसद पानी तथा हथियारों के भंडार समाप्त हो गये। उधर सुल्तान ने पीछे से काफी सहायता और भेज दी तो भी भीषण आक्रमण करके मुस्लिम सेना नौ हजार सैनिक मार डाले गये। उन के सेनापति महबूब खां का भाई घायल होकर कुछ साथियों

समेत पकड़ा गया महबूब खां जीत सिंह का मित्र बना हुआ था। इसने जब देखा कि दुर्ग में मात्र 3800 सैनिक एवं कुछ हजार स्त्रीयों को छोड कर सब समाप्त है तो उसने अपने साथी को संकेत से बाहर भेज दिये जिसने जाकर सुल्तान को दुर्ग की दशा का वृतांत सुनाया। तुरन्त भारी सेना आ पहुंची अब तीस हजार सेना का सामनासाढ़े तीन हजार राजपूत करेगे। अब राजकुमारियों तथा अन्य स्त्रीयों को अपनी मर्यादा के लिये किसी भी प्रकार मर जाने का आदेश दिया गया। 24 हजार स्त्रीयों में छः हजार सूद ललनायें थी।

इन चौबिस हजार नारियों का चिताकांड अपनी आंखों से देखकर अंगारों के समान दहकते 3800 भाटी तथा सूद यौद्ध दुर्ग से बाहर निकले और दस हजार मुस्लिम सेना को मारकर स्वयं भी मर गये। इन युद्धों में सब से अधिक वर्णन योग्य वीरगति राणा गंधर्व सूद तथा उसकी सेना की थी।

1295 से 1303 तक का यह समय युद्धों के इतिहास में सदैव ही स्मरणीय रहेगा। भाटी का पड़पोता तुलसीदास बन कर लुधियाना की ओर निकल गया और बाद में शेख फरीद के प्रभाव मुसलमान हो गया क्या तथा शेख चाचू कहलाया।

## अमरकोट पर आक्रमण

अलाऊद्दीन को सब से अधिक क्रोध अमरकोट तथा धात सूद राजाओं पर था। चितौड़ अथवा जस्सलमेर अथवा अन्य जहां भी किसी हिन्दु राज्य पर मुसलमानी आक्रमण होता तों किसी स्वार्थ अथवा मांग के बिना तुरन्त सहायता एवं रक्षा के लिये पहुँचते थे। दूसरे वह इस

वीरता से शत्रु पर टूट पड़ते थे कि भारी से भाटी सेना भी एक बार कांप कर रह जाती थी।

बाबर की व्याकुलता का प्रमुख कारण सूद सेना ही थी महमूद गौरी और गजनी छिप कर कच्छ एवं सिन्ध के दुर्ग से अलग मार्ग से इन्ही के भय से भागे थे। खलीफा ने "निर्धन प्रदेश" कह कर सूदों के भय से ही प्रदेश छोड़ कर खाली कर दिया था।

अतः अलाऊद्दीन ने पद्मनी के छिन्न जाने एवं अपने बड़े यौद्धा मारे जाने की खीझ मिटाने के लिये सूदों को ही तमाम दोषों का दायित्व देकर खसियानी बिल्ली खम्बा नौचे के अनुसार अमरकोट पर भारी सेना एकत्र करके आक्रमण कर दिया। इस युद्धों से जीर्ण–शीर्ण एवं मरूस्थली किले में अब युद्ध करने की शक्ति थी कहां। उल्टे जेसलमेर से लाखों लोगों के अमरकोट आ जाने से यहां की आर्थिक दशा और भी बिगड़ चुकी थी। उस दशा की तुलना भारत के उस संकट से की जा सकती है। जो बंगला देश के लाखों लोगों के भारत आने पर भारत की आर्थिक दशा की हुई थी। जिस पर भारी सेना का आक्रमण भी हो गया सूदों ने बूढे अपाहिज तथा बच्चों को अमरकोट के पिछले भाग से बाहर निकाल दिया।

सूदों में धैर्य की कमी कभी नहीं हुई। संकट एवं कठिनाईयाँ तो उन के बचपन के खिलौने रहे है। युद्ध की तैयारी आरम्भ की गई। विजय का कोई प्रश्न ही न था। बड़े–बड़े योद्धा पहले मारे जा चुके थे। तुर्को की सेना पच्चीस हजार से आधिक थी और सूद सेना उसके पांचवें भाग सें भी अधिक न थी। जिसपर रसद, अन्नपानी, हथियारों आदि का अकाल था। परन्तु सन्धि करके जीवन की भीख मांगना वीर सूदों ने सीखा ही नहीं अतः पुनः

जौहर अर्थात् साका का निश्चय हुआ। तमाम सूद रानियाँ एवं अन्य स्त्रीयाँ सतित्व की रक्षा के लिये।

एक बड़ी चिता बनाकर सामुहिक रूप से सती हो गई। सती शब्द लिखने में तो छोटा सा है। परन्तु पाठकगण उस दृश्य का अनुमान करे जबकि मातायें बेटों को, पत्नियाँ पति को तथा बहने भाईयों को युद्ध में वीरगति प्राप्त करो कह कर उन्हीं के सम्मुख जीवित चिता पर तिल–तिल कर जल रही हो परन्तु और निर्विकार रहे।

इसके पश्चात रक्त के आंसू बहाते राजपूतों की मुट्ठीयाँ कस गई भँवे चढ़ गई सभी ने स्नान करके केसरियां वस्त्र पहने। खजाना भूमि में गाढ़ दिया दुर्ग के भीतर के भवन गिरा दिये गये और तुलसी पत्र मुंह में दबाए तथा म्याने फैंक दुर्ग के बाहर निकल गये।

दृष्य इतना विकराल था मानों यमदूत घोड़ों पर बैठ कर तुर्क सेना की काल के पास ले चलने के लिये बढ़ रहे थे। विद्युती हाथों से दिवानों की तरह मार–काट करते सूद वीर शौर्य के नये आयाम स्थापित करते हुए शत्रु सेना को चीरते हुये बढ़ते चले गये। इस दृष्य की तुलना Tennyson की कविता से की जा सकती है जिन की पांक्तियां छः सौ वीरों के भयानक युद्ध का वर्णन यूँ करती हैं–

Cannons to right of them
Cannons to left of them
Cannons in fornt of them
Volleyed & thundered
Into the valley death
Into the jaws of hell
Rode the six hundred

इस प्रकार यह टिमटिमाते बह दिये तुफानों का मुँह नोचते–खोचते अन्त बुझ गये। केवल चन्द्र सैनिक घायल थक कर चुर शत्रुओं की सेना चीरते काटते निकल आये उन में से एक राणा जगमल थे जो कुछ अंग रक्षकों के साथ युद्ध करते चीरते हुए चितौड़ आ पहुँचे। चितौड़ के महाराणा ने गुजारे के लिये जागीर दे दी। यह जागीर सूद गढ़ के नाम के प्रसिद्ध हुई।

कुछ ही वर्ष बाद सूदों ने बिखरी हुई शक्ति पुनः एकत्र की और अमरकोट पर पुनः अधिकार कर लिया। और राणा जगमल सूद के बेटे कोलाराय सूद को राजगद्दी पर बिठाया गया। यह वंश तब तक वहां राज्य करता रहा जब तक कि अकबर के संकेत पर राठौर मारवाड़ी एवं दोद पौत्रों द्वारा निकाल दिये गये। इसका वर्णन आगे आयेगा। यहां स्पष्ट कर दूं कि अमरकोट में 32 गोत के सूद विद्यमान थे। सरहिन्द के बीस गोत के सूद मुख्यतः बसे थे। और शेष समय–समय पर आक्रमणों से बच कर सरहिन्द पहुँचते थे और इस प्रकार सूदों की आबादी अपने मुहल्ले से बाहर भी फैलती जाती थी। अलाऊद्दीन के हाथों अमरकोट के नष्ट होजाने पर यह बत्तीस गोत के सूद पीछे से निकल कर बचते–बचाते सरहिन्द अतः में पहुँच गये। स्मरण रहे कि सरहिन्द का नाम कभी सूदपुरा था।

अलाऊद्दीन की सेना पर अन्तिम आक्रमण से पूर्व राणा ने जो वीरता पूर्ण प्रेरणा अपनी सेना को दी उसका वर्णन सूदों के भाटों ने अनेकों प्रकार से किया है। एक कविता में देखें।

सूदा सूरा पहन के पांच रंगी चीरा
रणभूमी में जा डट ज्यों चमके हीरा।
सूरा रावल गरज के कहे सुन वीरा,
धरती भार उतारना तुम धरके मन धोरा।

खिलजी कटक चढ़ा हिन्दु वध कारण,
शीश हाथ पर धारि ल्यों रक्षा के कारण।
तुम्हारे जीवित न कोई बचे नसारण,
करो कलेजा चाक दुश्मन जस कारण।
तुम सूदा फेर दो मुख ''शत्रु'' दल का,
तुक्रन मार भगाइयों दुख होगा हल्का।
रणभूमि में मांगयों न घुंट जलका,
अग्नि कुण्ड प्रकटभयों कहुं मेल न जल का।

## दोहा

**प्रमार के सूद तुम अग्नि कुण्ड की वास**
**धर्म हेतू प्रगट किये करो पाप का नाश।**

यह कविता चितौड़ के इतिहास में दी गई है जो जयपुर के राजा के पुस्तकालय में मौजूद है। इस ग्रन्थ के लेखक श्री माधोशरण श्री वास्तव ने सूदों का वृतांत चितौड़ के इतिहास की पृष्ठ भूमि में कहीं–कहीं दिया है।

## तैमूर का आगमन

चौदहवीं शताब्दी के अन्त में तैमूरलंग का नृशंस आक्रमण भारत ने देखा।

इस समय दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद तुगलक था। तैमूर भटनेर के मार्ग से आगे बढ़ा। भटनेर का राजा रायदूल चन्द भाटी था।

9 नवम्बर 1398 के दिन तैमूर भटनेर पहुँच ा। राजा युद्ध करने अथवा सन्धि कर लेने की दुविधा में पड़ा रहा और तैमूर ने भारी आक्रमण कर लिया।

सूद उन दिनों स्वयं एक युद्ध में फंसे हुए थे। इसके विपरीत उनकी सेना का दस्ता भटनेर पहुँच गया परन्तु भाटी दुर्ग के भीतर घिरे हुये थे अतः 98 हजार सेना से अकेले व्यर्थ लोहा लेना उचित न था। तैमूर केवल 9 से 13 नवम्बर तक मात्र पांच दि नही भटनेर में रहा परन्तु वह रक्त–पात कराया कि राजा ने असंख्य धन देकर यह रक्त–पात को बन्द किया। 15 की सांझ को तैमूर पानीपत के समीप पहुँचासाधन सम्पन्न तथा भारी सेना का स्वामी मुहम्मद तुगलक सामना करने के स्थान पर गुजरात भाग गया।

तैमूर ने दिल्ली में प्रवेश करते ही लूटमार तथा कतल की आज्ञा दे दी। परिणाम स्वरूप लाखों निर्दोष मारे गये। पाँच दिन में लाखों की हत्या एवं स्त्री हरण से सारे नगर में इतनी दुर्गंध फैल गई कि वहां टिकना कठिन हो गया तब तैमूर ने वापस चलने की आज्ञा दी।

परन्तु उसने वापसी के लिये मेरठ का मार्ग चुना। यहां भी पचास हजार व्याक्तियों की हत्या की।

उन दिनों कुम्ब का मेला था और लाखों लोग दूर–दूर से गंगा स्नान के लिये पहुँच` हुए थे लूट के लालच में तैमूर वहां जा पहुँचा और लाखों निर्दोष एवं निहत्थे लोगों के रक्त से होली खेली कि गंगा का जल लाल हो उठा। तैमूर वहां से लौटा तो मार्ग में सूद पुनः खड़े थे भारतीयों की हत्या का बदला लेने के लिये।

## सूदों का तैमूर से युद्ध

यहाँ मैं मुख्य विषय को पुनः दोहराता हुआ सूदों और तैमूर से ये महत्वपूर्ण युद्ध का वर्णन करता हु। तैमूर

ने अपनी सेना को अपने बेटे पी. मुहम्मद के साथ गजनी से अटक की और भेजा तथा दूसरा भाग स्वयं साथ लेकर अचनार मार्ग कोहाट होता हुआ आगे बढ़ा।

सूदों ने आक्रमण की सूचना पाते ही अटक के पास भक्खर के दुर्ग पर जा घेरा पीर मुहम्मद को जान लाले पड़ गये। पीर मुहम्मद को अपना पिता तैमूर याद आ गया उसने कुछ सैनिक भेजे कि तैमूर को संदेश दे कि वह अटक के साथ ऊपर को चलता हुआ सूदों को पीछे से घेर ले ताकि इस ओर सूदों का जोर कम हो जाये।

तैमूर संख्या में कम थे अतः घिर कर संकट मोल लेना व्यर्थ था। तैमूर के पहुँच ने से पूर्व ही उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया और पीछे आकर अजमूद दुर्ग में पुनः रक्षा पंक्ति आ बनाई। यह दुर्ग सरस्वती नदी के तट पर था। यहां काबुली राय सूद का राज्य था। पीर मुहम्मद ने जब मैदान खाली देखा तो समझा सूद भाग गये अचानक ही चारों ओर से तीर तलवार की भीषण मार तुर्कों पर टूट पड़ी। पीर मुहम्मद घायल हो कर पीछे भागा तथा दूसरी ओर तैमूर की सेना भी आ पंहुची बेटे को घायल होने की सूचना मिलते ही तैमूर ने जनता की आम हत्या आरम्भ कर दी। अतः में 98 हजार की भारी मुगल सेना के दबाब के कारण सूद अमरकोट की और निकल गये। यहां से तैमूर भटनेर पटियाला से साठ मील बाहर गहराम का उपनगर आज भी अपने ओर बढ़ा। भग्नाशेष लिये तैमूर की नृशंसता की याद दिला रहा है। यह नगर धधर नदी के तट पर था। तथा भगवान रामचन्द्र जी की माता कौशल्या के मायके यही पर थे। पंजाब सरकार इस स्थान की दशा सुधारने की ओर ध्यान दे। भटनेर में

दुलचंद पर तैमूर के आक्रमण की सूचना मिलने पर कुछ सूद सेना को भटनेर की सहयता के लिये भेजा गया। भाटी दुर्ग में घिरे थे बाहरतैमूर की भारी सेना थी अतः सूद अपनी अत्यंत कम सेना के कारण वहीं से वापस लौट आने के अतिरिक्त कुछ न कर सकते थे भाटीयों ने रसद समाप्त होने पर साका किया। सूद तथा भाटी स्त्रियों ने जौहर व्रत लेकर सती होना उचित समझा और राजपूत द्वार से बाहर निकल का हजारों को मार कर मरे। वहाँ से समाना सरहिन्द गहराम तथा थनेसर होता हुआ तैमूर दिल्ली पहुँचा।

हमने हरिद्वार के हत्याकांड का पीछे वर्णन किया है। वहाँ से वापस एक लाख के लगभग कैदी और अनगिणत धन दौलत ऊँटों पर लादे हुये। तैमूर वापस चला परन्तु मार्ग में सूद की भी तैमूर से अपना हिसाब चुकाने के लिये पहले ही प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक चारों ओर टिड्डी दल की भांति सूद छापा मार गुरिल्ला युद्ध के लिये तैमूर की मुगल सेना पर टूट पड़े। और धरा–धड़ तमाम कैदियों के बंधन काट कर उन्हें स्वंतन्त्र करना आरम्भ कर दिया। जब तक आगे की पांक्ति तक सूचना पहुँचे सूद एक लाख बन्दीयों को ले जा चुके थे। पांच हजार तुक्र सैनिक काट दिये और सोना, हीरे, मोतियों से लदी खचरें तथा ऊँट जंगलों की ओर भगा दिये गये। यह घटना अटक के उस पार हुई। जब तक तैमूर पलट पाता आधा से अधिक लूट का समान तथा लगभग तमाम कैदी छुड़ा कर सूद जंगलों की ओर निकल गये थे। गजनी पहुँच कर तैमूर ने दांत पीसते हुए अपनी विजय की पराजय बना देने वालों को दंड देने के लिये भारी सेना तैयार की और वापस पलटा।

सूदों, जाटों तथा भाटियों ने अटक में अनेकों मोंचें बनाकर तैमूर कर सामना करने की तैयारी की पांच हजार युद्ध नौकाएं बना तैमूरको जल युद्ध के लिये भी विवश किया गया। परन्तु तैमूर के हजारों नौकाये बनवा कर उन के आगे भारी पत्थर तथा तेज धार वाले टकवे लगा दिये जिससे के टकराते ही जाटों की नौकाओं में छेद हो जाते तथा उन में पानी भर जाता था। जाट जल युद्ध में व्यस्त थे और सूद तथा भाटी स्थल पर युद्ध कर रहे थे।

तैमूर ने युद्ध नीति से अपनी आधी सेना पश्चिम से उतर की ओर भेजकर सूदों का धाती पर लड़ने वालों का सन्वध जल सेना से तोड़ डाला। इस पर घेरे से बचने के लिये सूदों को पीछे हटना पड़ा और जाट अकेले पड़ कर नष्ट हो गये।

## अमरकोट पर आक्रमण

तैमूर को सूदों के हर स्थान पर निपुर्णता से बच निकलने पर भारी क्रोध था अतः उन्हें दंड के लिये इससे पीछे अमरकोट की ओर बढ़ना आरम्भ किया। भाटी सूदों की सहायता के लिये पहुँच गये। दोनों ने मिल कर तैमूर से तीन स्थानों पर युद्ध कर के उसे भारी क्षति पहुँच ाई तभी तैमूर को सूचना मिली की उसके अपने देश में विद्रोह उठ खडा हुआ था। तैमूर शीघ्रता से पलट कर वापस अपने देश में चला गया।

कुछ इतिहासकारों का विचार है मरूस्थल में युद्ध करते हुए सूदों के हाथों पिट कर तैमूर ने ही विद्रोह की खबर उड़ा कर वापस निकल जाने में ही भलाई समझी थी।

# भारत में मुगल राज्य और सूद

तैमूर के आक्रमण के बाद कोई सुयोग्य शासक राज्य स्थिर न कर सका। 1451 में बहलोल लोदी ने दिल्ली राज्य पर अधिकार कर लिया। 1517 में इब्राहीम लोदी राजा बना वह अत्यंत घमंडी दुष्ट तथा अयोग्य शासक था अतः रूष्ट हो कर पंजाब के गर्वनर दौलत खां लोदी ने काबुल में मुगल शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने का न्यौता दिया।

उन दिनों राजस्थान का सर्वप्रसिद्ध नेता वीर शिरोमणी महाराणा संग्राम सिंह अथवा राणा सांगा थे। मैं यहां इतिहास के कुछ छिपे हुये पृष्ठ जिज्ञासु पाठकों के सामने प्रस्तुत करना चहता हूं। बाबर इस से पहले चार बार भारत पर आक्रमण कर चुका था। परन्तु राणा सांगा के भय से पंजाब से आगे न बढ़ा पंजाब का गर्वनर उसके साथ मिल चुके थे। सांगा और बाबर में परस्पर पत्र व्यवहार हो रहा था और दोनों में राज्य बांटने के सम्बन्ध में बात चली थी। क्योंकि स्वंय बाबर अपने संस्मरण तुज कि बाबरी में लिखता है। ''राणा ने मुझे इब्राहीम से युद्ध के लिये प्रेरित किया। और प्रतिज्ञा की कि जब मैं बाबर दिल्ली पर आक्रमण करे तो वह आगरा पर आक्रमण करेगा''।

इस के बाद बाबर इस बात पर दुखः प्रकट करता है कि बचन के अनुसार सांगा ने आक्रमण नही किया।

वास्तव में राणा बुद्धिमान शासक थे। उसका विचार था कि दोनों मुसलमान शक्तियां ''बाबर और इब्राहीम'' परस्पर लड़कर कमजोर हो जाये तो दिल्ली पर हिन्दु राज्य स्थापित कर दे।

इधर पानीपत के प्रथम युद्ध में 126 ई. में बाबर ने इब्राहीम लोदी की अफगान सेना को हरा दिया और दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

यहां स्पष्ट कर दूं कि बाबर सांगा के नाम से काँपता था। राणा सांगा के जीवित रहते बाबर भारत पर शासन नहीं कर सकता था।

इधर जब सांगा ने देखा कि जीत कर लूटने और चले जाने के स्थान पर बाबर दिल्ली पर राज्य करना चाहता है तो उस ने सूद, राठौर, गौड़, सिसोदीया आदि तमाम राजा तथा सरदार एवं सेना एकत्र की तथा सिकरी के पास कन्वाहा में जा उठा।

11 फरवरी 1527 को बाबर आगरा पहुँचा महाराणा ने मुगलों को वहाँ से मार कर भगाया तो बाबर की सेना का हृदय दहल उठा आठ मील तक मुगल सेना डर कर निरन्तर भागती चली गई थी।

## सूदों की स्थिती

इसके विपरीत कि राणा सांगा की सेना में भारी संख्या में सूद सैनिक तथा अधिकारी थे। कई अन्य राज्य सूदों के अब भी भारत में कायम थे इन में अयोजन का प्रसिद्ध दुर्ग जो सरस्वती के तट पर था प्रसिद्ध सूद वीर राय काबली सूद के अधिकार में था।

राणा सांगा के साथ धुन्ध राय सूद तथा राम देव भाटी प्रसिद्ध सेनापति थें बाबर का प्रथम संघर्ष धुन्ध राय सूद के साथ हुआ था।

# बाबर की हार

21 फरवरी की प्रातः को राणा सांगा ने अपनी सेना को कार्य वादी का आदेश दे कार मुगलों की अग्रिम पंक्ति को तोड़ देने का आदेश दिया।

परिणाम स्वरूप राजपूत सेना ने धावा बोलकर आठ मील तक मुगल सेना को निरन्तर काटकर समाप्त कर दिया। मीर अजीज के अधीन इस मुगल सेना को भाग कर छिपने का ठोर न मिल रहा था। केवल कुछ सैनिक बाबर तक पहुँच कर बाबर को मुगल सेना पर टुटी बरबादी की कथा कह सके थे।

अब शेष सेना और स्वयं बाबर भारत का राज्य हाथों सें गया समझने लगे। 15 दिन बाबर मोर्चा दुबका पड़ा रहा।

बाबर स्वयं तुजके बाबरी में लिखता हैं किः–

''इस समय की पहले पहल की घटनाओं से क्या छोटा क्या बड़ा सभी भयभीत हो रहे थे। एक भी आदमी ऐसा नहीं था जो बहादुरी की बातों से हिमम्त बधाँता नेक सलाह देने के फर्ज वाले वजीर और राज्य की दौलत भोगने वाले अमीरों में से कोई भी वीरों जैसी बहादुरी की बातों से नहीं बौलता था। न उनकी सलाह हिम्मत बधाँने वाली थी।''

आगे बाबर स्वयं लिखता है किः–

''इस मौके पर मेरी फौज इस कदर डर गई थी कि कोई भी सरदार हमला करने का नाम नही लेता था। मैं दो हफतों तक मोर्चो में घिरा बैठा रहा।'' इनके बाद

बाबर ने सन्धि का सन्देश भेजा। उसका अर्थ वास्तव में ओर सेना एकत्र करने तथा राजपूत सेना की कमजोरी जान कर उनका लाभ उठाने का था। राणा सांगा ने अपने तौमर सरदार राय सेन सिलहदी राज्य वाले को सन्धि की शर्ते तय करने भेजा परन्तु वह विश्वासघाती राजस्थान का राज्य पाने के नाम पर बाबर से मिल गया।

राणा को सन्धि की बातों में व्यर्थ समय नष्ट किया जाता देख कर सन्देह हुआ। उन्होंने तुरन्त आक्रमण की आज्ञा दी तभी युद्ध के बीच रायासेन सलहिदी सरदार पैंतीस हजार सेना सहित मुगलों से जा मिला और इस प्रकार युद्ध का पासा पल्ट गया।

इस पर भी बाबर भयभीत था उसने शराब से तोबा की। नमाज़ पढ़ कर मुसलमानों से कर हटा लेने की प्रतिज्ञा की जीवन भय एश्वर्य से दूर रहने की शपथ खाई और रो–रो कर अल्लाह से फतेह के लिये दुआ मांगी। फिर जोशीला भाषण देकर उसने तोंपे सगंलों से वही बांध दी। पीछे हटने वाले को मार डालने की आज्ञा दी और कुरआन उठा सैनिकों को अल्लाह के नाम पर शहीद होने की प्रेरणा दी।

रायसेन का विश्वासघात एक अचानक की समस्या थी। राजपूत इस पर चकित ही थे कि एक तो राणा सांगा के माथे पर आ लगा महाराणा अचेत हो गये। इसी उलझनों में फंसे राजपूतो पर मुगलों की घुडसवार सेना ने तीव्र आक्रमण किये और अनेकों सरदार मारे जाने के साथ राजपूत बिखड़ गये। चन्द्रावत का सूद सरदार तीन सौ वीर साथियों सहित युद्ध में काम आया गोकदास सूद सरदार भी शहीद हुआ। एक हाथ एक पैर ग़ंवा कर 80

घावों से सजे शरीर वाले इस वीर राणा ने पुनः जीत तक चितौड़ मे पांव नहीं रखा और बाबर ने दासी पुत्र बनवीर के साथ मिलकर बैशाख मास समंत 1584 में राणा को विष दिला दिया। जिस से कि भारत का बड़ा महान सपूत मृत्यु को सिधारा।

## हूमायूँ तथा सूद

सांगा के स्वर्गवास के बाद भी सूदों का महत्वपूर्ण हाथ चितौड़ की रक्षा में रहा। सुल्तान बहादुर शाह ने राजपूतों की कमजोर दशा देख भारी आक्रमण किया तो आबू की तमाम सूद रियासतों के राजा चितौड़ की रक्षा के लिये आये और सांगा की पत्नि की अधीनता में युद्ध किया सांगा का बेटा विक्रमादित्य जब अयोग्य सिद्ध हुआ नो सूद सरदार ने ही भरे दरबार में उसे कल तक परिणाम बता देने की बात कह कर उसे गद्दी से उतारनेमे प्रमुख भाग लिया था। इधर बाबर की मृत्यु शीघ्र ही हो गई। हूमांयू उसका बेटा उतराधिकारी था परन्तु शेरशाह ने उसे हराकर तमाम राज्य पर अधिकार कर लिया और हूमायूँ अपनी पत्नी के साथ दर–दर भटकता सिर छिपाने की ठौर ढूढँता फिरा।

इस घटना का वर्णन स्वंय हूमांयू ने ''तुजके हूमायूँ'' नामक अपने ग्रन्थ में पृष्ठ 182 पर किया है। (इस समय शेरशाह के भय से किसी ने भी हूमांयू को शरण देने से इन्कार कर दिया था उसकी पत्नी गर्भवती थी) हुमायूँ लिखता है :–

मैंने निराश होकर घोड़ा गंगा नदी में डाल दिया। थोड़े से सैनिक साथ ले कर जोधपुर की और मुख किया परन्तु सीमा से बाहर ही सीमान्त रक्षकों नें रोक दिया।

विवश होकर अमरकोट की ओर मुख किया। कई मील अबादी और पानी का चिन्ह न था। प्यास से आदमी और पशु मर–मर कर गिरने लगे। अतः में एक वीरान कुआँ मिला प्यास से व्याकुल कई लोगों ने कुओं में छलांगे लगा दी और मर गये। बड़ी कठिनाता से जल निकाला गया। सौभाग्य से पानी साफ था पहले आदमी और फिर घोड़ों को जल पिलाकर जान बचाई गई। शीघ्र ही अमरकोट दृष्टिगोचर हुआ। पीछे से शत्रु द्वारा पीछे से पीछा किये जाने का भय था। यह भय भी था कि जोधपुर की तरह यह राजा भी शरण देने से इन्कार न कर दे। अमरकोट पहुँचा तो राणा राय प्रसाद सूद का बेटा आया और आदर सहित दुर्ग में ले गया था। बेगम ने चेतावनी दी कि कहीं धोखा न मिले परन्तु मैंने अग्निकुल प्रमारों की प्रथाएं सुन रखी थीः मैने समझाया कि राजपूत घर आये शत्रु को भी शरण देते है। प्रमात्मा पर भरोसा करके ठहर गया। राणा ने हमारी सेवा और मनोंरजन में कोई कसर न रखी तीसरे दिन आगे जाना चाहा परन्तु बेगम को गर्भ की पीड़ाएं आरम्भ हो गई। दूसरे दिन प्रमात्मा की कृपा से राजकुमार अकबर का जन्म हुआ हमै यह विचार दिया गया कि बेगम बच्चा यहीं छोड़ जाऊं। राणा उन्हें बाद में काबूल भिजवा देगे। परन्तु बेगम नहीं मानी। तब एक मास बाद शहजादे को लेकर हम चल पड़े। राणा ने बहुत सा धन और घौड़े दिये। हमने केवल दस घोड़े ही रखे जिनकी हमे बहुत आवश्यकता थी। स्वंय राणा भक्खर तक साथ आये और हमें अटक पार करा कर वापस आया और काबुल तक वीर राजपूतों का दस्ता साथ भेजा।

यह ऊपर का वृतांत हिन्दी में सही सारांश है तुजके हुमायूँ का और यह वर्णन उसने इतना स्पष्ट किया है टिप्पणी की भी आवश्यकता नहीं।

# शरणागत के रक्षक सूद

उपरोक्त वृतांत तथा इतिहास के पृष्ठों का अध्ययन करने से एक बात तो यह स्पष्ट है कि हुमायूँ के सारे परिवार का जीवन खतरे में था। दूसरे शेरशाह जैसे शक्तिशाली सुल्तान के भय से कोई उसे शरण देने को तैयार न था। उलटे उसेपकड़कर शेरशाह को सौंपने के यत्न किये गये थे। शेरशाह के सैनिक निरन्तर हुमायूँ की खोज में थे।

ऐसे विकट संकट में शरणगत की रक्षा के लिये कोई भी संकट मोल लेने की राजपूती परम्परा का अक्षरशः पालन किया सूद राजा रायप्रसाद तथा उसकी सेना ने उसी सूद राजा के महल में भारत के सबसे बड़े सम्राट अकबर का जन्म 23 नवम्बर 1542 ई. के दिन हुमायूँ की पत्नि हमीदा बेगम के गर्भ से हुआ। यदि हुमायूँ को पकड़ कर काबूल की बजाय शेरशाह के पास भेज दिया जाता तो भारत में मुगल राज्य उसी दिन समाप्त हो गया होता और भारत को औरंगजेब जैसे राजाओं के अत्याचार न सहन करने पड़ते। परन्तु भारत की सांस्कृतिक परम्परा कासिम मुहम्मद गजनी, गौरी और अलाऊद्दीन की छल और घृणा से भरी परम्परा से नितांत भिन्न है। अतः तैमूर के अत्याचारों का बदला उसके वंशज हूमांयू से न लिया गया परन्तु हमांयू की संस्कृति न थी।

इसके पश्चात राणा राय प्रसाद सून ने गुजरा, मालवा और गुजरात के सुल्तान को आक्रमण करने पर करारी पछाड़ दी और फिर शेरशाह के राज्य पर भी सफल आक्रमण किये। काबूल से सेना ला कर हुमायूँ ने

पुनः आक्रमण करके शेरशाह सूरी को हरा दिया। तत्पश्चात उसने चितौड़ पर चढ़ाई की तुरन्त आबू, धारा नगरीः धात प्रदेश के सूद तथा चन्देरी कालपी, अजमेर एवं ग्वालियर के राजपूत एक भगवे झंड़े तले जमा हुए और हुमायूँ को भारी हार दी हुमायूँ पीछे हट गया। हुमायूँ की सेना के भाग जाने पर सूद एवं अन्य सेनाएं अपनेराज्य में विजय के डंक बाजाती वापस चली थी।

हुमायूँ ने पीछे आकर सीकरी के स्थान पर सेना को पुनः एकत्र किया और पिछले सकंटों की याद दिलाकर विजय या मृत्यु का नारा देकर सेना फिर आगे बढ़ाई। केवल चितौड़ के राजपूत मार्ग में पडाव डाले विजय की खुशी मे नाच–गाने में व्यस्त थे कि हुमायूँ की सेना सिर पर आ पहुँची। कदाचित तलवार उठाने का समय भी न मिला राजपूतों की विजय पराजय में बदल गई। इसके कुछ मास बाद हूमांयू की मृत्यु हो गई और अकबर गद्‌दी पर बैठा।

## अकबर और सूद

अकबर (महान) मुगल वंश का सब से चतुर तथा नीतिज्ञ एवं विश्व के कुछ चुने हुए बादशाहों में से एक गिना जाता है। उसने लम्बे समय तक इतने विशाल सम्राज्य पर शासन किया जितना कि इससे पूर्व एक हजार वर्ष तक किसी ने नहीं किया।

संसार के इस प्रसिद्ध सम्राट ने 23 नवम्बर 1542ई. को अमरकोट में सूद राजा राय प्रसाद के महल में आँखे खोली जबकि संकटों से घिरा हुमायूँ अपनी पत्नि आदि सहित सूद राजा के यहाँ आश्रय लिये हुए था और

इस प्रकार शेरशाह के हाथों बचा कर उसे राज्य करने के लिये जीवित रखने कर श्रेय सूदों को ही है।

अकबर कदाचित इस कृपा को भूला नही था। इसलिये पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू को हरा कर जब अकबर ने अनेकों नगर जीत लिये तो राज्य करने के पाँचवे वर्ष उसके राणा राय प्रसाद सूद को एक विशेष आदरी अतिथि के रूप में दिल्ली बुलाया। मुगल राज्य के नियमों के उलट अकबर ने सूद राणा को घुड़ सवारों के खिराज तथा दरबारी में हाजरी से छूट दे दी। उसे ज्ञात था कि सूद हाथ बांधकर उसके दरबार में खड़े होकर ''जी हुजूर फरमाइये आलम पनाह'' की रटना–रटने से तो रहे। स्वयं ही अकबर ने राणा के भाई को सूबेदार नियुक्त किया। इसका स्पष्ट वर्णन अकबर के दरबारी लेखक अबूल्लफजल ने ''आइने अकबरी'' के पृ ठ 263 पर किया है सूदों को जगीरे देने का वृतांत भी मिलता है परन्तु अकबर ने सूदों को समझने में भारी भूल थी। उस ने सोचा था कि राजा बिहारी मल की भांति बेटे दे कर सूद भी सारे भारत को जीत कर उसके कदमों में डाल देगे अथवा राजा टोडर मल, बीरबल आदि की भांति उसके मंत्री तथा सेना के अधिकारी बन कर तमाम हिन्दु राजाओं से लड़ कर अकबर को प्रसन्न करने का यत्न करेगे।

परन्तु अकबर का यह भ्रम शीघ्र ही टुट गया। 15 5ई. से 1594 ई. तक अकबर ने राजपूतों से रोती बेटों का सम्बंध बना कर उन्हें अपने राज्य की ढाल बनाना चाहा। हिन्दु को हिन्दु से लड़ा कर उसने राजनैतिक मक्कारी का प्रमाण प्रस्तुत किया कि बड़े से बड़े बुद्धिमान भी चक्कर में पड़ कर उसे अकबर की उधारता मानने लग गये। उसकी

स्वामीभक्ति राजपूत सेना की बाढ़ के सम्मुख बड़े–बड़े वंश वृक्ष टूट कर गिर गये। केवल वही बच पाये जो अकबर के सम्मुख गये।

परन्तु कुछ एक चट्टाने थी जिनसे टकरा कर ऐसी कई बाढ़ें भी (शाबाश) कह कर पीछे हटने को विवश हो गई।

वह दो चट्टाने थीः–

1. महाराणा प्रताप
2. सूद

इन चट्टानों ने अपने सम्मुख बड़े–बड़े वृक्षों को अस्थिर हो कर फिसलते देखा था। दूसरे राजाओं के समान बेटी देकर राणा उदय सिंह, प्रताप एवं सूद भी नपुंसकताजन्य मरघटी शांति खरीद सकते थे। परन्तु बाप्पा रावल एवं प्रमार सूद की संतान को इस अपमानजनक जीवन से मृत्यु अधिक प्रिय थी। जब किसी भी प्रकार का भय अथवा लालच प्रणवीर प्रताप को स्वीधीनता के प्रण से डिगा नही सका तों 1565ई. में अकबर ने चितौड़ के विरूद्ध भारी सेना चढाई करने के लिये भेज दी।

इस समय चितौड़ का राणा प्रताप के पिता उदय सिंह थे। उदय सिंह न तो अपने पिता राणा सांगा के समान वीर ही था और न ही प्रताप के समान धैर्यवान। तो भी उसने अकबर के विवाह–सन्देश को घृणा से ठुकरा दिया। अकबर की सेना को सुचना सुन कर उसने तुरन्त ही सामन्तों की सभा बुलाई और स्थिती पर राय मांगी।

# अकबर बनाम सूद स्त्री

इसी समय राणा उदय सिंह के महल की एक राजकुमारी राज दरबार में प्रकट हुई। उसकी माँ सूद थी तथा बुद्धिमता के कारण उदय सिंह के राजमहल में उसका प्रभाव था। यह उसी की ही बेटी थी।

मुसलमान इतिहासकारों ने अकबर के इस आक्रमण तथा स्त्री के हाथों संसार के इतने बडे सम्राट की लज्जाजनक हार का कहीं वर्णन नहीं किया। मुसलमान इतिहासकारों ने सत्य की पीठ कर अनेकों स्थान पर ऐसे ही छुरा घोपा है। वह हर ऐसे प्रसंग को छोड़ ही जाते है जो उनके विरूद्ध जाता हो परन्तु प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार जैमज टाड ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ Aunels of Rajesthan में उसका विस्तृत विवरण दिया हैं।

उस राजकुमारी ने प्रार्थना की कि अकबर का सामना करने के लिए जाने वाली सेना का सेनापति उसे बना दिया जाये। पहले तो राणा नहीं माना परन्तु अतः में उसके वीरतापूर्ण हठ एवं भावना को देखकर राणा ने स्वीकृति दे दी।

युद्ध भूमि में पहुँच ते ही राजकुमारी ने सेना को प्रेरणा देकर तलवारों के वह हाथ दिखाये कि बड़े–बड़े युद्धों को जीतने वाली अनुभवी मुगल सेना के पग उखड़ गये। लोहा से लोहा टकराती वीर राजकुमारी मुगल सेना को पीछे धकेलती अकबर के खेमे तक पहुँच गई। राजपूतों ने सारा कैम्प घेर लिया। अपने सुल्तान को बचाने के लिये मुगल सेना के यौद्धा भी जी जान से युद्ध करने लगे परन्तु वीर राजपूत शीघ्र ही उन पर भारी हो

गये और इतना महान सम्राट एक राजपूत स्त्री से हार का कलंक मस्तक पर लगा कर पीछे भाग निकला।

राजकुमारी विजय के गीतों के मध्य दरबार में आई और राणा नित्य ही उसकी वीरता की प्रशंसा करता राजपूतों कोउस का उदाहरण देता रहता था। कुछ लोग इससे चिढ़ गये और उन्होनें राजकुमारी को विष देकर मरवा डाला।

1568ई. में अकबर ने इस पराजय का बदला ले कर अपनी खोई हुई नींद पुनः वापस लाने के लिये भारी सेना तैयार की और चित्तौड़ पर चढ़ आया।

उदय सिंह सामना करने की स्थिती में न था। उसने चित्तौड़ छोड कर 70 मील दूर पहाड़ों में उदय सिंह नगर बसा कर वहां राजधानी बना ली। परन्तु चित्तौड़ की रक्षा के हजारों हाथ प्रस्तुत थे। चन्द्रवंश के भूषण जैमल तथा फता एवं विज्जोली के सूद तथा धात का राय सूद सेना सहित आ पहुँचे। राणा कचवाहा सरदार सभी सेना सहित पहुँच गये।

जैमल पर दुर्ग की रक्षा का भार था और अकबर की भारी सेना के सम्मुख उसके सैनिकों की संख्या बहुत कम थी परन्तु एक शेर जंगल के जानवरों की संख्या देखकर गीदड़ नहीं बन जाता। साइ दास सूद ने जैमल के वीरता नेतृत्व पूर्ण तले प्राण देने सौभाग्य समझा।

अकबर की विशाल सेना ने मीलों तक खेमें का एक नगर बसा दिया जैमल ने दुर्ग द्वार बन्द करके स्थान–स्थान पर यौद्धे नियुक्त कर दिये।

1568ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण आति भयानक था। 28 हजार मुसलमान पठान, बलोच सैनिक भारी तोपों तथा बन्दुकोंसे सुसज्जित थें। उनके सामना के लिये कठिनता से आठ हजार राजपूत एकत्र किये जा सके थे। अकबर के भय तथा विवाह सम्बधों ने राजपूतों को कई भागों में बाँट रखा था।

## सूद वीरों का आगमन

तभी अचम्भा हुआ अकबरी लश्करों से सात मील ऊपर से चक्कर काट कर 500 सूद वीर सैनिक अपने सेनापति हरी सिंह सूद के अधीन दुर्ग में आ पहुँचे सूद केवल आए ही नही अपितु मार्ग में अकबरी लश्कर के एक रक्षक दस्ते से उसकी मुटभेड़ भी हो गई जो अकबर के बेटे मुअज्जम तथा उसके परिवार एवं अन्य शाही सदस्यों की सुरक्षित ला रहा था। इसी दस्ते से भीषण द्वन्द्व युद्ध करके मुअज्जम की बेटी तथा पत्नि को पालकी सहित चित्तौड़ में ला प्रस्तुत किया।

राजमहल में पहुँच कर हरी सिंह सूद ने महारानी को भेट के रूप में दोनों मुगलानियाँ प्रस्तुत की।

यहाँ भी राजपूतों की क्षत्रिय संस्कृति की सुन्दरझलक मिलती है। दोनों मुगलानियाँ महारानी चित्तौड़ को भेट की गई। किसी राणा अथवा सेनापति को नही। इससे अधिक अन्तर नारी की रक्षा भावना का दोनों धर्मो में और क्या समझाया जा सकता है। उस दिन दोनो मुगल शाहजादियाँ महारानी की व्यात्तिगत कैद में रही।

दूसरे दिन रानी ने उन्हें बुलाकर मुआजम की बेटी को आदर सहित पास बैठाया परन्तु उसकी माँ को

हुक्का भरने की आज्ञा दी। आज्ञा सुनकर नाजुक मुगलीनी बेगम बेहोश हो गई।

दूसरे दिन उसे पुनः बुलाकर वैसे ही हुक्का भरने की आज्ञा दी। इस समस तक मुआजम ने घेरा उठा लेना स्वीकार कर लिया था। अतः मुगल बेगम ने सन्धि के बाद चिलम भरने से आनाकानी की तो महारानी चित्तौड़ ने शेरनी की भांति डाँटते हुए उसका हाथ खींच कर चिलम उसके हाथ पर रख दी और क्रोध से उसकी ओर घूरा मूगल बेगम ने सहम कर चिलम भर तो दी परन्तु साथ ही सिसकी भरती हुई बोली, हमें दिल्ली पहुँच लेने दो फिर————————''??

फिर क्या करोगी तुम? महारानी कड़क उठी ''एक तो तुम मेरी कैद में हो और मेरे कैदी को छोड़ना मेरे अधिकार में है—महाराणा के नही—फिर तब यदि तुम्हारी स्थिती में मैं हूंगी तो चिलम भरने से तो मैं रही। अग्नि देवता की गोद में बैठकर उस अपमान जनक स्थिती से सुगमता से बच जायेगी''।

उधर मुगल शाहजादी तथा बेगम वापस लौटा दिये गये जिन्हे लेकर मुअजम कुछ सेना के साथ दिल्ली चला गया। परन्तु अकबर विचित्र हठ धर्मी तथा कृत्धनता का चोला पहन कर युद्ध भूमि में ही बैठा रहा और अपनी शर्ते प्रस्तुत करने लगा।

अगले दिन प्रातः तड़के ही मुगल सेना सिमट कर दुर्ग के एक द्वार पर एकत्र होने लगी। इसके साथ ही दुर्ग की दिवारो पर से गोलियों की बौछार आगे बढ़ने वालो की भूमिपर गिराने लगी। सांझ तक गोलियाँ चलती

रही और भारी गोला–बारी के बाद भी मुगल चित्तौड़ की दिवार न छू सके।

दूसरे दिन प्रातः पुनः भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस समस दोनों ओर भीषणता छा गई थी। राजपूतों ने दुर्ग के द्वार खोल दिये और साईदास सूद की अधीनता में तीरों की बौछार करते हुए बाहर निकले मुगल भी आगे बढ़े और दोनों परस्पर मिलकर बाहों से लड़ने लगे। अब तीरों का स्थान तलवारो भालों ने लिया। अकबर दुर्ग के भालों तथा तलवारों से भागते मुगलों का साहस बड़ाता हुआ अपने दस्ते के साथ आगे बड़ा। परन्तु मुगलों के पाँव उखड़ चुके थे।

सब से पहले सैयद जमालदीन के अधीन सेना ने भागना आरम्भ कर दिया। और देखते ही देखते मुगल सेना मीलों पीछे भागती चली गई। इस दूसरी हार से अकबर का जलाल और भड़क उठा। दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय पहले से ही भीषण आक्रमण कर दिया।

## घर की फूट

परन्तु जो कार्य तीस हजार मुगल तलवारे न कर सकी वह कार्य एक राजपूत के देश द्रोह ने कर दिया। जयमल के अधीन एक सेना अधिकारी जैमल की बेटी से विवाह करना चाहता था परन्तु उसने इस व्यक्तिगत कारण से चित्तौड़ जैसे पवित्र दुर्ग को मुगलों के हाथ बेच दिया।

वह अधिकारी अकबर से छिपकर मिला तथा उसे दूर्ग भेद दे दे कर दूर्ग की दिवारों को बारूदी सुरंग से उड़ा देना का परामर्श दिया।

# सूद सिंह को अकबरी घास

इस के साथ मिला लेने के साथ ही अकबर ने सूद सेनापति हरी सिंह सूद को भी संदेश तथा चेतावनी भेजी की चितौड़ तो विशाल शाही सेना के सामने गिर कर ही रहेगा। परन्तु सूद राणा हुमायूँ तथा अकबर के अच्छे सम्बंधों को ध्यान में रखकर यदि चितौड़ की रक्षा से हाथ खींच ले तो अकबर क्षमा कर देंगे और साथ ही साथ भारी जागीरें भी देगा। परन्तु हरी सिंह ने दहाड़ते हुए उत्तर दिया था की सूद सिंह राय अथवा लालच में आकर प्रण तथा कर्तव्य से कभी नही फिर सकते।

तो अब अकबर ने प्रसिद्ध मुसलमान इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार पाँच हजार लौहार, बेलदार, मिस्त्री तथा बारूदी सुरंगे बिछाने वाले लोग इस कार्य में लगाये जिन्होंने बसात (दुर्ग के साथ बारूदी सुरगों की दिवार) खड़ी कर दी और एक दिन राजपुतों की भारी संख्या की उड़ाती हुई वह सुरंग फट गई। दिवारें उड़ी और हजारों मुसलमान सैनिक वहाँ से दूर्ग में घुस पड़े।

भयानक संकट में सिंह और भी भयानक हो उठता है जीवन और मृत्यु की इस घड़ी में सूद, गुहल, झाला सभी राजपूतसाक्षात महाचण्ड़ी के दूत बन कर दुर्ग का लोह द्वार बन कर जम गये। फरिस्ता जैसे मुसलमान इतिहासकार ने लिखा है कि पन्द्रह मुख्य अधिकारी सैयद जमालद्दीन, मरदानकुली शाह आदि मारे गए और हजारों मुसलमान सिपाही धरनी पर तड़पने लगे।

अकबर का क्रोधी जलाल जाग उठा उसने तमाम सेना को एक साथ इन गिनती के राजपूतों पर आक्रमण करने की आज्ञा दी और घेरा उठा कर तमाम सैनिक इसी

ओर पहुँच गये। परन्तु मर मिट कर भी दुर्ग ना जीत सके साईदास सलमरा सूद ने तो विश्व के सब से बेजोड़ युद्ध को यहां लड़ा और पहाड़ी ढलान पर खडे होकर उसने सैंकड़ो मुगलों को मार गिराया अतः में धावों से चूर उसी पहाड़ी को रक्त से रंग का सो गया। यहां उसकी स्मृति में उसकी मूर्ति बनी हुई है जो आज भी पूजा के योग्य स्थल बनी खड़ी है।

## जयमल की मृत्यु

दूसरी रात जयमल दुर्ग की दीवार को बनवा रहा थी कि अकबर ने मिशाल के प्रकाश में किले की दीवार की ओर से निशाना साध कर गोली चला दी। रात को युद्ध एवं निहत्थे असावधान शत्रु पर वार करना वीरों का कार्य नही परन्तु वीरता की परम्परा वीरों के लिये होती है छली मक्कार कुटनीतिज्ञों के लिये नहीं।

गोली जैमल के माथे पर लगी और (मेरे चितौड़ की रक्षा करना) अपने वीरों को ऐसा आदेश देकर वह वीर सर्वदा के लिये सो गया।

अब चारों ओर नाश का राज्य था इसी अंधकार में आशा की विद्युत चमक उठी पाँच सौ वीर सूद सैनिक जिन के साथ कुछ राजपूत भी थे तुलसी की पत्तियाँ मुंह में दबाये तथा केसरी वस्त्र पहन कर जयमल की वीर रानी के सम्मुख आ खड़े हुए मुँह में तुलसी पत्र और केसरी वस्त्र यह साक्षात यमराज के दूतों का सैनिक दस्ता लगता था। तुलसी पत्र मुख में रखने का अर्थ होता है कि यह हमारा अन्तिम दिन है रानी रमाबाई ने तुरंत अश्रु पीछ लिये। केसरी साड़ी पहनी और घोड़े पर सवार हो कर दुर्ग से बाहर निकल गई गोरे शरीर पर केसरी

वस्त्र और दोनों हाथों में तलवारे तथा मुंह में घोड़े की लगाम.......साक्षात चण्डी सी वह राजपूत सिंहनी बिजली की सी गति से तलवार चलाती और मुगल सैनिकों के टुकड़े उड़ाती आगे बढती गई। पांच सौ वीर सिंह पच्चीस हजार मुगलों के वारो का उतर करारे वारों से देते हुए सैकड़ों को मार कर मरते गये।

मुगल सेना को यह चीरते हुए साहसी अकबर के कैम्प को तोड़ती फोड़ती घोड़ी सहित भीतर घुस गई परन्तु अकबर पहले ही पीछे भेज दिया गया था। अब घायल एवं थकान से चूर रानी अधिक रक्त बह जाने से बेहोश होकर गिर पड़ी।

जब होश आई तो वह अकबर के खेमें में थी अकबर थे उसकी वीरता की प्रशंसा की और अब भी अकबर की शर्तो पर सन्धि का प्रस्ताव रखा परन्तु रानी ने कड़क कर कहा जब तक एक भी राजपूत दुर्ग में है मुगल के सिर कटने बन्द नहीं होंगे।

अकबर ने एक घायल स्त्री को मार कर कलंक कमाना व्यर्थ समझकर उसे वापस जाने की आज्ञा दे दी। दुर्ग तक पहुँचते ही जौहड़ का निश्चय हुआ और रमाबाई के साथ सैकड़ों स्त्रीयाँ धधकती चिता पर जा चढी। शेष राजपूत अन्तिम युद्ध के लिये उन सतीयों की राख को प्रणाम करके दुर्ग से निकले। उनके साथ सुन्दर परन्तु एक योद्धा बालक था मानों अभिमन्यु पुनः धरती पर उतर आया हो। उसका नाम फता था। युद्ध के मैदान में इन राजपूतों ने तुफान मचा दिया परन्तु हजारों का सैकड़ों से सामना करना एक खेल से अधिक न थी और जब सब को समाप्त करके अकबर दुर्ग में पग रख पाया तो उसे

चिताओं से उठते धुएं के अतिरिक्त कुछ भी हाथ ना लग सकी।

हाँ एक हठी राजा का निर्मम हठ पूर्ण हो गया था।

## महाराणा प्रताप

परन्तु अकबर के भाग्य में रात की नींद भी न थी और नींद न लेने देने वाला राजपूत शिरोमणि हिन्दु पत रक्षक महाराणा प्रताप था।

हमने पीछे लिखा है कि चितौड़ के राणा बप्पा की संतान माता की ओर से प्रमार वंश की है। वैसे भी सूद राजकुमारियों के विवाह सम्बंध चितौड़ के राजवंश में प्रायः होते रहे।

राज्य का उपजाऊ भाग अकबर हड़प चुका था। सेना दुर्ग हथियार कुछ भी न था। तो भी ऐसे संकट के समय में यदि उसके सहायक एक और भील, मीना तथा झाला राजपूत आदि थे तो दूसरी ओर स्वंतत्र रियायतों में एक मात्र सूद थे जो सहायता पर आ पहुँचते थे उन्हीं दिनों मानसिंह जिस के पिता ने अकबर बेटी का रिश्ता देकर राजपूतों का सिर नीचा किया था अकबर की ओर से युद्ध लड़कर वापस जाते हुये राणा प्रताप से मिला। विद्वान पाठक जानते है कि किस प्रकार राणा प्रताप ने उसके साथ खाना खाने से इंकार कर दिया था और जिस प्रकार उसने जाकर अकबर को भड़काया तो हुआ यह कि अकबर ने लाखों शास्त्रों से सुसज्जित भारी मुगल सेना को अपने बेटे (जोधाबाई राजपूतनी से उत्पन्न सलीम राजा मान सिंह तथा प्रसिद्ध मुगलसेनापति महाबतखां

राजपूत का बेटा था) की अधीनता में आक्रमण के लिये भेज दिया।

लाखों के लश्कर का सामना करने वाले महाराणा ने अपने देशभक्त राजपूतों को संदेश भेजे रावत किशन सिंह, देवगढ़ का सिघावत राजा महेश्वर से सूद तथा किलवाड़ के सरदार वहां पहुँच गये। कुल सेना केवल मात्र बाईस हजार थी और लाखों से सामना था फिर उसके साथ ही तलवारे तथा भालों के अतिरिक्त कोई विशेष युद्ध सामग्री न थी जब कि अकबरी सेना बन्दुक तथा तोप जैसे वर्तमान हथियारों से लैस थी।

इतनी विकट स्थिती में कर्नल टाड के शब्दों में ''जितना बड़ा संकट होता था प्रताप का निश्चय उतना ही अटल हो जाता''था।

1576ई. के जुलाई मास के दूसरे सप्ताह लाखों हाथियों के झुण्ड के सम्मुख बीस हजार शेर जा डटे। इनमें स्वामीभक्त भील थे। झाला राणा की सेना थी कुछ राठौर मीन गुहल थे। बढ़ कर शूरवीर सूद थे।

अकबर की भांति प्रताप घन नहीं बैठे रहे अपितु सेना में सबसे आगे वीरों की ललकार से मुगलों पर बिजली की भांति गिरे। उनकी रक्त सी लाल आंखे देश द्रोहो मानसिंह को ढूढँती मुगल सेना की तलवारो से चीरती मुगल सेना के मध्य जा पहुँची। कुछ अंग रक्षक चारों ओर थे और था लाखों मुगलों के झुंड जो प्रताप के ध्वज तथा छत्र को देखकर सभी इसी ओर पलट आये। क्रोधी राणा की वीरता ने देखा ही नहीं कि वह भारी सारी शत्रु में घिरे खडे थे।

सामने मानसिंह तो महाराणा का निश्चय जानकर सेना के पीछे चला गया परन्तु सलीम का दुर्भाग्य सामने आ गया।

महाराणा ने अपने प्रिय घोड़े चेतक को एड़ी लगाकर लगाम खीची तो घोड़े ने अपने दोनों अगले पांव उड़ा कर सलीम के हाथी के मस्तक पर टिका दिये आज यह दृश्य वर्णित करते समय मुझे गुरू गोबिंद सिंह के शब्द स्मरण हो रहे है किः—

सवा लाख से एक लड़ाऊ तब गोबिन्द नाम धड़ाउ

प्रताप ने क्रोध पूर्वक अपना विष बुझा भाला सलीम की छातीपर फैंका परन्तु सलीम हौद के मध्य छिप गया और भाला महावत हाथी के हौद से टकरा कर गिर गया। उसी दशा में प्रताप ने गर्दन घुमाकर दूसरा भाला निकाल कर फैका और वह चिंघाड़ता हुआ निकल भागा और अकबर का इकलौता बेटा भारत पर राज्य करने के लिये राणा के हाथों से बच निकला। परन्तु अपने शाहजादे को राणा के हाथों मौत के मुख में जाते देखकर तमाम मुगल सेनापति अपनी सेनाओं के साथ राणा पर टुट पड़े।

विचित्र समय था घावौ से भरपूर रक्त में नहाये राणा घोड़े की लगामें मुंह में दबाये दोनों हाथों से अपनी ही लम्बी तलवारे निरन्तर चलाये जा रहे थे। मुगलों के सिर पर वार से सिर गेन्द की भांति उछल कर गिर रहे थे। राणा मानो हल्दीघाटी में ही प्राण देने को कृत संकल्प थे परन्तु राजपूत वीर इस स्थिति पर अत्यंत चकित थे। एक अंग रक्षक ने राणा के निकट घोड़ा ले जाकर कहा की अपना

झंडा गिरा दें ताकि तमाम मुगल एक आपकी पहचान कर आप पर ही न टूट पड़े।

परन्तु राणा ने तलवार घुमाते हुए क्रोध मे कहा किः–

'क्या राजपूत इस कायरता के प्राण बचाया करते है'

तभी एक वीर राजपूत की वीरता ने नये आयाम छूये।

झाला सरदार मन्ना जी मुगलों को चीरते हुए राणा के निकट पहुँच गये और बिजली की तेजी से राणा का राजसी छत्रअपने सिर पर धारण कर लिया। और तलवार चलाते हुये राणा से बोले ''आपका जीवन ही राजपूतों की आशा का एक चिन्ह है इसे बचा कर चले जाये''।

इसके साथ ही उसने तलवार के एक हाथ से राणा के घोड़े चेतक की पूंछ काट दी और एड़ी लगाकर उसे भगा दिया स्वयं वह वीर वहीं राणा बनकर स्वामी के लिये प्राण देकर अमर हो गया।

एक गोली प्रताप की जांघ में लग चुकी थी। तलवारों तथा भालों के छः घाव बह रहे थे चेतक भी काफी घायल तथा थकान में था। परन्तु अपने स्वामी को वह सुरक्षित उड़ा ले गया। पीछा करने वालों के पहुँचने से पूर्व ही चेतक ने राणा को एक ही छलांग में नदी पार कर एक चौड़े नाले के पार पहुँचा दिया। तथा वहीं गिर कर प्राण त्याग दिये आज भी वहाँ पर उसकी समाधि बनी हुई है।

इसके पश्चात राणा का भाई शक्ति सिंह ने प्रताप को मोह के कारण बचाया यह इतिहास में सभी स्थानों

पर वर्णित है। संक्षेप में सांगा को बीस हजार राजपूतों में जिसमें लगभग छः हजार सूद थे केवल आठ हजार व्याक्ति हो जीवित बच पाये और तीस हजार मुगल सेना उन वीरों के हाथों कट गई।

अब निरन्तर मुगल सेना राणा की खोज में लगी थी। राणा कुम्मलनेर पंहुचे यहॉ भी वही दशा हुई। यहाँ तक कि परिवार के साथ भटकते स्वंतत्रता देवी के इस अनथक पुजारी को कई बार परोसी हुई थाली छोड़ का भाला उठाना पड़ा।

एक बार इसी प्रकार पैंतीस हजार मुगलों ने एकाएक आ घेरा। राणा कठिनता से तीन हजार वीर एकत्र कर पाये और वह कारनामे किये कि आज के बडे–बडे सेनापति दांतों तले उंगली दबा लेते है। इस समय भी आबू के राणा देवराय सूद सेना सहित उनके साथ थे परन्तु यहीं देवराय बाद में किसी कारण रूष्ट होकर अकबर से जा मिला था।

## संकट में भी उदार हृदय

एक समय राणा प्रताप से उनका बेटा अमर सिंह युद्ध में बिछुड़ गया उसके साथ कुछ सूद, गुहल, सिसोदिया तथा भील सैनिक थे। उनका सामना रहीम खान की सेना से हो गया जो महाराणा प्रताप को पकड़ने के लिये अकबर ने भेजी थी। अमर सिंह ने मुगलों को मार भगया और खाना खान के परिवार (उसकी बेटी तथा पत्नि) को पकड़ कर राणा के सामने प्रस्तुत किया।

फटे वस्त्रों में भी राणा के चेहरे पर तेज था उनके सामने भूख थी संकट था और उसका कारण

मुगलसेना थी जिस के सेनापति की बेटी प्रताप के सम्मुख भय से कांप रही थी।

इस समय कासिम मुहम्मद गौरी, गजनी तैमूर और खिलजी आदि के समय को पाठक याद करें। राणा जब क्रोध से भरे उठे तो जंगल में वह शाहजादी अनिष्ट सेकांप उठी परन्तु राणा ने क्रोध किया अपने बेटे अमर सिंह पर कि हमारा युद्ध मुगल सेना से है–शहजादियों से नही जाओं इस बेटी को मान सहित वापिस सुरक्षित मुगलों तक पहुँचा दो।

इस दशा के विपरीत मुगलों और क्रोध से राणा को घेरते रहे एक बार राणा के साथियों की संख्या केवल पांच सौ रह गई चंविड़ा का दुर्ग छोड़ कर वह सूरज महल के किले में आ गये परन्तु घिर जाने पर मुगलों को चीरते निकल गये। अब परिवार तथा चन्द साथियों सहित राणा घने जंगलों में रहने लगे। खाने को फल–फूल पते के और उधर अकबर हठ था कि राणा को मेरे दरबार में अकबर सिर झुकाना परन्तु शेर घास खाने लगे यह नितांत असम्भव था तभी राणा के साहस पर भाग्य भी झुमता और राणा परिवार के पुराने दिवान भामा शाह महेश्वरी ने अपनी तमाम दौलत जो अरबों रूपये की थी राणा के चरणों में रख दी। और सेना पुनः एकत्र कर के राजस्थान को स्वतंत्र करने की प्रार्थना की।

इस समय राणा प्रताप आबू पर्वत के जंगलों में आश्रय लिये हुए थे उन्होंने तमाम सिसोदिया राजपूतों को ले कर सिन्धु प्रदेश में जहाँ सूदों का राज्य था जाने का निश्चय कर लिया था ताकि स्वंतत्र का युद्ध वहाँ से लड़ा जाये।

परन्तु अब राणा ने चारों ओर से सेना भरती करनी आरम्भ कर दी आबू, अमत वाड़ा महेश्वर को सूद जन्दावत राठौर, भाला के वंशज, भील तथा सिसोदिया सभी एक झंड़े तले एकत्र हो गये।इस सेना का पहला शिकार बना शहबाज खां अभी उसकी हार की सूचना कम्लनेर के मुगल कैम्प में पहुँची ही थी कि अचानक राजपूत हर–हर महादेव का नारा लगा कर उस छावनी पर भी कुद पड़े मुगल सेनापति अबदुल्ला तमाम सेना सहित मारा गया। इसके पश्चात राजा मानसिंह की राजधानी अम्बर पर प्रताप का कहर टूटा और सारा नगर लूट कर बर्बाद कर दिया गया तब उदयपुर जीता गया।

इस के पश्चात अकबर को राजस्थान की ओर आँख उठाने का साहस न हुआ।

## सूदों का काबूल जाना

यहाँ एक और घटना लिख दूं कि सरहिन्द उन दिनों मुगलों के अधीन था राजा मानसिंह को अकबर ने पठानों को दबाने के लिये काबुल का सूबेदार बना कर भेजा।

मानसिंह अकबर की सेना का सबसे शाक्तिशाली सेनापति था और यदि सलीम न रहता तो मानसिंह ही उस राज्य का हकदार था क्योंकि मां अकबर की पत्नि राजा मान सिंह की सगी बुआ थी और अकबर उसका फूफा था।

अकबर ने उसे काबुल इसी लिये भेजा था कि वह उसके शत्रु पठानों को नष्ट कर दे अथवा उनके हाथों स्वंय मारा जाये दोनों ही प्रकार से उसका लाभ था।

मान सिंह कदाचित इस स्थिती से परिचित था। उसने अपने साथ वीर क्षत्रिय राजपूत ले जाने का निश्चय किया।

काबुल जाते हुए मान सिंह सरहिन्द में इसी लिये रूका था कि वह यहाँ की वीर जाति सूदों को भारी संख्या में लेजा कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर ले।

यही प्रस्ताव उस ने सरहिन्द के सूद चौधरियों के सम्मुख रखा।

## सूद गौरखे वीर

उस समय सूदों की स्थिती वर्तमान गोरखों के समान ही थी सूद योद्धा जाति (Martial Race) माने जाते थे तथा सभी राजा राणा उन्हें अपनी सेना में भरती करने को उत्सुक रहते थे।

मुसलमान पठान तुर्क आदि से युद्ध करने के लिये तो सूद हर समय प्रस्तुत रहते थे।

अतः हजारों सूद रंग बिरंगें वस्त्र धारण करके ढाल, तीर, कमाल, तलवारे भाले आदि ले कर काबुल जाने के लिये प्रस्तुत हो गये। हजारों लोग उनके विशाल सेना का दल को देखने के लिये एकत्र हुए और इस प्रकार काबुल पहुँच कर इन्हों ने पठानों को भारी मार दे कर अधीन किया और जागीरें प्राप्त करके वहीं काबुल, हिरात, बलख आदि प्रदेशों मेब स गये। बाद में जब वहां से यह लोग वापस आये तो उन प्रदेशों के नाम पर इन की नई–नई गोते चल निकली यथा बलख के सूद बलखारिये कहलाए आदि।

इस प्रकार से सूद वंश का राजा जगमल हुआ और उसका बेटा कोलाराय हुआ जिस के समय में मुसलमानों ने हिन्दुओं की रही सही रियासतें भी हड़पनी आरम्भ की।

उधर अकबर ने जब देश कि सूद उसकी अधीनता स्वीकार कर के जयपुर जोधपुर नरेश की भांति युद्ध में सारा भारत जीत कर नही देते तो उसने बहावलपुरीयों, यौदयों, राठौरों तथा मारवाड़ों को संकेत कर के अमरकोट पर तीन भागों से आक्रमण करा दिया। परिणाम स्वरूप अमरकोट उजाड़ दिया गया राणा अमरकोट ने यहां से निकल कर चितौड़ के राणा के पास शरण ली जिस ने उसे चुरू के स्थान पर अढ़ाई लाख रूपये वार्षिक की आय वाली जागीर ही।

इसी आक्रमण के पश्चात कुछ सूदों चुरू में बस गये और शिकार एवं लूटमार करके समय व्यतीत करने लगे। यह चुरू नगर प्रसिद्ध सिन्धी सूद राजधानी अलौरा से लगभग पच्चीस मील दूर स्थित है।

## उच्च पदों की प्राप्ति

राजा मानसिंह के साथ जो सूद काबुल गये थे उन्होंने अफगानों को दबा कर राज्य में शांति स्थापित की तथा तीन वर्ष तक अफगानिस्तान का सुन्दर प्रंबध किया।

तीन वर्ष के पश्चात उन में से अधिकांश वापस आ गये तो इस सूद सेना को अम्बाला से व्यास तक के राज्य पथ की रक्षा का दायित्व सौंपा गया।

इस मध्य आगरा, लाहौर, पट्टी थानेश्र दिल्ली आदि में गर्वनर के उच्च पदों पर सूद ही आसीन रहे।

अकबर तथा उन के बेटे जहांगीर के समय सूदों की स्थिती एवं प्रभाव असीमित था।

तबकाते अकबरी तथा तुजके जहांगीरी में यहाँ तहाँ इन अफसरो का वर्णन मिलता है इसी आश्य को प्रकट करता एक दोहा सूदों के एक कविश्र (भाट) का इस प्रकार से लिखा मिलता हैः—

बधू काज करे सेवा सांवल के सर
नोरंग दे माइयर मालम हाकित दिल्ली थनेश्र
पटन में अर्थमल बधू आये
साका पटी केशो राय जस्पत समीर दूना
जोड़ा पहने ज़र कशी राजायों का सा तौर
शिव वधू आगरा नरपत फक्का तख्त लाहौर

बधू गोत के सूद राय सेवा, सांवल तथा केसर का वृतांत इसमें स्पष्ट हैः— नौरंग राय के बेटों माइयर तथा मस्लाराम सूद दिल्ली तथा थनेसर के गर्वनर थे परन्तु (पाकपटन) में अर्थमल वधू सूद सेना का अधिकारी था। साका पटी जो लाहौर सूबा का भाग था, में केशोराय सूद अधिकारी था। इसे नौ लाख पटी भी कहते थे क्योंकि यहाँ से नौ लाख का वार्षिक लगान दिल्ली के सुल्तान के शाही खजाना को प्राप्त होता था।

राय दूना मल एक उच्चधिकारी तथा प्रभावशाली सूद था जिसके विषय में प्रसिद्ध था कि बहू मूल्य वस्त्र, लम्बा चोला चुड़ीदार पजामा तथा मुल्यवान शाल धारण किया करता था तथा उसके वार्तालाप एवं चेहरे से राजाओं जैसा तेज टपकता था नरपत राय फक्का सूद लाहौर का प्रशासक था। शिव वधू आगरा का प्रशासक था।

इस प्रकार इस दोहे में जो सूद महानुभाव वर्णित है वह अकबर और जहांगीर के समय के प्रसिद्ध सूद अधिकारी थे। ऐसे ही अनेकों और भी थे।

1622ई. में जब शाहजहां ने राज्य के लिए अपने पिता के विरूद्ध विद्रोह किया तो उसका विश्वस्त साथी गुजरात का गर्वनर राय सुन्दर सूद ही था जो प्रायः राजा विक्रमादित्य के नाम से पुकारा जाता था।

जब शाहजहाँ ने दस हजार सवारों के साथ आगरा पर आक्रमण किया तो प्रशासक ने दुर्ग के द्वार बन्द करके शाहजहॅा को आगे बढ़ने अथवा पीछे हटने के अयोग्य कर दिया।

जब जहाँगीर लाहौर से सेना साथ लेकर विद्रोह को दबाने निकला तो ऊपर वर्णित लाहौर, आगरा पटी एवं थानेसर के सूद सेना अधिकारी उसकी सेना के साथ थे।

राय सुन्दर इस युद्ध में वीरता से लड़ता हुआ मारा गया फिर जब महावतखां ने रणथम्भौर दुर्ग से विद्रोह करके पांच हजार राजपूत सवार साथ लेकर लाहौर की ओर प्रस्थान किया तो उन पाँच हजार सवारों में सूद भारी संख्या में थे।

1622ई. में जेहलम के तट पर महावतखां के राजपूतों की टक्कर जहांगीर की शाही सेना से हुई। संख्या में अधिक होते हुये भी जहांगीर की सेना हार गई।

राजपूतों ने तुरन्त जहांगीर के कैम्प पर आक्रमण किया और रक्षकों को मार कर सोये जहांगीर को जा घेरा और हाथी पर बिठा कर उसे उसी के विद्रोही सरदार के

सम्मुख ला खड़ा किया। नूरजहाँ भी अपने पति के साथ बन्दी बन गई। काबुल पहुँच ने पर नूरजहाँ ने अत्यंत चतुराई से शहनशाह कझै स्वतंत्र कराया और मुस्लिम सेना को साथ मिला लिया जिससे महावतखां हार गया।

शाहजहाँ ने पुनः विद्रोह किया और उदयपुर के राणा ने महाबत खां को उकसा कर शाहजहाँ से मिला दिया एव। राजपूतों की सहायता भी दी।

अर्थात् सूद भीतर और बाहर से भारत से मुसलमानी राज्य समाप्त करने के लिये चतुरता एव। धैर्य से प्रयत्नशील रहे और कोई भी अवसर हाथ से जाने न दिया। 28 अक्तूबर 1627 में जहाँगीर की मृत्यु हो गई और शाहजहाँ के लिये सिंहासन के द्वार खुल गये। अपने सहायक राठौर, सूद, गुहल राजपूतों को जागीरें तथा उच्च पद दिये।

इस प्रकार तीन सौ वर्ष पूर्व भी सूदों का प्रभाव एव स्थिति सुदृढ़ थी परन्तु शाहजहाँ के पश्चात औरंगजेब के समय में उसकी कठोर हिन्दु विरोधी नीति के कारण सूद तीन प्रमुखहिन्दु नायकों शिवाजी, वीर छत्रसाल तथा गोकुल, राजा राम और वीर चूड़ामणि की सेवा में चले गये। औरंगजेब ने हिन्दु दिवानों को निकाल दिया। सोम नाथ मन्दिर मथुरा का प्रसिद्ध केशव देव मन्दिर तथा बनारस और उज्जैन के मन्दिर गिरा दिये गये। जचिया पुनः लगा दिया गया इस प्रकार मथुरा में 20 हजार हिन्दु वीर विद्रोह के लिये उठ खड़े हुए तो 1672 में सतनामी हिन्दुओं ने विद्रोह कर दिया स्थानीय सूदों सैनिक अधिकारी जो औरंगजेब को छोड़ चुके थे की सहायता से नूरमहल का मुसलमान फौजदार साथियों सहित मारा गया। सतनामीयों ने अपनी सरकार कायम कर ली और

सूदो को उच्च सैनिक पद दिये अन्य राजपूत तथा जमींदार भी मिले। अतः में भारी मुगल सेना ने आकर हज़ारों जाने देकर ही उन्हें क्रूरता से दबाया।

दूसरी ओर दुर्गा दास राठौर के नेतृत्व में विद्रोह की चिंगारी सुलग रही थी। राणा अजीत सिंह राठौर से चितौड़ के राणा ने राज परिवार की कन्या का विवाह करके तमाम राजपूतों को अत्यंत चतुरता से संगठित कर दिया। महाराणा राजसिंह स्वयं हिन्दु की विकट दशा देखकर उन से आ मिले। सूदों के लिये इससे अच्छा अवसर कौन सा था। कोटा बूंदी चितौड़ घात अमरकोट के सूद इस सेना में आ गये यहाँ तक कि औरंगजेब का बेटा अकबर भी राजपूतों से मिल गया।

कई युद्ध हुए परन्तु हार–जीत का निश्चय न हो सका औंरगजेब ने दक्षिण बंगाल, गुजरात आदि से तमाम सेनापतिबुला लिये और लाखों सैनिक हजारों राजपूतों के विरूद्ध झोंक दिये। यह युद्ध तब तक चलता रहा जब तक कि भारत से मुगल राज्य समाप्त न हो सका और औरंगजेब के वंशज कभी चैन से नहीं बैठ सके।

औरंगजेब के उत्तराधिकारी अत्यंत अयोग्य निकले जब मुहम्मद शाह रंगीला राज्य था तो मुगल राज्य को सब से बड़ी चोट अहमद शाह अब्दाली ने लगाई और दिल्ली को लूट कर दिल्ली का तमाम खाजाना अपने साथ ले गया।

अहमद शाह अब्दाली के बाद मुगल राज्य नाम मात्र ही रह गया था। तमाम सूबेदार स्वतन्त्र हो उठे गुजरात में सर बुलन्द खां स्वतंत्र हो उठा। उसी को दबाने के लिये सूद सेना साथा लेकर अभय सिंह गुजरात

पहुँचा। उसे हरा कर सूद जागीरे ले करके वही बस गये। धर्मदास सूद जो पहले दिवान था गवर्नर बन कर कई वर्ष तक गुजरात पर राज्य करता रहा जिस का वृतांत कही पीछे भी दिया जा चुका है।

## सूदों का वंश विकास

पीछे कासिम के आक्रमण के समय तक हमनें वंश का विकास वंशावलि लिखकर दर्शाया था जिसमें दाहिर तक का वृतांत स्पष्ट दे दिया गया था।

राजा दाहिर के दो बेटे थे। जिनका वंश विस्तार इस प्रकार से हुआ।

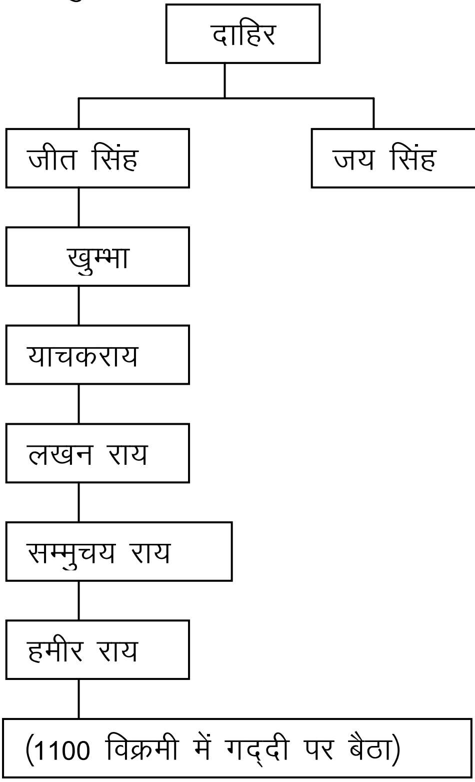

हमीर राय

अरि सिंह

शक धवज

कला धवज

अन्न धवज

बेरि धवज

यज्ञ

त्रिहर

बज्र सूद

जलराय सूद

शल्य

मुण्डराय

कान्हराय

कान्हराय

तन्मोज राय सूद

गन्धाल

थलपत

धुन्ध !

राय प्रसाद(इसी के महल में हूमांयू ने शरण ली तथा1542ई. में अकबर का जन्म हुआ)

चन्द्रराय (बलोच तथा दोद पोत्रों के आक्रमण केसमय गायब हो गये फिर पता नहीं चला)

यहाँ इतना कह दूं कि यह एक ही बेटे की वंशावलि है भिन्न–भिन्न राजकुमारों के विभिन्न वंशों की शाखये में अलग–अलग वंशों में राजा भोज, श्री जगदेव, राणा, कोलाराय आदि अनेकों राजपूत हुये संक्षेप में अकबर के समय तक की वंशावली ऊपर दी गई है।

## सिख राज्य और सूद

नादिर शाह के पश्चात अहमद शाह अब्दाली ने भी उसी मार्ग पर चलते हुये भारत की ओर मुँह किया। मुगल राज्य की कमर नादिर शाह के समय में टूट गई

थी। सिन्ध से भारी अफगान सेना के साथ वह बढ़ता हुआ सुदानपुर अर्थात् सरहिन्द तक आ पहुँचा। बादशाह रंग में मस्त हो था और मन्त्रियों तथा अमीरों के हाथों कठपुतली था। नित नये षड़यन्त्र तथा हत्याएं मुगल दरबार में साधारण खेल चुका था। मराठे उन दिनों उन्नति के उच्चतम शिखर पर थे।

सरहिन्द में नवाब ने स्थानिय जनता विशेषकर सूदों को एकत्र किया तथा अहमद शाह अब्दाली को भगा दिया। परन्तु आपसी झगड़ों के कारण मंत्री सेनापति तथा शहज़ादा चन्द ही दिनों में समाप्त हो गये।

अहमद शाह अब्दाली पुनः सेना एकत्र करके आ पहुँचा दिल्ली पर अधिकार कर लेने के लिये अब्दाली ने मराठों को पानीपत के तीसरे युद्ध में हरा दिया और दो लाख मराठों के मारे जाने पर तथा दिल्ली मुगल राज्य के दिल्ली की सीमा में ही सिमटकर रहजाने के कारण सारा भारत राजहीन एवं गड़बड़पूर्ण अशांत राष्ट्र बन कर रह गया जिसका लाभ उठाकर अंग्रेजों ने 1757 में प्लासी के युद्ध में नवाब शुजाऊदौला को हरा कर बंगाल पर अपना प्रभाव जमा लिया नादिरशाह के आक्रमण के समय रामलाथर सूद थानेदश्वर का गर्वनर था।

मराठों की हार के पश्चात वह वहां से लुधियाना आ रहे और यहीं उसके वंशज वहां से कई प्रदेशों में फैल गये।

सन् 1700 में अदीना वेग द्वाबा का गर्वनर था। तो उसके दिवान तथा सेना अधिकारी महताब राय थे। उसकी संतान में हरिदास राय, गुरदास राय सूद आदि भी दिवान रहे।

जब जस्सासिंह आहलुवलिया ने सिखों की 12 मिसलों के साथ मुसलमान पर भीषण आक्रमण किये तो अदीना वेग सिखों के हाथों मारा गया। उस समय उसका बेटा यह कहकर खिसक गया की मैं सहायक सेना लेकर आता हूँ और जाकर जम्मू में बैठा रहा।

उस समय भी सूद दिवान ने वीरता पूर्वक युद्ध जारी रखा जब तक कि सब समाप्त न हो गये।

इसी प्रकार मराठों के प्रसिद्धि दिवान सुल्तान सिंह सूद थे जिनकी संतान में मेदिनीराय और इसका बेटा नारायण राय भी थानेश्वर और कन्खल प्रदेश के शासक नियत थे।

इसी प्रकार अगंद राय ''मायर'' सूद लाहौर के प्रसिद्धि सेना अधिकारी थे।

## सूदों का पहाड़ों में जाना

अहमद शाह अब्दाली ने सात बार सरहिन्द पर आक्रमण किये परन्तु उसके जाते ही सरहिन्द फिर उसके हाथ से निकल जाता सारा नगर लूट खसोट के कारण नष्ट हो गया और उसके निरन्तर के आक्रमण से तंग आकर सूद शिमला, कुल्लू, कांगड़ा आदि हिमालय के पर्वतीय स्थानों पर जा टिके यहाँ तक कि राज्य को उनके नगर छोड़ने पर रोक लगानी पड़ी। एक मुसलमान सन्त ने अपनी शक्ति से नगर के बचाव का विश्वास दिया। यह पहाड़ों में बसकर पहाड़ी सूद कहलाये तथा 12 गोतों पर आधारित थे। बाद में नई–नई बनती गई।

# गुरू गोबिन्द सिंह एवं सूद

गुरू गोबिन्द सिंह के साथ ही जागरण का एक नया युग आरम्भ हुआ।

सम्वत 1751वि. में वेशाखी के दिन आनन्द पुर साहिब में हजारों की भीड़ में गुरू गोबिंद सिंह जी ने आबू पर्वत के यज्ञ का एक दूसरा रूप पुनः उपस्थित किया और पांच शिष्यों को दीक्षित करके उन्हें अमृत चखा कर ''पँच प्यारों'' को धर्म तथा जाति की रक्षा के लिये तैयार किया। परन्तु शत्रुओं की प्रबल बहुसंख्यक सेना के सम्मुख तथा अपने ही राजपूत राजाओं की शत्रुता के कारण गुरू जी को प्रदेशों पर प्रदेश छोडकर भटकना पड़ा परन्तु महाराणा प्रताप की भांति ही चारों बेटों का बलिदान देकर तथा अनेकों संकट सह कर भी मुसलमानों के आगे सिर न झुकाया इसी मध्य चमकौर साहिब के युद्ध के अवसर पर गुरू जी ने एक रात एक सूद घराने में शरण ली थी। और उनके निकल जाने का प्रबन्ध सूद परिवार ने किया गया।

परन्तु शीघ्रता में उनकी माता तथा दो बेटे पीछे रह गये जिन्हें उनके नौकर ने विश्वासघात करके सरहिन्द के मुसलमान गर्वनर को सौंप दिया। और मुसलमान न बनने पर उन अबौध शिशुओं को दिवार में चुन दिया गया।

# चौथी बार सरहिन्द छोड़ना

गुरू जी के बच्चों का बदला चुकाने के लिये बन्दा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने सरहिन्द में सर्वनाश का समय बांध दिया। सूद चौधरियों का एक शिष्ट मंडल जाकर सिख नेताओं से मिला और हिन्दु आबादी की सुरक्षा की और ध्यान दिलाया।

सरहिन्द को खंड़हर बना देने से कम में सिखों का क्रोध शांत नही हो सकता था अतः सूद परिवारों को सिख प्रदेशों में बसा दिया गया। जस्सासिंह तथा अन्य जागीरदारों के दिवान बनकर सूद पूर्ववता रहने लगे। कई परिवार राजा आल्हा सिंह के राज्य में बस गये।

सेफाआबाद (बहादर गढ़) तो उन का मुख्य गढ़ बन गया। शीघ्र ही पटियाला से दस मील के भीतर सूदों की भारी संख्या आबाद हो गई। मोंरिडा मछीवाड़ा, सगंरूर, मोगा तथा पड़ोस के सैकड़ों गांव में सूद फैल गये। इसी प्रकार जालन्धर के पास फिलौर, नूरहमल तथा कोटकपुरा, जीरा माखू मलसीयां आदि स्थान पर भी सूद जा बस। इस समय तक उन्ही ने क्षत्रियों के कर्म नहीं छोड़े थे और सेनाधिकारी, दीवान तथा राज्य प्रबन्धमें उच्च पदों पर लगे हुये थे परन्तु अब राज्य समाप्त हो जाने पर मुख्य सूद परिवार सिख जागीरदारों एवं मिलसरदारों के दिवान आदि बन गये और शेष ने गांव में बस जाने के कारण दुकानदारी आदि का काम आरम्भं कर दिया इस प्रकार सूद चौथी बार मुख्य रूप से उजड़ कर पुनः बस गये।

यहक्रम इस प्रकार से हैः–

1. पटन से गृह युद्ध के बाद निकले।
2. कासिम के आक्रमण के बाद बिखर गये।
3. सरहिन्द, अमरकोट के उजड़ जाने पर।
4. अब सरहिन्द से बाहर निकलना।

बस 1750ई. तक के समय का एक मानचित्र पाठकों के सम्मुख आ गया है।

## सिख और अंग्रेज़ी राज्य में सूद

महाभारत में लिखा हैः–

आराजकेषु राष्ट्रेषु धर्मो न व्यवतिषृते
परस्परं च खादन्ति सर्वथा धिगराजकम्
न धनार्थो न दारार्थस्तेषांये षासरा ज़कम
व्रीयते हि हरन्पापः परवित मरा जके
तदा३अस्य अद्धरन्त्यन्ये तदा राजनमिच्छति
पापाधपि तदा क्षेमं न अभन्ते कदाचन
एकस्य च द्वौ हरतो द्वयोश्र बहवों परे
अदासः कियते दासौ ह्यियन्ते च बलास्त्रिय यः
एतस्मात्कारण देवा प्रजापालन चाकिरे
(महाभारत)

अर्थात् जहाँ राजा नहीं होता, वहाँ धर्म नही ठहरता और लोग एक दूसरे को खाते है। राजा से हीन लोग अपने धन तथा स्त्री का उपभोग नहीं कर सकता दुष्ट दूसरे का धन छीनते स्त्री हरण करते तथा दास बनाते है फिर उन्हें फिर और शक्तिशाली खा जाता है। इसी लिये प्रजापालक (राजा) की व्यवस्था की गई आदि।

कहने का भाव यह कि जब हर छोटा जागीदार दस घुड़सवार रख कर स्वयं में राजा बन बैठा था। नये–नये सरदार प्रजा के नित कर उगाहते फिरते थे। नित के युद्धों में फसलें नष्ट हो गई थी तथा कार्य बन्द था। रक्षा हीन बीमारी, बेकारी, भूख बढ़ रही थी उसी समय जन–जन ने एक शक्तिशाली केन्द्रीय राजा तथा दण्ड देने के योग्य प्रतापी राजा की आवश्यकता अनुभव की।

उसी समय सुकरचकिया मिसल के संस्थापक चतर सिंह के बेटे महांसिंह के सपुत्र रणजीत सिंह का पंजाब में उदय हुआ। और सारे संयुक्त पंजाब हिमालय के मध्य एवं काश्मीर तक एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना करके जन–जन को अराजकता एवं अशांति से मुक्ति दिलाई।

इस समय सूदों को पुनः अपनी योग्यता, वीरता तथा कुलीनता दिखाने का अवसर मिला।

इश्वरी सिंह सूद रंजीत सिंह की सेना का उच्च अधिकारी तथा शाही टकसाल का अधिकारी रहा। श्री गुरमुख राय सूद महाराजा के विशेष प्रतिनिधी तथा परार्मश दाता थे। इस के आतिरिक्त दिवान आत्माराम ''तेजी'' सूद सिखों के उत्थान काल के प्रभावशाली व्यक्ति थे और जिला फिरोजपुर मे गुरू हरसहाय के स्थान पर रहने वाले थे। इतना ही नहीं हर बड़े जागीरदार एवं सरदार के पास सूद दिवान अहलकार एवं सेना में भारी संख्या में कार्य करते थे।

इस के अतिरिक्त महाराज की सेना में एक विशेष सैनिक ''दस्ता'' था। इस में सूद ही सैनिक तथा अफसर

थे जिस प्रकार गोरखा, डोगरा अथवा सिख रजीमेंन्ट अंग्रेजी सेना में थी।

सूद रसाला का सेनापति केसर सिंह सूद महाराज के अत्यंत विश्वसनीय अधिकारी थे तथा इस रजीमंट ने अत्यंत महत्वपूर्ण सैनिक मुहिमों में भाग लिया था। इस रेज़ीमेंट के मुख्य अधिकारी निम्नलिखित थे। इस सरदार केसरी सिंह सूद पटियाला वाले मेजर के बराबर पदवाले रसाल दार हीरा सिंह झब्बाल (अमृतसर) थे।

रसालदार ज्वालासिंह सूद रसूल पुर वाले जमादार प्रतापसिंह सूद ढ़ोटियां ''अमृतसर'' वाले। जमादार देवी दित सूद तारखेड़ी वाले। जमादार गन्ड़ा सिंह जव्वाल अमृतसर वाले।

स्मरण रहे कि सेना में अंग्रेजी पद बाद में आये और जमादार तथा रासालदार सेना में उच्च तथा प्रतिष्ठत पद गिने जाते थे।

इसी प्रकार गुप्तचर विभाग के सूद अधिकारियों में लाला साहब दयाल ''पक्का'' सूद शेखपुरा वाले तथा हुकमचन्द दोसाझां फगवाड़ा वाले प्रमुख थे। जालंधर और होशियार पुर के गर्वनर धन्ना सिंह के दिवान भी सूद थे।

पंजाब के अंगेजी राज्य में चले जाने के कारण आधे से अधिक सैनिक तथा अधिकारी अंग्रेज़ो की सेना में चले गये परन्तु कुछ बहुत से सैनिक फिरंगी राज्य की सेना में काम करना अर्धम समझ कर अपन–अपने घरो को चले गये तथा आजीविका के अन्य साधन अपना कर रहने लगे।

# अंग्रेजी राज्य में सूद

20 मार्च 1819 में रंजीत सिंह की अंग्रेजों से सन्धि हुई जिस के परिणाम स्परूप सतलुज नदी महाराजा की सीमा नियत हो गयी और इस प्रकार लुधियाना इस ओर अंगेजो की पहली महत्वपूर्ण सैनिक छावनी बन गया। लुधियाना मे सूद भारी संख्या में विद्यमान थे और मुख्यतः दोसांझ तथा मंड़ल गोत के थे अंग्रेजो की दुदर्शी दृष्टि से सूद रक्त ओझल न रहा और उन्होनें पद तथा आदर देना आरम्भ किये।

ला. राजा राम दोसांझ लुधियाना के चौधारी तथा प्रभाव शाली व्यक्ति थे इन्हीं के सपुत्र मुन्शी धनी राम को कैथल के अंगेज रैजीडेन्ट का दिवान नियत किया और टहल सिंह सूद को थानेदार नियत किया गया अन्य सूदों को भी अच्छे पद दिये गये। इसी प्रकार जब सारा पंजाब अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित हो गया तो सूद महानुभाव ने हर स्थान पर अपनी योग्यता के प्रभाव से उच्च पद ग्रहण किये।

अंग्रेजों ने भारतीयों के लिये एक विशेष सीमा के ऊपर का अफसर न लगाने की नीति अपना रखी थी और विशेष पदों पर न केवल अंग्रेजों को ही लगाया जाता था अपितु उस सीमा के अतः तक सूद भारी संख्या में पहुँचा चुके थे और कम जनसंख्या की दृष्टि से यह अनुपात काफी अधिक था इस के अतिरिक्त सूदों ने भारी मात्रा में जीमीदारी जागीरे आदि बनाई। राय बहादुर के पद आबादी की दृष्टि से इस जाति सब से अधिक प्राप्त किये।

मुख्य तथा प्रसिद्ध अधिकारियों में राय बहादुर पोहलो मल सूद एकस्ट्रा कमीश्नर 864ई. में भारती हुये थे। रा. बहा. मूलराज एम. ए. सैसन वज रहने के बाद 1879 ई. अकस्टा असिस्टेन्ट कमिश्नर बने।

रा. बहा. शिवदयाल सूद सुपरइनटेड़िग इन्जीनियर बने। राय बहादुर राम नाथ फक्का डिप्टी कलेक्टर रहे। राय बहा. काशी राम एक. असी. कमीश्नर, फगवाड़ा बाले तहसीलदार ला. किश्न चन्द सूद ला. सुखदयाल आदि तहसीलदार तथा रूप चन्द सूद जम्मू रियासत में मन्त्री रहे। हीरा लाल दोसांझ, डा. किश्न चन्द सूद, डा. जगन्नाथ सदू कृष्ण तथा डा.गणपत राय प्रसिद्धि डॉक्टर रहे यह उस समय की बात है जब की भारत में अंग्रेजी राज्य धीरे–धीरे छाता जा रहा था और उन दिनों में 1857 के बाद अंग्रेजो को भारतीयों की योग्यता का विश्वास नहीं बैठ रहा था। अभी अंग्रेजी बहुत कम जनता तक पहुँची थी और अशिक्षा के ऐसे विकट समय में भी सूद नाम के अर्थो को साथक्र करते हुये सुगमता से ऊपर उठ रहे थे।

## 1857 का स्वतंत्रता संग्राम

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कुछ विचारणीय बाते यह है कि प्रथम तो इसका सूत्र पात मेरठ, लखनऊ, झांसी तथा ग्वालियार आदि अर्थात यू. पी. मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र के लोगों ने किया था। पंजाब ने इस में भाग लिया सही परन्तु पूर्ण सूचनाओं अफवाहों सम्पर्क एवं सूचना के अभाव के कारण पंजाब के लोग अंग्रेजों द्वारा फैलाई अनेकों भ्रांन्तियों का शिकार हो रहे थे।

उनमें अफवाह थी कि यह विद्रोही फ्रांस और उन के राज्य को भारत में स्थिर करने के लिये मुठ्ठीभर लोगों

ने किया है तथा यह युद्ध पिंड़ारे आदि लूटेरों ने कराया है एवं हिन्दु तथा मुसलमानों को भी अनेको प्रकार से भ्रन्ति में रखा गया।

इसी कारण अंग्रेजी सेना में सूद सैनिक अधिकारियों ने मुख्यतः शेष पंजाब की भांति ही अंग्रेजो का साथ दिया। हालाँकि जलियाँवाला के युद्ध में उन्होनें अंग्रेजो के विरूद्ध सिखों की ओर से भारी वीरता दिखाई थी।

ऊपर स. जयसिंह का वर्णन किया गया है। पंजाब कैवलरीअर्थात् तोपखाना के अधिकारी थे। उन्होंने सीमा प्रान्त के अनेकों युद्धों में वीरता दिखा कर अनेकों प्रशंसा पत्र प्राप्त किये जनरल लारैस तथा बाटसन आदि सेनापति से भी आप ने प्रशंसा पत्र प्राप्त किया जरनल लारैंस तथा बाटसन आदि सेनापति भी आपकी प्रंशसा करने पर विवश थे।

जब विद्राही दिल्ली पर अधिकार किये बैठे थे तो उस समय नाजुक स्थिती में आप ही तोपखाने के साथ दिल्ली खाली कराने के अभियान मे मुख्य देसी अफसर थे। लखनऊ में जब विद्रोह फैला तो भी यह जय सिंह जरनल बाटसन के युद्ध में सम्मिलित हुए। जेम्स होंप सेनापति तोपखाने विभाग लखनऊ तथा सर कैम्पवैल मुख्य सेनापति ने इस वीर सूद सैनिक अधिकारी की पूरी प्रशंसा की।

विद्रोह शांत होने पर इन्हे चौथे रेजी़मेंन्ट के सेनापति नियुक्त करके अवध भेज दिया गया। भडौच प्रदेश में इसे 26 गांव जागीर रूप में दिये गये। जागीर और पैन्शन दी गई। 1867 में इन की मृत्यु पर इन के

सपुत्र हीरा सिंह ने पिता की भांति ही वीर सैनिक जीवन आरम्भ किया। 1857 के विद्रोह के समय वह जमादार के पद पर थे। इस के बाद झट से तहसीलदार नियुक्त किया गया।

1857ई. में दिल्ली तथा लखनऊ में विद्रोह भड़कने पर आप उस समय युद्ध में लड़े तथा वीरता के कारण Order of merit प्राप्त किया फिर चीन के विरूद्ध अभियान में आप सम्मलित हुए।

अपने पिता की मृत्यु पर आप ने सेना से त्याग प्रत्र दे दिया तथा अवध में अपनी जागीर के प्रबंध में व्यस्त हो गये। आप ने भड़ौच जिले के आठ हजार बीद्ये भूमि खरीद कर अपनी जागीर और बढ़ा का राजा का पद पाया। तथा राजा हीरा सिंह के नाम से प्रसिद्ध हुए।

## स्वाधीनता संग्राम और सूद

इस में कोई संदेह नहीं कि एक सैनिक होने के नाते सूद सैनिक अधिकारीयों ने अपनी राज्य भाक्ति का प्रमाण देते हुए 1857 में अंग्रेजों की अपार सहायता की तथा युद्ध कोष में भी भाग डाला। वह सैनिकों का सैनिक धर्म था। पंजाब तो लगभग तमाम ही अंग्रेजों का साथ दे रहा था।

तो भी अंग्रेजों द्वारा फैलाई गई कई गलत धारणाओं के विपरीत सूदों ने अनेक स्थानों पर अपनी देश भाक्ति तथा स्वाधीनता के लिये बलिदान के अत्यंत के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जिन में से एक का वर्णन यहाँ उदाहरण के रूप में करता हूँ।

मेरठ से विद्रोह करके सैनिकों ने तमाम कैदी छुड़ा लिये और शस्त्र लेकर विद्रोह की ज्वाला सुलगाते हुये हरियाणा का चक्कर लगा कर दिल्ली पहुँचने का निश्चय किया। जबवह सैनिक जिन में यू. पी. के लोग अधिक थे। लुधियाना पहुँचे तो उन्होंने लुधियाना नगर से बाहर किले पर अधिकार करके वहां रात बिताई। उस समय स्थिती बड़ी भयंकर थी।

सैनिकों के पास भोजन के लिये कुछ भी न था। दो दिन के भूखे सैनिकों को दाम देकर भी सप्लाई नहीं मिल रही थी। सरकार का आंतक चारों और था।

ऐसे समय में कुछ सूद नागरिकों ने छिप कर भुने हुये चनों की पचास बोरियां घोडो पर लाद कर छिपते दुर्ग में पहुँचाई तथा सैनिकों को भोजन देकर उन्हें आगे बढ़ने तथा युद्ध को जारी रखने के योग्य बनाया।

जब विद्रोह दबा दिया गया तो अंग्रेजों में इस घटना की जाँच कराई तथा रसद पहुँचने के भागे सूद परिवारों को कड़े दंड दिये गये उनकी बस्तियाँ उजाड़ दी गई और वहाँ से निकल कर मालीगंज आदि अनेकों नये मुहल्लों में आकर बस गये कई परिवार नगर छोड़कर कहीं अन्य चले गये। इस प्रकार यदि कुछ सूदों के हाथी ''कर्तव्य के कारण'' कुछ क्षति हुई तो दूसरी ओर इन महान परिवारों ने स्वयं नष्ट हो कर उसका प्रायश्चित भी कर दिया।

# उन्नीसवी शताब्दी में सूद

उन्नीसवीं शताब्दी में सूद बिरादरी बिखरे हुये रूप में सुगठित हो रही थी। जहाँ दो चार घर सूदों के होते थे। वहीं यह छा जाते थे।

श्री लख्खू मल नश्हरा पनवां जिला अमृतसर के प्रसिद्धि एवं प्रभावशाली महानुभाव थे 1805 ई. में खाण्डव राय मरहटाअंग्रेज जरनैल लार्ड लेक से हार कर पंजाब की ओर भाग आया तो वह नश्हरा पनवां में आ कर रात में रूका था। वहां ला. लख्खू मल सूद ने उसे खाना एवं अन्य आवश्यक वस्तुऐं लाकर दी 1834ई. में दयाल सिंह सूद ने अकाली फूलासिंह प्रसिद्ध सिख जरनैल के साथ पेशावर के पास आजम खां के साथ हुए युद्ध में भारी वीरता का प्रदर्शन किया और वीरगति को प्राप्त हुआ। महाराजा रणजीत सिंह ने उसके स्थान पर उसके सपुत्र मानसिंह को घुड़सवार सेना में भरती किया।

1848 में जय सिंह सूद फ्रांसीसी सेना से अंग्रेजी सेना में भरती हो गये। लार्ड लारेंस की सेना में वह तोपखाना के अफसर नियत हुए। सर हेनरी आदि अधिकारियों ने इसकी योग्यता तथा वीरता की प्रशंसा की है।

1855ई. में जब पंजाब का पतन हो कर अंग्रेजी अधिकार में जा चुका था तो, सरदार ईशर सिंह सूद पहल व्यक्ति था जिसे लाहौर में आदरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। इसके मुन्शी साहब दयाल सूद महाराजा ''सुलतान'' के यहां अधिकारी रहे और रण्जीत सिंह की रानियों को पैन्शन दिया करते थे। बाद में 23 वर्ष फिरोजपुर के अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर के अधीन रहे।

इसी प्रकार उन्नीसवी शताब्दी के अतः में तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक सूद समय के साथ निरन्तर बदलते आगे बढ़ते चले आ रहे थे। परन्तु इसके विपरीत इस वंश में अनेकों कुप्रथाएं चली आ रही थी अशिक्षा, अन्धविश्वास तथा कुरीतियां, सती, विधवा विवाह की आज्ञा न देना, धर्मकाण्ड तथाधर्म के नाम पर छोटे–छोटे मतों का प्रभाव भी सूद वंश पर पड़ रहा था। मुख्यतः सूद उन्नत पथ पर थे और शिक्षा का प्रभाव भी सूद वंश पर पड़ रहा था परन्तु यह प्रायः मध्य निम्न वर्ग तथा पिछड़े दूर प्रदेशों के सूदों में ही नात मुख्यता थी और शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ सूद भी अपने उन्नत सूद भाईयों के साथ–साथ जागृत हो कर ऊपर उठते जाते थे। यहाँ तक कि बीसवी शताब्दी के आरम्भ में ऐसे अमुल्य रतन चमक कर सम्मुख आये कि भारत की आंखें चुधियाँ गई। इन में राष्ट्रीय नेता ला. दुनी चन्द अम्बालवी प्रसिद्धि न्याय शास्त्री जस्टिस जिया लाल सूद प्रसिद्धि दानी एवं व्यापारी ला. रा. बहाहुर जोधामल सूद प्रमुख थे।

## मुख्य सत्य मान्यताऐं

सुर्य तथा चन्द वंश के समान ही अग्नि वंश का प्रचलन अचरज की बात नहीं सिकंन्दर नामा में अग्नि वंशी होने का स्पष्ट वर्णन है सूद अग्नि वंशी है। इस तथ्य को सिन्धु राज प्रमार के दरबारी कवि पदमागुप्त ने नव साहसाक नामक ग्रंन्थ मे माना है।

आईने अकबरी में इसी तथ्य को अबुल फजल ने स्वीकार किया है।

पृथ्वी राज रासो में चन्दवरदाई ने इसकर स्पष्ट वर्णन किया है।

प्रमार वंशावलि तथा प्रमार वंश दर्पण जैसे ग्रन्थ पर स्वीकृति की मोहर लगाते है। मुहनात नैनसी, दयाल दास जैसे विद्वान इन्हे अग्नि वंशीय मानते है।

सभी वर्तमान लेखकों ने नये अन्वेषण के आधार पर प्रमार वंश को अग्नि वंशी माना है।

## राजपूत

प्राचीन क्षत्रिय राजपूत राज वंश जो राम एवं कृष्ण तथा पांडवों के माध्यम से आज तक पीढ़ीयों के बाद चल रहे है। आगे चलकर यही क्षत्रिय राजपूत्र ''राजपूत'' हुए। स्मरण रहे कि चितौड़ के राणा सांगा एवं प्रताप के वंश के सुर्य वंशी राजपूतों तथा पंजाब के सूर्य वंशी क्षत्रिय मेहरा, खोसला आदि प्राचीन वंश एक है। भेद केवल स्थान भाषा का ही है।

## कुल, वंश, गोत्र

सूदों का गोत्र वशिष्ठ ऋषि कश्यप, शारवा, माध्यंदिनी, कुल देवी संचियाय पाँच प्रबर, मालाहेत पितर, पीपल वृक्ष, दीप देवी की पूजा। कई स्थानों पर वत्सगोत्र चौहानों का गोत्र लिखा है जो ऐसे जी कुल देवी भी शाकम्बरी देवी कई स्थानों पर लिखा है।

## प्रसिद्धि सूद राज्य

प्रमुख सूद राज्य आबू के आस–पास में चन्द्रवती (पदमावति) उज्जैन, महेश्वर, कालिजर, आबू (सिरोही), अमरकोट, चितौड़ (बाद में सुर्य वंश ने प्राप्त किया) घात प्रदेश, कोटा बूंदी, भयाबह,अलौरा (सिन्धु प्रदेश) अरक,

नगरकोट, अबिद्ध, जालोर, किराडू (बाद में यादवों को मिला) पूगल दूर्ग, अजमेर, पारकर, पल्लव प्रदेश, राजगढ़, उमतवाडा, बाघल, मथवार, विज्जौलयः धारानगरी नीमार ढुंढार प्रदेश।

## पैंतीस शाखायें

(दयाल दास रोख्यान)

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | माणीस | 18 | भामा |
| 2 | बलसो लोदा | 19 | छाहड़ |
| 3 | धारिया | 20 | काला |
| 4 | सुर | 21 | जागर |
| 5 | गोहलड़ा | 22 | पीथलिया |
| 6 | सोढा | 23 | भायल |
| 7 | जैपाल | 24 | मोटसी |
| 8 | बहिया | 25 | अमर |
| 9 | भावी | 26 | कालमोहा |
| 10 | हल | 27 | ढुड़ा |
| 11 | कलोलिया | 28 | सुबड़ |
| 12 | सांखला | 29 | छुंधा |
| 13 | बांला | 30 | रेवर |
| 14 | फागुआ | 31 | ढोढ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 15 | कछोटिया | 32 | पेल |
| 16 | वेवल | 33 | गूगा |
| 17 | कूकण | 34 | फाबा |

# सूद इतिहास का तिथि क्रम

1 ईसा से 3600 वर्ष पूर्व महराज सुदास (वैदिक युग में) राज्य कर रहे थे।
2 ईसा से 3108 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ
जिस में सूदों ने भी मुख्य भाग लिया
3 ईसा से 1100 वर्ष पूर्व नोह जिला भरत पुर में
नेहरा सूदों ने बस्ति बसाई।
4 ईसा से 476 वर्ष पूर्व आबू पर्वत का यज्ञ तथा
प्रमार राजा हुए।
5 ईसा से 330 वर्ष पूर्व सिकन्दर के आक्रमण के
6 समय राजा मेहर सेन सूद तथा राय शाह सूद
का राज्य था।
7 छटी शताब्दी में राजा भोज सूद प्रसिद्धि सम्राट
हुआ था।
8 747ई. में बप्पा रावल ने राजा मान मौर्य से
9 चितौड़ का राज्य छिना। मान मौर्य बप्पा रावल
का नाना था।
10 1032ई. में पूर्ण पाल सूद ने बसंत गढ़ ''सिरोडी,
11 आबू पर्वत'' बसा कर वहां राज्य स्थापित किया।
12 1178 ई. में आबू के राजा धार वर्षा सूद ने
मुहम्मद गौरी को परास्त किया।
13 संवत 1100 विक्रमी में हमीर सूद धात के राजा
14 बने। 1246 ई. बारड़ देव सूद ने बारडमेरू
''बारमेर राज्य'' बसाया।
15 1287 ई. आबू का राजा प्रताप सूद था।

16 1294ई. में चन्द्रावती के सूद राजकुमार प्रहलाद ने
17 प्रहलाद पाटन बसाया। बाद में पालदेव सूद ने
इसका नाम पालनपुर रखा।
18 1337ई. में चन्द्रावती में कानड़देव सूद गद्दी पर
बैठा।
19 1344ई. में राठौरों ने अमरकोट पर आक्रमण किया
परन्तु राठौर सरदार स्वयं ही मारा गया।

20 1358 ई. में डूगंर सिंह ने डूगरगढ़ बसाया।
21 1383ई. में राणा लाखा ने धवल सूद को मेवाड़ मे
जागीर दी।
22 9 नवम्बर 1398ई. में सूदों ने भटनेर में तैमूर का
सामना किया।
23 1506 में सिरसा के पास भटनेर में सूदों ने
सिकन्दर लौदी का सामना किया।
24 11 फरवरी 1927 ई. में राणा सांगा ने बाबर को
हराया।
25 4 अप्रैल 1536ई. को जेसलमेर की राजकुमारी
उमा का विवाह मालदेव सूद से हुआ।
26 9 मई 1540ई. में महाराणा प्रताप का जन्म हुआ।
यह वंश माता की ओर से प्रमार थे।
27 13 अगस्त 1542ई. में हुमायूँ शरण मांगता
28 जेसलमेर पहुँचा तथा 23 अगस्त को अमरकोट
29 पहुँचा जहाँ 15 अक्टुबर 1542 ई. मे अकबर का
जन्म हुआ।
30 1576ई. में जौलाई मास में सूदों ने राणा प्रताप के
नेतृत्व में हल्दी घाटी का युद्ध लड़ा।

# भूले हुए सूद वंश घर

सूद वंश मे कई परिवार तथा गांव ऐसे है जो हमारे प्राचीन सूद राजाओं के वंशज होते हुए भी सूद नही कहलाते। नहीं हम और न ही स्वयं सूद वंश में स्वयं को गिनते है।

उन में से एक तो राजस्थान के सोढा लोग है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहते है। कुछ ऐसी ही स्थिति जम्मू,पठानकोट तथा डलहौजी के वशिष्ट ब्राह्मणों की है। ओझा जी के मतानुसार सोढ़ा तथा सांखले धरनी वराह के वंशज है। सोड़ा तो हमीर सूद की उपधि थी जिस का अर्थ ऊँचा कुल वाला है। इतना ही नही अनेकों परिवार ऐसे है जो कई समय में अपने प्रदेशों से निकल कर अकेले पड़ गये 1348 वि. में फिरोजशाह जलालुद्दीन खिलजी ने उज्जैन और अलाऊद्दीन खिलजी ने जब भैलसा पर विजय पाई और मिराने सिकन्दरी के मत के अनुसार 1400 सम्वत के आस–पास जब कि सारा मालवा प्रदेश मुहम्मद तुगलक ने जीत लिया तो, मालवा पर साढ़े चार सौ वर्ष तक तथा चौबीस पीढ़ीयों तक राज्य कर के यह वंश धर रणथम्मौर, बिजौली, छतरपुर, राजगढ़, नरसिंहगढ़, धारा देवस तक फैल गये।

रोहतक जिले में 36 गांव इस वंश के है। इन में से कलानौर, कनौर, चांग, बागपत आदि गांव मुसलमान हो चुके है। ककड़ीपुर, नाला, जोलीमाजारा, भगवानपुर, दरीसपुर दान्तल, जटौसी, घासी पुरा भैंस नाल मेरठ सहारण पुर ''मुरादाबाद'' मुगलवाला ''बिजनौर'' में इसी वंश की जागीरे थी।

रोहतक में शामली बैरन, बौपनिया आदि बुलन्दशहर में प्राणगढ़ मेरठ में शेरपुर, मथुरा में नन्दग्राम, गिन्डाह आदि गांव इन्हीं के वंशजों के है जो आज हमें भूला चुके है।

## झंडा

सूदों के झंड़े की वास्तविक झांकी प्रस्तुत करना सहल काम नही हैं आबू यज्ञ के आरम्भ काल में यह ध्वज भगवा रंग काहोता था जिस पर ओम शब्द लिखा होता था। बाद में इसका एवं अन्य रूप यज्ञ की ज्वाला को लक्षित करते हुए बनाया गया।

परन्तु जब मुसलमानों का आक्रमण हुआ तो सूदों के विजय ध्वज का एक निश्चित रूप तय हो गया। इस में भगवे ध्वज पर साँप तथा गरूड़ का चित्र अंकित होता था।

## स्त्री का स्थान

सूद समाज में स्त्री को अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त था। यज्ञ करना सूदों का नित्य कर्म था और कोई भी नारी की उपस्थिति के बिना पूर्ण नही माना जाता। सूद स्त्रियाँ घोड़ों तथा पालकी पर सवारी करती तथा शस्त्र और शास्त्र दोनों में ही निपुण होती थी। ऐसा वृतान्त चर्च नामा में स्पष्ट मिलता है। राज्य के कार्यो में नारी का प्रभावपूर्ण दखल रहता था। दाहिर की रानी राणा लाखा की सूद पत्नि तथा चितौड़ के सैनिक अधिकारियों की सूद पत्नियाँ स्वयं अपने पति की अनुपस्थिती में युद्ध का संचालन करती थी तथा विजय की आशा ना होने पर जौहड़ वृत से जीवित जल कर अपनी मर्यादा की रक्षा

करना सूद शेरनीयाँ खूब जानती थी। सूद स्त्रीयाँ गहनों तथा बहमुल्य कशीदाकारी पूर्ण वस्त्रो का प्रयोग करती थी। सूदों का मुख्य कार्य युद्ध करना था अथवा व्यापार करना। देवल की बन्दरगाह से तथा सिन्धु मार्ग से नौकाओं द्वारा विदेशों से व्यापार होता था। देश में धन बहुत था। व्यापारियों के काफलों तथा व्यापारिक जहाजों की रक्षा कार्य सैनिक दस्तों के जिम्मे होता था शुष्क बन्दरगाहे भी व्यापार का केन्द्र थी। चीन, तिब्बत तथा नेपाल से व्यापार सम्बंध रहे थे।

अरब, मिश्र, लंका, इराक तथा श्याम, जावा सुमात्रा एवं कम्बोज ''कमबोडिया'' से भी काफी व्यापार होता था।

## पैतृक सम्पत्ति

पिता की जीवितावस्थ में संतान को सम्पत्ति से कोई भाग नहीं मिलता था अपितु व्यस्क हो जाने पर प्रत्येक सूद को उसकी गोत के सूदों से दस ईंटे तथा दस रूपये मिलने की रीती प्रचलित थी जिस से उस के पास रहने तथा व्यापार के लिये साधन एकत्र हो जाते थे। संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी। घर में पिता के बड़े बेटे की आज्ञा चलती थी।

## धर्म

सूद कट्टर हिन्दु तथा वैदिक धर्म के अनुयायी होते थे। ऋग्वेद इनका इष्ट ग्रन्थ था तथा राज्याभिषेक जन्म तथा युद्ध जैसे अवसरो पर ऋग्वेद की सवारी निकाली जाती थी। यज्ञ हवन की सुगंध तथा वेद मंत्रों से दिशा वातावरण गुजंता रहता था। सिकन्दर के

इतिहासकारों के अनुसार सूद मेवे फल ''सामग्री'' तथा घी आदि अग्नि में जलाया करते थे। विद्वानों ने इतना आदर आज तक किसी वंश से आज तक प्राप्त नही हुआ। मृतक को जलाने श्राद्ध ''पितृ यज्ञ'' तथा जनेऊ धारण करने का रिवाज प्रचलित था सति प्रथा का रीवाज था। दहेज जैसी प्रथा थी परन्तु इस में स्वेच्छा से काम लिया जाता था। राणा हमीर के अपनी बेटी को सरस्वती के तट पर रंग महल बना कर देने का वृतांत मिलता है।

## विद्या प्रेम

विद्या एवं इस से सम्वद्व ज्ञान की शाखाओं के प्रसार में जितना र्काय प्रमार तथा सूद राजाओं ने किया उतना कदाचित किसी भी वंश ने आज तक नहीं किया।

प्रसिद्धि विद्या प्रेमी महाराजा विक्रमादित्य तथा महाराजा यशो धर्मा था। सिन्धु के दरबार के नवरत्न तो प्रसिद्धि ही है। सूद राजाओं की यह विशेषता थी कि विद्वानों का आदर करने के अतिरिक्त वह स्वंय भी विद्वान होते थे। इस दृष्टि सें भोज ज़गदेव, धर वर्षा हमीर तथा इससे पूर्व सूद के बेटे आदि सभी विद्वान थे इन्होंने ने स्वयं उच्चकोटी की रचनाएं की तथा विद्वानों को रचनाओं के लिये प्रोत्साहित किया। धारा नारी तो विद्वानों का तीर्थ स्थल बन गई थी उदयपुर प्रस्श्ति के अनुसार भोज का चाचा मुज्ज स्वयं कवि विद्वान तथा शास्त्र विद्या का ज्ञाता था भोज ने स्वंय 48 ग्रन्थों की रचना की। और जीवन का कोई क्षेत्र उस से अछुता नही रहा। नरवर्मा एक अन्य यौद्धा तथा विद्वान राजा था धन्य पाल भी ऐसा ही विद्वान प्रतापी नरेश था। राय मेहता एक विद्वान शासक था। इसी

ने पूर्व गृह युद्ध में काम आने वाले राजकुमार स्वयं संस्कृत प्राकृत के विद्वान थे।

## भवन निर्माण कला

भवन निर्माण में सूदों का समय स्वर्ण युग कहा जा सकता।

इस दशा में महत्वपूर्ण निर्माण वाग देवी (सरस्वती) की वह भव्य मूर्ति है जो आज इंग्लैंड में अजायब घर में पड़ी हमारी धार्मिक तथा कला भावना की ओर कातर दृष्टि से देख रही है।

सरस्वती माँ की यह भव्य मूर्ति महाराजा भोज ने बनवा कर मन्दिर में प्रतिष्टित करायी थी और उस मंदिर के स्थान पर अब कमाल मौला की मस्जिद बनी खडी है। पास ही महाराजा भोज का बनाया बुद्धिमता का कुआँ था जिसे मुसलमानों ने अक्कल कुई का नाम दे कर लाल किले की भांति अपने नाम करा लिया है। यह धारानगरी की बात है यहाँ भोजशाला का भव्य भवन था। जो कालिज था तथा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था भोज सर नामक तालाब बनवा कर भोज ने उसमें तमाम तीर्थो का जल डाला वहां चालीस दिन यज्ञ किया।

धारानगरी में एक भव्य मूर्ति प्राप्त हुई है यह पावर्ती जी की प्रतीमा है।

झालापाटन से भी शिव ब्रह्मा विष्णु तथा सूर्य की आठ भुजाओं वाली संयुक्त मूर्ति प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त रामगढ़ स्थान में शिव प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त उज्जैन से प्राप्त शिव जी का नृत्य मुद्रा

की भव्य प्रतिमा ग्वालियर दुर्ग के भुगर्भ के कक्ष में पड़ी हैं।

इतना ही नही सिन्धु के तट के साथ–साथ सैकड़ों दुर्ग अति प्राचीन काल से ही सूदों के निर्माण कला के दक्ष होने का प्रमाण देते है। सरस्वती तट पर हमीर सूद का बनवाया महल तथा अमरकोट का दुर्ग अपने आप में ''मरूस्थल का विचित्र'' स्थान तथा सूद भवन निर्माण कला का उत्कृष्ट उदाहरण था।

राजनैतिक सामाजिक तथा आथिक स्वाधीनता
का कोई लाभ नही यदि हमारा

# इतिहास पराधीन है

स्वतंत्र इतिहास के नवनिर्माण के इस महायज्ञ में
क्या आपने आहुती डाल दी है?

आजीवन सदस्य बने तथा दर्जनों ग्रन्थ घर बैठे निशुल्क प्राप्त करे?

आजीवन शुल्कः 501 रू.
सरंक्षक शुल्क 1000 रू.

हमारे योजनाबद्ध प्रकाशन की एक झांकीः प्रो. मदनेश के शोध ग्रन्थ

1. भाटिया जाति का गौरवशाली इतिहास (प्रकाशित)
2. सूद वंश का गौरवशाली इतिहास ('' '' '')
3. पुरी वंश का गौरवशाली इतिहास (प्रेस में)
4. अग्रवालों का गौरवशाली इतिहास ( – )
5. अरोड़ा वंश का गौरवशाली इतिहास
6. मेहरा, खन्ना, कपूर वंशों का इतिहास

7. महियाल ब्राह्मणों की इतिहासिक परम्परा
8. सोढ़ी और बेदी वंशों का इतिहास
9. भल्ला वंश की गौरवशाली परम्परा
10. सेबतीयों का इतिहास
11. ग्रेवाल वंश का इतिहास
12. ढिल्लों वंश का इतिहास ऐसे दर्जनों अन्य ग्रन्थ भी
13. पोरस नही हारा था
14. द्रोपदी के पाँच पति नहीं थे।
15. हनुमान जी के पूँछ न थी
16. श्री कृष्ण ऐसे न थे
17. भारतीय इतिहास से विदेशी व्यभिचार

भारत का राष्ट्रीय इतिहास

**LOST GLORY RESEARCH INSTITUTE**

Ram Bagh, Road, Chowk Goal Hatti, AMRITSAR-2

# पुण्य यश सेवा
# का पुनीत अवसर

देश को नया इतिहास नया विश्वास सोचने का नया स्तर देने में प्रयत्नशील अपने ढंग की एक मात्र अनुठी संस्था

विगत मानशोध संस्थान

**LOST GLORY RESEARCH INSTITUTE**

Tripti Ashram, Ram Bagh Road, AMRITSAR-2

**आजीवन सदस्य** **सरंक्षक**

501 रू. जीवन में एक बार

1000 रू. केवल एक बार

बनकर पुण्य और यश कमाएं।

साथ ही जीवन भर सैकडों भारी शोध ग्रन्थ तथा ज्ञानवर्धक

साहित्य निशुल्क प्राप्त करते है।

आप का चित्र बड़े आकार का आर्ट पेपर पर पारिवारिक परिचय सहित आपके जातीय इतिहास में हर

भाषा में छपेगा तथा Hand book
of Patronsमें भी छपेगा।
आपका एक पैसा नये इतिहास के निर्माण में एक–एक

अक्षर आगे बढ़ने का कारण बनेगा।
अपने घर में ज्ञान की गंगा का मार्ग खोल दें।
LOST GLORY RESEARCH INSTITUTE
Tripti Ashram, Ram Bagh Road, AMRITSAR-2

# विज्ञान

सूद राज्य काल में विज्ञान उन्नति के आरम्भिक चरण पार कर चुका था। महाराजा भोज स्वंय विद्वान एवं यौद्धा होने के लिए उच्च कोटी का विज्ञानिक था। उन्होंने अपने ग्रन्थ ''वास्तुशास्त्र''समारागनसूत्र धारा ''में 100 श्लोक विमान हवाई जहाज के निर्माण के विज्ञान पर लिखे है। उस समय विज्ञान भूमि जल तथा वायु में समान रूप सेचल सकते थे तथा रावण के पुष्पक विमान की पद्धति के थे। अभी तक अमेरिका जैसे उन्नत देश भी वैसी उड़ान काल को विकसित करने का प्रयास ही कर रहे है। उन विमानों का डिजाईन घोड़े, हाथी, रथ तथा गिद्दी के अकार के होते तांबा, लोहा तथा लकड़ी उनके निर्माण के लिये प्रयोग में लाये जाते थे। समुन्द्री बेड़ा केवल अलौडत्रा के मुख्य सूद राज्य में ही होता था जब कि अन्य तमाम सूद राज्य बड़ी–बड़ी नौकाएं व्यापार यातायात तथा युद्ध के लिये प्रयोग में लाते थें तैमूर से हुआ जल युद्ध इस का स्पष्ट उदाहरण है। सिन्धु, नर्मदा, सरस्वती, व्यास तथा मालवा आबू पर्वत की अनेकों नदियाँ तथा झीलें नौकाओं के लिये अनुकुल थी।

इसी युग का ग्रन्थ युक्तिकल्पतरू नौका निर्माण विज्ञान पर अच्छा प्रकाश डालता है। राजकुमार समरकेतु के जल युद्ध द्वारा द्वीपों को जीतने का वृतांत धनपाल ने दिया है। सूद केवल धर्म युद्ध में ही विश्वास रखते थे कूट युद्ध को वह कार्यरता की संज्ञा देते थे। युद्ध के शास्त्र तथा कवच अत्यंत विज्ञानिक आधार पर लोह तथा अन्य धातुओं की ढाल बनाये जाते थे।

## भोजन

भोजन में अनाज ''गेहूं'' चावल, दालें, घी, शहद, तिल, तेल आदि प्रमुख थे। अनेकों फलों से आम अधिक प्रसिद्ध था। ब्रहामणों के आतिरिक्त शेष मांस का प्रयोग होता था दूध तथा उस के बना पकवान एवं मिठाईयां बनती थी मदिरा का प्रयोग ''श्रगांर मन्जरीकथा'' होता था। पान में शक्तिशाली एवं सुगंधित तत्व मिला कर खाने की रीति प्रचलित थी।

## व्रत त्यौहार

सूदों में नाना व्रतों एवं त्यौहारों का प्रचलन था। दबों स्थानी एकादशी एवं शिवरात्री के त्यौहार मुख्य थे। इस अवसर पर लोग विशेष कर नारियाँ व्रत रखती थी। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के अवसर पर पान पुण्य किया जाता था। पितृ यज्ञ ''श्राद्धा'' तथा पति पूज ''करवाचौथ'' की प्रथा भी थी। यात्रा महोत्सव चैत्र मास के उज्जवल पक्ष की चौदह तिथि को मनाया जाता था।

वैसाख सूदों पन्द्रमी को महाविशाखी पर्व ''वैशाखी'' का त्यौहार अत्यंत धूम–धाम से मनाया जाता

था गंगा दशहरा ज्येष्ट मास की 10 तिथि को मनाया जाता एक अन्य महा पर्व था।

सावित्री व्रत नारीयों का पति पूजा का त्यौहार होता था। इस दिन पत्नियाँ कठिन व्रत रखती थी तथा पति की दींघायू की कामना करती थी। यह आज के करवाचौथ व्रत का ही एक रूप था। कृष्ण जन्माष्टमी की धूम भी देखने योग्य होती थी। कार्तिक मांस में कौमुदी महोत्सव का भव्य आयोजन होता था। प्रबंध चिंतामणि में रक्षा–बंधन की प्रथा का सुन्दर वर्णन मिलता है। सुखरात्री नामक त्यौहार वर्तमान दिपावली के अनुरूप होता है। जब कि लक्ष्मी पूजा तथा दीपमाला की जाती थी।

यश तथा पुण्य का पवित्र अवसर राष्ट्र, धर्म तथा प्राचीन संस्कृति के पुजारियों को शुभ न्यौता पृष्ठ संख्या 500 अथवा अधिक आजीवन सदस्यों को निशुल्कआठ हजार वर्ष के जगत गुरू भारत के इतिहास का वास्तविक उज्जवल रूप जिसे शक हुण आनन्दमार्गी मुसलमानों तथा अंग्रेजों ने दूषित कर रखा था।

## भारत का राष्ट्रीय इतिहास

ज्ञान के नये आयाम आपके तथा आपके शिक्षा प्राप्त कर रहेंबच्चों की विचार–धारा को झंझकोर कर नितांत बदल देने वाला महान ग्रन्थ। मदनेश जी की दस वर्षकी सतत तपस्या का ग्रन्थ रूप में प्रकाशनधन के कारण रूका पड़ा है। मुद्रण, कागज, जिल्दआदि पच्चीस हजार रू. का प्रशन दानवीर बन्धुउदारता से सहायता देकर अमरत्व कमाएं। प्रत्येक धन प्रप्ति का वर्णन ग्रन्थ के अतः में आदरपूर्वक दिया जायेगा।

इतिहास के ज्ञानवर्धक मुख्य प्रसंगः–

1. आर्य (हिन्दु) भारत के ही मूल निवासी है। (सप्रमाण)
2. महाभारत तथा रामायण का समय निर्धारण तथा उनमें वर्णित पात्रों तथा स्थानों का वर्तमान से मिलान। महाभारत से पूर्व के आर्य राजागण।
3. हनुमान जी कौन थे? हनुमान जी की पूँछ नही थी। द्रोपदी के पाँच पति न थे? प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित यह सैकड़ों महापुरूष किस जाति के थे?
4. महात्मा बुद्ध ही हजरत आदम थे ''जन्नत'' कहाँ है? शब्द ''जनस्थ'' संस्कृत से लिया गया है।
5. ईसा मसीह काशी में रहते थे।
6. महाभारत से सिकन्दर तक के समय पर पूर्ण प्रकाशन।
7. चन्द्रगुप्त मूरा दासी की संतान नही। पांड़वों का वंशज था। वह प्रमार ''सूद'' वंश से था।
8. विक्रमादित्य दो हुये है दोनों का समय तथा विस्तृत विवरण।
9. आबू पर्वत तथा जगत गुरू शंकराचार्य के विषय में अंग्रेजों तथा मुसलमानों द्वारा फैलाई गई भ्रन्ति का निराकरण तथा आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व समय निर्धारण।
10. मुसलमानी आक्रमण तथा मुसलमान इतिहासकारों द्वारा छिपाये गये तथा मन गढन्त बनाये गये प्रसंगो पर प्रकाश।
11. मुगल बादशाहों के ढोल की पोल।
12. कुतुब मीनार कुतुबद्दीन ने नहीं बनाई
13. लाल किला शाहजहाँ से एक हजार वर्ष पहले भी कायम था।
14. ताजमहल एक राजपूती भवन था। राजा जयसिंह सवाई का महल तथा साथ में मन्दिर भी था।
15. वह हिन्दु वीर जिन का कहीं वर्णन नहीं।
16. प्राचीन क्षत्रिय राजपूतों को मिटाने का मुसलमानी

तथा अंग्रेज षड़यन्त्र।

17. स्वतन्त्रता संग्राम ''1857'' में स्वामी दयानन्द ही मुख्य नायक थे सारी घटनाओं के सूत्रपात का मुख्य केन्द्र उनका आश्रम था। 1857 में स्वामी दयानन्द कहाँ किस रूप में थे?
18. पिछले सौ वर्ष के इतिहास की वास्तविक झांकी। सही गल्त अच्छे बुरे का स्पष्ट निर्णय।

19. आज ही अपनी राशी इस पते पर भेजें।

Lost Glory Research Institute

Tripti, Ashram, Ram Bagh Road, AMRITSAR-2

## (सूदों की सतियाँ)

इस महान राजवंश ने क्षत्रिय राजपूत्रों की परम्परा के अनुसार युद्ध क्षेत्र में वीरगति तथा धर्म की रक्षा के लिये सति होने के अनगिणत उदाहरण उपस्थित किये।

आज भी मैदान तथा पहाड़ में सूदों की अनेकों सतियाँ है जिन्हें पहाडों में देहरियाँ कहते है। जेठरे भी है। सूद इन सतियों की समाधियों का अत्यंत आदर करते है तथा बच्चों को यहां माथा टकाते है।

परन्तु मुझे खेद से कहना पड़ता है कि इन समाधियों की दशा संतोष जनक नहीं है कई स्थानों पर इन की दशा अत्यंत जीर्ण–शीर्ण सी हो चुकी है। कोई रक्षक, गाइड़, चौकीदार इन स्थानों की देख–भाल तथा आने जाने वालों को समझाने वाला यहाँ नहीं मिलता। इन पर प्रायः सति का नाम, समय, गोत आदि कुछ भी लिखा नही मिलता। केवल स्थानीय सूद अपने विश्वास एवं पूर्वजों की चली आ रही परम्परा के अनुसार ही इन्हें मान

देते है। प्रायः स्थानीय सूद भी इन सतियों के इतिहास का वर्णन नहीं कर पाते कुछ सतियों के स्थानों का वर्णन नीचे दिया जाता है। विस्तृत विवरण अगले हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू संस्करणों में दिया जायेगा जिस के लिये केवल निम्नलिखित पते पर लिखें

Lost Glory Research Institute
Ram Bagh Road, AMRITSAR-2

जेसलमेर चित्तौड़ तथा आस–पास सतियों के अनेकों समाधि चिन्ह मिलते है परन्तु उन्हें पहचान पाना तथा सूदों की सतियों को अलग ढूँढ निकालना अत्यंत कठिन है। यदि धन की कमी बाधा न बनती तो यह दुष्कर कार्य भी हम ने काफी सीमा तक निपटा दिया होता।

## (एक मार्मिक प्रार्थना)

यदि जाति हितैषी दान वीर बन्धु जाति की इससे अनंत पूँजी एवं ईंटो में छिपे इतिहास की रक्षा करने के लिये अनुदान तथा सहायता भेजें तो कम से कम इन समाधियों पर नाम, गोत, समय आदि के विवरण की शिला आदि लगाने का प्रबंध हमारी संस्था अपने हाथों में ले सकती है। इस के अतिरिक्त इन महान सति देवियों का जीवन चरित्र तथा इतिहास एक अलग ग्रन्थ के रूप में छापा जा सकता हैं

सरहिन्द में सतियों की समाधियाँ भारी संख्या में हैं लुधियाना, जालन्धर आदि जिलों मे भी सतियों की समाधियां नूरपूर जडियाला आदि स्थानों के आस–पास मिलती हैं

प्रसिद्धि ज्वाला मुखी जिला कांगड़ा से 5 मील दूर तथा गुम्बर से एक मील देहरियां नामक स्थान पर अनेकों वंशो की समाधियों के साथ कडोल गोत के सूदों की सति की एक समाधि सड़क के पास ही है।

गोयल गोत के सूदों की समाधि जिला होशियारपुर के पास चटियाला बडियाला नामक गांव के पास है जिस के पति को शेर ने मार दिया था तथा वह सति छोटी आयु में हो गई थी।

गुम्बर ''कांगड़ा'' से चार मील दूर चौजर गोत के सूदों की सतियां है। ज्वाला मुखी से ऊपर छः मील का चढ़ाई के उपरान्त देहरी नामक स्थान पर भी सूदों की सतियों की समाधियां है। ज्वाला मुखी से 12 मील दूर नाहलियां नामक स्थान पर भी सूदों की चौजर गोत की समाधि हैं।

गुम्बर धार के पास धार नामक स्थान पर कढ़ोल गोत के सूदों का जथेरा है। स्वंय ज्वाला मुखी के स्थान पर ब्रन्टा, कडोल, गोयल, खाते एवं चौजर आदि उन गोतों की समाधियां मिलती है जिन में से एक तो राय बहादुर जोधा मल सूद की सराय के सामने स्थित है।

बैजनाथ तथा उसके आस–पास भी सूदों की सतियों की समाधियां मौजूद है। और भी ऐसी अनेकों समाधियों के दर्शन मैने किये है आवश्यकता है देखभाल तथा उनके नाम गोत आदि चिन्ह को लगवाने की तथा उन्हें जीर्ण–शीर्ण होने के कारण मुरम्मत आदि कराने की और यह सूद वंश के शूरवीरों के सम्मुख एक चुनौती है क्या समझ लिया जाये की सूद वंश ने केवल एक ही जोधा मल जन्मा था और उन महान आत्मा के साथ सेवा

त्याग एवं गौरव के प्रतीकों की रक्षा करने वाली ज्योती सदैव के लिए समाप्त हो गई।

जो महानुभाव इस विषय में कुछ कर सके उन्हे मेरा सहज निमन्त्रण है।

**—मदनेश**

**Lost Glory Research Institute**

Tripti, Ashram, Ram Bagh Road, AMRITSAR-2

# मुख्य सूद सम्मेलन

1857 के स्वंतत्रता संग्राम के पश्चात तथा शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ सूद महानुभावों की जागरूक आत्मा ने भी एक और करवट ली तथा अनेकों नये मतभेदों का निर्णय करने तथा संगठन को ओर अधिक मजबूत बनाने के लिए सम्मेलन बुलाये जाने लगे।

वर्तमान सूद सम्मेलनों की पृष्ठ भूमि में प्रथम सम्मेलन 1881 ई. में लुधियाना में बुलाया गया इस सम्मेलन का विशेष कार्य कम नियत नहीं हुआ था। अतः यह सम्मेलन केवल परामर्श के लिये रहा। तत्पश्चात नूरमहल गरली तथा ज्वाला मुखी में सम्मेलन 1912ई. तक होते रहे।

वर्तमान युगों का ठोस सम्मेलन 1919 में लुधियाना में ला. दुनीचन्द अम्बालवी के सभापतित्व में हुआ।

इसके बाद 1924 में लाहैर में राय बहादुर में लाला मोहन लाल की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ।

जालन्धर में 1928ई. में एक सम्मेलन श्री आत्मा स्वरूप जी बेरी पटियाला वाले की अध्यक्षता में हुआ।

1930 ई. में सम्मेलन होशियारपुर मे जाति रत्न राय. बहा. जोधा मल की अध्यक्षता में हुआ जिसमें उन्नति के लिये ठोस आधार बनाये गये।

1932 ई. में जांलधर नगर में एक सम्मेलन अमृतसर की प्रसिद्धि विभूति रा. सा. राधाकिशन सूद की अध्यक्षता में हुआ।

1933 ई. में एक सम्मेलन अमृतसर में ला. मिलखों राम एडवोकेट होशियारपुर की अध्यक्षता में हुआ।

सितम्बर 1935 ई. में एक सम्मेलन शिमला के रा. सा. चौधरी गनपतराय मोगा वाले की अध्यक्षता में हुआ। एक सम्मेलन जनवरी 1938 ई. में गरली में डा. कैप्टन भगवानदास जी की अध्यक्षता में हुआ।

अप्रैल 1941 ई. में एक सम्मेलन ला. मेला राम जी सूद मिठू की अध्यक्षता में हुआ।

दिसम्बर 1943 ई में एक सम्मेलन अमृतसर में ला. मंगल राम जी कुटियाला होशियारपुर वाले की अध्यक्षता में हुआ।

मई 1950 ई. में एक सम्मेलन फगवाड़ा में ला. अमोलक राम सूद मोगा वाले की अध्यक्षता में हुआ।

सितम्बर 1957 ई. में लुधियाना में श्री अमरनाथ बेरी की अध्यक्षता में भव्य सम्मेलन का आयोजन किया गया।

जून 1962 ई. अमृतसर में सेठ सुलखन सिंह जी की अध्यक्षता में परिणामशाली भव्य सम्मेलन हुआ।

दिसम्बर 1966 ई. में होशियारपुर में श्री केदार नाथ जी भौरी लुधियाना वाले की अध्यक्षता में सूद सम्मेलन हुआ।

अप्रैल 1972 ई. में एक सम्मेलन चण्ड़ीगढ़ में जस्टिस टेक चन्द जी की अध्यक्षता में हुआ।

इतना ही नही दिल्ली सूद सभा की अपनी गोरवशाली परम्परा है। विगत अनेकों वर्षो से वह दिल्ली में प्रति वर्ष सूद मेला क्षेत्रीय सत्र के साधनों से करते चले आ रहे है जो इस वर्ष 16 नवम्बर 1975 को नोटिंगम ''इंगलैंड'' के श्री के एस सूद की अध्यक्षता मे हों रहा है। यह दिल्ली का बीसवां सम्मेलन है और दिल्ली के अनथक कार्यकर्ता एवं नेता गण सेठ रत्नचनदसूद श्री हरबंस लाल सूद आयकर अधिकारी तथा विशेष कर वृद्ध अनथक नेता डा. शादी राम सूद इस भव्य परम्परा के लिये धन्यवाद के पात्र है।

इस कि अतिरिक्त प्रायः कहीं ना कहीं स्थानीय आधार पर ऐसे सम्मेलन होते ही रहते है जिनकी भव्यता देखते ही बनती हैं।

## सूद वंश की महान विभूतियां

## लाला दूनी चन्द जी एडवोकेट

जिन्हों नें सूद वंश को संगठित कर के गतिविधियों को नई गति दी। भारत के तमाम स्वतत्रंता सेनानी नेता इस चेतना के युग तथा स्वंत्रता संग्राम के अग्नि कुण्ड से तप कर निकले है।उन्ही नेताओं में पंजाब की प्रसिद्धि विभूति कट्टर गांधीवादी नेताओं सूद वंश आभूषण ला. दूनीचन्द अम्बावली एडवोकेट का स्थान अत्यंत ऊंचा है।

आप सूद सम्मेलन लुधियाना के प्रधान थे जो 14 तथा 15 दिसम्बर 1919 को आर्य स्कूल लुधियाना में हुआ।

अपने आप में यह एक महत्वपूर्ण सम्मेलन था तथा सभा की वागडोर अनपढ़ किन्तु धनी सेठों के हाथों में न होकर शिक्षित एवं योग्य तथा उत्साहित युवा हाथों में आ गई थी। इस अवसर पर कदाचित प्रथम बार एक सुन्दर गुणपूर्ण भाषण सुनने को मिल गया ठोस धाराएं पास की गई।

आप उच्चकोटी के वक्ता, देश भक्त तथा प्रसिद्धि स्वतत्रंता सेनानी थे जिन्होंनें देश को स्वतंत्र कराने के लिये कई बार जेल यात्रा भी की।

देश भक्तों पर मुकदमों की आप निशुल्क पैरवीं करते थे। आप स्वंतत्रता से पूर्व कांग्रेस के चोटी के नेताओं में गिने जाते थे। तथा आपके सम्बंध केन्द्रीय स्तर के नेताओं से थे।

इनके सपुत्र जस्टिस टेक चन्द हाईकोर्ट के जज के पद से अवकाश प्राप्त करके अब सरकार की ओर अनेकों कमेटियों के सदस्य है तथा सार्वदेशिक सूद सभा के प्रधान है।

## श्री आत्म स्वरूप बेरी पटियाला

सूदों का एक प्रसिद्धि तत्वदर्शी धर्म प्रेमी एवं सेवाभावी परिवार हैं इनके परिवार के हर व्याक्ति के नाम के साथ आत्म शब्दइस परिवार के जिज्ञासु एवं ज्ञानी होने का सशक्त प्रमाण है। श्री आत्म स्वरूप बेरी अपने समय के प्रसिद्धि वकील थे। व्यवसाय के अतिरिक्त आप अत्यंत शिक्षा प्रेमी, संस्कृतज्ञ एवं विद्वानों का आदर करने वाले थे आपकों 1928 ई. में सूद सम्मेलन जांलधर नगरी का प्रधान चुना गया। आप प्रसिद्धि समाज सेवी, दानी तथा

अनेकों शिक्षा संस्थाओं एवं सामाजिक संगठनों से सम्बंधित धर्म भीरू एवं योग युक्त सादे जीवन के धनी महानुभाव थे।

आपके सपुत्र श्री आत्म अभय सूद भी आप ही के समान निस्वार्थ सेवा भावी धर्म प्रेमी तथा लगनशील महानुभाव है। पटियाला सनातनधर्म सभा तथा एस. डी. शिक्षा केन्द्रों की सभा तथा गति विधियों का केन्द्र आप ही है। विद्या रसिक श्री आत्म अभय सूद पिता के सामन ही सादे सरल स्वभाव योगयुक्त जीवन के धनी एवं धर्म भीरू महानुभाव हैं।

## रा. बा. जोधा मल कुठियाला

माँ भारती की कोख अत्यंत उर्वरा एवं रत्न प्रसूता है। इस के गर्भ से ऐसे अनमोल रत्न जन्म लेते रहते है जो समय की रेत पर भी अपने पांव के अमिट चिन्ह छोड़ जाया करते है।

स्वानमधन्य जाति रत्न रा. बा. जोधा मल भी उनमें से एक थे। जिन्होंनें दान, सेवा, त्याग एवं समानता के क्षेत्र में स्वंय को यौद्धा ही नहीं अपितु महायौद्धा सिद्ध कर दिखाया।

राय बहादुर जोधामल कुठालिया

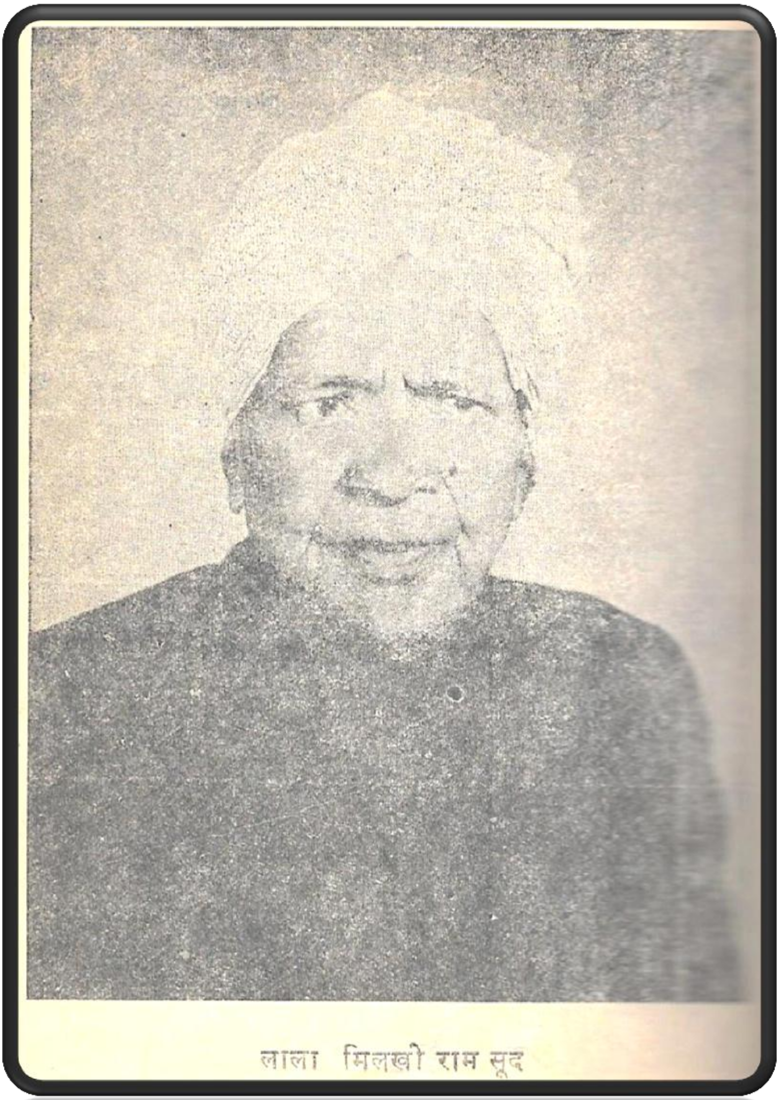

लाला मिलखी राम सूद

राय बहादुर के पूर्वजों का परिचय इस प्रकार से है।

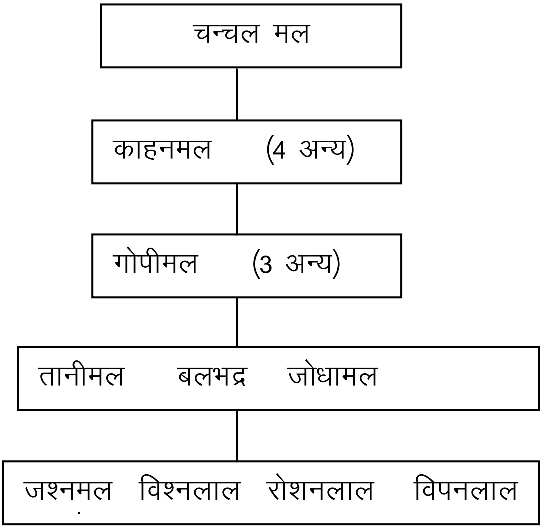


जोधामल जी के पूर्वज गरली परागपुर के निवासी तथा साधारण प्रवृति के सीधे सादे व्यक्ति थे। जिनके योग्य की संतान करते–करते जोधामल के समय में प्राकाष्ठा को पहुँच  गई। इनके निकट साथियों में श्री मेहर चन्द कडोल, लाल दूनीचन्द जी तथा जुबल के महाराजा सर भक्त राम जी प्रमुख थे श्री मिलखी राम एडवोकेट इस परिवार के मित्रवत एवं कानूनी परामर्श दाता रहे है। कुठालिया सूदों की गरली प्रागपुर में हैं।

जोधामल ने परिवार के व्यापारिक कार्यो को अपनी ईशप्रदत योग्यता से चार चांद लगा दिये और न केवल अपार धन राशि कमाई अपितु अपार धनराशि दान भी की। धन संग्रह के साथ धन के सद्पयोग का विचित्र सा सामजस्य आपने प्रस्तुत किया।

आपको 1930 ई. में होशियारपुर में होने वाली कांग्रेस का प्रधान बनाने का निश्चय किया गया। अमृतसर में हुए सम्मेलन के प्रधान भी आप ही बनाये गये।

उस समय तक सूद सभा के फंड में जमा राशि का अधिक भाग जोधामल जी का ही दिया हुआ था। इस सम्मेलन के पश्चात जोधामल जी की छत्रछाया में सूद सम्मेलन की गतिविधियाँ अत्यंत तीव्र हो गई।

राय बहा. ने एक हजार रूपया एक प्रचारक रखकर जिला स्तर पर सूद सभाये संगठित करने के लिये दिया।

उसी अवसर पर आपने पच्चास हजार के मुल्य की जायदाद ''जोधामल सूद ट्रस्ट'' को दान देकर सूद जाति के अनाथों तथा विधवायों की पालना करने के लिये यथेष्ट साधन जुटाये।

आपने घोषणा की कि बेकारी को समाप्त कर सकने वाली किसी भी योजना के लिय आप भारी धन राशि व्यय करने का तैयार है जिससे कोई भी सूद बेकार न रह सके। इसी लिए एक ट्रस्ट आप ने एकावन हजार रूपये देकर स्थापित किया। केवल सूद ही नही अपितु प्रत्येक होशियारपुर निवासी जोधामल जी का कृतज्ञ है।

होशियारपुर में अम्ब नामक स्थान पर तमाम वर्ष पीने का पानी लोगों को दूर–दूद जाकर लाना पड़ता था। सरकार की ओर से इस पहाड़ी प्रदेश मे जल का समुचित प्रबंध न था। आपने 40 हजार रू. व्यय करके स्वयं ''अम्ब वाटर वक्रस योजना'' को पूर्ण किया और जल नीचे से ऊपर पहाड़ी स्थानों पर पहुँचाया।

इतना ही नही ज्वाला मुखी के तीर्थ पर आपने पच्चपन हजार रू. के व्यय से साधन भव्य सराय का निर्माणकराया। आप की जमीन पर निर्धन लोगों ने निवास के लिये झोपड़े आदि बनवा लिये थे। आपने न केवल यह भूमि ही उनके नाम पर दी अपितु काफी धन भी देकर उन्हें पक्का घर बनाने के योग्य कर दिया।

सत्रह हजार रू. व्यय करके डी. ए. वी. कॉलेज को एक भव्य प्रयोगशाला बनवा कर दी। एक ग्रन्थ रा. बहा. जोधामल के सूद कार्यो का वर्णन करते हुए बन सकता है। संक्षेप में इतना समझ लें कि समान का कोई भी अंग उनके चुम्बंक व्याक्त्वि से बचा न रह सका।

## लाला मेला राम सूद

सूद जगत के जागरण के इस युग में जबकि युवा ओर बूढ़ी पीढी के विचारों में मतभेद की खाई गइरी होती जा रही थी। ऐसे समय में लाला मेला राम सूद सम्मेलन पालमपुर का प्रधान चुन कर सूद वंश की गतिविधियों में नया मोड़ लाने का प्रयास किया गया है।

लाला भोलूराम जी मिट्ठू के यहां 1909 में जन्में श्री मेला राम सूद 1936 ई. में शिमला नगरपालिका के प्रधान चुने गये। आप तब तक चुने जा चुके तमाम सदस्यों में कम आयु के सदस्य थे आप एगलों संस्कृत विद्यालय के मैनेजर बना दिये गये। इस महान संस्था की आर्थिक दशा अत्यंत शोचनीय थी। आप ने पन्द्रह हजार रू. देकर स्कूल के भवन का निर्माण कराया तथा शिक्षिर्थियों के लिये अनेकों साधन जुटाए।

आपने अधिक उत्तम अवस्था के लिये चालीस हजार रू.एकत्र किये। 10 हजार रू. श्री जोधामल जी की दानवीरता से प्राप्त हुआ आप शिमला व्यापार मंडल के मंत्री तथा शिमला हाऊस ओनरज कमेटी के मंत्री रहे। आप मेहर चन्द्र सूद ट्र्स्ट के भी सदस्य तथा सूद सभा शिमला के मंत्री थे।

इसके अतिरिक्त आप तीन लाख रू. से चल रही सूद व्यापार संस्था ''होशियारपुर इलैकट्रिक सप्लाई'' कम्पनी के भी चैयरमैन थे। डी. ए. वी. स्कूल शिमला की प्रबंधकारणी के सदस्य तथा आर्य समार गरली के प्रधान रूप में भी आपने अपार जन सेवा की आपकी प्रधानता में सूद सम्मेलन ने कई क्रांतिकारी एवं महत्वपूर्ण निर्णय लिये तथा जातिय संगठन को मजबूत बनाने के लिये अनेक दृढ पग उठाए।

## राय साहिब राधा किशन

इसके साथ ही अमृतसर की प्रसिद्धि विभूति राय साहिब राधा किशन जैसे जाति प्रेमी समाज सेवी का वर्णन करना भी आवश्यक है। आप 1932 में जालंधर में हुए सूद सम्मेलन के प्रधान चुने गये तथा आपकी अध्यक्षता में इस सम्मेलन में अत्यंत महत्वपूर्ण मत पारित किये गये थे। आप अमृतसर सूद सभा के आधार सत्मभ थे एवं उनके वर्तमान संगठित रूप का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। समाज सेवा के क्षेत्र में इनकी योग्यता की स्वतंत्र छाप थी। आप उच्चकोटि के प्रशासक, कुशल इन्जिनियर तथा प्रसिद्धि दानी सज्जन थे। बच्चों से इन्हें विशेष प्रेम था। हर समय अपनी पॉकेट मिठाईयों से भरी रखते एवं बच्चों बूढों यहाँ तक कि जानवरों को भी बाँटते रहते थे। 92 वर्ष की आयु

में यह सपूत अपनी इहलोक की लीला समाप्त कर गये। इस नेक पिता की नेक संतान आज उच्च पदों एवं उन्न्त जीवन स्थापन में व्यस्त आप धर्म भीरू दयालु प्रेम तथा त्याग की मूर्ति थे। अपने समय के भीष्म पितामह के रूप से जाने जाते थे।

डा० कैप्टन भगवान दास सूद

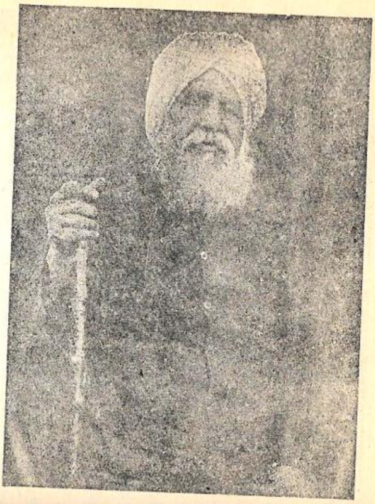

राय साहिब राधा किशन सूद

**डा. कैप्टन भगवान दास सूदराय साहिब**

**राधा किशन सूद**

लाला मंगत राम कुठालिया

लाला मंगत राम कुठालिया

## डॉक्टर भगवान दास

इसके पश्चात 1935 की गरली सूद सम्मेलन के प्रधान डा. कैप्टन भगवान दास का सहज ही स्मरण हो आता है। 1918ई. आपने डॉक्टरी की परीक्षा उस समय पास की जबकि इस क्षेत्र मे बहुत कम संख्या में युवक आगे बढ़ पाये। कई वर्ष आप मिलिट्री में डॉक्टरी सेवा के अधिकारी रहे। 1924ई. में सेना से त्याग पत्र देकर आप जांलधर में ही बस गये वहां सूद सभा का सगंठन किया। 1928 ई. में आपने सूद कांफ्रेस बुलाई थी। अपने ढंग की प्रथम एवं शायद अन्तिम भव्य कॉंफ्रेस थी आपने सूद सभा की आधार शिला रखने में आप अग्रणी थे। आप ने ही विधान को पूर्ण रूप देकर सभा को रजिस्टर कराने एवं सूद सहायक सम्मेलन से अखिल भारतीय सूद सभा एवं सम्मेलन का वर्तमान रूप आप ही की देन है। आप ने प्रथम बार सभा का मुख पत्र निकालने का न केवल निश्चय एवं मत ही पास किया बार स्वयं मुख्य सम्पादक बन कर आप ने सभा का मुखपत्र सा. सूद समाचार निकाल सफलता के नये मानदंड स्थापित किये। जातिय एकता संगठन एक के लिये आप द्वारा की गई सेवाओं को कभी भुलाया नही जा सकता।

## लाला मंगतराम सूद

अमृतसर में हुए 1943 ई. में सूद सम्मेलन के प्रधान के रूप में लाला मंगत राम का नाम सम्मुख आता है। कुठियाला वंश की इस विभूति में रूप से सेवा एवं दान की भावना विद्यमान है आप ने सम्मेलन के अवसर पर ग्यारह सौ रूपये तथा रा. बा. जोधामल ने दो हजार रू0 सूद सभा को दान दिये। आपकी प्रधानता में हुए इस

सम्मेलन की विशेषता यह थी की इस अवसर पर एक नारी सभा की गतिविधियों एवं कार्य क्षेत्र को एक विस्तृत रूप दिया गया।

## सेठ सुलखन सिंह सूद

सूद शब्द के अर्थो को सही रूप में चरितार्थ करने वालों में शिमला, अमृतसर और लुधियाना तीनों सम्मेलनों की प्रधानता करने वालों में सादगी के पुतले श्री सुलखन सिंह का नाम सर्वापरि है। आपका जन्म 892ई. में स. बलिसिंह जी के यहां हुआ। आप बलिसिंह भगवानसिंह नाम व्यापारी संस्था तथा पंजाब स्टील रोलिगं मिल्ज के स्वामी थे। आप फैडरेशन ऑफ स्टीन मरचैंट दिल्ली के प्रधान तथा टोन प्रैस रोलिगं मिल्ज एशेसियेशन अमृतसर के प्रधान थे। बम्बई दिल्ली एवं अमृतसर की अनेकों व्यापारिक संस्थाओं के पदाधिकारी होने के साथ ही व्यस्त रहने के बावजूद आप की सामाजिक सेवायें भी उदाहरनीय है। आप प्रेम सेवक सभा के उपप्रधान, अन्धविद्यालय की प्रर्वधकारिणी के सदस्य एवं नगर के प्रसिद्धि समाज सेवी सज्जन थे। आपने आपना जीवन 1917ई. में रेलवे के साधारण ठेकेदार के रूप में आरम्भ किया और अपने बुद्धि कौशल एवं योग्यता से लाखों रूपये कमाए एवं हजारों रू0 सेवा कार्यो में व्यय किये। आप रोटरी कल्ब अमृतसर के प्रधान एवं अनेकों समाज सेवी संस्थाओं के सरंक्षक थे आप जीवन भर सूद सभा अमृतसर के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बने रहे।

सभा के आधार स्तंभ।

# अमृतसर सूद सभा के आधार स्तम्भ
# लाला बूटी राम जी सूद

कृष्ण और बलराम को जोड़ी के समान सेठ, सुलखन सिंह और लाला बूटीराम जी ने प्रधान तथा महामन्त्री क्रमशः बनकर सूदों की द्वारकापुरी अमृतसर से सारे भारत की सूद जाति को नयी दिशा बोध तथा समाज सेवा के नये माप दण्ड़ सुझाये। कोई कार्य ऐसा नही जिस में अमृतसर सूद सभा इस जोड़ी के सुन्दर नेतृत्व में भारत की किसी भी स्थानीय सभा अथवा केन्द्रीय सभा से भी पीछे नही रही।

लाल बूटीराम जी सूद 1911ई. से जाति की सेवा में व्यस्त बूढ़े शेर सेनापति है जिन्होंने सदैव ही सभा की डगमगाती नैया की पतवार संभाल कर उसे हर तूफान से सफलता पूर्वक बाहर निकाला है।

अमृतसर से सभा के मुख्य पात्र ''अखबार'' को निरन्तर कई सफलता से चलाना सूद सम्मेलनों का सफल आयोजन, शिक्षाअनाथ एवं विधवाओं को अपने स्थानीय साधनों से छात्रवृत्तियाँ तथा वजीफें देना किसी भी सभा के लिये दुष्कर है। परन्तु अमृतसर की सूद सभा एवं लाला बुटीराम जी असम्भंव कार्य ही हाथों में लेते एवं उन्हं सम्भव करके दिखा देते है वेदों के महान श्रद्धालु परातन भारतीय सभ्यता के अन्य पुजारी, योगयुक्त सादे जीवन के धनी लाला बूटीराम जी विचारों के कट्टर आर्यसमाजी तथा आर्य समाज के आजीवन सदस्य तथा शक्ति नगर आर्यसमाज के कई प्रधान रहे। आर्यसमाज के भव्य भवन तथा सूद धर्मशाला की विशाल भवन इन्ही की साधना का सुन्दर परिणाम है।

# लाला केदार नाथ जी बौरी

लुधियाना सूद सभा की भी कुछ अपनी ही विशेषताएं है। अच्छा नेता और बड़े फन्ड इन में लुधियाना सूद सभा तथा वहां के सूद सपूत कभी पीछे नही रहे। लाला केदार नाथ बौरी भी लुधियाना की सूद वंश की गौरवपूर्ण देन है आप 1966ई. में सूद सम्मेलन होशियारपुर के आदरी प्रधान मनोनीत हुए।

आप लुधियाना यंगमैन सूद एशोसियेशन के तीन बार प्रधान चुने गये। सा. सूद सभा के कई वर्ष निरन्तर प्रधान रहे। सूद सम्मेलन लुधियाना की स्वागत समिति के प्रधान के अतिरिक्त आप अनेकों अन्य सभाओं से भी सम्बंध है केवल धनी ही नहीं धन का सही उपयोग तथा एवं सहायता कार्य में भी आप सदा अग्रणी रहते हैं।

सूदावाला गांव जिला लुधियाना को इन्हीं के पिता एवं चाचा आदि ने बसाया था। इस गांव का नाम साहनेवाल था। जबकि इस उजड़ ग्राम में सूद में एगरोकलचर फार्म स्थापित करके इसके सूदवाला नाम दिया इससे पूर्व आप हेरावाला के निवासी थे।

आप का जन्म 11 जुलाई 1894 में हुआ। आपके पिता का नाम श्री दुनीचन्द एवं दादा जी बा. संत मल थे। श्री केदारनाथ बौरी 1967 ईस्वी में दिल्ली सूद मेला के भी प्रधान थे। आप 1967 से 1972 तक सा. सूद सभा के प्रधान थे आप युवकों की प्रेरणा एवं पथदर्शक के रूप में भारत की तमाम सूद युवकों के आदर के पात्र है। आप के सपुत्र श्री नरेन्द्र, जतेन्द्र एवं जगदीश जी भी पिता के ही योग्य और लगनशीन युवक है। यह परिवार परम्परां इस प्रकार आगे बढ़ी।

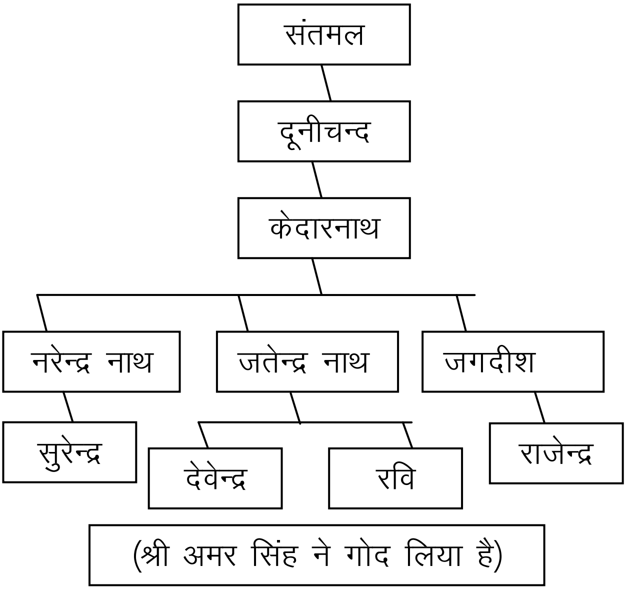


# लाला मिलखी राम जी

लाला मिलखी राम सूद एडवोकेट होशियारपुर की प्रसिद्धि विभूति एवं समाज सेवक महानुभाव है। 9 अक्तूबर 1884 को बिज बारे में जन्में श्री मिलखी राम जी देवराज सूद के सपुत्र एवं श्री आत्मा राय जी के पोते है।

लाला मिलखी राम जी सूद सभा के प्रधान रहे एवं 1933 अमृतसर सम्मेलन इन्हीं के तत्वाधीन हुआ था। आप पार्वती देवी आर्य महिला विद्यालय की प्रबन्ध समिति के प्रधान, आर्य समाज होशियारपुर के प्रधान एवं डी. ए. वी. कॉलेज की प्रबंधकारिणी सभा के प्रधान रहने के अतिरिक्त बिजवाड़ा कॉलिज समिति एवं डी. ए. वी. कॉलिज ''लाहौर'' सोसाइटी के सदस्य एवं आर्य जगत के व्योवृध्द एवं योग नेता है। इस समय 91 वर्ष की आयु में

भी थी सक्रिय लग्नशीलता उत्साह एवं देश जाति के लिये प्रेम आपके युवकों एवं परस्पर राग–द्वेष में पड़े जातीय नेताओं के लिये एक आदर्श उदाहरण है।

यह सूद सभा का दुर्भाग्य ही समझये की परस्पर के भेद–भाव के कारण सूद सभा इन की सेवाओं से उचित लाभ नहीं उठा सके। रा. बा. जोधामल इन का बहुत आदर करते थे। इन्हीं के परामर्श पर उन्होंनें लाखों रूपया दान आदि में दिया।

सूद इतिहास के सम्बंध में किन–किन महानुभावों से मिला उनके मुझे कदाचित रख से अधिक प्रभावित इन्ही आर्य वीर योग युक्त सोद जीवन के धनी सूद पितामह ने किया है।

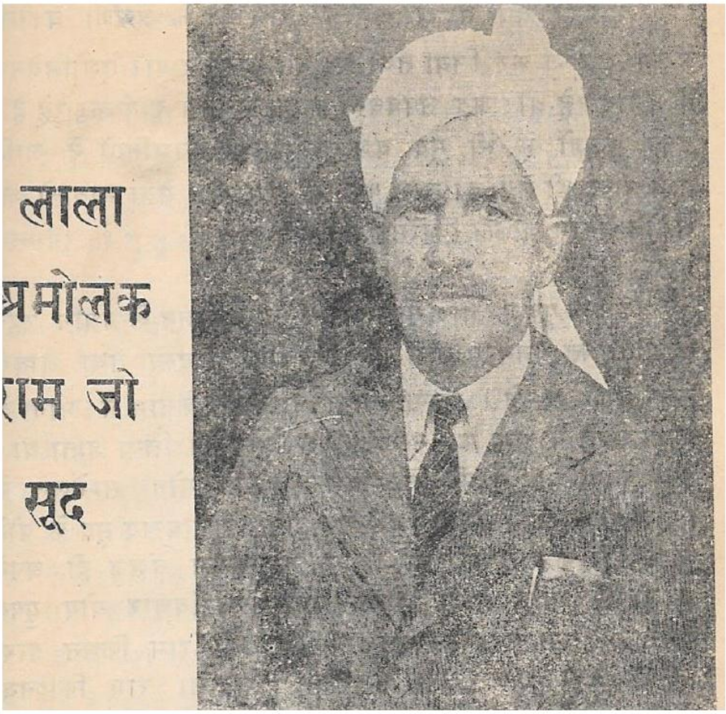


# लाला अमोलक राम जी सूद

1950 के फगवाड़ा सूद सम्मेलन के प्रधान ला. अमोलक राम सूद एडवोकेट का नाम किसी परिचय का मोहताज नही। फसी गोत के इस बुद्धिजीवी वयोवृद्ध नेता ने 1818 ई में वकालत पास करके 23 जुलाई 1919 में प्रथम बार एक वकील के रूप में अदालत में प्रवेश किया। प्रसिद्धि सूद नेता एवं शिमला सम्मेलन ''1935'' के प्रधान राय–साहब चौ. गनपतराय भी इसी परिवार की प्रतिष्ठित विभूति थे।

कुछ ही वर्षो में श्री अमोलक राम सूद ने अग्रणी वकीलों में स्थान प्राप्त कर लिया तथा कई वर्ष निरन्तर बार एशोसियेशन के प्रधान रहे और अब उपप्रधान के पद से सेवा कार्य कर रहे हैं इनके पूर्वजों में भी सूद वंश की अनेकों विभूतियों ने जाति तथा राष्ट्र की सेवा का लाभ कमाया था अतः सेवा भाव तो श्री अमोलक राम जी को विरासत में मिला था।

इन के पूर्वज चौ. गनपतराय सूद सम्मेलन के प्रधान रहने के अतिरिक्त, नगरपालिका के मानीय सदस्य तथा आदरी न्ययाधीश भी रहे। गनपतराय तरलोक चन्द केनाम से मोगा के व्यापारियों में आप का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता था। इन्हीं के परिवार में श्री गंगा विशन 1929 मोगा सम्मेलन के महामन्त्री थे। श्री अनोखामल के पड़पौते गुलाबराय सूद के पोते चुहडमल के पोते थे राम किशन के तमाम वंशज ही अपने पूर्वजों की भांति सादा जीवन एवं उच्च विचार योग युक्त सात्विक जीवन के धनी महानुभाव है श्री राम किशन द्वारा निर्मित तथा ट्रस्ट द्वारा संचालित शिवाला राम किश्नायां मोगा का प्रसिद्धि पवित्र स्थान है। जिसके लिये हजारों रूपये की नकदी भूमि आदि इसी परिवार ने देकर अपनी दानशीलता का परिचय दिया था।

मोगा में जी. टी. रोड पर स्थित लाला हवेली में श्री अमोलक राम से मिलकर जाति के सम्बंध में उनके हृदय के उदगार तथा उत्साह देखकर मुझे नई प्ररेणा मिली थी।

# दिल्ली के प्रसिद्धि सूद परिवार

दिल्ली को हम आज के सूद वंश की राजधानी की उपमा दे दें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी लगभग परिवारों 8 1/2 हजार पर आधारित दिल्ली का सूद समाज आज के सूद वंश की उन्नति का मुँह बोलता चित्र प्रस्तुत करता है।

दिल्ली सूद सभा की भी अपनी विशेष परम्पराएं है। भारत भर के सूदों में कदाचित यही सब से अधिक संगठित, अनुशासनबद्ध तथा सुनियोजित संस्था है। जो वास्तव में सूदों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक वर्ष सूद मेला करना, विधवाओं तथा अनाथों एवं छात्रों की पैन्शन तथा छात्रवृत्तियाँ देना तथा सूद भाईयों की हर प्रकार से सेवा सहायता करने का इनका उदाहरण भारत भर के सूद संगठनों के लिये एक उदाहरण है जिसका श्रेय दिल्ली सूद सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों तथा संरक्षकों को जाता है। इनमें श्री रत्न चन्द जी सूद (इरोज सिनेमा) श्री हरबंशलाल जी सूद आयकर कमिशनर, प्रो. पी. सी. सूद (प्रधान) वयोवृद्ध समाज सेवी डा.शादीराम (महामंत्री) तथा श्री अमर नाथ श्री रामरखामल जी सूद ''अन्सारी रोड़'' श्री व्यास राम, राम स्वरूप, श्री अरोड़ा राम (दिवगंत) श्री एक. पी. सूद तथा डा. जे. डी. महिन्द्रा का नाम प्रमुख है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतू प्रथम प्रेरक पग भी सूद सभा दिल्ली ने उठाये तथा सब से प्रथम प्रस्ताव भी इसी सभा ने पारित किया जिसके लिये मैं तमाम महानुभावों का कृतज्ञ हूँ।

इस वर्ष भी 16 नवम्बर को दिल्ली सभा अत्यंत भव्य ढंग से सूद मेला का आयोजन करके अपनी पूर्व परम्परा को आगे बढा रही है। जिसके प्रधान आदरणीय श्री जे. एस. नेहरी नोटिधम ''इंग्लैंड'' से इसी सप्ताह पधार कर विदेश में रहकर भी अपने देश तथा वंश के प्रति विदेशी भारतीयों के प्रेम तथा श्रद्धा का परिचय दे रहे है।

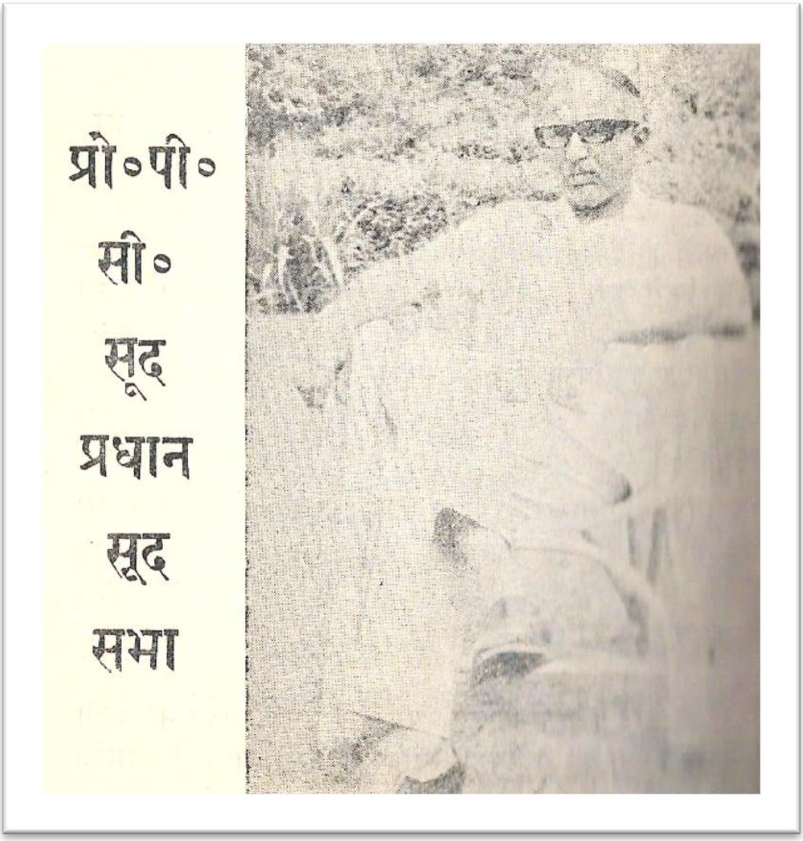


प्रो. पी. सी. सूद प्रधान सूद सभा

दिल्ली की विशिष्ट सूद विभूतियों में बुद्धिजीवी समाज सेवक प्रो. पी. सी. सूद एक विशेष स्थान रखते है।

लाला धनीराम सूद के पोते तथा श्री अच्छरू मल सूद का जन्म 1910ई. में माडले ''ब्रह्मा'' में हुआ। परन्तु इनके पूर्वज जिला अमृतसर की तहसील तरनतारन के गाँव ढोटियाँ के रहने वाले थे।

लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए. करके 1937 ई. में आपने अध्यापन कार्य आरम्भ किया। इससे पूर्व आप आकसर्फोड विश्वविद्यालय के भी विद्यार्थी रहे तथा बी.ए. ''आर्ट'' पास किया। तीन वर्ष तक आप हिन्दु कॉलिज दिल्ली के प्रिंसीपल भी रहे तथा अंग्रेजी विभाग के प्रमुख का कार्यभार सम्भाले रहे।

कई वर्षो से आप सूद सभा दिल्ली के प्रधान पद को सुशोभित करते हुये सभा के संगठन एवं गतिविधियों को उतरोतर बढाते चले जा रहे है। कहा जा सकता है कि श्री पी.सी. सूद तथा डा. शादी राम सूद दिल्ली सूद सभा के भवन के दो आधार स्तंभ है जिनके दूसरे दो सत्मभ श्री रामरखामल जी सूद तथा सेठ रत्न चन्द सूद है।

प्रो. पी.सी. सूद कई वर्ष शिक्षा बोंड की उपसमिति के सदस्य तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की कोर्स सम्बन्धी उपसमिति के भी सदस्य रहे।

इनके ही बेटे मेजर के.सी. सूद सेना के तकनीकी विभाग में तथा दूसरा मेजर अजय सूद सेना में राष्ट्र की सेवा कर रहे है।

इनकी योग्य सपुत्री कु. आशा सूद पंजाबी विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विभाग में उच्च पद पर आसीन सूद नारी समाजका प्रतिनिधित्व कर रही है। इनका बेटा अनिल अमेरिका में उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

इस प्रकार उच्च शिक्षित, सुसभ्य एवं मित परन्तु मधुरभाषी यह परिवार सूद वंश के उच्च कुलीन होने का प्रमाण देते हुए उत्तरोतर ऊँचा उठने के सूद शब्द के अर्थो को कार्यो मे अनुदित कर रहा है।

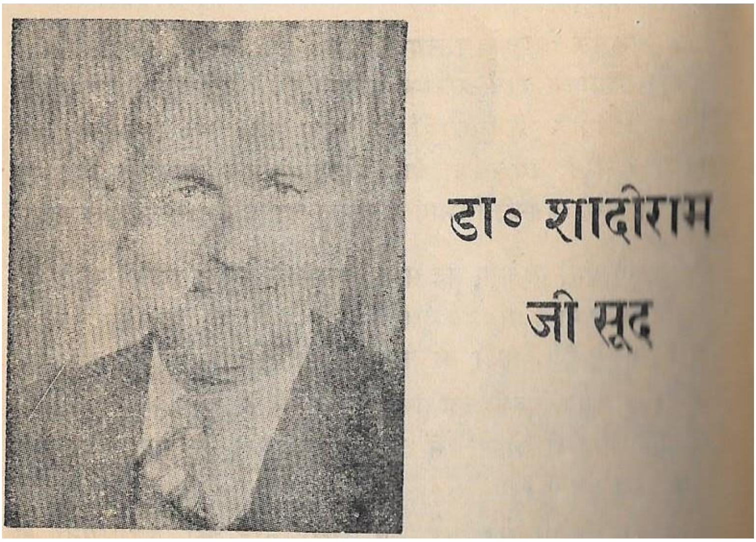


डा0 शाादीरामम सूद

सेवा के पुण्यशील कार्यो के प्रति लग्न पूर्व जन्म के शुभ कार्यो के कारण ही प्राप्त हुआ करती है। इसी दृष्टि से दिल्ली सूद सभा के अनथक कार्यकर्ता तथा महामन्त्री डा. शादीराम सूद का अत्यंत भाग्यशील जीव है।

जालंधर और लुधियाना के बीच जंडियाला के पास एक छोटा सा गांव खाटरा चौहरसी डा. शादीराम का जन्म स्थान है। जहां आपने 1897ई. में श्री कृपा राम के सपुत्र श्री गड़ा राम के घर जन्म लिया।

1918ई. में आपने लाहौर से डॉक्टरी की परीक्षा पास की तथा कई वर्ष सिवल एवं रेलवे विभाग में स्वास्थ्य अधिकारी के पद पर कार्य करते रहे।

सेवा भाव आपकों पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला था तथा रोगीयों की सेवा के अतिरिक्त सहायता भी आप प्रायः करते रहते थे।

आप लगभग तीन वर्ष सूद सभा लाहौर के प्रधान रहे। अवकाश प्राप्त करके आपने नीजि प्रकटिम आरम्भ की तथा फिर दिल्ली में ही बस गये। आप सात वर्ष नार्थ मैडिकल सोसाइटी के महामंत्री रहे।

दिल्ली सूद सभा को संगठित करने में आपका बहुत हाथ है। आप मई 1954 से दिल्ली सूद सभा के मंत्री चले आ रहे है और यह इन्ही की दौड़ धूप एवं लग्न का परिणाम है कि सूद सभा प्रत्येक वर्ष न केवल हजारों रूपये सहायता एवं दान आदि में देती है अपितु एक सुन्दर पत्रिका तथा अनेकों समारोहों का भी आयोजन करती चली आ रही है।

आप सूद चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से ट्रस्ट मंत्री के रूप में सूद जनता की अपार सेवा कर रहे है। सूद संसार पत्रिका की सम्पादन समिति के मंत्री भी आप है तथा इस वृद्ध अवस्था में आँखों के कमजोर हो जाने के बाद भी आप के उत्साह व लग्नशीलता में कमी नही आ सकी है।

## श्री देसराज सूद दिल्ली

इनके साथ ही सभा दिल्ली के भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री देस राज का स्मरण हो आता है इनका जन्म 4 अक्तूबर 1886ई. में लाहैर में लाला मूलचन्द के घर में हुआ। ला. मूलचन्द स्वंय एक सक्रिय व्यापारी नेता थे। वह सूद सभा लाहौर के मंत्री भी रहे। इस प्रकार ला. देस राज को सेवा भावना विरासत में मिली। देश का बटवारा होने पर अपने–अपने परिश्रम से अर्जित लाखों रूपये की हानि उठाई परन्तु अपनी योग्यता एवं लग्न से दिल्ली पहुँच कर पुनः उन्नति एवं समृद्धि के उच्च शिखर छू कर सूद शब्द को सार्थक कर दिखाया। उनके सपुत्र ला. वेद प्रकाश सूद कमला नगर में प्रतिष्ठित सज्जन एवं सेवाभावी महानुभाव है।

## श्री अरूड़ामल जी सूद

श्री अरोड़ामल सूद का नाम भी दिल्ली के सूद क्षेत्रों में किसी परिचय का मोहताज नहीं। श्री लक्ष्मण दास के पोते तथा श्री काहन चन्द के सपुत्र श्री अरोड़ामल सूद दिल्ली के प्रसिद्धि खांड व्यापारी एवं उद्योगपति है।

आप 1935 प्रयत अमृतसर में रहे परन्तु समाज सेवा के क्षेत्र में आपने इस स्थान पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है।

आप अमृतसर आर्य समाज के प्रधान तथा शुगर सिंडिकेट के प्रबंधक रहे।

1919 के सूद सम्मेलन में आपने दहेज के विरूद्ध एक प्रस्ताव प्रस्तुत करके सूद सभा को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। दहेज की ''नुमाइश'' के विरूद्ध आपने प्रचार अभियान आरम्भं किया।

1935 के पश्चात आप दिल्ली स्थानातरित हो गये परन्तु यहां भी सेवा भावना का प्रर्दशन निरन्तर करते रहे। आपकी व्यापार की श्रृंखला दिल्ली और मुजफर नगर में फैली हुई है।

स्वतत्रंता आन्दोलन में भी इस वयोवृद्ध नेता ने अपना महत्वपूर्ण भाग डाला तथा मार्शल के समय अमृतसर में पकड़े गये।

आपने अनेको बार अपना जीवन संकट में डाल कर हिंसक भीड़ों को रोका ओर शांतिपूर्ण सत्याग्रह किया। 919 के जलियावाला बाग कांड के अवसर पर अमृतसर के राजनैतिक क्षेत्र पर छाए हुए थे।

सूद सभा के प्रधान पद के अतिरिक्त आप जिला सूद सम्मेलन के प्रधान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा शुगर मरचैन्ट एसोसिएशन के मंत्री रह कर आपने समाज की भारी सेवा की।

## श्री रत्न चन्द जी सूद

दिल्ली सूद सभा के आधार स्तम्भ तथा तमाम गतिविधियों को कार्यरूप देने में प्रमुख सहायक सेठ रत्न चन्द सूद का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है।

दिल्ली के प्रसिद्धि एवं अत्यंत आधुनिक तथा भव्य (इरोज सिनेमा) के स्वामी तथा इरोज कन्स्ट्रकशन कम्पनी लिमिटिड के निर्देशक तथा प्रतिष्ठित व्यापारी होने के अतिरिक्त प्रसिद्धि समाज सेवी, दानशील एवं सुसभ्य

मिलनसार महानुभाव के रूप में आप अपार ख्याति आर्जित कर चुके है।

आप समाज सेवा आरम्भ से ही आपके रक्त में थी ओर संगतपुरा फगवाड़ा के मूल निवासी के रूप में आप सूद सभा के प्रमुख कार्यकत्ता थे और फगवाड़ा सूद सम्मेलन ''1950'' के अवसर पर आप स्वागत समिति के प्रधान थे और काफी व्यय स्वयं आपने दिया था। जहां कपड़ा आदि के थोक व्यापारी थे। इतना ही नहीं आज भी दिल्ली सूद सभा की सुनहरी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने में आप ही का प्रमुख हाथ है और धन सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिये आन भी सूद सभा प्रमुख रूप में आप की ओर ही देखती है।

आप सूद सभा दिल्ली के सरंक्षक तथा सूद चैरिटेबल ट्र्स्ट के ट्र्स्टी प्रधान है। आपके योग्य निर्देशन में शाही के परिश्रम ने दिल्ली सूद सभा के विद्यार्थियों, विधवाओं, अनाथों तथा निर्धन सूद परिवारों की भारी सेवा सहायता के योग्य बना दिया है।

## श्री हरबंस लाल सूद

लोकहित चिन्तक, विन्रम, अध्ययन वत साथी, अधिकारीगणलोक राज एवं समाजवाद के निर्माण के लिये सब से बड़ी आवश्यकता है। इस दृष्टि से केन्द्रीय आय कर विभाग के कमिश्नर श्री हरबंस लाल सूद जैसे मिलनसार दुर्दशी व्यस्त एवं दायित्वपूर्ण अधिकारी सूद वंश की ओर से राष्ट्र सेवा में अपना महत्वपूर्ण भाग डाल रहे है।

उच्च पद एवं व्यस्त जीवन होने के बावजूद आपका सक्रिय सहयोग एवं सरंक्षण दिल्ली सूद सभा को सदैव प्राप्त रहता है। आपने सूद सभा के अनेकों महत्वपूर्ण आयोजनों की सफलता में भारी योगदान दिया है तथा पथ प्रर्दशन किया है।

प्रस्तुत इतिहास के प्रकाशन में आपने आशा से अधिक सहयोग प्रस्तुत किया परन्तु हम अपनी विवशता के कारण उस का लाभ न उठा सके परन्तु आपकी प्रेरणा ने हमारे आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया।

एक विनम्र जन सेवक एक अनुशासनपूर्ण अधिकारी तथा उदार हृदय श्री हरबंस लाल सूद लाल फीताशाही से दूर अपना अलग ही प्रभाव छोड़ते है।

इसके अतिरिक्त स्वास्तिक फार्मेसी के स्वामी तथा प्रसिद्धि चिकित्सक डा. जमुना दास महिन्द्रा सूद सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता है। श्री राधाराम के पोते तथा श्री मुकन्दराम के सपुत्र डा. महेन्द्रा के पूर्वज मोगा के पास धर्मकोट के निवासी थे। जहाँ से वह कपूरथला के पास जा बसे।

डा. महेन्द्रा सोलह वर्ष तिबिया कॉलिज दिल्ली में अध्यापक रहने के बाद अब अजमल खां रोड पर चिकित्सा सम्बंधी सेवा कार्य में व्यस्त है। कैमिस्ट एसोसिएशन के प्रधान डा. जमुना दास मदेन्द्रा अनेकों संस्थाओं से सम्बंध समाज सेवी महानुभाव है इतना ही नहीं श्री व्यास राम जी का नाम दिल्ली के प्रमुख सूद परिवारों में आदर से लिया जाता है। कालीनिधि कालौनी दिल्ली महारानी बाग के निवासी श्री व्यास राम जी।

# श्री राम रखा मल सूद

हर वंश में समय–समय पर ऐसे अनमोल रत्न जन्म लेते रहे है। जिनके भावुक हृदय जाती–प्रेम तथा सेवा भाव की तड़प से ही न केवल स्वयं सम्पान हुआ करते है। अपितु सेवा और त्याग के उच्च आदर्श को दूसरों के प्राणों में भी फूँक दिया करते है।

ऐसे ही अमुल्य मोती सूद वंश की प्रसिद्धि विभूती श्री रामरखामल जी सूद है जो आज वृदावस्था में भी युवक कर्ताओं को अपने परिश्रम दौड़ धुप लग्नशीलता तथा उत्साह से पीछे छोड़ रहे है।

होश सम्भालते ही सेवा का विरासत आपने अपने पूर्वजों से ली और मोगा में सूद सभा ही नहीं अन्य माध्यमों से भी सेवा कार्य उत्साह से आगे बढते रहे। आप आपने नियमों तथा विचारधारा पर दृढ़ तथा प्रखर मस्तिक के स्वामी है। आपका नाम यंगमैन सूद एसोसिएशन के जन्मदाता तथा मोगा सूद सभा के प्रमुख नेता के रूप में अभी तक स्मरण किया जाता है।

आर्यसमाज के आप आरम्भ से ही भक्त रहे है तथा स्वामी दयानन्द की सुधारवाद तथा सत्य ज्ञान के प्रसार की भावना आप के कूट–कूट कर भरी हुई है। इस वृद्धावस्था मे भी आप मोगा आर्य समाज के प्रधान रहे।

आर्य समाज में दैनिक उपस्थिती आपके उत्साह एवं लग्न का ज्वलंत उदाहरण है हर धार्मिक एवं सामाजिक अवसर परमंत्र एवं अन्य अनेक प्रकार का एवं–साहित्य भारी मात्रा में छपवा का दूर–दूर तक

निशुल्क योजना आपके पुरातन भारतीय सभ्यता के प्रति अटूट विश्वास का सहज प्रमाण है।

श्री श्याम लाल सूद के अतिरिक्त प्रस्तुत इतिहास के शोध एवं प्रकाशन में मुझे सब से अधिक उत्साह इस वयोवृद्ध नेता से ही प्राप्त हुआ है। आपके पत्र ही हमारी सुप्तरगों में भी नया रक्त पहुँचाते रहे है। काश ऐसे ही उत्साही लगनशील एवं योगयुक्त सात्विक जीवन के क्रियात्मक वृति के सदपुरूषों हर स्थान पर पनपें तथा राष्ट्र की काया पलट कर दे।

इस समय आप अन्सारी नगर दिल्ली में निवास रख रहे है। जहां आपके योग्य सपुत्र प्रमुख डॉक्टर है।

इसके अतिरिक्त राय बहाादुर खुशी राम सूद ''गल्फलिकस'' कर्नल राजिन्दर सिंह सूद श्री एस. पी. सूद ''कपूर एण्ड क.'' के अतिरिक्त दिल्ली सूद सभा के प्रमुख कर्णधारा में श्री अमर नाथ सूद का नाम भी आदर से लिया जायेगा। आप फैज पवर के प्रमुख कागज व्यापारी तथा समाज सेवी महानुभाव है।

श्री ओमप्रकाश ''मुमताज भवन एक जसंवत राय सूद नवजीवन दवाखाना'' श्री हरभजन लाल सूद लोधी कलोनी'' डॉक्टर खुशी राम सूद ''मॉडल टाऊन'' श्री पी. एल. सूद, श्री ज्ञान चन्द सूद एडवोकेट तथा श्री अमीर चन्द धूप थी दिल्ली की वष्टि प्रमुख सूद हस्तियाँ है। इसके अतिरिक्त डा. जगजीत सूद ''पोली क्लीनक'' कनाट सरकस क्षेत्र के प्रमुख चिकित्सक तथा सेवा भावी महानुभाव है।

श्री कश्यप ने मिल सप्लाई के निर्देशक तथा सेवा भाव के कारण जनता में ख्याति प्राप्त की।

## जयपुर के प्रमुख सूद परिवार

जयपुर की खात्रा मुझे प्रमुख रूप में शाही पुस्तकालय में बड़े अमूल्य साहित्य एवं इतिहास सम्बंधी ग्रन्थों तथा सामग्री को एकत्र करने हेतू करनी पड़ी जहाँ गलैमर स्टूडियों के स्वामी एवं परिण्कृत वृति के कलाकार श्री महाराज कृष्ण के जहां निवास के मध्य उस सरल हृदय सादी कला के पुजारी छोटे से परिवार की उच्च सेवा भावना का सहज परिचय मिला श्री स्वंय एक अच्छे फोटोग्रार के रूप में बम्बई में भी अपनी साख बना चुके है। इन्होंनें स्थानीय सूद समाज के विषय में काफी जानकारी दी।

तत्पश्चात श्री विक्रम प्रसाद सूद शिक्षा कमिश्नर एवं प्रसिद्धि शिक्षा शास्त्री में मिलने का प्रयास किया परन्तु वह नगर से बाहर थे। आप राजस्थान के प्रमुख आई.ए. एस. अधिकारी है। जिनके विषय में मुझे तरनतारन शिल्प कला परिषद की प्रधान तथा प्रमुख कवयित्री श्री मति कमला सूद ''संयुक्ता'' ने सूचित किया था जो मुझ से भ्रातृवत स्नेह रखती है।

तत्पश्चात राजस्थान के प्रमुख अधिकारी एवं सूदवंश की महान विभूति श्री रमेश सूद से उनके निवास स्थान पर भेंट हुई जो राजस्थान सरकारी कृषी विभाग के सचिव तथा प्रमुखआई.ए.एस. अधिकारी है। में उस समय वायुयान से आपने भाई के पास बम्बई जाने के लिये निकले ही थे परन्तु इतने व्यस्त समय में भी कुछ समय उन्होनें मुझे पुनः भीतर बैठ कर दिया।

श्री नन्द लाल के सपुत्र श्री रमेश चन्द्र जी जिला अमृतसर के गांव नशहरा पनवां के मूल निवासी है। जहां से उनके पिता कलकत्ता में बस गये थे।

आई.ए.एस. पास करके आपने 1952 ई. में कृषि विभाग के कमिशनर के रूप में राजस्थान में जीवन आरम्भ किया। लैंड डेवलपमैंट कार्पोरेशन चेयरमैंन के रूप में सरकार एवं जनता की अपार सेवा की आपके पिता रेलवे बोर्ड के कार्यालय में प्रमुख अधिकारी थे।

**श्री बिशन दास सूद जयपुर**

साहल गांव जिला गुरदासपुर के श्री नारायण दास के पोते तथा योग्य संतान श्री बिशनदास सूद राजस्थान के प्रमुख व्यापारी तथा धारीवाल वूलन के वितरक के रूप में प्रसिद्धि है।

पंजाब से आपका परिवार कराची तथा अहमदाबाद में बसा था और वहां से जयपुर में देश विभाजन के पश्चात आबसे थे श्री बिश्नदास विचारों से आर्य समाजी है तथा जयपुर में सूद सभा के सगंठन के लिये प्रयत्नशील है।

## पंजाब के प्रसिद्ध सूद परिवार

पंजाब की प्रसिद्धि सूद विभूतियों में श्री बूटी राम सूद प्रधान सूद सभा तथा प्रधान आर्य समाज का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता है। यह वयोवृद्ध सूद नेता आज 82 वर्ष की आयु में भी युवको सी लग्न से समाज सेवा के प्रमुख कार्यो में प्रेरणा स्त्रोत बने हुए है आप सूद इतिहास उपसमिति के प्रधान तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन के प्रेरक हैं।

अनेकों वर्ष अमृतसर नगरपालिका के मुख्य एकाउन्टेन्ट के पद से सेवा करके अवकाश प्राप्त करने पर आपने अमृतसर इलैकट्रिक कम्पनी की नींव रखी जो आज अमृतसर की प्रमुख व्यापारी संस्था है।

आप पावर हाऊस युनियन के प्रधान होने के अतिरिक्त नगरपालिका इम्पलाई फैडरेशन के भी प्रधान रहे।

आप नगरपालिका बिजली विभाग समिति के भी प्रधान रहे। आर्य समाज के प्रधान के रूप में आपने

चालीस वर्ष निरन्तर परिश्रम करके समाज में नव प्राण फूँके आप न्यू भारत प्रोडेक्शन कमसेल सहकारी समिति के भी प्रधान है। आप सावेदशिक सूद सभा के महामन्त्री रहे तथा 1911 से अब तक विभिन्न पदोंपर रह कर आप सूद सभा के संगठन को उतरोतर करते आ रहे है। प्रमात्मा इन्हें दीर्घायू देकर हमें प्रेरणा देने योग्य बनाये रखे।

## श्री श्याम लाल सूद

इनके अतिरिक्त अमृतसर सूद सभा के मंत्री तथा सूद इतिहास उपसमिति के मन्त्री श्री श्यामलाल सूद का नाम पुराने आदरी कार्यकर्ता के रूप में सर्वत्र विख्यात है। यगमैंन सूद एसोसिऐशन के जन्म दाताओं में एक तथा इस संस्था के झंडे के अनवेषक तथा फहराने में इनका प्रमुख हाथ था।

आप आर्य समाजी है। हवन यज्ञ आपके दैनिक कर्तव्यों में आज भी गिना जाता है।

आप एक अनुभवी पत्रकार तथा लेखक है तथा हितैषी सूद सुधार एवं सूद मैगजीन के सम्पादक एवं प्रबंधक के रूप में यश और ख्याति आर्पित कर चुके है। इनके सात पीढ़ी पूर्व पूर्वज श्री माईदिता सरहिन्द से निकल कर सिखमिसलों के सरहिन्द के समय लुधियाना जिला के जस्सोवल के स्थान पर आ बसे। उनके सपुत्र श्री बुआदिता तथा श्री धारी मल थे। जिनके बेटे जेसाराम ने जांलधर जिला के कगं गांव को अपना आवास स्थान बनाया। उनके पोते नानक चन्द के बेटे मुन्शी राम श्री श्याम लाल के पिता हैं।

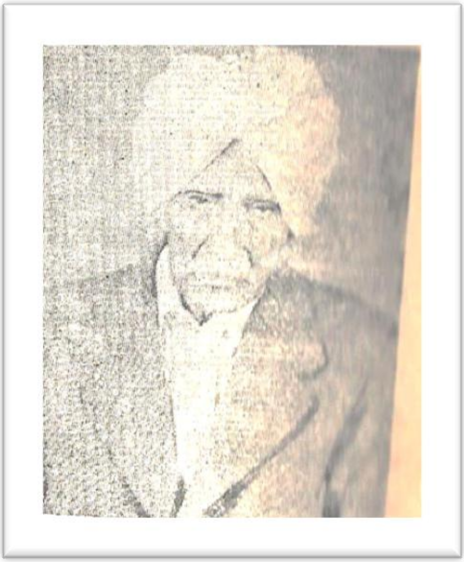

# श्री रला रामसूद

माता–पिता की मृत्यु के समय श्री श्याम लाल अभी बच्चे ही थे अतः इनके लालन पालन का भार श्री मुन्शी राम के देवता स्वरूप नेक भाई श्री रला राम पर पड़ा।

उन्होने इस दायित्व को निभाने के लिये आजन्म विवाह नहीं किया और भाक्ति में लीन रह कर सात्विक जीवन बिताया। श्री श्याम लाल के एक भाई श्री जगजीत राय नकोदर के कानूनी पद पर आसीन प्रभावशाली तथा प्रतिमाशाली महानुभाव है जिनका अतिथ्य ग्रहण करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। इस के एक भाई श्री राम स्वरूप देहरादून के वन विभाग में प्रमुख अधिकारी है।

श्री श्याम लाल सपुत्र श्री राजेन्द्र पाल, विजय कुमार श्री कांशी राम योग्य पिता के योग्य सपूत है।

श्री ओम प्रकाश सूद अपनी विदुषी पत्नी श्री मति प्रेम सूद के साथ

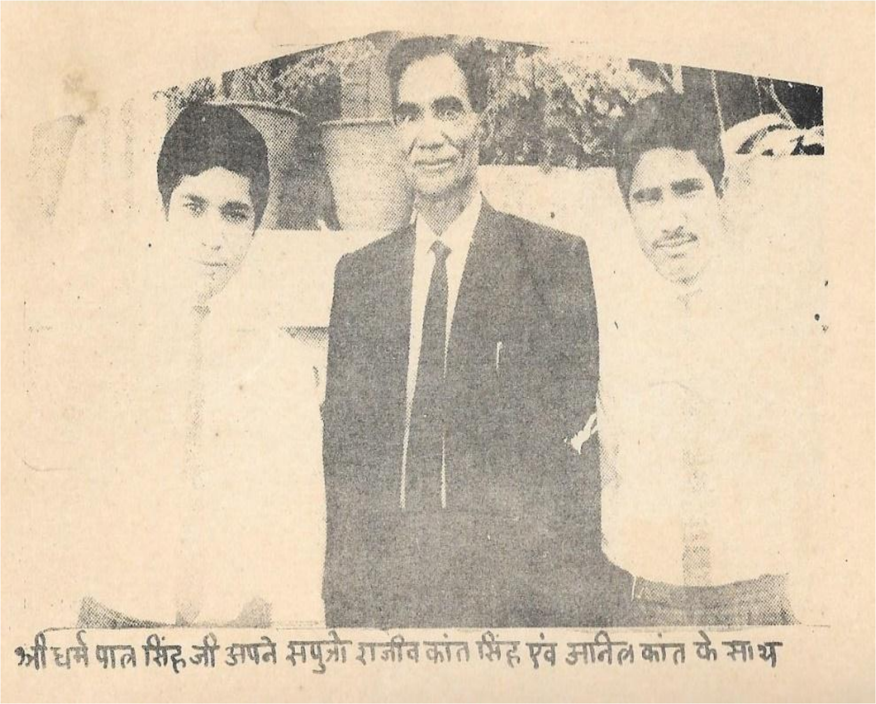


**श्री धर्म पाल सिंह जी अपने सपुत्री राजीव कांत सिंह एवं अनिल कांत के साथ**

# श्री धर्मपाल सिंह

श्री धर्मपाल सिंह का परिवार भी अमृतसर के विशिष्ट सूद परिवारों मे गिना जाता है। इनके पूवर्ज झब्बल जिला अमृतसर के रहने वाले विभाग के पटवारी थे जहां उन्नति करके श्री धर्मपाल सिंह ने अपनी योग्यता से प्राप्त उन्नति की। आप अमृतसर सूद सभा के वित्तमंत्री तथा अनथक कायकर्त्ता थे। इनके निधन से सूद सभा अमृतसर को काफी धक्का लगा।

# श्री धर्म चन्द्र सूद

एक अनथक कार्यकता जाति हितैषी पत्रकार तथा वयोवृद्ध नेता के रूप में श्री धर्मचन्द्र सूद का नाम प्रमुख रूप में सामने आता है। नशहरा पनवां से अमृतसर आ बसे। इस महानुभाव ने जीवन भर सूद सभा की अपार सेवा की है। सूद समाचार के सम्पादक के रूप में आपने जाति की अपार सेवा की। आपका नाम जल तकनीक के प्रमुख ठेकेदार तथा अपने क्षेत्र मेंविशेषज्ञ के रूप में लिया जाता है। आप व्यापार ही नहीं आप लेखनी के भी धनी है। तथा सूद सभा से अनेकों दशांकों से सम्बद्ध है।

आप जल सप्लाई सम्बंधी तकनीकी संस्था के प्रधार तथा मन्त्री भी रह चुके हैं

इसके अतिरिक्त श्री सुलखन सिंह के सपुत्र श्री इन्द्रजीत तथा श्री सोहन सिंह, हिमालय ट्रेडरज के श्री रेवती रमन सूद सभा के वित मंत्री श्री हरबंसलाल वृद्ध सूद महानुभाव श्री नरिंजनलाल वैद्य तथा मॉडल टाऊन

के श्री सलामतराय सूद तथा श्री धर्मपाल सिंह सूद के अतिरिक्त श्री ओमप्रकाश सूद भी प्रसिद्ध महानुभाव है।

इतना ही नही पिछले ब्यालीस वर्षो से सूद समाज की सेवा कर रहे अनथक कार्यकर्ता श्री फकीर चन्द सूद का वर्णन न करने से मैं दायित्व से चूक जाऊगां। सूद हितैषी, हितैषी सूद सुधार और अब सूद मैगजीन के माध्यम से सूद समाज की भारी सेवा कर रहे है। सूद समाज की जानकारी की दृष्टि इन्हे सूद संसार का शब्द कोष कहकर पुकारा जाता है।

तलवंडी सूदा के इस सूद परिवार के अतिरिक्त नगर की एक लब्ध प्रतिष्ठित विभूति है वृयोवृद्ध सूद नेता ला. बूटी जी के योग्य सपुत्र तथा न्यू भारत सहकारी उत्पादन एवं विक्रय संस्था के संचालक एवं प्रमुख व्यापारी श्री सोमदत जी सूद गम्भीरता, लग्नशीलता एवं बुद्धि जीवी के उतम गुण इन्हे विरासत में मिले है। इनके साथ ही अमृतसर इलैकट्रिक कम्पनी के संचालक श्री ब्रह्मदत तथा देवदत एवं श्री धर्म देव जी मिलनसार सहृदय महानुभाव है।

अमृतसर से तरनतारन पहुँच` तो हमें श्री रन्जीत सिंह सूद पी.सी.एस ''रिटार्ड'' भूतपूर्व सैशन जज के दर्शन होते है। प्रताप सिनेमा के स्वामी के प्रताप सिंह का नाम भी यहां वर्णन योग्य है। इसके साथ ही श्री हीरा सिंह सूद जी जगजीवन राम सूद तथा प्रिंसीपल योगिन्द्र पाल सूद जैसे मनीषी तथा श्री केदार नाथ सूद एवं रामजी दास सूद जैसे व्यापारी महानुभाव तरनतारन की विशेष विभूतियाँ है। साथ ही शिल्प कला परिषद्ध की प्रधान तथा पंजाब की महादेवी वर्मा श्री मति कमला सूद सयुंक्त जैसी विदुषी विभूतियां भी यहाँ विद्यमान है।

वहां से जगराओं पहुचने पर श्री स्वराजलाल कपउे वाले हकीम प्रकाश सूद तथा मदन लाल डिपो होल्डर के दर्शन होते है। जिसके श्री बलवंत राय तथा श्री ओम प्रकाश आडती प्रसिद्ध सूद परिवार है। जबकि कोट इसी खां में श्री हंस राज लोहे वाले धर्मकोट में श्री श्याम लाल तथा मोहाना के प्रकाश चन्द तथा तुलसी सिंह के वर्णन के साथ ही मोगा पहुँच जाते है।

## मोगा के प्रसिद्ध सूद परिवार

मोगा सूद वंशजों का प्रसिद्ध गढ़ है। इस प्रदेश ने सूद वंश के अत्यंत उच्चकोटी के महानुभाव दिये है।

श्री अमोलक राम सूद एडवोकेट भूतपूर्व प्रधान सा. सूद सभा का परिचय हम पीछे दे चुके है उन्ही के पूर्वजों में श्री राम किशन का वर्णन भी दिया गया है। उन्हीं के वंशज आज मोगा आज मोगा के सम्पूर्ण क्षेत्र में छाये हुये है। जिन में गंगबिशन कापरिवार विशेष रूप से वर्णन योग्य है उनका वंश परिचय इस प्रकार है।

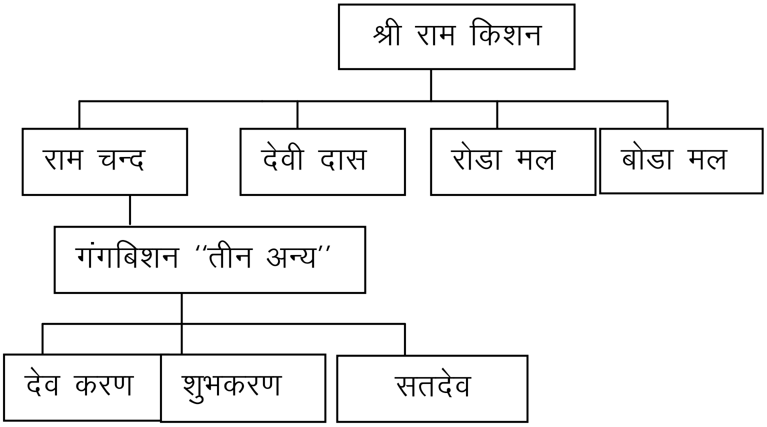

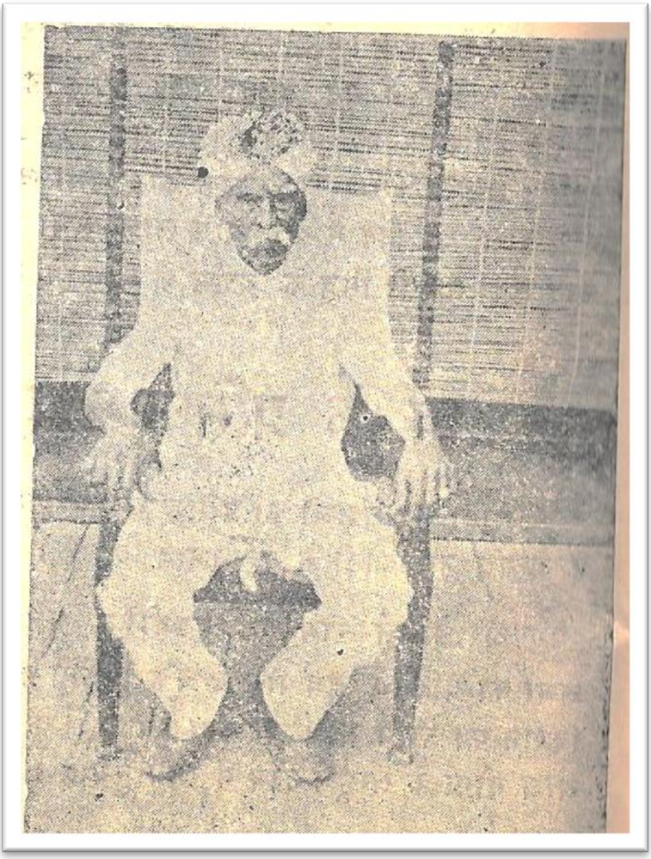

# मोगा के प्रसिद्ध सूद परिवार

इनमें श्री गंगा बिशन सूद ने चौथे सूद मेला की प्रधानता की आप शिवालाराम किशन ट्रस्ट के चेयरमैन थे। गौशाला के प्रधान के रूप में आपने पशु धन तथा देश दोनों की भारी सेवा की।

आपने भारी धनराशी दान में ही तथा शिक्षा संस्थाओं के कार्यो को प्रगति दी। आप आर्य समाज के 20 वर्ष प्रधान रहे तथा शिवाला के चेयरमैन है। आप सूद सभा की कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्य तथा नगरपालिका के प्रधान के रूप में एक विनम्र जन सेवक के रूप में कायों में जुटे हुए है। आप फडरेशन ऑफ स्टेट एशो–

सिएशन के प्रधान एम.डी. कॉलिज की प्रबंधकारणी के वरिष्ट उपप्रधान तथा एम.डी. हाई स्कूल के मैंनेजर के रूप में एक महान शिक्षा प्रेमी का दायित्व निभा रहे है। मारकिट कमेटी के चेयरमैन के रूप मे आप चिरकाल से व्यापारी वर्ग की सेवा कर रहे है।

श्री शुभकरण जगराओं आर्य समाज के प्रधान पद के दस वर्षो से शोभित कर रहे है। आप आर.एम. कॉलिज जगराओं की प्रबंधकारिणी के सदस्य है।

इस परिवार ने 12 एकड भूमि पर शिवला राम किश्नीयां ट्र्स्ट कायम किया। गंगा बिशन ने स्कूल में एक ब्लाक बनवाया तथा आर्य समाज में गंगा बिशन हाल इसी परिवार ने बनवाया। लगभग पचास हजार रू. उन्होंने विभिन्न संस्थाओं को दान में दिया।

श्री शुभकरण के सपुत्र श्री आई.एस. सूद तलवाड़ा में एगजीक्युटिव इंजीनियर विनोद कुमार एडवोकेट तथा विजय कुमार सूद कॉपर इंस्टीटयूट में प्रोफेसर है तथा परिवार की योग्यता का जीवित प्रमाण है।

## श्री रूप लाल साथी

इसके अतिरिक्त 1962 से निरन्तर नगरपालिका के सदस्य चले आ रहे आजाद समाज सेवा के वृतधारी साथी रूप लाल का नाम विशेष रूप से वर्णणीय है। आप 1969 से 1972 विधानसभा के सदस्य भी रहे। आप प्रयाप्त समय समाजवादी दल के मुख नेता रहे। समाज सेवा क्षेत्र में आपने अनेकों बार जेल यात्रा की। पिछड़े हुए जनार्दन की आप में अटल आस्था है।

एक साधारण श्रमिक के रूप में जीवन आरम्भ करके वर्तमान उच्चस्तर तक पहुँच  कर आपने सूद शब्द के सुगमता से उन्नति करने के अर्थो को सार्थक किया है।

1942 के स्वदेशी अन्दोलन में आपने प्रमुख भाग लिया। साइमन कमीशन के विरूद्ध आपने प्रर्दशनों में

मुख्य भाग लिया। आप उस समय कांग्रेस के प्रमुख सदस्य थे परन्तु स्वतंत्रता के बाद आप जय प्रकाश नारायण की समाजवादी दल में शमिल हो गये आदि इस दल की पार्लीमैन्टरी बोंड के सदस्य भी रहे।

1938 में कलसियां राज्य के विरूद्ध आयोजन में भाग लिया। 13 वर्ष की आवस्था में आप प्रथम बार जेल गये। 1947 से अब तक आप पर 27 मुक्दमें बन चुके है। एम.एल.ए के रूप में आपने हस्पताल, स्कूल, पक्की सड़कें ,धर्मशालाएं यत्न से इतनी मात्रा में बनवाई कि यह एक रिकार्ड है।

## श्री नौबत राय सूद

बच्चों, बूढ़ों, युवक सभी में लोकप्रिय अनथक कार्यकर्ता तथा समाज सेवक के रूप में श्री नौबत राय का नाम मोगा की विभूतियो में गिना जायेगा। नगरपालिका का के प्रधान के रूप में आपनेस घर–घर जा कर जनता के कष्टों का निवारण किया।

श्री गनपत राय ''नशहरा पनवां'' के पोते तथा श्री बेलीराम के सपुत्र श्री नौबत राय मंडल कांग्रेस के प्रधान तथा आये समाज मोगा के भी प्रधान रहे। आप ने स्वतंत्रता संग्राम में अनेकों बार जेल यात्रा की नगरपालिका के प्रधान पद से आपने त्यागपत्र देकर पद से चिपटे रहने वालों के लिये नया उदाहरण प्रस्तुत किया। प्रमुख गांधीवादी, खादीवादी तथा सर्वोदय प्रेमी श्री नौबत राय अथवा बाढ़ किसी संकट में सड़कों पर स्वयं हर संकट मोल हाथों से सेवाकार्य में जुटे दिखाई पड़ते है।

ऐसे कार्यकर्तोओं की आज समाज को सब से अधिक आवश्यकता है।

# कामरेड रामनाथ जी सूद

मोगा ने भारत को महान विभूतियां दी है उनमें श्री राम नाथ सूद का नाम प्रमुख है। मौरा गांव जिला संगरूर से 1922 में मोगा आ बसे। श्री गणेश मल के पोते तथा श्री मंगत राम के सपुत्र श्री राम नाथ ने 1910 में जन्म लेकर 1926ई. में छोटी आयु में ही क्राँतिकारियों की संस्था नौजवान भारत सभा में सम्मिलित हो गये।

1930ई. में पिकटिग के अरोप में अंग्रेजी सरकार ने इन्हे पकड़ा 1931 में 302 धारा के अधीन जेल की अकेली कोठरी में पांच वर्ष सड़ते रहे।

1938ई. में आपको अंग्रेज राजकुमार के रक्षा अधिनियम के अधीन पकड़ा गया। 1942ई. में आप सुलतान जेल को पवित्र करते रहे। 1921 के नाभा आन्दोलन में आपने प्रमुख भाग लिया।

आपके विप्लवकारी आंतक से अटक और रावलपंडी की दिवारे परिचित है। इस प्रकार रा ट्र के इस सेनानी ने स्वतंत्रता के संघर्ष में सूद वंश की ओर से अपना प्रमुख भाग डाला। इससमस आप फरीदकोट जिला स्वतंत्रता सेनानी संस्था के प्रधान है।

1972 तक जिला फरोजपुर स्वंतत्रता सेनानी संस्थान के प्रधान रहे। डी.एम. कॉलिज को कार्यकारणी के सदस्य होने के अतिरिक्त आप आर्य महिला तथा सूद सभा के प्रधान रह चुके है। परिष्कृत मस्तिष्क तथा गुणों के स्वामी श्री रामनाथ सही अर्थों में समाजवादी है।

इनके अतिरिक्त विक्टोरिया की विशेष गाड़ी के गोर्ड अफरीका के श्री हंस राज भी सूद सजाज के प्रमुख व्याक्ति है। आर्य गर्ल्स स्कूल की प्रिंसीपल तथा श्री ज्ञान मित्र, श्री शिवचरण दास, दुर्गा दास तथा छज्जूराम प्रसिद्ध महानुभाव है।

इनके अतिरिक्त सूद सभा के भूतपूर्ण प्रधान तथा कपड़ा व्यापार संस्था के प्रधान विद्यारत्न भी इस प्रदेश की प्रमुख सूद विभूति है।

# लुधियाना के प्रसिद्धि सूद परिवार

लुधियाना सूदों का प्रमुख गढ़ है। सरहिन्द तथा भटनेर से निकल कर सूद पहले यही पर आ कर टिके थे। इसी लुधियाना निवासी सूदों ने 1857 के स्वंतत्रता संग्राम में विद्रोही सेना को अंग्रेजों से छिपा कर रसद पहुँच ाई थी। आज भी की सूद सभा पर लुधियाना का बडा प्रभाव है। लुधियाना की प्रसिद्ध विभूति श्री केदार नाथा भौरी का वर्णन हमने पीछे कियाहै। इसके अतिरिक्त श्री हरीकृष्ण नेहरा ''भू.पू.'' चरंजीव सूद रिटार्यड तहसीलदार, तेलू राम महेन्द्रा सम्पांदक ''दैनिक समाज'' एवं सोमदत्त गाजरी तथा सुरेन्द्र कुमार महेन्द्रा ''प्राप्रटी डीलर'' के अतिरिक्त प्रसिद्ध सूद महानुभाव डा. प्राण सूद भी इसी नगर की प्रसिद्ध विभूतियाँ है।

**श्री ओम प्रकाश सूद**

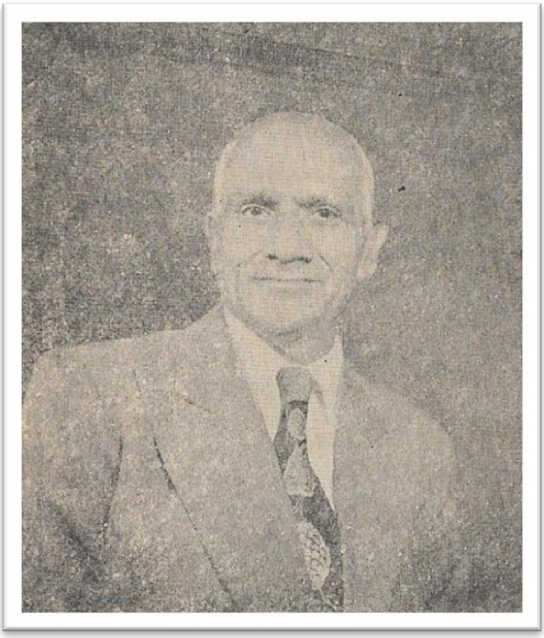

सुदाना गांव ''दीनानगर'' के श्री देवी दास के पोते तथा प्रमुख सूद आर्य नेता श्री रत्नसेन के सपुत्र श्री ओम प्रकाश सूद लुधियाना की प्रतिष्ठित सूद विभूति है। 1950ई. में लुधियाना आ टिका यह परिवार आज होजरी के क्षेत्र अग्रणी तथा सिम्पलैक्स हौजरी मिल्ज के स्वामी हैं।

श्री ओम प्रकाश सूद लुधियाना सूदा के प्रधान तथा महामन्त्री के रूप में इस इस वंश की अपूर्व से सेवा

करते रहे है। आज आर्य समाज लुधियाना के प्रधान तथा फैडरेशन ऑफ हौजरी फैक्टरीज के कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्य है। इनके पिता धारीवाल के पुत्री पाठशाला के प्रमुख संचालकों में से थे। जो अब कॉलिज बन चुका है।

श्री ओम प्रकाश सूद के भाई श्री खुशबख्त राम आर्य समाज के वित्तमन्त्री तथा प्रमुख व्यापारी है। सूद सभा प्रत्येक योजना के आर्थिक पक्ष के लिए इनकी ओर देखती है और सूद अथवा अन्य संस्थायों इनके दान एवं सहायता से सदैव ही लाभान्वित होते हैं। श्री रत्नसेना स्वंय सादे योगयुक्त जीवन के धनी थे और उनकी संतान में पिता के तमाम गुण विद्यमान है।

## पटियाला के प्रमुख सूद परिवार

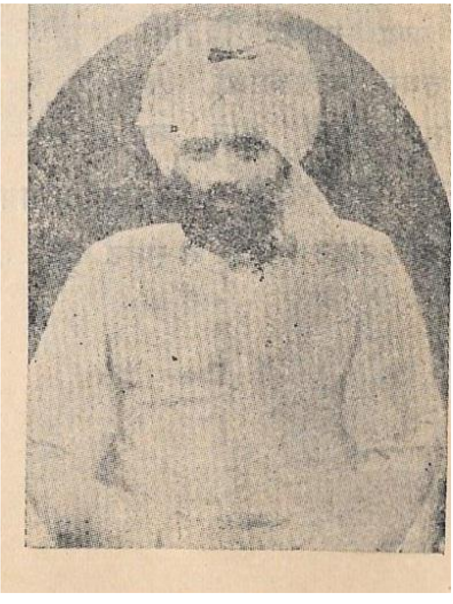

श्री आत्मधारी बेरी पटियाला की प्रमुख विभूति शिक्षा शास्त्री तथा पैप्सू के प्रसिद्ध विधायक थे। आपने जगजीत हाई स्कूल फगवाड़ा के मुख्याध्यापक के रूप में ख्याति प्राप्त की। आप हाई कोंट के प्रमुख वकील होने के अतिरिक्त बार एसोसीएशन के भी प्रधान थे। आप ने निर्धनों को निशुल्क कानूनी सहायता देने का अभियान चलाया। सा. सूद सभा सम्मैलन के प्रधान के पद से आपने जाति सेवा के लिए महत्वपूर्ण पग उठाये।

## श्री आत्म अभय बेरी

इन्हीं के सपुत्र है श्री आत्म अभय बेरी जो पटियाला की सनातन धर्म सभा के महामंत्री तथा सनातन धर्म शिक्षा प्रसार सम्बन्धी तमाम गतिविधियों में संस्था का केन्द्र है। इन्हें भी महेशयोगी, जगत गुरू, शंकराचार्य एवं अन्य गण्य मान्य विद्वानों तथा महात्माओं के सम्पक्र में आने का अवसर मिला हैं जिसका प्रभाव इसकी स्पष्ट विचारधारा तथा गहन चिन्तन से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

## अमृतसर की अमर विभूति

# श्री श्यामलाल सूद अमृतसर

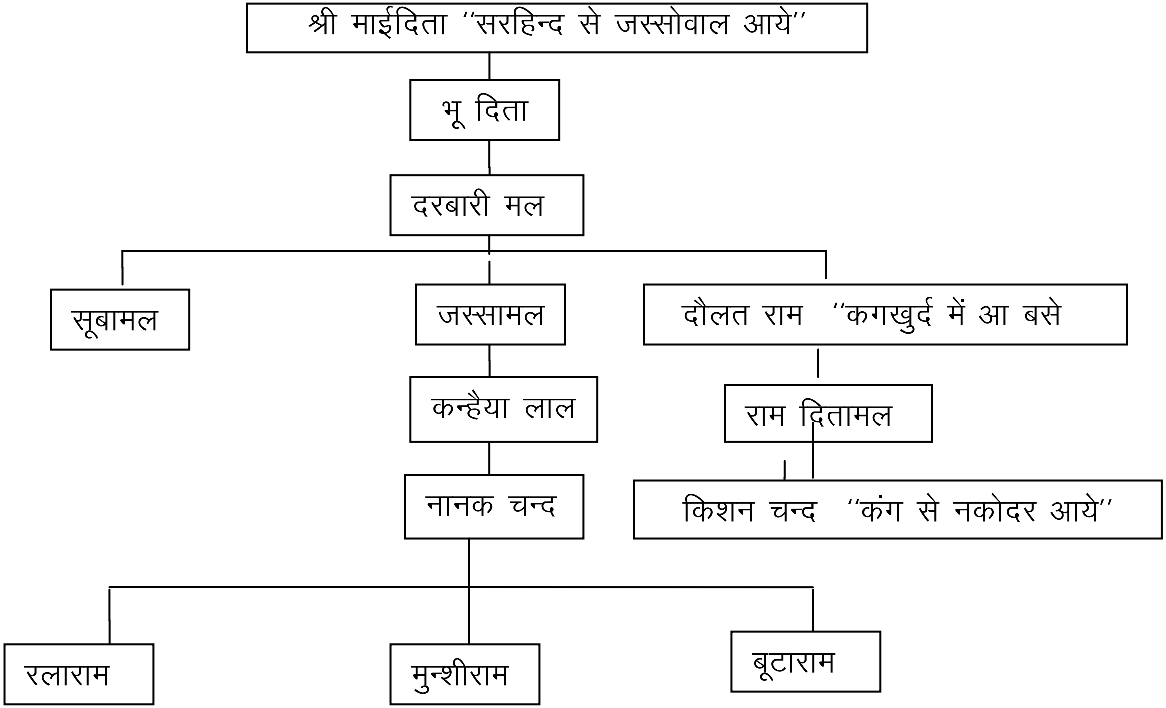

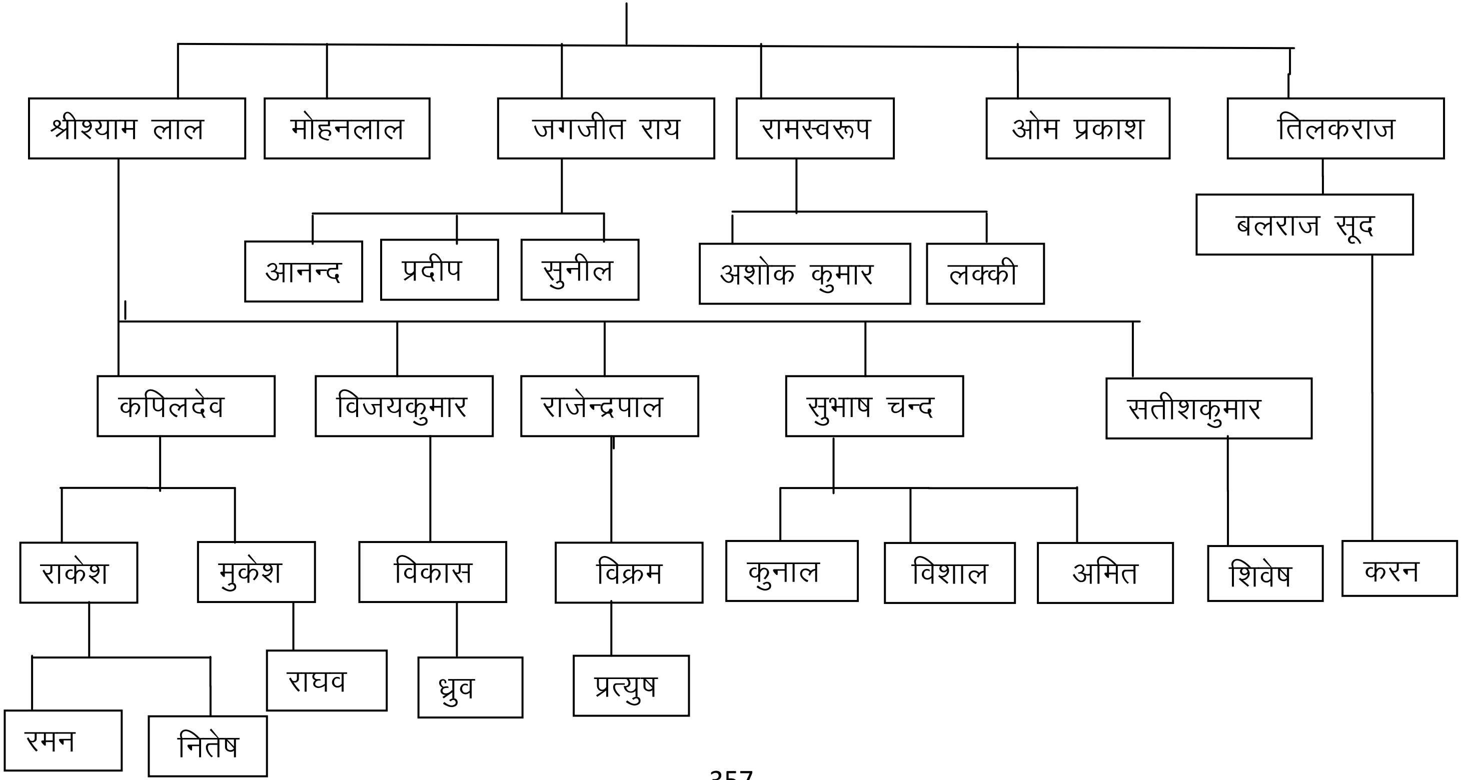
श्रीश्याम लाल
मोहनलाल
जगजीत राय
रामस्वरूप
ओम प्रकाश
तिलकराज
आनन्द
प्रदीप
सुनील
अशोक कुमार
लक्की
बलराज सूद
कपिलदेव
विजयकुमार
राजेन्द्रपाल
सुभाष चन्द
सतीशकुमार
राकेश
मुकेश
विकास
विक्रम
कुनाल
विशाल
अमित
शिवेष
करन
रमन
नितेष
राघव
ध्रुव
प्रत्युष

महान कार्यो की पूर्ति के लिये प्रमात्मा से विशेष व्यक्तियों को विशेष प्रकार के हृदय तथा मस्तिक से सुसज्जित करके संसार में भेजा होता है। ऐसे व्यक्ति उस इस्पात से बने होता है। जिन्हे विपरीत परिस्थितियों की आधियाँ असहयोग की झंझे अथवा निराशा के तूफान सेवा और त्याग के पथ से विचलित नहीं कर सकते। ऐसे ज्ञान–दीप प्रेरणा का तेल न मिलने पर भी स्वयं तिल–तिल जलते हुये भी ज्ञान सेवा और त्याग का उजाला फैलाते रहते हैं।

ऐसे ही कुछ गिने इश्वर भक्तों में नाम आता है। सादा जीवन तथा उच्च विचारों के ज्वंलत व्यतीत करते हुये वेद मार्ग पर निरन्तर चलते चले आ रहे है।

## वंश परिचय

श्री श्याम लाल सूद से आठ पीढी पूर्व उन के पूर्वज श्री माईदिता को भी अन्य तमाम सूदों की भांति सरहिन्द उस समय छोड़ना  पड़ा। जब कि गुरू गोबिन्द सिंह के दोनों पुत्रों के बलिदान का बदला लेने के लिये सिखों ने बन्दा बहादुर से प्रेरणा पाकर सरहिन्द नगर की एक–एक ईंट उखाड़ देने की प्रतिज्ञा लेकर भीषण आक्रमण आरंम्भ कर दिये थे। उस समय तमाम हिन्दुओं को सुरक्षित निकाल कर अन्यत्र बसा दिया गया था।

इस समय में श्री भाई दिता सूद भी सरहिन्द से निकल कर जस्सोवल जिला लुधियाना में आ बसे थे। जिनके पुत्र तथा पोते श्री भूदिता तथा पोते दरबारी लाल वहीं रहे परन्तु श्री दरबारी लाल नहीं रहे परन्तु श्री दरबारी लाल के सपुत्र जस्सोमल वहाँ आकर कंग सरदारों की जागीर पर कंगखुर्द नामक गाँव में आ बसे।

यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि यह शब्द कंग ने हो कर कनक है जो कनय नामक राजा के वंशज क्षत्रिये हैं

दो पीढियाँ यह परिवार कंग में रहा और फिर श्री श्याम लाल सूद के नेक पिता श्री मुन्शी जी सूद कंग से नकोदर आ बसे और दुकानदारी और महाजनी का कार्य करते रहे। यह तीन भाई थे।

1. श्री मुन्शी राम
2. श्री रला राम
3. बूटाराम

इन्हें श्री मुन्शीराम के सपुत्र है। श्री श्याम लाल सूद तथा श्री मुन्शीराम एक उच्चकोटि के तैराक तथा घुड़सवार थे।

छोटी आयु में ही माता–पिता की मृत्यु हो जाने पर परिवार का तमाम बोझ बीस वर्षीय श्री श्याम लाल के युवा कन्धों पर आ पड़ा। जिन्हों बैकें की नौकरी के बल भूते तमाम परिवार के प्रति अपना दायित्व सम्भाला। श्री राम इस परिवार के लालपन–पालन का कार्य तथा अपने भाई की बिमारी के मध्य जो सेवा एवं त्याग की भावना श्री रलाराम और श्री लब्बूराम ने परदर्शित की वह अन्य दुर्लभ है। अपने गॉव में यह दोनों भाई राम, लक्ष्मण की जोडी के नाम से विख्यात थे। श्री रला राम ने भाई की संतान के पालन के लिये आजीवन विवाह नही किया। भाक्ति में लीन रह कर उन्होनें निरन्तर साधना तथा भक्ति रसन भरा जीवन व्यतीत किया।

इनकी मृत्यु चण्डीगढ़ में अत्यंत विचित्र तथा रहस्यमय ढंग से हुई। वह अपने भाई के बेटे तिलक राज के साथ ठहरे थे जो मिलटरी में नायक सूबेदार थे।

## भक्त का निर्वाण

चण्डीगढ़ उन दिनों अभी बस रहा था। एक दिन श्री रला राम घर से बाहर निकले और कुछ आगे चल कर एक जैसे ढंग के सरकारी भवनों और आगे तक विरान प्रदेश के मध्य मार्ग भूल गये। भटकते हुये वह प्यास के कारण एक स्थान पर जलपान करने लगे तो पॉव फिसल जाने के कारण गिर पडे और बेहोश हो गये। सेवा समिति की एक रक्षा उधर से आ निकली और इस प्रकार उन्हें उठाकर हस्पताल पहुँचाया गया।

वहां काफी समय तक बेहोश रहने के बाद जब उन्हे होश आया तो वह बिना किसी को कुछ कहे ही वहां से निकल कर पुनः घर ढूँढने लगे। उधर घर के लोग उन्हे ढूंढ रहे थे और इधर श्री रलाराम भूख प्यास को सहते थकान से चूर एक वीरान स्थान पर दिवार के साथ सिर टिकाये बैठ गये। भूख और सर्दी के मारे वहां अन्त में हस्पताल के साथ लगे लैटर बॉक्स से सिर टिकाये जा बैठे और रात को उसी दृश्य में प्राण त्याग दिये।

इस प्रकार पुनः उन्हें हस्पताल पहुँच ाया गया पोस्टमाटम भी हो गया और इस लावारिस लाश को सेवा समिति को सौंप दिया गया। सेवा समिति वाले अन्तिम संस्कार के लिये ले चले तो भगवान की करणी यूँ हुई कि डोलकी चिमटे सहित भक्तजन मार्ग में मिल गये और उन्होनें कीर्तन आरम्भ कर दिया। वहां शनैः–शनैः भारी भीड़ जमा हो गई जगह–जगह मार्ग में भक्ति कीर्तन होता

रहा। ऐसा कहा जाता है कि चण्डीगढ़ के इतिहास में किसी अर्थी के साथ इतनी बड़ी संख्या में लोग आज तक नहीं गये थे। विडम्बना यह कि उनके अपने परिवार का कोई सदस्य नही था।

इस प्रकार  से अन्त हुआ एवं इश्वर भक्त का जिनका पता काफी समस बाद लगा। जिनकी कई दिन की खोज पडताल के बाद उन्हें हस्पताल के रिकार्ड में उस लावारिस लाश की फोटो मिली सेवा समिति को सौंपे जाने का पता चला। उपरोक्त कथा सेवा समिति अधिकारियों से ही सुनने को मिली। उन्हीं की तपस्या का परिणाम है श्री श्याम लाल सूद एवं उनके तमाम भाई स्वंय श्री श्याम लाल सूद पुराने कार्यकर्ता है। अमृतसर सूद सभा के तो आधार स्तम्भं हैं सूद सभा के मंत्री तथासूद इतिहास समिति के मंत्री के रूप में आपने अवस्मिरणीय सेवाएं की है। आज की पीढी के उल्ट आप पुरान्तन विचारधारा के तथा पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलने वाले महानुभाव है जिन्होनें न केवल जन तब तन–मन से सेवा की अपितु ''सूद वंश का गौरवशाली इतिहास'' नामक ग्रन्थ रचना के लिये श्री मदनेश जी को प्रेरित करके उसमें तन–मन डालकर सूदवंश को एक अमर निधि दी है और इनके इस सफस प्रयास की जितनी भी प्रशंसा की जाये वह कम है।

कट्टर आर्य समाजी के रूप में दैनिक हवन यज्ञ आपके जीवन का आवश्यक अंग है।

यंगमैन सूद एशेसियेशन के जन्म दाताओं में आप का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता है। सूद ध्वजा का जन्म देकर उसे 1941ई. में पालमपुर के सूद अधिवेशन में लहराने में आपका प्रमुख हाथ था।

श्री श्याम लाल सूद एक अनुभवी पत्रकार भी है सूद हितैषी सूद–सुधार तथा सूद मैंगजीन के माध्यम से आप ने सूद समाज की भारी सेवा दी तथा सूद जाति की कुरीतियां के विरूद्ध संघर्ष किया। आप काफी समय आर्य समाज उतम नगर के प्रधान रहे और जनता की सेवा तथा सुधार के यत्न करते रहे। हैदराबाद में आपने परोक्ष रूप में काफी सेवा की।

अपनी बैंक नौकरी के मध्य आप कर्मचारी साथियों में काफी लोक प्रिय रहै। आज के युग की भांति बातों में ही घर पुरा करने की अपेक्षा वह क्रियात्मक योगदान हाथों से सेवा तथाछिपाकर सहायता करने में विश्वास रखते है। आज के युग में सब से बड़ी आवश्यकता भी यही है।

———————————————————————————

———————————————————————————

नोटः–

1. जगजीत राय के लड़के आनन्द प्रकाश, प्रदीप कुमार, सुनील कुमार
2. जस्सामल कंगखुर्द में आया।
3. मुन्शी राम कंगखुर्द से नकोदर आयां।

———————————————————————————

———————————————————————————

## श्री लब्बू राम

इन्ही श्री श्याम लाम के चाचा तथा श्री मुन्शी राम और रला राम के भाई थे श्री तुलसीराम। श्री श्याम लाल सूद की शिक्षा–दिक्षा पाँचवी से दसवीं तक इन्ही की छत्र–छाया में हुई। मिलनसारिता, सादगी और ईमानदारी के जीवन के अंग थे। अतिथि सेवा में इन्हें विशेष रूचि थी। आस पड़ोस के सूद परिवारों में सैंकड़ों रिश्तें इन्ही

के द्वारा तैय कराये गये। वह दिन मनहुस समझा जाता था जबकि इनके घर में महमान न आया हो। श्री श्याम लाल पर इनकी विशेष कृपा थी और अपनी कोई संतान न होने के कारण वह इन्हें पुत्रवत समझते थे इन्हीं के संस्कारों का प्रभाव है कि श्री श्याम लाल सूद को ऐसे ही विचार तथा भाव मिले।

श्री मुस्ताक राय की कोठी में जालंधर 1928 में जो सम्मैलन हुआ उसमें श्री श्याम लाल सूद जी को श्री तुलसी राय के साथ पहली बार सूद सभा में जाने का अवसर मिला और इसी समय श्री श्याम लाल सूद के हृदय में जाति प्रेम ने जन्मलिया। फिर अमृतसर में दूसरा सम्मेलन देखने का अवसर मिला और उस अंकुर ने इनके हृदय में घर ही बना लिया तथा तब से आज तक वह इसी प्ररेणा के कारण निजि हाति–लाभ की चिन्ता न करते हुये भी जाति की सेवा निरन्तर करते चले आ रहे है।

श्री तुलसीराम का अन्तिम समय दिल्ली में ही व्यतीत हुआ जहां अधरंग की बिमारी के कारण श्री वेद स्वरूप बेरी दिल्ली वाले जो उसके भाई मिलानी राम के दामाद थे। उनके घर में श्री तुलसी राम जी का देहांत हुआ। भाई की बेटी कलावती का विवाह भी इन्हीं ने किया था।

श्री वेद स्वरूप बेरी ने इन्हें आपने पिता तुल्य जानकर इन की जो सेवा की वह शब्दों में वर्णित नही की जा सकती। यह वेद स्वरूप बेरी इनके भाई मिलखी राम की बेटी के पति थे।

# श्री तुलसी राम

यह तलवंडी सलीम अथवा सूदों में आरम्भं से ही नम्बरदार चले आ रहे श्री श्याम लाला के चाचा थे। पंचायत राज्य आने पर यह वहां से पहले सरपंच थे तलवंडी सूदां में यह सूद और अन्य तमाम लोगों में लोक प्रिय दुकानदार तथा जमींदार थे जो अत्यंत मिलनसार तथा सेवा के धनी महानुभाव थे। इनके बेटे श्रवण कुमार आदि दिल्ली में ही निवास रखते है।

---

---

नोटः–

पेज न. 395–396 में

श्री लब्बू राम के विषय में जो लिखा गया है उसमें श्री लब्बू राम के स्थान पर तुलसीराम लिखा गया है वह लब्बूराम से सम्बधिंत है।

---

---

**श्री ज्ञान प्रकाश सूद**

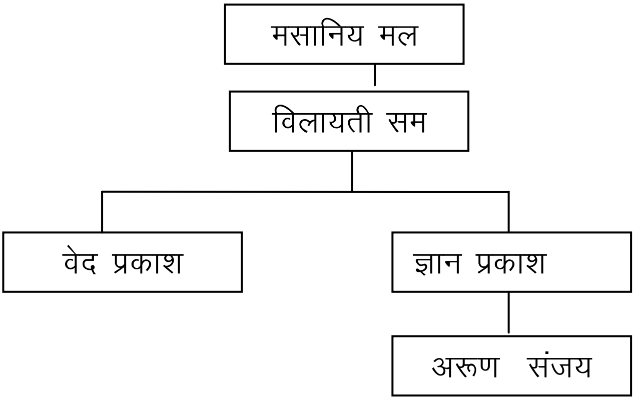

श्री ज्ञान प्रकाश का जन्म दिल्ली में 1928 में हुआ। शिक्षा जारी रखी और बढते हुये एम.ए.एल.बी. करने के पश्चात् सी.ए. आई आई बी. की परीक्षायें पास की। 1944ई. में पंजाब नैशनल बैंक में कर्लक भर्ती हुये थे। शनैः—शनैः 1962 ई. में बैंक ऑफ इन्डिया में मैनेजर नियुक्त हुए और इस समय क्षेत्रिय मैंनेजर के उच्च पद पर सुशोभित है। सूद बिरादरी के यह प्रमुख महानुभाव उच्चकोटि के सादा जीवन से धनी बुद्धिजीवी तथा सूद बिरादरी के हितैषी सज्जन है। परिवार सुसभ्य शिक्षित एवं शिष्ट तथा सदाचारी हैं।

श्री ज्ञान प्रकाश सूद
रीजनल मैंनेजर
बैंक आफ इंडिया अमृतसर।

श्री ज्ञान प्रकाश सूद

# श्री नारायण दास सूद

श्री नरायण दास सूद

अमृतसर की प्रसिद्ध विभूतियों में श्री नारायण दास सूद का नाम प्रमुख है। जीवनमल ढोटियां वाले के पोते तथा मास्टर रूड़ाराम के सपुत्र श्री नारायण दास पंजाब नेशनल टेकस्टाईल मिल्ज़, पंजाब नेशनल वूलन मिल्ज, पायनीयर वूलन ऐंड सिल्क

अमृतसर की प्रसिद्ध विभूतियों में श्री नारायण दास सूद का नाम प्रमुख है। जीवन मल ढोटियों वाले के पोते तथा मास्टर रूड़ा राम के सपुत्र श्री नारायण दास पंजाब नैशनल टैकस्टाइल मिल्ज, पंजाब नैशनल वूलन मिल्ज, पायनीयर वूलन ऐंड सिल्क मिल्ज तथा पंजाब नैशनल स्पीनिंग मिल्ज के संचालक तथा प्रसिद्ध व्यापारी है। श्री

रूड़ा राम अमृतसर में स्कूल अध्यापक थे। श्री रूड़ा राम के सपुत्र श्री नारायण दास, ज्ञानचन्द, राजिन्द्र पाल, सत्तपाल, सुरेन्द्रपाल और मनोहर लाल आदि छः भाई है। श्री नारायण दास के सपुत्र श्री मंगत राम श्री सुभाष चन्द्र, श्री विजय कुमार तथा संजीव कुमार अपने व्यापार मे सलंग्न महानुभाव है।

स्वंय श्री नारायण दास ''जन्म 1919'' एक मिलनसार पुरषार्थी तथा यात्राओं के कारण विभिन्न विषयों पर काफी ज्ञान रखने वाले महानुभाव तथा सूद समाज से स्नेह रखने वाले सज्जन है।

## श्री हरबंस लाल

श्री जवाहर लाल के पडपोते एवं श्री गेन्दामल के पौते तथा श्री गोकुल चन्द के सपुत्र श्री हरबंस लाल सूद 1901 में माच्छीवाडा में उत्पन्न हुए। सूद सभा अमृतसर के महामन्त्री है आप एक अध्यापक के रूप में रिटार्यड हुये तथा अमृतसर में ठेकेदारी आरम्भ की तथा काफी धन एवं मान आपने परिश्रम से प्राप्त किया। उनके पूर्वज माच्छीवाड़ा के रहने वाले थे। नेहरा गोत के इस परिवार की काफी भूमी माच्छीवाड़ा में हैं।

सार्वदेशिक सूद सभा के मैम्बर और समाचार के जैण्ट एडीटर रहे। श्री हरबंस लाल के सपुत्र श्री अवनाश चन्द्र, सुरजीतचन्द, रमेश चन्द्र तथा मदन लाल एवं अरूण कुमार पांच बेटे हें जो उच्च शिक्षा प्राप्त एवं शिष्ट महानुभाव है दो बेटे ठेकेदारी करते है तथा तीन सरकारी सेवा में है। श्री हरबंस लाल सूद समाचार के सह सम्पादक तथा सार्वदेशिक सूद सभा के सदस्य भी हैं।

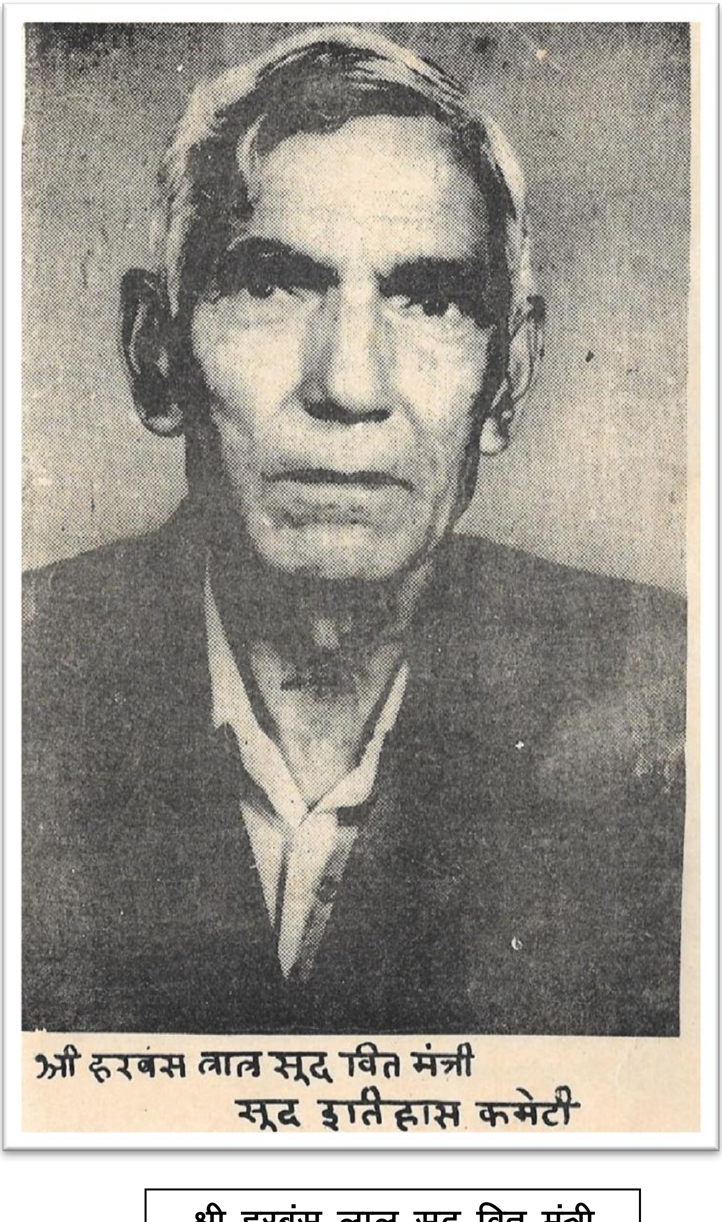


श्री हरबंस लाल सूद वित मंत्री
सूद इतिहास कमेटी

श्री रेवती रमन स्वामी हिमालया ट्रैडज अमृतसर

**श्री रेवती रमण हिमालया ट्रेडर्स**

# श्री रेवती रमण

श्री रेवती रमण स्वामी हिमालय ट्रैर्डस श्री कुलजस राय के सपुत्र तथा श्री दसौंधी मल के पोते है पठानकोट तथा कुल्लू के प्रसिद्ध परिवार से सम्बंध रखते है। तत्पश्चात यह परिवार कुल्लू में रहा। आप टिम्बर के प्रसिद्ध व्यापारी रहे है। आप सूद सभा अमृतसर के उप–प्रधान तथा सार्वदेशिक सूद सभा के सदस्य थे।

अमृतसर को प्रसिद्ध हस्तियों में सरदार प्रताप सिंह रेवनियु मिनिस्टर राय साहिब मेजर गनपत राय, सेठ सुलखन सिंह, राय साहिब, राधाकिशन आदि प्रसिद्ध सूद विभूतियों को जन्म दिया हैं।

इसके अतिरिक्त वर्तमान प्रधान सूद सभा ला. बूटी राम जो आर्य समाज सूद सभा अमृतसर के प्रधान तथा प्रसिद्ध उद्योगपति है। भूतपूर्व प्रधान लाला ध्यानदास सूद सभा के अच्छे कार्यकर्ता रहे। यह बैंक के मैनेजर और आर्य समाज के प्रधान रहे।

# लाला हंस राज

भूतपूर्व हैड कर्लक नहर विभाग जिनकी देख–रेख में सूद धर्मशाला अमृतसर में निर्मित हुई आप सूद सभा अमृतसर के आधार स्तम्भ है। धर्मशाला बनवाना इन्ही का काम था। काफी देर तक सूद सभा के प्रधान रहे।

लाल. बुद्धशाह जी सूद सभा के हितैषी सेवा भावी महानुभाव थे। धर्मशाला मे तन–मन–धन से सहायता की।

मास्टर राम रखा प्रसिद्ध आर्य समाजी तथा सर्वदेशिक सूद सभा के सदस्य रहे।

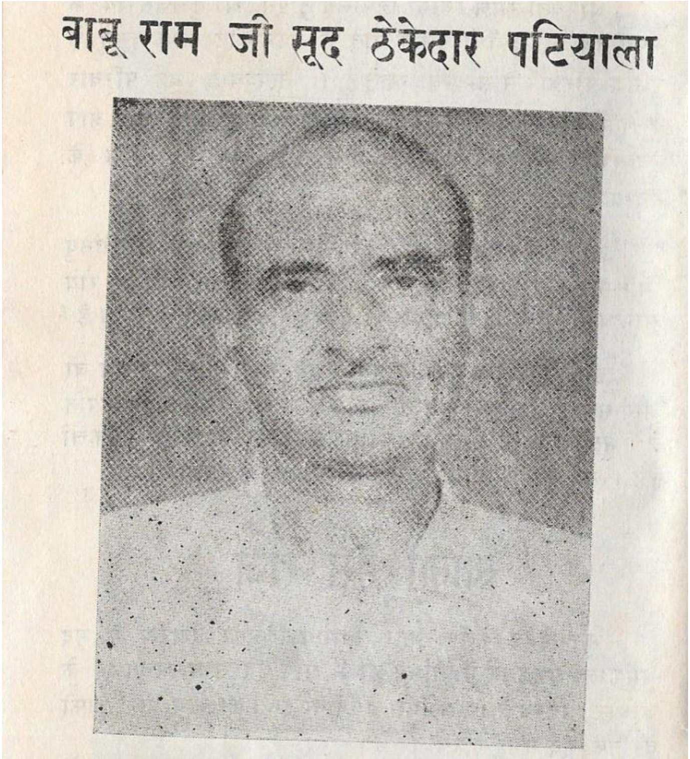


## बाबू राम जी सूद ठेकेदार पटियाला

श्री बाबू राम जी ठेकेदार श्री गनपत राय के इकलोते बेटे है। इसका जन्म बहादुरगढ़ में हुआ। आप उच्छे जिमींदारसरकारी ठेकेदार तथा पटियाला के मिलनसार एवं सादा जीवन के धनी महानुभाव है।

इनकी संतान भी शिष्ट तथा सुसभ्य एवं प्रतियाशाली है जो पितक के पद चिन्हों पर चल रहे है।

मोगा के प्रसिद्ध सूद परिवार मोगा की प्रसिद्ध हस्तियों में श्री देव करण सूद का जिक्र करना भी जरूरी है। रोटरी कल्ब के प्रधान तथा गंगा बिशन शुभ करण नामक प्रसिद्ध व्यापारी संस्था के स्वामी श्री शुभ करण मोगा के सुलझे हुए व्यापारी ही नही अपितु मिलनसार तथा सुलझे हुये समाज सेवक भी है। शुभ कार्यो के लिये दान देने में यह सारा परिवार ही मोगा में प्रसिद्ध हैं।

शिवाला राम किश्नीया तथा स्कूल कॉलिज आदि मोगा की कोई भी संस्था इस परिवार की सहायता से वंचित नही रही है। उन्हीं के साथ वर्णन आता है।

**श्री शुभ करण जी** का जो इन्ही के परिवार की विभूति है। इनका व्यापार जगराओं में हैं आर्य समाजी विचारधारा के श्री शुभ करण मोगा के प्रसिद्ध समाज सेवक है।

## हरिद्वार तथा देहरादून के प्रसिद्ध परिवार

देहरादून के प्रसिद्ध परिवारों का वर्णन करने से पहले हरिद्वार की प्रसिद्ध विभूतियों का वर्णन भी आवश्यक है। श्री तारा चन्द बंटा मालिक फर्म तारा चन्द पवनकुमार हरिद्वार के वह लकड़ी के प्रसिद्ध व्यापारी सूद समाज से इन्हें आपार स्नेह हैं प्रेम–भाव की एक जीती–जागती मूर्ति है किसी स्वाली को नराश नही जाने दिया। दान प्रणाली में आपने अपने पूर्वजों से भी आगे है। ईश्वरभक्त है।

## के.के. मल्ला सिंह

यह धारीवाल के समीप किला लाल सिंह में उत्पन्न हुए। अब हरिद्वार निवास रखते हैं श्री के.के. मल्ला

सिंह जो अफ्रीका से रिटायर अध्यापक हैं वर्तमान सूद इतिहास को आरम्भ कराने का प्रथम प्रयास इन्हीं के द्वारा हुआ था। प्रथम रसींद उन्ही की काटी गई थी। इन्ही की योग्य संतान में कु. किरण भानू सूद आजकल देहरादून में प्रोफेसर हैं। यह सैंकडों इनाम प्राप्त कर चुकी हैं उच्च कोटी की व्याख्यान देने वाली हैं इनकी माता गुरू कुल की सनातन है। शुद्ध उच्चे विचारों वाली है। इनके बेटे राम जी एक अध्यात्मिक विभूति तथा भाक्ति ध्यान में मगन उपासक बच्चे है। जिन से मिल कर मन को शान्ति मिलती है। यह बालक एक दिन माता–पिता तथा जाती का नाम रोशन करेगा।

## धर्म पाल सूद

देहरादून में पहुँचे तो श्री धर्म पाल सूद मालिक कैलाश इलैक्ट्रिक ट्रेडिंग कार्पोरेशन के दर्शन होते हैं आप काफी समयआर्य समाज देहरादून के महा मंत्री रहे आप देहरादून सूद सभा के भी प्रधान है। सूद सभा के पहले महा मंत्री रहे। सूद मेला किया धर्म का पालन करने में सदा तैयार रहते है।

इनके एक सपुत्र चण्डीगढ़ में बिजली की दुकान करते है। श्री रेलू मल के पोते तथा श्री राम रखामल सूद के सपुत्र श्री धर्म पाल सूद बलगन गोत के उस परिवार से सम्बंध रखते है जो जिला जालंधर से लाहौर जा बसे और वहाँ से देहरादून जा बसे। आजकल देहरादून में रिहाईश रखते है।

(श्री धर्मपाल सूद)

**श्री धर्म पाल सूद**

## कु. सत्यावती सूद

कुमारी सत्यावती सूद का जन्म होशियारपुर में हुआ मगर काफी देर से देहरादून में रहती है। इन्होंनें अपना सारा जीवन समाज सेवा और देश सेवा में लगा दिया है। आप यू.पी. कांग्रेस में खास दरजा रखती है।

आज कल आप यू.पी. विधान सभा मैम्बर है। सूद बिरादरी देहरादून में भी काफी रूचि रखती है। सरकारी और गैर–सरकारी हलको में आप का काफी असर है। आप की महानता पर बिरादरी को मान है।

# श्री बाबू राम सूद

सपुत्र श्री देवी शरण सूद बजवाडिया देहरा गोपीपुर जिला कांगड़ा में जन्म ता. 18 मार्च 1910 को स्पाटू कैन्ट मे हुआ था। विद्यार्थी जीवन में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते रहे। 1034 में शिमला से प्रथम देनिव पत्र शिमला समाचार और सप्ताहिक शिमला मेल प्रकाशित किये। रसाला सार्वदेशिक सूद समाचार के यह सम्पादक थे। समाज सेवा के लिए भारत सेवा दल की स्थापना की थी। पहले वह ''साहिर'' उपनाम से प्रसिद्ध थे परन्तु दल में सभी उन को वीर कहते थे।

1944 में काबूल ''सीमा प्रान्त'' के एक सेनिक स्कूल में उर्दू इन्सट्रक्टर रहे, फिर 1648 में देहरादून चले आये। यहां से पाक्षिक पंचायत पत्रिका और हिमालय केसरी प्रकाशित किये। परन्तु सरकारी नौकरी मिलने पर पत्रकारिता छोड दी। अब 1968 में इण्डियन मिलटरी अकाडमी देहरादून से अवकाश प्राप्त कर चुके है। सूद सभा देहरादून के कई बार मंत्री भी रहे है। और बिरादरी की उन्नति पर तथा कुरीतियों के विरूद्ध लेख प्रकाशित कराते रहते है। उन के हृदय में देश प्रेम तथा समाज सेवा की भावना नियत है।

# श्री रत्न चन्द सूद

इसके अतिरिक्त सूद सभा गठित होने पर प्रथम प्रधान चुने जाने का गौरव पाने वाले श्री रत्न चन्द सूद भी देहरादून के प्रसिद्ध समाज सेवक है। जिनकी देख–रेख में प्रथम सूद मेला आयोजित किया गया था।

श्री शेष राम भी देहरादून की प्रसिद्ध विभूति है। आप प्रसिद्ध सूद नेता श्री मेला राम मिटठू शिमला वाले के सहपाटी की है।

# श्री मदन मोहन सूद

श्री मदन मोहन सूद चण्डीगढ़ सूद सभा के महामंत्री है। आप दिल्ली तथा हरियाणा के मुख्यमन्त्रियों के सम्पर्क मे रह चुके है।

पहले आप पंजाब के मुख्यमन्त्री के नीति सचिव रह चुके है। इसके बाद आप हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री बंशीलाल के निजि सचिव रहे है।

आजकल आप हरिजन कल्याण बोंड के चेयरमैंन हैं। अपने व्यस्त जीवन में भी आप सूद सभा के लिए समय निकाल कर समाज सेवा में लगे रहते है। आपका विवाह सरजिया लाल के परिवारों में हुआ था आप चण्डीगढ़ के प्रसिद्ध समाज सेवक है।

# श्री हीरा सिंह जी सूद

श्री हीरा सिंह जी का जन्म मानोचाहल जिला अमृतसर में श्री किशन सिंह जी के घर 1 जनवरी 1913 को हुआ। श्री किशन सिंह जी गांव में एक प्रसिद्ध व्याक्ति

थे। इनके बडे लड़के का नाम चमन लाल है जो सार्वदेशिक सूद सभा के प्रचार मंत्री रहे। आजकल तरनतारन कचहरी में काम करते है। देश की स्वतंत्रता में इन्होंनें बहुत काम किया।

श्री हीरा सिंह जी अभी दो वर्ष के होगें कि पिता का साया सिर से उठ गया। अब घर का सारा बोझ इनके बड़े भाई चमन लाल और माता शिव दई जो एक अनुभवी प्रमात्मा पर विश्वास ओर शुभ विचार रखने वाली देवी थी, उन पर आ पड़ा। जिसे उन्होंनें बड़ी सूझ–बूझ से निभाया।

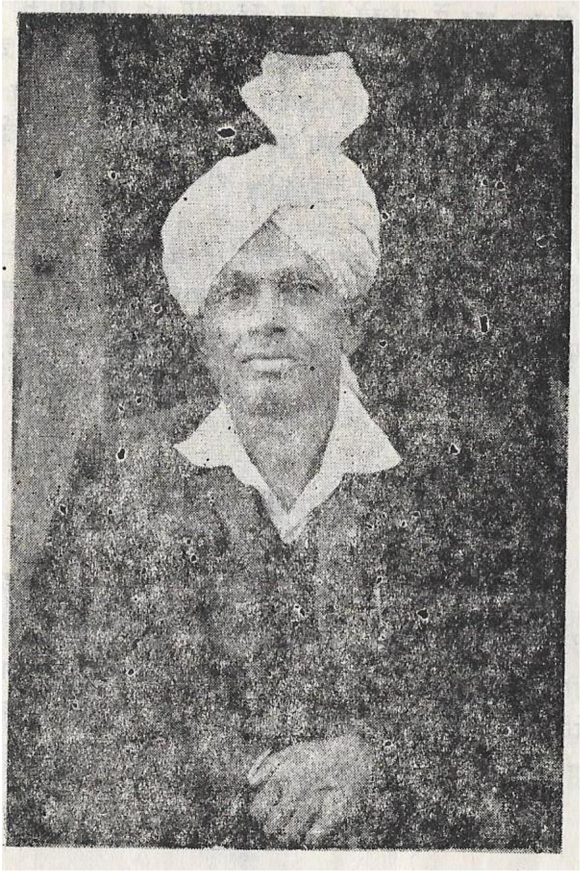

1933 में हीरा सिंह ने मैट्रिक प्रथम श्रेणी में यूनिवर्सिटी से और पंजाब भर में दसवे नंबर पर आए। 1935 में एफ.एस.सी. प्रथम श्रेणी और सरकारी वजीफा प्राप्त किया। 1937 में बी.ए. आजीर की डिग्री प्राप्त की जिस में प्रथम श्रेणी के अति–रिक्त पंजाब भर में पांचवे नंबर पर आये। 1940 में बी.टी. का इम्तिहान पास किया। एम.ए. पंजाबी और एम.ए. इग्लिश स्कूल टीचर होते हुये पास किये। 938 में आप की शादी करतारपुर के लाला

दुर्गा दास की सपुत्री सत्यावती से हुई इन के तीन लड़के प्रमिंदर, रजिन्द्र और ओम बी.ए. है।

श्री हीरा सिंह जी एक उच्चकोटि के लेखक और कवि है। 1962 में सरकारी स्कूल के हैडमास्टर बन गये और यह हैडमास्टर यूनियन के उप–प्रधान रहे। अब सार्वदेशिक सूद सभा के मैम्बर हैं।

## श्री बी.के. सूद

आप का जन्म जिला लुधियाना में हुआ। विद्या प्राप्त करने के पश्चात आप पोस्ट ओफिस में लग गये। आजकल चण्डीगढ़ में निवास करते हैं सूद सभा चण्डीगढ़ के मंत्री है। सार्वदेशिक सूद सभा के सदस्य है उच्च विचार और काम करने में हर समय तैयार रहते है। सूद बिरादरी से इन्हें खास प्यार है।

## जस्टिस टेक चन्द जी

जस्टिस टेक चन्द जी चण्डीगढ़ की प्रसिद्ध विभूतियों में से एक है। यह लाला दूनी चन्द जी एडवोकेट के सपुत्र है जो 1919 में लुधियाना सूद सम्मेलन के प्रधान थे। इस इतिहास के 342–43 पर इसका पूरा हाल दर्ज है।

जस्टिस टेक चन्द जी एक अनुभवी कानूनदान है। यह जस्टिम के पद से अवकाश प्राप्त कर चुके है। मगर फिर भी नेक काम में लगे रहते है। यह अनेकों कमेटियों और सभाओं के सदस्य तथा प्रधान है। इनकों एक मिन्ट की फुरसत नही।

सार्वदेशिक सूद सभा के भी प्रधान है। इनमें बिरादरी की सेवा का भाव है। मगर समय और सहयोग ना मिलने के कारण यह वह काम पूरा नही कर पाये जो वह मन में इच्छा रखते थे। यह एक फौलादी इन्सान है।

## महिन्द्रा, ब्रादर्ज, रीवा

श्री प्यारा लाल जी सूद और उसके भाई एक नंबर के गर्वनमेन्ट कॉन्ट्रेक्टर हैं। बिरादरी के कामों में कार्फी रूचि रखते है। यह सभी धार्मिक कामों में दान देने में आगे रहते है। और श्री बिशन स्वरूप टंडन और उनके भाई राम स्वरूप टंडन भी बिरादरी के काफी रूचि रखते है।

**समाप्त**

Printed at:
PURI PEOPLES PRINTING PRESS
1/s. Hall Gate, Amritsar

# धन्यवाद

प्रथम मैं, परम पिता परमात्मा का अति धन्यवाद करता हूं जिस की आपार कृपा से मैं सूद जाति का गौरवशाली इतिहास जाति को पेश करने में सफल हुआ और जो सेवा सार्वदेशिक सूद कांफ्रेंस चण्डीगढ़ में मुझ पर डाली थी उसे पूरा कर पाया।

मैं श्री मदनेश आजाद का भी आति धन्यवाद करता हूं जिन्होनें मेरा पूरा साथ दिया। गर्मी, सर्दी और वर्षा की परवाह किये बिना जगह–जगह जंगलों, पहाडों और रेगिस्तानों में जाकर सूद इतिहास की खोज की। और सूद जाति का गौरवशाली इतिहास लिख कर पुण्य के भागी बने। इस पर मेरा अनुमानत लागत 15 हजार रूपये खर्च हुआ।

मैं श्री सलामत राय सूद तरखेडी जिन्होनें ऊर्दू में सूद इतिहास लिखा श्री पडिंत संत राम जी राजगुरू महाराज जुबुल जिन्होनें सूद बंसावली हिन्दी और उर्दू में लिखी। श्री फतेह चन्द जी सूद फिरोजपुर जिन्होनें सूद जाति की अजमत ओर सूद जाति का इतिहास लिखा। श्री प्रोफेसर रूलिया राम जी रिसर्च स्कालर ने चारों वेदों में से 23 मंत्र जिनमें सूद शब्द आता है। निकाल कर सूद योग नामी पुस्तक उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी में लिखी। मैं इन सब महानुभावों का अतिधन्यवाद करता हूं।

मैं अपने, उन सज्जन हितैषी भाईयों का जिन्होंनें मेरी तन–मन और धन से सहायता की। ओर मेरे साहस को बढ़ाया। वह है ला. बूटी राय जी, ला. नारायण दास जी अमृतसर, श्री अमोलक राम जी एडवोकेट मोगा, श्री ओम प्रकाश जी सिम्पलेक्स हौजरी ओर श्री किदार नाथ

जी बोरी लुधियाना, श्री बाबू राम जी सूद ठेकेदार और श्री आतम अभय सिंह जी पटियाला, सेठ रतन चंद जी मालिक इरोस सनेमा, श्री हरबंस लाल जी आफिसर इन्कम टैक्स, लाला रूडा राम जी शुगर ऐजन्ट, प्रोफेसर पी.सी. सूद प्रधान और डॉ.शादी राम जी सैक्टरी सूद सभा दिल्ली श्री धर्म पाल जी सूद कैलाश इलैक्ट्रिक देहरादून, श्री तारा चन्द जी बंटा और श्री के.के. मल्ला सिंह जी हरिद्वार इन सब भाईयों का मै अति धन्यवाद करता हूं। मैं सूद सभा अमृतसर सार्वदेशिक सूद सभा चण्डीगढ़ के उन भाईयो का अति धन्यवाद करता हूँ जिन की मुखालफत से मेरे तप ओर त्याग मे वृद्धि हुई।

**सूद जाति का गौरवशाली इतिहास "हिन्दी"**
**प्रकाशक तथा सम्पादक**
**शायम लाल सूद 46, रानी का बाग,**
**अमृतसर**

# मेरी भूल

1- मुझे मदनेश आजाद हिस्ट्रोयन की तरफ से यह आश्वासन दिलाया गया था के लोस्ट ग्लोरी के आप मालिक और जनरल सैक्रेटरी है अथवा मैंने इस पर विश्वास करके सख्त गलती की क्योकि यह जुबान का मीठा और दिल का काला साबित हुआ। यह मेरी पहली भूल थी।

2- मेरी यह दिली तमन्ना थी कि मैं सूद जाति के सामने कौम का गौरवशाली इतिहास पेश करू अथवा मैंन इस के प्रचार और खोज पर काफी रूपया खर्च किया। मगर अफसोस के हिस्ट्रोयन सहिब ने वह इस पुस्तक के दर्ज नही की जिससे मेरी यह तमन्ना भी न पूरी हो सकी। यह मेरी दूसरी भूल थी कि मैंने इसे अपना बेटा समझ कर इस पर विश्वास किया और 15 हजार रूपया भी खर्च किया।

3- मेरे साथ यह वायदा किया गया था कि हिन्दी, ऊर्दू और अंग्रेजी में सूद जाति का गौरवशाली इतिहास लिखा जायेगा खर्च की इस कमी को दूसरी पुस्तकों से पूरा किया जायेगा मगर यह स्वप्न साबित हुआ। यह मेरी तीसरी भूल थी।

4- दो साल तक में मदनेश जी को पुत्र और यह मुझे पिता की दृष्टि से पुकारता रहा इस लिए मै परमपिता प्रमात्मा से अन्तिम यही प्रार्थना करूँगा कि वो इसे नेक बुद्धि दे।

**शाम लाल सूद**
**98 रानी का बाग,**
**अमृतसर।**

## श्रद्धान्जली

सच मैं अपने आपको गर्वान्वित अनुभव कर रही हूँ कि अनायास ही मुझे ऐसा भैया प्राप्त हुआ है जो लेखक की प्रतिभा से प्रदीप्त मस्तिष्क से युगों के अन्धकार के आवरण में छिपे गौरवमय इतिहास को प्रकाशित कर रहा है। वस्तुतः मदनेश जी का यह प्रयास सर्वथा अनुपम और सराहनीय है। ऐसे तरूण तपस्वी के दर्शन की अभिलाषा का सहृदय मानस में उदिप्त होना स्वाभाविक ही है।
आपको कुशलता एवं सक्रियता के लिए सद्भावनाओं एवं शताध्कि शुभ कामनाओं सहित।

आपकी बहन
प्रोफैसर, किरण भानु एम0 ए0
देहरादून

प्राचीन भारतीय सभ्वतः एवं संस्कृति के गिर रहे भवन को कन्धें के लोह स्तम्भों पर रोकने के जिस अनथक प्रयास में मदनेश जी सर्व प्रकार के मोह एवं इच्छा रहित होकर लगे हैं उसे देखकर एक बहन का पुलकित हो उठना स्वाभाविक ही है। ऐसे कर्मयोगी, त्यागी, मनीषी, तरूण तपस्वी छोटे भैया को बड़ी बहन का शत–शत प्रणाम स्वीकार हो।

कमला सूद सँयुक्ता
प्राधना शिल्पकला परिषद
प्रा–कार्य –ताजमहल आगरा।
शाखा–तरनतारन।